प्रस्तावना.

ख्याल वा लावनी ब्रह्मज्ञान उपासना ज्ञान भक्ति मार्ग गंगालहरी और देवतोंकी स्तुति भाषा बोलीमें यह सब मत वर्णन किये हैं, इसमें वेद, वैष्णवमत, शैवमत, शाक्तादि सब मत हैं, और उर्दु बोलीमें इश्क मार्फ अर्थात् खुदाकी इबादत और मतलब तौहीद अर्थात् वेदांत ब्रह्मज्ञान यह सब लोगोंके भलेके वास्ते प्रसिद्ध किया है. इसको जो कोई पढेगा या सुने- गा यह बहुत खुश होयगा औरभी लोगोंने लावनी बनायी है कोयी कँलगी और कोयी तुर्रा कोयी दुंडा और कोयी छत्तर कोयी मुकुट यह सब लोग अपना अपना पंथ चलाते हैं परंतु सब पक्षवादी हैं वो लोग ज्ञान या वेदान्त कुछभी नहीं जानते आपसमें गाते बजाते और लडते भिडते रहते हैं परंतु मेरी इस पुस्तकमें भक्ति निर्गुणके सिवा और कुछ पक्षवाद नहीं है इसके छापनेका हक सिवाय गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासके और किसीको नहीं है. क्योंकि हमने दोसौ पुस्तक लेके इनको रजिष्टरी करा दिया है.

और जिस जिसने छापी है नवल किशोरसे आदिलेके और पोथीवालोंने सब अशुद्ध बहुत छापी है इस अशुद्धके छापनेसे मुझको बहुत दुःख हुवा और मैं चार महीने यहां रहके एक एक अक्षर देखके अपनी कुल पोथीका एक ग्रंथ जिसमें सब आगे पीछेके ख्याल हैं और नवीनभी हैं कुल्लियात छपवा दिये.

इस अनुपम पुस्तकके पढनेमें यह कहावत बहुतही सच है कि (आँबके आँब और गुठलीके दाम) रसिक जन तो पढनेही रससे तरबतर हो जाते हैं और ज्ञानी लोग ज्ञानमें निमग्न हो अपार ब्रह्मज्ञानका सुख लूटते हैं, इस द्वितियावृत्तिको औरभी अत्यंत शुद्धतापूर्वक उत्तम रीतिसे छापा है आश है कि सभी बाल वृद्ध इसकी एक २ प्रति अङ्गीकार कर तनमनसे प्रसन्न हो दोनों लोकमें आनंदपूर्वक अपार सुखके भागी होंगे.

श्रीमत् काशीगिर बनारसी परमहंस.

आइके दुकानीने ईश्वरकी कृपासे बनाया है.

मे

दोहे ॥

लिखो पढो मैं नाहिं कछु, गुरु प्रसाद मोहिं दीन ।
राम कृष्णके नामते, भयो ब्रह्ममें लीन ॥
रुद्ररूप मैं आप हों, शक्ती यह संसार ।
यह मेरी माया प्रबल, जाको वार न पार ॥
चौदह विद्या ग्रंथमें, सो मैं लिखी बनाय ।
ब्रह्मज्ञान भक्ती सहित, दियो सरल दरशाय ॥
जो कोइ याको पढैगो, प्रेमसहित मन लाय ।
भुक्ति मुक्ति पावे वही, जन्म मरण छुट जाय ॥
याको जो कोइ रागमें, गान करेंगे लोग ।
वाको या संसारमें, कभी न व्यापे शोग ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

लावनी ब्रह्मज्ञान।

स्तुति गणेशजीकी–बहर लंगडी।

हाथ जोड़ दंडवत करूं श्रीगणपति बुद्धि विनायकजी ॥
मुझ पापीको तारदो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥
दीनदयालु है नाम तुम्हारा ऋद्धि सिद्धि देनेवाले ॥
भजन आपका है ऐसा कोट व्याध क्षणमें टाले ॥
मोहनी मूरत सतोगुणी तुम सदाके हो भोले भाले ॥
सदा शारदा आपकी जिह्वापर बोले चाले ॥
विघ्न विनाशन भजन तुम्हारा सदासे है शुभदायकजी ॥
मुझ पापीको तार दो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥ १ ॥
चतुरभुजी मूरत सुंदर तनु शीश चंद्रका उजियाला ॥
तीन नेत्र हैं गलेमें सोहे मुक्तनकी माला ॥
रत्नजडित भूषण अनगिनती मणिमय बने हैं अति आला ॥
जगमग जगमग आपके भवनमें जगती है ज्वाला ॥
प्रथम देवता तुम्हींको पूजे तुम हो सबके नायकजी ॥
मुझ पापीको तार दो तुम्हींतो हो सब लायकजी ॥ २ ॥
गिरिजानंदन असुर निकंदन संतनके हो सुखदायी ॥
अनंत तुम्हारे नाम ए महिमा वेदोंने गायी ॥
दूधपिलावे गौरी तुमको जो है त्रिभुवनकी मायी ॥
बसा है दिलम्हैंदी तीन लोककी प्रभुतायी ॥
मेरा मन उसपर तुम्हरा नाम है सदा सहायकजी ॥

मुझ पापीको तारदो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥ ३ ॥
धूप दीप नैवेद्य लगाकर करे आरती पार्वती ॥
पूजे तुमको चढावे चंदन चावल बेलपती ॥
मोदकका सब भोग लगावें ऋषी मुनी और यती सती ॥
कहे देवीसिंह जो तुमको सुमरे उसकी होय गती ॥
बनारसी कहे कष्ट हरो मेरे मैं तुम्हरा पायकजी ॥
मुझ पापीको तार दो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥ ४ ॥

स्तुति कृष्णजीकी–बहर लंगडी ।

सिवा कृष्ण महाराजके मेरा बाबा मैया कोयी नहीं ॥
ओयी प्रभु है मेरा और अपना भैया कोयी नहीं ॥
यह संसार अपार है इस्का पार करैया कोयी नहीं ॥
सिवा कृष्णके जन्म और मरण छुडैया कोयी नहीं ॥
लाखों मूरती हैं पर ऐसा कुँवर कन्हैया कोयी नहीं ॥
विश्वरूपका जगत्में और दिखैया कोयी नहीं ॥ १ ॥

शैर–महाभारतमें उठाया वो रथका पैया है ॥
विना हथियार लडा ऐसा वह लड़ैया है ॥
बना अर्जुनका सारथी वह रथ हकैया है ॥
मरा मन रातो दिन उसी की ले बलैया है ॥
बड़े बड़े पापियोंका ऐसा पाप छुड़ैया कोयी नहीं ॥
वही प्रभु है मेरा और जगत्में भैया कोयी नहीं ॥ १ ॥
दारिद्रीको देवे धन ऐसा तो दिवैया कोयी नहीं ॥
कहे सुदामा ऐसा भंडार भरैया कोयी नहीं ॥
नखपर गिरिवर धारो ऐसा गिरिका उठैया
बूड़त व्रजको राखो ऐसा तो रखैया कोयी

शैर-रमा है सबमें वोही ऐसा वह रमैया है ॥
बिना कानोंसे सुने ऐसा वह सुनैया है ॥
फक़त वह अपनेही एक नामका रखैया है ॥
यह जगत् रातो दिन उसीकी दे दुहैया है ॥
इंद्रके मानको मारो ऐसा गर्व गिरैया कोयी नहीं ॥
वही प्रभु है मेरा और जगत्में भैया कोयी नहीं ॥ २ ॥
सब ग्वालोंसे पूछो ऐसा गाय चरैया कोयी नहीं ॥
माखन मिसरीका उनके सिवा खवैया कोयी नहीं ॥
गोपीभी कहें मोहन ऐसा दही चुरैया कोयी नहीं ॥
मानके मटकीको तोड़े ऐसा तुड़ैया कोयी नहीं ॥

शैर-लोग कहते हैं यशोदाभी उस्की मैया है ॥
वह तो अलख है न उस्का कोयी लखैया है ॥
वेद वेदांतका वही तो खुद बनैया है ॥
और उस्के अर्थका आपी वही लगैया है ॥
मुझे है रटना उसके नामकी ऐसा रटैया कोयी नहीं ॥
वही प्रभु है मेरा और जगत्में भैया कोयी नहीं ॥ ३ ॥
लूट लियो गोपियोंका जोवन ऐसा लुटैया कोयी नहीं ॥
मांग्यो दधिको दान ऐसा तो मँगैया कोयी नहीं ॥
देवीसिंह कहे बनारसी सा ख्याल बनैया कोयी नहीं ॥
अजब कहन है प्रेमकी ऐसा तो कहैया कोयी नहीं ॥

शैर-मेरा दिल साफ किया ऐसा वह धुलैया है ॥
दूयीको भूल गया ऐसा वह भुलैया है ॥
बसा है दिलमें मेरे मनका वह बसैया है ॥
मेरा मन उसके भजनका बना गवैया है ॥

अपनी आत्मा देखूं निशि दिन ऐसा दिखैया कोयी नहीं ॥
वही प्रभु है मेरा और जगत्में भैया कोयी नहीं ॥ ४ ॥

लावनी पापनाशनी–बहर लंगडी ।

राम कृष्णका सुमरन करनेसे पातक सब जाते हैं ॥
धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥
मैंने पाप किये बहुतेरे जिसका कुछ नहिं आदि और अंत ॥
विषय वासनामें डूबा झूठ मूठ कहलाया संत ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह यह पांचों मेरे बने महंत ॥
इनहींके वशमें रहा सद्गुरुकी कुछ नहिं पढी पढंत ॥
युवा अवस्थामें नहिं समझे वृद्ध भये पछताते हैं ॥
धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ १ ॥
मात पिताका कहा न माना पढा न पिंगल वेद पुरान ॥
बना कवीश्वर औ मैंने दग्ध छंद किये बहुत बखान ॥
मैंने कहा मैं परमेश्वर हूं ऐसा मुझे व्यापा अभिमान ॥
सत्य न बोला उम्र भर बका बहुतसा झूठ तुफान ॥
धन पाया तो धर्म किया नहिं भीख मांग अन्न खाते हैं ॥
धन्य वह नर हैं कि जो कोई रामकृष्ण गुण गाते हैं ॥ २ ॥
ब्रह्महत्या या बालहत्या या करे जो कोई गोहत्या ॥
राम भजनसे दूर हो जाय नहीं फिर हो हत्या ॥
मैंने जीव बहुतसे मारे लगी जो वह मुझको हत्या ॥
कृष्ण कहेसे भस्म हो गई करी जो जो हत्या ॥
अपना बीता हाल सुनो हम सबको सत्य सुनाते हैं ॥
धन्य वो नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ ३ ॥
सब अपराध क्षमा कर मेरे राम कृष्णजी वारंवार ॥
तुम हो दयानिधि दया करके कर दो मेरा उद्धार ॥

अधम पापियोंको तारा अब मुझकोभी तुम दीजे तार ॥
आगे मरजी आपकी जो चाहे करिये करतार ॥
अब मुझसे कुछ बन नहिं पडता आपका भजन बनाते हैं ॥
धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ ४ ॥
जो जो पाप किये मैंने प्रभु तुम जानो या जाने हम ॥
और कोई क्या जानता किसके आगे करूं रकम ॥
किये पाप देवीसिंहने तरगये अपने करा करम ॥
श्रीगंगाके तीर तनु त्यागा जाने कुल आलम ॥
बनारसी कहे हमभी तो उनके मुरीद कहलाते हैं ॥
धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ ५ ॥

लावनी विभूती योग्य–बहर लंगडी ।

रामकृष्ण महाराज मेरे अब अन्तर्यामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्त्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥
कंसा छेदन कौरव मारन पांडव तारन तुम्हीं तो हो ॥
नारसिंह हो दुष्टका उदर विदारन तुम्हीं तो हो ॥
बूडत व्रजको राख लियो गोवर्द्धन धारन तुम्हीं तो हो ॥
गजको उवारन ग्राहके मारन कारन तुम्हीं तो हो ॥
शेर–तुम्हीं सर्वज्ञ हो और सबसे तो न्यारे हो तुम्हीं ॥
जो कोई भगत है उस्केभी तो प्यारे हो तुम्हीं ॥
मेरे अपराध क्षमा करके मुझे तारो तुम ॥
मैं हूं सेवक और स्वामी तो हमारे हो तुम्हीं ॥
तुम्हीं तो वृन्दावनके बसैया गोकुल ग्रामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्त्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ १ ॥
दैत्योंमें प्रह्लाद और सिद्धोंमें कपिल मुनि तुम्हीं तो हो ॥
चार वेदमें श्यामकी सुनी अजब ध्वनि तुम्हीं तो हो ॥

अक्षरमें हो मकार और सुन्नोंमें महासुन तुम्हीं तो हो ॥
और पांडवमें धनुषधारी वह अर्जुन तुम्हीं तो हो ॥
शेर–दशों इन्द्रीमें जो देखा तो यह मन आपही हैं ॥
पवित्र करनेमें देखा तो पवन आपही हैं ॥
अधमके तारनेको आप बने परमेश्वर ॥
मैंने जाना कि वह तारन तरन आपही हैं ॥
अनंत हैंगे नाम आपके ऐसे नामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥२॥
वीरोंमें श्रीमहावीर रुद्रोंमें शंकर तुम्हीं तो हो ॥
और कवियोंमें वो शुक्राचार्य कवीश्वर तुम्हीं तो हो ॥
ज्योतीमें हो सूर्य्य अवतारोंमें शशि सुन्दर तुम्हीं तो हो ॥
तांत्रिक मतमें श्रीबलदाऊजी हलधर तुम्हीं तो हो ॥
शेर–ज्ञानवानोंमें तो वह ब्रह्मज्ञान आपही हैं ॥
ध्यान करनेमें वो योगीका ध्यान आपही हैं ॥
नरोंके बीचमें राजा हो तुम्हीं चक्रवर्ती ॥
पुण्य करनेमें तो वो ज्ञान दान आपही हैं ॥
सबकी कामना पूरण करते ऐसे कामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्त्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ ३ ॥
देवऋषिमें नारद और गुरुवोंमें बृहस्पति तुम्हीं तो हो ॥
वाक वाणीमें कीर्ती और सरस्वती तुम्हीं तो हो ॥
वृक्षोंमें पीपल हो पत्रोंमें वह बेलपती तुम्हीं तो हो ॥
अधमका करते आप उद्धार वह गति तुम्हीं तो हो ॥
शेर–सकारमें तुम्हें देखा तो विश्वरूप हो तुम ॥
जहां सुन्दर है कोई उसकाभी स्वरूप हो तुम ॥
कहांलों आपकी महिमाको देवीसिंह कहे ॥

सगुणमें रूप हो निर्गुणमें तो अरूप हो तुम ॥
बनारसी कहे वासुदेव वसुधा अभिरामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्त्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ ४ ॥

लावनी श्रीअंजनीजीकी स्तुति–बहर लंगडी ।

आदि कुवाँरी मात अंजनी जो चाहे सो तू कर दे ॥
जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥
जो मेरे शत्रु हैं उनका एक पल भरमें क्षय कर दे ॥
तीन लोकमें तू माता साध संतकी जय कर दे ॥
तू है कालिका काल कालका कालसेभी निर्भय कर दे ॥
जो तू ब्रह्म है तो अपने बीचमें मुझको ले कर दे ॥
और न कुछ तुझसे मांगू तू जो चाहे मुझको वर दे ॥
जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ १ ॥
अद्भुत तेरा ध्यान है अब उसको मेरे मनमें कर दे ॥
सकल वीरका जोर माता मेरे तनुमें कर दे ॥
सब दुष्टोंको संहारूं ऐसा तू मुझे रणमें कर दे ॥
कभी न भूलूं मुझे हुशियार तू हरफनमें कर दे ॥
निर्भय होकर विचरूं निशि दिन कभी यही मुझको डर दे ॥
जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ २ ॥
जो कुछ इस जिह्वासे निकले सिद्धि मेरी वाणी कर दे ॥
शरणागत हूं तेरी अब दया तू महारानी कर दे ॥
जलको तू अग्नी कर दे और अग्नीको पानी कर दे ॥
तू जो चाहे तो एकदम भरमे फनाफानी कर दे ॥
काट काट दुष्टोंके शिरको अपने खप्परमें धर दे ॥
जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ ३ ॥
सब कुछ तेरे हाथमें है जो भावे सो मुझको तू दे ॥

चित्तमें तेरे मात जो आवे सो मुझको तू दे ॥
जो वस्तु नहीं मेरे हाथसे जावे सो मुझको तू दे ॥
ये जिह्वा जो तेरा गुण गावे सो मुझको तू दे ॥
कभी न खाली हाथ रहूं माता मुझको इतना जर दे ॥
जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ ४ ॥
जो तू अपनी कृपा करे माता मुझको ऐसा यश दे ॥
ब्रह्मज्ञानका मेरी इस रसनाके ऊपर रस दे ॥
देवीसिंहके सब वशमें होवें उनको ऐसा वश दे ॥
गाय औ कुत्ते जो कोई हने उनें तू अपयश दे ॥
बनारसीको श्रीमाता दरबार तू वह अमृतसर दे ॥
जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ ५ ॥

लावनी बहरजीकी शापमोचन ।

दुर्वासाजीका तो शाप हो गया वह उन्हें अशीश ॥ तर गये यादव विश्वे वीसजी ॥ तीर्थके ऊपर आये यादव करनेको स्नान ॥ वहां मच गया युद्ध घमसानजी ॥ आपसमें सब लडे कटे देखते रहे भगवान ॥ आया फिर सबके लिये विवानजी ॥ अपनाभी तनु त्यागा हरिने किया न कुछ अरमान ॥ धरो तुम श्रीकृष्णका ध्यानजी ॥ सारे कुलको तार दिया कोई करे क्या उनकी रीस ॥ तर गये यादव विश्वे वीसजी ॥ १ ॥ यादव तो सब स्वर्ग गये गये परम धाम हरि आप ॥ वोही सर्वज्ञ रहे हैं व्याप जी ॥ भार उतारा पृथ्वीका सब दूर किया संताप ॥ न उनको पुण्य न उनको पाप जी ॥ अशीश करके माना प्रभुने दुर्वासाका शाप ॥ जपो सब नारायणका जाप जी ॥ वेद शास्त्र यह कहै वही थे नारायण जगदीश ॥ तर गये यादव विश्वे वीस जी ॥ २ ॥ युद्धमें मरना बडा धर्म है यह क्षत्रीका काम ॥ इसीसे मचा वहां संग्राम जी ॥ मर्त्यलोकको तजा मिला

यह स्वर्गका उत्तम धाम ॥ यहांसे वहां है बडा आराम जी ॥ मौत-से जो सब मरते तो फिर हो जाते वदनाम ॥ युद्धमें मरे तो पाया नाम जी ॥ इस कारण श्रीकृष्णने अपने कुलका कटाया शीश ॥ तर गये यादव बिश्वे बीश ॥ ३ ॥ अब तो भार बडा पृथ्वी पर चारों तरफ है काल ॥ सूख गये नद्दी नाले तालजी ॥ कोयलोंकी है खान बहुतसी गुप्त हो गये लाल ॥ लोटने लूट लिया धन माल जी ॥ देवीसिंह कहे बनारसीसे जपो नाम गोपाल ॥ देखिये कब प्रकटें नंदलालजी ॥ दुरवासा और श्रीकृष्ण यह दोनों एक थे ईश ॥ तर गये यावदविश्वे बीश जी ॥ ४ ॥

वनकायामेंमनमृगचारोंतरफचौकडीभरताहै ॥ विनापैरसेदौडताविनमुखचाराचरताहै ॥ विनानेत्रसेदेखेसबकोविनादांतदानाखावे ॥ सबकहींजावेऔरयहकहींनहींआवेजावे ॥ विनजिह्वासेवातकरै औरविनाकंठगानागावे ॥ विनासींगसेलडैऔरबडेबडेदलहटावे ॥ बहुत सिंहडरतेइससेयेकिसीसेंभीनहींडरताहै ॥ विनापैरसेदौडताविनमुखचाराचरताहै ॥ १ ॥ विनखुरखोदेसकलजगत्कोऐसायहमदमाताहै ॥ विनइंद्रीसेभोगकरताहैयहीयतीकहलाताहै ॥ नहीं इसकेकोईतातमात नहींकुटुंबकबीलानाताहै ॥ आपीपैदाहोयवोआपीमेंआपसमाताहै ॥ सबरंगोंसेन्याराहैऔरहरएकरूपकोधरताहै ॥ विनापैरसेदौडताविनमुखचाराचरताहै ॥ २ ॥ विनाजीवकामांसखायथेकिसीकोभीनहिंमारैहै ॥ जिसकोमारेएकपलभरमेंउसेसुधारैहै ॥ विनाकानसेसुनतासबकीजोकोईउसेपुकारैहै ॥ ऐसेज्ञानकीकोईभीसाधूसंतविचारैहै ॥ तीनोंलोकमेंफिरतायहमृगभवसागरमेंतिरताहै ॥ विनापैरसेदौडताविनमुखचाराचरताहै ॥ ३॥ विनानासिकालेवैवासनाहरएकचीजकीखु शबोई ॥ आपीआपहैअकेलाऔरनइस्केसंगकोई ॥ देवीसिंहयहकहै किजिसनेबुद्धिनिर्मलकरधोई ॥ अपनीआत्माजानताइसमृगकोजाने सोई ॥

बनारसीनेदेखायहमृगनाहिंजनमेंमनहिंमरताहै ॥ विनापैरसेदौडताविनमुखचाराचरताहै ॥ ४ ॥

रहसमंडल निर्गुण–बहर लंगडी ।

इसतनुमेंआत्माकृष्णहैओरगोपीग्वालोंकादल ॥ सुनोकानदेव नाहैतनमेंमेरेरहसमंडल ॥ विश्वकर्मानेआज्ञापा करशीघ्रमहलतैयार किया ॥ अनहदबाजोंकाउसमेंसम्पूरणविस्तारकिया ॥ चारोखंभेलगायेउसमें ऐसासुन्दरकारकिया ॥ खुशीहुयेहमतोमैनेरहसकाबहीविचारकिया ॥ सबकोसाथलेआयामैंदिखलायाउन्हेंभवनउज्वल ॥ सुनोकानदेवनाहैतनमेंमेरेरहसमंडल ॥ १ ॥ मनऊधोजीमित्रहमारेसदासे हैंआज्ञाकारी ॥ बुद्धिराधिकासोमेरेप्राणोंकोहैअतिप्यारी ॥ नेत्रकरनमुखदन्तकण्ठसबसखाहमारेहितकारी ॥ लभहैललितावहुतसुन्दरसोभासबसेन्यारी ॥ बलहैसोबलभद्रहमारेभ्राताजिनकाअटूटतबल ॥ सुनोंकानदेवनाहैतनमेंमेरेरहसमंडल ॥ २ ॥ हजारइक्कीसछःसैश्वासासोसबसखियांसंगआई ॥ बोतोसमझीहमेंयेकृष्णहमारेहैंसाईं ॥ गलेसेमेरेलपटलपटक्याक्याहीतानसुंदरगाई ॥ बजाईवंशीजोमैंनेअनहद्दतोसब चिलमाई ॥ प्रेममेमगनभईब्रजवनिताकामनेकियाबहुतव्याकुल ॥ सुनोकानदेवनाहैतनमेंमेरेरहसमंडल ॥ ३ ॥ नौनारीथीपतिव्रतासोभी आईसबपासमेरे ॥ रूमरूमकोसखासमझोयासमझोदासमेरे ॥ मेरीलीलादेखदेखनहिंहोतेमित्रउदासमेरे ॥ वर्णनकरतेहैंगुणकोजगतमेंवेदव्यासमेरे ॥ मैंतोहोंआत्माकृष्णयेशरीरमेराहैमंदल ॥ सुनोकानदेवनाहैतनमेंमेरेरहसमंडल ॥ ४ ॥

आयेवहांगोपिकाबनकेज्ञानरूपश्रीगोपेश्वर ॥
मैनेउनको लखा ओगोपी नहीं है शिवशंकर ॥
पूजन करके पासबिठाया रहसदिखाया अतिसुंदर ॥

कहां लौं वर्णनकरूं इस कायामेंहै चराचर ॥
बनारसीसच्चिदानंदचैतन्यरूपनिर्गुणनिर्मल ॥
सुनो कानदे बनाहै तनमें मेरे रहसमंडल ॥ ९ ॥

लावनी सुदामा चरित्र–बहर छोटी ।

श्रीकृष्णने देखा आये मित्र सुदामा ॥ करजोर खडे हो गये वसुधा अभिरामा ॥ नंगे पैरों तनु दुर्बल वस्त्र मलीना ॥ कुछ शोचन कियो लगाय कंठसे लीना ॥ अँसुवन जलसे प्रभु सींचत चरण प्रवीना ॥ विनती करके हरि बोले वचन अधीना ॥ इतने दिन तुम कहां रहे कहो क्या कीना ॥ दुखको सुख समझे धन्य तुमारा जीना ॥ तुमने पवित्र यह कियो मेरो सब ग्रामा ॥ करजोर खडे होगये वसुधा अभिरामा ॥ १ ॥

उबटन करके गंगाजलसे नहलाया ॥ फिर रत्नसिंहासनपर उनको बिठलाया ॥ षट्रस भोजन अतिप्रेमसे उन्हें जिमाया ॥ फिर कहा मुझे भावजने क्या भिजवाया ॥ लिये खोल वह तंदुल रुचि रुचि भोग लगाया ॥ दोफंके मारे दिखाई अपनीमाया ॥ तीसरी बार रुक्मणीने करको थामा ॥ करजोर खडे होगये बसुधा अभिरामा ॥ २ ॥

फिर लडकेंयोंकी सारी कही का हानी ॥ वह करें बात और सुने रुक्मणी रानी ॥ कहे रुक्मणी यहहैं सखा तुम्हारे ज्ञानी ॥ यह त्यागीभी हैं और हैं निरअभिमानी ॥ इनके प्रतापसे मिली तुम्हें रज धानी ॥ सारी बसुधा मैंने इनहीकी जानी ॥ कहैं कृष्ण रुक्मणी धन्य है उनको जामा ॥ करजोर खडे होगये बसुधा अभिरामा ॥ ३ ॥

कहै कृष्ण सखा तुम थके बाटके हारे ॥ अब शयन करो यह बिछे हैं पलँग तुम्हारे ॥ फूलोंकी सेज फूलोंके तकिये न्यारे ॥ भये मगन सुदामा उसपर आप पधारे ॥ श्रीकृष्णने उनके चरण दबाये सारे ॥ और अंग अंग सब मला वह ऐसे प्यारे ॥ दिनभर उनकी सेवा

की और सब कामा ॥ करजोर खडे हो गये वसुधा अभिरामा ॥ ४ ॥

जब सांझभयी तब मेवा और मिठाई ॥ वह रत्न जड़ित थालीमें आपलगाई ॥ लेगये सुदामाके आगे यदुरायी ॥ जोरुची होय तो खाव हमारे भाई ॥ मैं कहांतलकसे आपकी करूं बडाई ॥ जिसने तुम्हें जाया धन्य तुम्हारी माई ॥ मै आठपहेरभूलो नहीं तुमरो नामा ॥ करजोर खडेहो गये बसुधा अभिरामा ॥ ५ ॥

फिर बुलायकेगंधर्वसुनायागाना ॥ वहींडोलमेघमलारऔरराग शहाना ॥ कहेकृष्णकोयींसे तुमभीचीनवजाना ॥ यहमित्रहमारेइनकों खूबरिझाना ॥ बजीसारंगीसरनायीऔररबाना ॥ कोईमूरखनहींथा सबीलोंगथेंदाना ॥ कहेकृष्णसुदामासेतुमहोनिःकामा ॥ करजोर खडेहोगयेबसुधाअभिरामा ॥ ६ ॥

फिरसोयेसुदामासुखसेंरैनगुजारी ॥ भयाभोरतोलायेहरीकंचन कीझारी ॥ मुखधोयसुदामानेयहबातविचारी ॥ जोमुझेकृष्णकुछदें तोलज्जाभारी ॥ वहअंतरजामीआपश्रीगिरिधारी ॥ पहिलेहीउनकेघर भेजदिमायासारी ॥ चलतीविरियांतोदियोनएकोदामा ॥ करजोर खडेहोगयेबसुधाअभिरामा ॥ ७ ॥

फिर चले सुदामा घरको नंगे पैयां ॥ वह भयो सगुन मिलगयी राहमें गैयां ॥ पानीभी बरसा और बादलकी छैयां ॥ करें यादे कृष्णकी और अपनी लडकैयां ॥ जो मुझे कृष्ण कुछ देते मेरे सैयां॥ तो बडी शर्म मुझ होती मेरे गुसैयां ॥ मुझ सब कुछ दियो कियो मुझे परनामा ॥ करजोर खडे होगये बसुधा अभिरामा ॥ ८ ॥

फिर जाय सुदामा पहुंचे अपने घरको ॥ नहीं मिली कटी देखा कंचन मंदरको ॥ नारीने उनकी देखा अपने बरको ॥ कहाडरो नहीं तुम आजावो भीतरको ॥ वह आप उतरआई और पकड लिया करको ॥ कहा सुनो पती तुम देख आये गिरिधरको ॥ फिर कही द्वा-

रकाकी सब बात सुदामा॥करजोर खडे हो गये बसुधा अभिरामा॥९॥
जो इस चरित्रको सुने और कोयी गावे ॥ वह भुक्त मुक्त संपूर्ण पदारथ पावे ॥ जो प्रेम सहित भक्तीके छंद बनावे ॥ वह अंतकालमें अमरलोक पुर पावे ॥ कहे देवीसिंह श्रीकृष्णसे जो लव लावे ॥ सुन बनारसी वह आपमें आप समावे॥संपूर्ण सुदामाके हरने किये कामा ॥ कर जोर खडे हो गये बसुधा अभिरामा ॥ १० ॥

होली कृष्णवियोगकी विरहननायका–बहर छोटी।

गयेकृष्णद्वारकाअबमतहोलीगावो ॥ सुनसखीचलोहोलीमेंआगल गावो ॥ अँशुवनसेभरकरनयननकीपिचकारी ॥ अबइसीरंगसेभिजा लोचूनरसारी ॥ रोरोकेपुकारोकहांगयेगिरिधारी ॥ सबदेखेंआँखियां लालगुलालतिहारी ॥ छातीकोपीटकरबाजनवहीबजावो ॥ सुनसखी चलोहोलीमेंआगलगावो ॥ जिसविधिसेसुलगेंहोलीमें अंगारे ॥ उसवि-धिसेछातीजलेविरहकेमारे॥ऊधोमाधोकोलेकरकहांपधारे॥ औरनंदभी आयेपलटवोअपनेद्वारे॥ फेंकोअबीरअबशिरपरधूलउडावो॥ सुनसखी चलोहोलीमेंआगलगावो ॥ विनकृष्णसखीकोअपनीगालीखावै ॥ मोह नविनसबकोकंठसेकौनलगावै ॥ हैंफूटेअपनेभाग्यनफागसुहावै ॥ क्षेवे हायाबेशरमजोहोलीगावै ॥ ऐसीहोलीजलगईकोऔरजलावो ॥ सुनस खीचलोहोलीमेंआगलगाओ ॥ जोविधनानेकुछलिखासोहोनीहोली ॥ गयेकृष्णद्वारकामाराविरहकीगोली ॥ मोहनविनअबहम किससेकरें ठठोली॥ किसविधिमनकोसमझावेंबालीभोली॥ कहैबनारसीअबब्रजसे फागउडावो ॥ सुनसखीचलोहोलीमेंआगलगावो ॥

लावनी रामकृत रामायण–बहर लंगडी।

इंद्रजीतको कौन जीतता जो पै लषण नाहिं होते बीर॥
महावीरसे कहें यह बात श्रीपत श्रीरघुवीर ॥
रावणके घरमें तो कोयी नहीं इंद्रजीतसा था बलवान ॥

त्रैलोकीमें कोयीको मिला नहीं ऐसा वरदान ॥
बारा बरस नहीं शैन करे नहीं करे जगत्में खानोपान ॥
रहे जितेंद्रिय कहें यह रामचंद्र सुन ल्यो हनुमान ॥
शेर–लषण नहीं साथमें होते तो वह मारा नहीं जाता ॥
तो लंकासे मैं सीताको अवधमें किसविधि लाता ॥
बडी प्रारब्धसे मुझकों मिले ऐसे मेरे भ्राता ॥
यह जिनकी कोखमें जन्मे वह इनकी धन्य हैं माता ॥
इंद्रजीतकों छेदन कर दिया श्रीलक्ष्मणके ऐसे तीर ॥
महावीरसे कहें यह बात श्रीपत श्रीरघुवीर ॥ १ ॥
इंद्रने रावणको बांधा तो इंद्रजीत ले गया छुडाय ॥
बडा बली था वह जिस्के तेजसे त्रैलोकी थर्राय ॥
शक्तीबाण था पासमें उस्के काल देख जिस्को भयखाय ॥
धन्य यह लक्ष्मणके ऐसी चोट किसीसे सही न जाय ॥
शेर–यह मेरे प्राणपर बीती जो इनकों मूर्च्छा आई ॥
कहा मैंने मिलेंगे किस विधी मुझको मेरे भाई ॥
मरेगा किस बिधी रावणका सुत निश्चर वह दुःखदाई ॥
मैं इनके सोगमें भूला जो कुछ थी मेरी प्रभुताई ॥
हाथ पांव सब शिथल हो गये थमें नहीं नयनोंसें नीर ॥
महाबीरसे कहें यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥ २ ॥
कुंभकर्ण रावणका मारना तुच्छ था सो मैंने मारा ॥
मेघनादके मारनेमें न चला मेरा चारा ॥
ऐसा कोयी नहीं बली था वह जिस जिस्कों मैंने संहारा ॥
इंद्रजीतसे इंद्रभी लडा तो एक पलमें हारा ॥
शेर–भरोसा था फकत् रावणको अपने सुतके तीरोंका ॥
मरा जिस वक्त वह बल घट गया सबके शरीरोंका ॥
हुवा तप क्षीण एक क्षणमें वह सब रावणके वीरोंका ॥

मुकुटभी गिर पड़ा रावणके शिरसे था जो हीरोंका ॥
पड़ासोग रावणकी लंकमें कोयी धरे नहीं मनमें धीर ॥
महावीरसे कहैं यह बात श्रीपत श्रीरघुवीर ॥ ३ ॥
रामचंद्र यह कथा कहैं और हनूमान सुनते चितलाय ॥
रोम रोममें वह उनके नाम रामका रहा समाय ॥
श्रीलक्ष्मणके प्रतापसे रावणको जीते श्रीरघुराय ॥
कहे देवीसिंह अब इसके अर्थ कोयी क्या सके लगाय ॥
शेर–यह शोभा लक्ष्मणजीकी बखानी रामने आपी ॥
और जो सामर्थ्य थी उनमें वह जानी रामनें आपी ॥
करी स्तुति कही सुंदर वह बानी रामने आपी ॥
वह जो थी बात लक्ष्मणकी वह मानी रामने आपी ॥
बनारसी कहे इंद्रजीतको हना लषण ऐसे रणधीर ॥
महावीरसे कहैं यह बात श्रीपत श्रीरघुवीर ॥ ४ ॥

होली निर्गुण–बहर लंगड़ी।

साधु संत खेलें होली निशि दिन अपनी आत्माके संग ॥
भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥
प्रेमकी पिचकारी जिसको मारें उसको रंग लाल करें ॥
एकदम भरमें वह तो कंगालको मालामाल करें ॥
ज्ञान गुलालसे भर दे झोरी सब जगकी प्रतिपाल करें ॥
जन्म मरणका दूर इस दुनियासे जंजाल करें ॥
शेर–उन्हे कुछ काम न दुनियाकी इस लड़ाईसे ॥
बुराईसेंभी न मतलब न कुछ भलाईसे ॥
उन्हें कुछ लाख गालियां दे तो ओ कुछ न कहैं ॥
सदा वह हँसते रहें जगतकी हँसाईसे ॥
उनके साथमें खेले होली श्रीगंगाजीकी ओ तरंग ॥

भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥ १ ॥
संत तो हैं वे लाग किसीसे कभी नहीं रखते वह लाग ॥
धन्य वह नर हैं जो कोयी खेलें वह सतगुरूसे फाग ॥
कभी नहीं सोवें निशि दिन वह ज्ञान रात्रीमें रहे जाग ॥
जिनके मनमें प्रेम और प्रीतिका है पूरण वैराग ॥
शैर—सदा वह रामकृष्णजीका भजन गाते हैं ॥
दुरंगी छोडदी एकरंगमें रंगराते हैं ॥
उन्हें कुछ इंद्रके पदवीसे सरोकार नहीं ॥
वह अपनी मस्तीमें हैं मस्त और मदमाते हैं ॥
काम क्रोधका मार कुमकुमा करें वो अपने मनमें जंग ॥
भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥ २ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब लेलेके अबीर ॥
खेलें होली वह निर्गुण संग साध संतनकी भीर ॥
ज्ञानमें हैं मदमाते और रंगराते उनके शुद्ध शरीर ॥
कबीर देखें वह होली कबीरभी फिर कहे कबीर ॥
शैर—पहेनके भक्तीके भूषणका वह शृंगार करें ॥
गले निर्गुणके लगें ब्रह्मका विचार करें ॥
ज्ञानकी आगमें वह कर्मकी होली दें जला ॥
न पुण्य पापसे मतलब वह यह पुकार करें ॥
जब जब जन्म धरें पृथ्वीपर तब तब उनकों यही उमंग ॥
भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥३॥
दया धर्मकी खेल धुरैहरी होलीका उद्धार करें ॥
ऐसे साधू जो हैं वह कभी न मारामार करें ॥
प्रह्लादनें खेली होली यह देवीसिंह पुकार करें ॥
पूरे साधू जो हैं वह परमेश्वरको यार करें ॥

शैर—जो कोयी योगसे करता है भोग होलीमें ॥
उसे होता न कभी कष्ट रोग होलीमें ॥
जो कोयी मेरी यह होलीके अर्थ जानेगा ॥
उसे होगा न कभी यारो सोग होलीमें ॥
बनारसीने ऐसी होली कही कि होलका होगयी दंग ॥
भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥ ४॥

ख्याल गौकी रक्षा श्रीकृष्ण करें—बहर छोटी ।

गोपाल हो तो सब गौवोंको पालो ॥ दुष्टोंको मारो तनिक न देखो भालो ॥ यह तृण चुग लेवे अमृत दूधकों देवें ॥ यह सबको देवें कोईसे कुछ नहिं लेवें ॥ हैं धन्य वह उनके भाग्य जो इनकों सेवें ॥ उनकी नैया भवसागरमें हरि खेवें ॥ सारे कसाइयोंके अब घरको घालो ॥ दुष्टोंको मारो तनिक न देखो भालो ॥ १ ॥

गये कितनेही युग बीत इन्हें दुःख भारी ॥ यह बिना गुन्हा तकशीर हैं जाती मारी ॥ निश्चय कर देखो यह सबकी मेहतारी ॥ यह अर्ज मेरी अब सुन लीजे गिरिधारी ॥ सारी पृथ्वी परसे यह पाप उठा लो ॥ दुष्टोंको मारो तनिक न देखो भालो ॥ २ ॥

हो कोयी जात जो माँस गायका खावे ॥ तो उसे वह मालिक दोजकमें पहुँचावे ॥ नहीं कहीपर ऐसा लिखा जो मुझे दिखावे ॥ वह बेईमान बदजात जो इन्हें सतावे ॥ जो इनकों मारे उसे कतल कर डालो ॥ दुष्टोंको मारो तनिक न देखो भालो ॥ ३ ॥

हैं बडे वह उनके सींग न तनिक चलावें ॥ जो जराभी घुरको बहुतसा यह डर जावें ॥ माता मर जाय फिर यही तो दूध पिलावें ॥ यह देवीसिंह और बनारसी सच गावें॥गौवोंके द्रोहीको श्रीकालिका खा लो॥ दुष्टोंको मारो तनिक न देखो भालो ॥ ४ ॥

बहर लंगडी ।

उधर राधिका सखियोंके सँग इधर ग्वाल ले कृष्णमुरार ॥

खेले होली परस्पर श्रीराधा और नंदकुमार ॥
उधर तो केसरका रंग बरसे और वह सुंदर पडे फुहार ॥
इधरसे चलते कुमकुमे दोऊ तरफों मारामार ॥
उधरसे राधा दौडके आवें संग लिये सब व्रजकी नार ॥
इधरसे झपटे कृष्ण संग ग्वाल बालके करें बहार ॥
शैर–उधरसे राधिका श्रीकृष्णजीको प्यार करें ॥
इधरसे कृष्णभी राधाके संग विहार करें ॥
वह होली हो रही दोनों तरफसे रंग भरी ॥
गगनमें देवते देखें तो ये विचार करें ॥
इनकी महिमा लखी न जावे ये दोऊ है अपरंपार ॥
खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नंदकुमार ॥
उधर राधिका अद्भूत तन पर किये वह मणियोंके शृंगार ॥
इधर कृष्णके शीशपर मोर मुकुटकी लटक अपार ॥
उधर भीज रही कुसुंम सारी गलेमें वह मोतियनके हार ॥
इधर पीतपट वह तर और वनमाला शोभित गुलजार ॥
शैर–उधरसे राधिका श्रीकृष्णसे पुकार करें ॥
इधरसे कृष्णभी ग्वालोंके संग गोहार करें ॥
वह होली मधुवनमें जिसका अंत नहीं ॥
और ऐसी होलीकी महिमाभी वेद चार करें ॥
थकित हो गई शेषकी जिह्वा हजार मुखसे व दो हजार ॥
खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नंदकुमार ॥
उधरसे राधा गुलाल फेकें भरभर मुट्ठी विना सुमार ॥
इधरसें मोहन वह मारे तक तक पिचकारीनकी धार ॥
उधरसें राधा दें सीठनी और सखीयनकी खडी कतार॥
इधरसे गावें वह गाली गोविंद और सब उनके यार ॥

शैर—उधरसे राधिका श्रीरागका उच्चार करें ॥
इधरसे कृष्णभी वंशीकी वह झणकार करें ॥
उधर तो बज रहे डफ ढोल इस धडाकेसे ॥
इधरसे ग्वालभी शंखोंकी धुधुकार करें ॥
उधरसे तो गावें हिंडोल मिलके इधरसे गावें मेघ मल्हार ॥
खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नंदकुमार ॥
उधर नाचती सखी तथैथै देंदै ताली बारंबार ॥
इधर थिरकते ग्वाल सब लिये हाथमें बीन सितार ॥
उधर राधिका देख कृष्णको अपना तन मन धन दे वार ॥
इधर कृष्णभी वह मोहित श्रीराधाको रहे निहार ॥
शैर—उधर क्या राधिका श्रीकृष्णसे करार करें ॥
इधरका भेद बतावो तो बेडा पार करें ॥
उधरसें राधिकाजीकी जो भजे भक्तिमिले ॥
इधरसे कृष्णभी भक्तोंका वह उद्धार करें ॥
देवीसिंह कहे बनारसी हरि अब पृथ्वीका उतारो भार ॥
खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नंदकुमार ॥

होली बहर बहुत छोटी अद्भुत।

खेलते होली ब्रजमें नंदलाल ॥ मचो वह खूब धमाल ॥
चलें वह हँसहँसके लटपट चाल ॥ हाथमें लिये गुलाल ॥
बजावें बनसी दे देके ताल ॥ गावें ध्रुपद ख्याल ॥
शैर—कृष्ण तो हाथमें लेकर बहुत अबीर चले ॥
गुलाल भरके वह झोली सुनो बलबीर चले ॥
उधरसे राधिका सखियोंको साथ ले धाई ॥
इधरसें साथमें इनके बहुत अहीर चले ॥
गालियां गावें हँस हँस गोपाल ॥ मचो वह खूब धमाल ॥

बहुतसा राधा रंग दीनो डाल ॥ बने कृष्णजी लाल ॥
मलें मुख रोरी और चुमे गाल ॥ सखियां भयी निहाल ॥
शैर–कोईको होशभी मुतलक न रहा होलीमें ॥
गलीमें कुंजनकी औ रंग बहा होलीमें ॥
कोई लपटें कोई झपटें व कोई शोर करें ॥
कोई बेहोश हुई कुच न कहा होलीमें ॥
हाल कोईका हो गया बेहाल ॥ मचो वह खूब धमाल ॥
कोईके मुखडेपर बिखरे बाल ॥ पडा हो जैसे जाल ॥
कोईके माथेपर केशर भाल ॥ कोईके बिंदी लाल ॥
शैर–कोई गाते और बजाते वह लिये ढोल चले ॥
हरेक साथमें अपना वह लिये गोल चले ॥
किसीके हाथमें केसरकी भरी पिचकारी ॥
कोई तो रंगभी टेसूका बहुत घोल चले ॥
सुनो तुम ब्रजका सारा अहवाल ॥ मचो वह खूब धमाल॥
कोई दौलत वर कोई कंगाल॥ सबका रूप विशाल ॥
कहे यह देवीसिंह अद्भुत ख्याल ॥ बजा चंग करताल ॥
शैर–यह ढंग सबसे निराला बनारसीका सुनो ॥
ख्यालभी सबसें हैं आला बनारसीका सुनो ॥
किसीकी शायरीमें लुतफ् कहां होता है ॥
सखुन यह सबपे है बाला बनारसीका सुनो ॥
मगन भये सुनके यह तीनों ताल॥ मचो वह खूब धमाल॥

योगाभ्यास।

सुख मनमें तो तब होवे जब प्राणायाम परायन हो ॥
ऊर्ध्वमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायन हो ॥
षटचक्रके ऊपर उत्तम सतम चक्र सुदरशन है ॥

निराकार अव्यय अविनाशी ज्योतिरूपका दरशन है॥
द्वैत नहीं उसमें किंचित् अद्वैत वह दरशन परशन है॥
और काम है सहज कठिन यक वोही तो आकरशन है॥
अनहद बाजे बजें वहांपर दीपक रागका गायन हो॥
ऊर्द्धमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायन हो॥ १॥
नाभिकमलमें ब्रह्मा और हिरदेमें विष्णू भोग करें॥
मस्तकमें शिव करें तपस्या तपें और पूरन योग करें॥
जो प्राणी तीनों गुणसे हो रहित और सदा वियोग करें॥
परमहंसके दरशन तो इस जक्तमें वोही लोग करें॥
चाहे स्त्री पुरुष होय या योगी यती गोसाँयन हो॥
ऊर्द्धमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायन हो॥ २॥
जहां अग्नि नहिं पवन न पानी और नहिं नदी नाला है॥
चले न चन्दा सूर्य वहांपर आपी आप उजाला है॥
सत्त चित्त आनंदरूप वह गोरा नहीं न काला है॥
हर रंगमें हर झलक रहा पर सबसे रहे निराला है॥
जब प्राणी यह जन्म लेय तो पैदा उलटे पाँयन हो॥
ऊर्द्धमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायन हो॥ ३॥
खुले आँख जब भीतरकी तब दिव्य दृष्टि हो जाय उसे॥
महाकाल वह आप बने और काल नहीं फिर खाय उसे॥
देवीसिंह यह कहे देख तो ब्रह्मको ध्यान लगाय उसे॥
बनारसी तू वोही तो है सद्गुरुने दिया लखाय उसे॥
लख चौराशीसे छुट जावें भूत प्रेत नहिं डायन हो॥
ऊर्द्धमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायन हो॥ ४॥

त्याग देह अभिमानका—बहर खड़ी।

नहीं मिले हरधन त्यागे नहीं मिले रामजी जान तजे॥

नारायन तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजे ॥
सुत दारा या कुटंब त्यागे या अपना घरवार तजे ॥
नहीं मिलें प्रभु कदापि जगत्का सब व्यवहार तजे ॥
कन्द मूल फल खाय रहे और अन्नकाभी आहार तजे ॥
वस्त्रको त्यागे नग्न हो रहे पराई नारि तजे ॥
तौभी हर नहिं मिले यह त्यागे चाहे अपने प्राण तजे ॥
नारायन तो मिले उसको जो देह अभिमान तजे ॥
तजे पलंग फूलोंका और चाहे हीरे मोती लाल तजे ॥
जातको अपनी तजे और कुलकी सारी चाल तजे ॥
बनमें निशि दिन विचरें और इस दुनियाका जंजाल तजे ॥
देहको अपनी जलावे शरीरकीभी खाल तजे ॥
ब्रह्मज्ञान नहीं हो तोभी चाहे वो अपनी सान तजे ॥
नारायन तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजे ॥
रहे मौन बोले नहिं मुखसे अपनी सारी बात तजे ॥
बालपनेसे योग ले तात तजे या मात तजे ॥
शिखा सूत्र त्यागन कर दे और उत्तम अपनी जात तजे ॥
कभी जीवको न मारें घात तजे अपघात तजे ॥
इतना तजे तो क्या होवे जो देहका नहीं गुमान तजे ॥
नारायन तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजे ॥
रहे रात दिन खडा न सोवे पृथ्वीकीभी शैन तजे ॥
कष्ट उठावे रहे बेचैन औ सारी चैन तजे ॥
मीठा होकर बोले सबसे कडुये अपने बयन तजे ॥
इतना त्यागे औ देह अभिमान नहीं दिन रयन तजे ॥
बनारसी कहे उसे मिलें नहीं हरि चाहे सकल जहान तजे ॥
नारायन तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजे ॥

होली संतमार्गी निर्गुण–बहर लंगडी।

संत खेलते होली जिसमें इज्जत हुरमत लाज रहे ॥
गुणीजनोंके अगाडी अनंद बाजे बाज रहे ॥
ज्ञान गुलालके बादल छाये प्रेम रंग नित बरसामें ॥
ब्रह्मवादसे लडें औ भरम धूलको लडामें ॥
धीरजका डफ बाजे सङ्गसे नाम नारायणका गामें ॥
क्रोध कुमकुमा मारके काम शत्रुको हटामें ॥
दयाकी दौलत देते सबको सङ्गमें सची समाज रहे ॥
गुणी जनोंके ० ॥

अमर अबीरको साध लगावें मुक्त रूप पहने माला ॥
भस्मके भूषन झलकते तनपर मनमें उजिआला ॥
मन्त्र मिठाई सन्त पावते बहुत खूब सबसे आला ॥
अमृत रसको पियें और खोल देंइ घटका ताला ॥
नेह नाचको देखें हरिजन सत्त साजको साज रहे ॥
गुणी जनोंके ० ॥

लोकी लकडी लूट ले लाये आतमकी अगनी धरते ॥
हरहर होली जगावें वहीं नहीं जनमें मरते ॥
विज्ञानकि गाली देते हैं सन्त किसीसे नहिं डरते ॥
कष्टके कपडे पहिनकर कायाको निर्मल करते ॥
शील सितार सुनावें साधू नाम नक्कारे गाज रहे ॥
गुणी जनोंके अगाडी अनंद बाजे बाज रहे ॥
राम नामका शोर चलावें पर स्वारथकी पिचकारी ॥
जिसको मारें उसीके मुखपर लगती है प्यारी ॥
मिलें गले गोविन्दसे चलके आप जियें गिरिवरधारी ॥

भावभोगको करें हैं वही यती वही ब्रह्मचारी ॥
शुद्ध सिंहासन पर चढ बैठे तीन लोकमें राज रहे ॥
गुणी जनोंके ० ॥

तीरथकी फेरी फिरते हैं सुमत सामग्री ले जाते ॥
पूजैं होली गुणीजन ब्रह्मज्ञानमें मदमाते ॥
देवीसिंह यों कहै कि ऐसी होली जो कोई गाते ॥
भवसागरके पार हो परमधाम पदवी पाते ॥
बनारसीने हरिको पाया किसीके नहीं मौः ताज रहे ॥
गुणी जनोंके ० ॥

ख्याल श्रीदुर्गाजीका चारों पदार्थ देनेवाला-बहर लंगडी।

सरस्वती विद्या देवे और अन्न पूरणा अन देवे ॥
ज्ञान दे गवरी और धौलागढवाली धन देवे ॥
यमुना यमसें छुटा दे और गंगा परमगती देवे ॥
नाम नर्मदा दे और सीता सुमत मती देवे ॥
ब्रह्मानी दे ब्रह्मविद्या रुद्रानी बड़ी रती देवे ॥
कमला देवे कामना प्रेम वोह पारवती देवे ॥
मंगल दे मंगलादेवी ललिता मुझे लगन देवे ॥
ज्ञान दे गवरी और धौलागढवाली धन देवे ॥
विन्ध्यवासिनी विन्द दे और योग योग माया देवे ॥
कृपा कमक्षा दे काली निर्मल काया देवे ॥
ज्वाला दे जिह्वापर यज्ञ माता पूरण माया देवे ॥
दया दे दुर्गा भवानी मेरे मन भाया देवे ॥
विद्या दे वे दांतसार भैरवी तो मोहिं भजन देवे ॥

ज्ञान दे गौरी और धवलागढवाली धन देवे ॥
त्रिकुटा त्रैगुण छुटा देवे और तुलसी परम तत्त्व देवे ॥
अष्टभुजी दे आठ सिद्धी और सती सत्त देवे ॥
वागेश्वरी दे वाक वाणी भगवती तो मोहिं भक्ति देवे ॥
तांत्र दे तारा और जयजंती जीत जगत देवे ॥
कोट कांगडा कोटिन वर दे रमाभि रामचरण देवे ॥
ज्ञान दे गवरी और धवलागढवाली धन देवे ॥
नयना देवी नयनमें सुख दे नारायणी नीत देवे ॥
कहे देविसिंह मुझे तो पुण्यागिरी प्रीत देवे ॥
बनारसीको जथजयवंती तीनों लोक जीत देवे ॥
गायत्री दे सकल गुण गोदावरी गीत देवे ॥
हिरदेमें श्रीहिंगलाज हितसे अपना दर्शन देवे ॥
ज्ञान दे गौरी और धवलागढवाली धन देवे ॥

ख्याल भगवतीका-बहर लंगडी।

नाम तुम्हारा गौरी है पर काहे रूप धरा काली ॥
रक्त वरण हो शारदा बनी रहे जगमें लाली ॥
तीनों गुणसे रहित है तू पर त्रयगुण तेरे हैं आधीन ॥
इस कारणते भगवती धरे रूप ये तुमने तीन ॥
सद्गुणसे पालना करे और रजसे राज करे परवीन ॥
तमगुणसे तो करे संहार तू है सबमें लवलीन ॥
भुक्ति मुक्तिकी दाता है तू ऋद्ध सिद्ध देनेवाली ॥
रक्त वरण हो शारदा बनी रहे जगमें लाली ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब तुझको ध्यावें ॥
अपार माया है तेरी पार न सुर नर मुनि पावें ॥

धन्य धन्य वह पुरुष हैं जो हिरदेसे तेरा गुण गावें ॥
नंगे चरणों तेरे दरबारमें इंद्रादिक आवें ॥
सप्तद्वीप नवखंड और चवदो भवनमें तेरी उजियाली ॥
रक्त वरण हो शारदा बनी रहे जगमें लाली ॥
ब्रह्मा तेरी गोदमें खेलें विष्णुको दूध पिलावे तू ॥
शिवशंकरको तांडव नृतका नाच नचावे तू ॥
बडे बडे असुरोंको मारकर मुंडकी माल बनावे तू ॥
कोटिन तेरी भुजा और असंख्य शस्त्र चलावे तू ॥
रक्तबीजका रक्त पिया एक बुंद न पृथ्वी पर डाली ॥
रक्त वरण हो शारदा बनी रहे जगमें लाली ॥
जिस्को तूने चक्रसे मारा चक्रवर्ती वह कहलाया ॥
पार न जिस्का कोई पावे वह है तेरी माया ॥
त्रिशूलसे छेदा जिस्को त्रिभुवनका राज्य उसने पाया ॥
कहे देवीसिंह तूने वैरियोंकोभी सुख दिखलाया ॥
बनारसी कहे दयावंत श्रीदुर्गे तू भोली भाली ॥
रक्तवरण हो शारदा बनी रहे जगमें लाली ॥

ख्याल निर्गुण कालीजीका-बहर लंगडी ।

यह काया फलका कलकत्ता इसीमें है कृष्णाकाली ॥
तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बडी शोभावाली ॥
मन मंदिरमें आप बिराजे खुशी खड्ग खप्पर धारे ॥
सतसिंह पर आनकर बैठी पद्मासन मारे ॥
मंत्र मधुर मधुपान करे त्रिलोकमें हो रहे जयकारे ॥
झपट झपटके काम और क्रोध दैत्य सब संहारे ॥
समताका शृंगार सजे तनुपर मनमें रहे खुशियाली ॥

तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बडी शोभावाली ॥
चमत्कारकी चार भुजा और रचना रुंडोंकी माला ॥
तेज और तपका खडा त्रिशूल जगतसे निरियाला ॥
चित्तका चक्र वह घूमें चारों तरफ मेरी जय जय ज्वाला
दुर्बुद्धीको मारकर टुकडे २ कर डाला ॥
दृढताका डमरू बाजे और सत्त ताल बजती ताली ॥
तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बडी शोभावाली ॥
बोधके वस्त्रको पहिने तनुपर प्रीतपुष्पके हार गले ॥
बुद्धि वेदको पढे और दया धर्मकी चाल चले ॥
लोभ मोह दो चंड मुंड हैं इन दोनोंके दल्ल दले ॥
ऐसी काली बसे कायामें अगमकी लाट बले ॥
जगमग जगमग जगे ज्योति यश कीरतकी है उजियाली ॥
तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बडी शोभावाली ॥
करे भलाईके भोजन और ज्ञान गंगजल नित्त पिये ॥
जोगकी जोगन भावके भूत और भैरव संग लिये ॥
विद्याके बीडे चाभे और तिलसमातकें तिलक दिये ॥
कहे देवीसिंह हैं उनके बडे भाग्य जिन दरश किये ॥
बनारसी यह कहे मेरे वह घटमें करती रखवाली ॥
तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बडी शोभावाली ॥

ख्याल शरीरकी रक्षा-बहर लंगडी ।

हिरदेमें है हिंगलाज करें काज लाज रखनेवाली ॥
नयना देवी नयनमें बसे हँसे दे दे ताली ॥
शीशमें सीता सती विराजे सावित्री संकटा रानी ॥
मस्तकमें रहे आप श्रीमहाविद्या और महारानी ॥

भृकुटीमें करे वास भैरवी भय माने सब अभिमानी ॥
ब्रह्ममें अपने विराजे विन्ध्याचल और ब्रह्मानी ॥
बसें नाशिकामें नवदुर्गे नगर कोट लाटोंवाली ॥
नयनादेवी नयनमें बसे हँसे दे दे ताली ॥
मुखमें बसे मंगला देवी सब कारज कर दे मंगल ॥
होठमें हेमावती रहें क्षणमें काट देवे कलमल ॥
जिह्वामें जाह्नवी और यमुना सरस्वती सबसे निर्मल ॥
गलेमें गवरी और गायत्रीका जप नाम अटल ॥
कंठमें बसे कालिका देवी कंकाली और महाकाली ॥
नयनादेवी नयनमें बसे हँसे दे दे ताली ॥
करणमें कमला और कात्यानी कृपारूप अद्भुत माया ॥
दोनों भुजामें भवानी बसे बडा सुख दिखलाया ॥
उरमें बसे उमा उत्तरायणी उग्रतेज उनका छाया ॥
कहांलग वर्णूं लखी नहीं जाती है अपनी काया ॥
बुद्धिमें बसे विधाता माता बडी बुद्धि देनेवाली ॥
नयना देवी नयनमें बसे हँसे दे दे ताली ॥
रोमरोममें रमी रमा और नाभि कमलमें निर्वानी ॥
कहै देवीसिंह इसे कोइ पहिचाने चातुर ज्ञानी ॥
श्वास श्वासमें शक्ती बोले ध्यान धरें पूरे ध्यानी ॥
बनारसी कहे मुझे भगवतीकी भक्ति मन मानी ॥
मेवा और मिष्टान हार फूलोंकी नित्य चढती डाली ॥
नयना देवी नयनमें बसे हँसे दे दे ताली ॥ १ ॥

रामचंद्रके स्वरूपका वर्णन–बहर लंगडी ।

निर्गुण ब्रह्म श्रीरामचंद्र भये सगुण ब्रह्म और श्याम बरण ॥
आनन परते मैं हरीके वारूं रवीकी कोटि किरण ॥

घूंघरवाली अलकनपर मैं श्याम घटा वारूं और घण ॥
शेषनागकीभी जिह्वा वारूं और कालीका फण ॥
मस्तक पर शशि वारूं केशर मुश्क और मलयागिरि चंदन ॥
भ्रुकुटी परसे धनुष वारूं और करूं फिर मैं धन धन ॥

शैर–रामके नामपै वारूं मैं सैकडो रावण ॥
फिर वारूं इंद्रजीत और वह बली कुंभकरण ॥
और उनके ध्यानपै वारूं मैं योगियोंकी यतन ॥
बडे है सबमें वही जिनकी है प्रभुसे लगन ॥
पलकोंपर मैं बाण वारूं और चितवन पर वारूं खंजन ॥
आनन परते मैं हरिके वारूं रवीकी कोटि किरण ॥
नेत्रपर उनके कमलको वारूं और जंगलके काले हरिण॥
अमृत वारूं हलाहल वारूं और मदिराकी फवन ॥
खांडा बिछुवा खंजर वारूं औ बांकका वारूं बांकपन ॥
अपने नेत्रभी मैं वारूं स्वामीका करके दर्शन ॥

शैर–रामके रूपपर वारूं मैं सोलहो लक्षण ॥
औ उनके तेजपै वारूं मैं विश्वभरकी अगन ॥
बातपर उनकी बनाकर मैं वारूं कोट भजन ॥
दयापै रामकी वारूं कुबेरका सब धन ॥
वारूं नाशिकाके ऊपर मैं बुला बुलाकर हीरामन ॥
आनन परते मैं हरिके वारूं रवीकी कोटि किरण ॥
करनपै वारूं सुरजके कुंडल ओठपै वारूं लाली यमन ॥
चमक दांतकी पै दामनी वारूं और चवदहो रतन ॥
दो कपोलपै रवि शशि वारूं जिसका तेज छाया त्रिभुवन॥
जिह्वापरसे वेद वारूं मैं रामका कर सुमरन॥

शैर–रामके बाणपै वारूं मैं तीनों लोकका रण ॥
धनुषपै बाण उनके मैं वारूं जो धनुष निकले गगन ॥
औ उनके क्रोधपें वारूं मैं कालो रुद्रका मन ॥
राजपै रामके वारूं ओः जो है इंद्रासन ॥
कंठपै वारूं छहो राग औ तीस रागनीकी सब परन ॥
आनन परते मैं हरिके वारूं रवीकी कोटि किरन ॥
हाथपै वारूं दान पुण्य जो राजा बलिसे अधिक कठिन ॥
हिरदे परसे मैं उनके वारूं जोबनका जोबन ॥
नाभि कमलपै भवँरको वारूं कटिपै केहरीकी लचकन ॥
जंघा परसे मैं उनके वारूं कजरी थंबके वन ॥

शैर–रामकी चालपै वारूं हरएकका चालो चलन ॥
चरणपर अप्सरा वारूं मैं उनको छूके चरण ॥
वह उनके काव्यपै वारूं कवीश्वरोंकी कथन ॥
मैं उनके विश्वरूप पर ये वारूं चौदो भुवन ॥
देवीसिंह कहे बनारसी तेरी रहे रामसे लगी लगन ॥
आनन परते मैं हरीके वारूं रवीकी कोटि किरन ॥

निर्गुणरामायण–बहर लंगडी।

घटमें शिवके रकार है और मुखमें हरके मकार है ॥
रामनामका सदा श्रीमहादेवको अधार है ॥
रकारसे दे रिद्ध सदाशिव मकारसे देते मुक्ती ॥
ऐसे भोले है जिनके पासमें दोनों जुगती ॥
रकार रक्षा करे सदा औ मकारसे ममता रुक्ती ॥
शिवशंकरके पास नानाप्रकारकी है उक्ती ॥
अष्ट पहर दिन रैन सदा दोनों अक्षरका विचार है ॥

रामनामका सदा श्रीमहादेवको अधार है ॥
रकारसे हर हरें रोग और मकारसे देते माया ॥
विश्वनाथके हिरदेमें राम नाम है समाया॥
रकार रम रहा रोम रोममें मकार मेरे मन भाया॥
दो अक्षरका आदो और अंत किसीने नहिं पाया ॥
रकार रचना करे औ महिमा मकारकीभी अपार है ॥
रामनामका सदा श्रीमहादेवको अधार है॥
मकारमें है रकारका रस रकारका है मकार मन॥
विश्वनाथजी इसीसे रामनामका करें भजन ॥
रकारने राक्षस संहारे मकारने मारे दुर्जन ॥
रामनामके रटेसे नीलकंठ रहे सदा मगन ॥
विचार करके देखा मैंने चार वेदका ये सार है ॥
रामनामका सदा श्रीमहादेवको अधार है ॥
रकारके हैं रंग सबी और मकारका मत ज्ञानी है ॥
रामकी लीला सिवा शिवके नहीं किसीने जानी है ॥
रामके नामका अंत नहीं है थकी शेषकी वानी है ॥
बनारसीने कीर्ती रामकी सदा बखानी है ॥
पल पल छिन छिन निशि दिन मुझको दो अक्षरकी पुकार है॥
रामनामका सदा श्रीमहादेवको अधार है ॥

श्रीकृष्णके अंगुलीकी स्तुति-बहर लंगडी।

श्रीकृष्णके हाथमें क्या नाजुक है भोली भाली अँगुली ॥
रंगरंगके जवाहरसे है रंगवाली अँगुली ॥
कभी अँगूठी पहेर लालकी दिखलाती लाली अँगुली ॥
कभी फिरोजोंसे हो जाती है जंगाली अँगुली ॥

जबके जमरुदके छल्लोंमें हरीने वो डाली अँगुली ॥
हरी हो गई दिखाने लगी व हरिआली अँगुली ॥
जितने रंग है इस पृथ्वीपर किसीसे नहिं खाली अँगुली ॥
रंग रंगके जवाहरसे औ रंगवाली अँगुली ॥
एक तो बोले कृष्ण एक उनसे उनकी बाली अँगुली ॥
दूजी दूधसे यशोदाने उनकी पाली अँगुली ॥
तीजी त्रय गुण रहित औ चौथी चौथे पदवाली अँगुली ॥
चार पदारथ चारोंमें एकसे एक आली अँगुली ॥
अर्थ धर्म और काम मोक्ष सबके देनेवाली अँगुली ॥
रंग रंगके जवाहरसे वह रंगवाली अँगुली ॥
कभी पहेन हीरोंके छल्ले हरिने चमकाली अँगुली ॥
किरण सूर्यकी देखकर हो गई मतवाली अँगुली ॥
चित्र विचित्रके लक्षण जिस्में ऐसी कर डाली अँगुली ॥
धन्य वह विधनाके जिसने सांचेमें ढाली अँगुली ॥
चंद्रकला नखमें जिनके शोभित है वोः आली अँगुली ॥
रंगरंगके जवाहरसे वह रंगवाली अँगुली ॥
एकसमय राधाने कृष्णकी अँगुलीमें डाली अँगुली ॥
गंगा यमुना मिल गई वह गोरी काली अँगुली ॥
श्याम कहैं श्यामासे तुम्हारी चंद्रसे उजिआली अँगुली ॥
श्यामा बोलें आपकी अद्भुत वनमाली अँगुली ॥
देवीसिंह कहे बनारसीने वह देखी भाली अँगुली ॥
रंगरंगके जवाहरसे वह रंगवाली अँगुली ॥

गंगा लहेरी–बहर खडी ।

ब्रह्मा रचते सृष्टि पालना विष्णु करें शिव संहारें ॥

धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारें ॥
गणेशजी विद्याका वर दें बुद्धि बुद्धिका दान करें ॥
सूर्य तेज दें शरीरमें इस जगतमें सब सन्मान करें ॥
शीतलतार्या देय चन्द्रमा सतगुणको परधान करें ॥
हनूमानजी चाहें तो थक पलभरमें बलवान करें ॥
भैरवजी भय हरें डरें नहिं दुरजनको पलमें मारें ॥
धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारें ॥
इन्द्रका सुमरण करे तो पावे सुंदरसी अबला नारी ॥
दुर्वासाजी पवन अह्वारी कामीको करें ब्रह्मचारी ॥
कुबेरके जो भक्त हैं वह तो बडे बडे माया धारी ॥
धर्मराजजी धर्म बतावें जो हैं इनके हितकारी ॥
शेषजी अपने सहस्र मुखसे नये नाम नित उच्चारें ॥
धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारें ॥
तनुका रोग दूर कर देते बडे वैद्य अश्विनीकुमार ॥
वेदव्यास पुराणके मुनि हैं वेदका निशि दिन करें विचार ॥
बालपनेसे त्याग बतावें सनक सनंदन सनत्कुमार ॥
करो शनिश्चरकी पूजन तो सकल विपतके देवें टार ॥
जितने देवते हैंगे सो सब गुरू बृहस्पतिको धारें ॥
धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारें ॥
तेतिस कोटि देवते सब अपना अपना देते हैं फल ॥
अति प्रसन्न होते हैं इनपर चढता है जब गंगाजल ॥
देवीसिंह ये कहै न भूलों मैं श्रीगंगाको यक पल ॥
सबसे ऊंचे शिवजी उनके शीशके ऊपर गंग अचल ॥
बनारसीके अधम पापको धोमें गंगाकी धारें ॥
धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापिधोंको तारें ॥

गंगा लहेरी–बहर खडी ।

पापी एक मरा गंगापर हुई वोः उस्की तैयारी ॥
महिमा सुनो कान दै जैसी निकलि वाकी असवारी ॥
आयो कंचनको विमान सुंदर और वामें रत्न जडे ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब लेनेको खडे ॥
उधरसे आये यमके दूत वोः ले ले हाथमें शस्त्र बडे ॥
देखतही दल श्रीगंगाका भागे यमके पांव पडे ॥
वह जो पापी था सो तो तनु त्यागके बन गया त्रिपुरारी ॥
महिमा सुनो कान दै जैसी निकली वाकी असवारी ॥
अद्भुत भूषण कुबेरजी झटपट सो आपी ले आये ॥
पीत वस्त्र नख शिख लौ उत्तम उसके तनमें पहिराये ॥
चोवा चंदन इतर अरगजा सबी देवते ले धाये ॥
पत्र पुष्पसे पूजन करकर मगन भये मंगल गाये ॥
तीन लोक चौदहों भुवनकी पाई उसने सरदारी ॥
महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल गलेमें वैजयंती माला ॥
शीश छत्र सोवरका झूमें जयजय शब्दकि ध्वनि आला ॥
कंठ कौस्तुभ मणिहार गज मुक्ताका उरमें डाला ॥
बाजूबंद नवरत्न और करमें कंगनका उजियाला ॥
भरे अटल भंडार उसे गंगाने माया दी सारी ॥
महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
जब वह बैठा विमानमें तब ब्रह्माजी मुरछल लाये ॥
इंद्र डुलावैं पंखा सब देवतोंने पुष्प अति वरसाये ॥
शिव और विष्णुने करी शंख ध्वनि ऐसे फल उसने पाये ॥

धन्य भाग्य हैं उनके जो कलिकालमें गंगाजी न्हाये ॥
करें नृत्य गंधर्व सकल मिल बाजे बजन लगे भारी ॥
महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि सभी कर जोर जोर आई आगे ॥
जिन त्यागे गंगाके तीर तनु उनके भाग्य ऐसे जागे ॥
जब वह उठा विमान तो गोले अनहदके दगने लागे ॥
नंदीगण और गरुड सिंह गज विमानके नीचे लागे ॥
और सकल वाहन कांधा देने लागे वारी वारी ॥
महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
हनूमानजी खवास बन गये भैरव बन गये अगमानी ॥
गणेशजी डंका ले आगे चले महा योगी ध्यानी ॥
छप्पन कोटि मेघने मिलके रस्तेमें छिड़का पानी ॥
चंद्र सूर्यने करी रोशनी सब देवतोंके मन मानी ॥
तेंतिस कोटि फौज सब संगमें चली और छवि न्यारी न्यारी ॥
महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
जब वह पहुँचा अमर लोकपुर सब फिर आये अपने धाम ॥
मिला ज्योतिमें ज्योति रूप होय श्रीगंगाको करो प्रणाम ॥
याहीते मैं कहत जात हों जपो सकल गंगाको नाम ॥
और कोयी नहीं अंत समयमें आवेगो अब तुमरे काम ॥
बनारसी यह कहे कभी तो आवेगी मेरी बारी ॥
महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥

गंगा लहेरी–बहर खडी।

भोजन कर या सूखा रहु या वस्त्र पहेन या फिर नंगा ॥
जौलों जिये तू कहू इस मुखसे जय गंगा श्रीजय गंगा ॥

नेम धर्म और कर्म अकर्मसें योग भोगमें कहो गंगा ॥
दुखमें सुखमें भले बुरेमें रोग अरोगमें कहो गंगा ॥
सोवत जागत राह बाटमें हर्ष सोगमें कहो गंगा ॥
मात पिता दारा सुत बिछुमें तौ वियोगमें कहो गंगा ॥
धन दौलत या राज पाट हो या फिर बन जाय भिखमंगा ॥
जौं लों जिये तू कहो इस मुखसे जय गंगा श्रीजय गंगा ॥
रोवत हँसत नगर और वनमें जहां रहे तू कहो गंगा ॥
संपति विपति कुपति और पत नर सभी सहे तू कहो गंगा ॥
डूबत तीरत मरत या जीवत मेरे कहे तू कहो गंगा ॥
यह मन मूढ समझ अब झट मेरो मन चहे तू कहो गंगा ॥
जो तेरे मन बसे कार्य यह लगे तेरे चितमें चंगा ॥
जौ लो जिये तू कहो इस मुखसे जय गंगा श्रीजय गंगा ॥
खेलत कूदत उछलत फांदत अपने मनमें कहो गंगा ॥
बाल जवानी और बुढापा तीनों पणमें कहो गंगा ॥
नाचत गावत गाल बजावत हर रागनमें कहो गंगा ॥
सात द्वीप नव खंड और चवदहो भुवनमें कहो गंगा ॥
अंधा हो या बहिरा हो या लूला हो या यकटंगा ॥
जौलों जिये तू कहु इस मुखसे जय गंगा श्रीजय गंगा ॥
घटी नफेमें दिवस रात्रिमें आदि अंतमें कहो गंगा ॥
संग कुसंगमें रंग कुरंगमें साधु संतमें कहो गंगा ॥
चराचर चैतन और जडमें तू अनंतमें कहो गंगा ॥
चाहे सबमें बैठके कहो चाहे एकांतमें कहो गंगा ॥
बनारसी यह कहे चाहे तू गरीब बन या करदंगा ॥
जौलों जिये तू कहो इस मुखसे जय गंगा श्रीजय गंगा ॥

गंगा लहेर-बहर खडी।

और सकल देवतोंसे फल जो मांगोगे तो पावोगे ॥
बिन मांगे देइ हैं गंगा जो एक वार तुम न्हावोगे ॥
शिवजीकी जो करो तपस्या मनमें ध्यान लगावोगे ॥
और वह श्रीगंगाका जल जब उनके शीश चढावोगे ॥
बेल पत्र और आक धतूरा मंदिरमें ले जावोगे ॥
तब वह होइ हैं प्रसन्न जब तुम दोनों गाल बजावोगे ॥
वह कहि हैं कुछ मांगो तब तुम उनसे मांगके लावोगे ॥
बिन मांगे दे हैं गंगा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥
ठाकुरद्वारे जाय जाय जब विष्णुको शीश झुकावोगे ॥
पत्र पुष्पसे पूजन कर कर मालाको पहिरावोगे ॥
धूप दीप नैवेद्य लगाकर और विष्णुपद गावोगे ॥
तब वह रीझेगे तुमसे जब उनको भजन सुनावोगे ॥
वह कहि हैं कुछ हमसे लेव तब तुम करको फैलावोगे ॥
बिन मांगे दे हैं गंगा जो एक वार तुम न्हावोगे ॥
ब्रह्माजीका स्मरण कर कर लाखन बरस बितावोगे ॥
कंद मूल फल खाय खायके बहुतहि कष्ट उठावोगे ॥
यह काया कंचन तनु आपना इसको खूब सुखावोगे ॥
तब वह दरशन देइहैं पैहौ फल जो कुछ तुम चाहोगे ॥
वह कहि हैं कुछ मांगो तब तुम माँगोगे शरमावोगे ॥
बिनमांगे दे हैं गंगा जो एक वार तुम न्हावोगे ॥
करी हो पृथ्वी पैकर्मा और चारों धाम फिर आवोगे ॥
जगन्नाथ और रामेश्वरमें जायके पांव थकावोगे ॥
और द्वारकामें छापे खाखाके बदन जलावोगे ॥

जैहो बद्रीकेदार तब तुम क्यों कर सीत बचावोगे ॥
वहां तो तुम आपै मंगि हो मांगनमें बहुत लजावोगे ॥
विन मांगे दे हैं गंगा जो एक वार तुम न्हावोगे ॥
और कहीं जो पाप कर्म करि हो तो पाप उठावोगे ॥
गंगाजीमें देहभी धोई हो तोभी नहीं पछतावोगे ॥
लात लगावो कूदो फांदो बहुते धूम मचावोगे ॥
तौभी माता प्रसन्न होइ हैं वाके पुत्र कहावोगे ॥
बनारसी कहे अंतमें मुक्ती आपीसे तुम पावोगे ॥
विनमांगे दे हैं गंगा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥

गंगालहरी–बहर खडी।

आज युद्धकी करो तयारी श्रीगंगाजी तुम हमसे ॥
मैं पापी तुम तारनहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥
मेरा पाप है पहाडके सम समर करनमें वीर बडो ॥
देखों मैं अब आयकै कैसो हैगो तुम्हरो तीर बडो ॥
रणमें लडे हटे नहिं कबहूं मेरो पाप रणधीर बडो ॥
तुम तो येही कहत हो मुखसे मेरी रेणुका नीर बडो ॥
देखों उनको पुरुषारथ जो लडि हैं आय मेरे तमसे ॥
मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥
जबसे जन्म भयो पृथ्वीपर कभी न हरिको नाम लियो ॥
सेवा की नहिं मात पिताकी साधनको नाहिं काम कियो ॥
हरो बहुत धन ठगठगके नहिं हाथसे एको दाम दियो ॥
लियो बहुत विषपान न अमृत कोभी एको जाम पियो ॥
कैसे बचि हौं कालसे मैं अब कौन छुटै है मोहिं यमसे ॥
मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥

वेद पुराण बखानत निशि दिन अधम पापियोंको तारा ॥
किया बहुत संग्राम कालते और यमदूतोंको मारा ॥
सुनी बात यह श्रवणसे मैंने किये पाप अपरंपारा ॥
करिहों और बहुतसे अघ देखों कैसे हो निस्तारा ॥
अब तो येही लड़ाई ठानी है गंगाजी में तुमसे ॥
मैं पापी तुम तारणहारी बनि है पाप बहुत हमसे ॥
अइहैं जब यमदूत लेनको बडे बडे योधा भारी ॥
तब तुम मोहिं बचै हो तब मैं जैहौं तुम्हरी बलहारी ॥
तुम्हरे गण हैं पुष्प लिये औ यमके दूत शस्त्रधारी ॥
इसका उत्तर देवकि सेना किस विधिसे यमकी हारी ॥
कहो मुझे समझायके झटपट छुट जाऊं मैं इस भ्रमसे ॥
मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥
फिर गंगाजी बोली मेरी एक रेणुका असंखवान ॥
भगि हैं सब यमदूत बुलै हौं मैं तुमको भेजके विमान ॥
एक बिंदु गंगाजलसे जल जाँय पाप नहिं रहे निसान ॥
किये पाप देवीसिंहने वोः पापभी हो गये पुष्प समान ॥
बारंबार ये कहत जात हो क्यों बनारसी तुम हमसे ॥
मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥

गंगालहरी–बहर खडी।

ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सबने किया भजन ॥
तब आई ब्रह्म मंडलसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥
ब्रह्म रूप निर्भय निर्वानी अखंड गंगाकी धारा ॥
विष्णुसे ब्रह्माके पास आई तब शिवजीने धारा ॥
जटाको उनके शोभा दियो रूपभी सुंदर सुधारा ॥
आगे कहूंगा वृत्तान्त जिस विधि तीन लोकको उद्धारा ॥

स्तुति करके आप ईशने शीश चढाई भये मगन ॥
तब आई ब्रह्ममंड़लसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥
भगीरथने करी तस्या मगन भये शंकर भोला ॥
कहा मांग कुछ हमसे तब भगीरथ ये मुखसे बोला ॥
गंगादेव नाथजी मुझको शुद्ध करो कुलका चोला ॥
तब फिर अपनी जटाको शिवने अपने हाथनसे खोला ॥
एक बिंदु गंगाजल निकला जटासे जब अति किया जतन ॥
तब आई ब्रह्ममंडलसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥
एक बिंदुकी तीन धार भई धारा एक गई पाताळ ॥
शेषनागने दर्शन पाये जीवन मुक्त भये सब ख्याल ॥
एकधार आकाश गई सब देवते देख भये खुशहाल ॥
हाथ जोड दंडवत करी गंगाने उन्हें तारा तत्काल ॥
एक धार भगीरथ लाये मृत्युलोक तारन कारन ॥
तब आई ब्रह्ममंडलसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥
मृत्युलोकमें चली वेगसे तब समुद्रने किया विचार ॥
हाथ जोड गंगासे कहा तुम्हारे बलका नहिं पारावार ॥
ये मुझसे नहिं जाय सम्हारा बहुत सिंधुने करी पुकार ॥
तब गंगाने प्रसन्न होकर धारा अपनी करी हजार ॥
नाम पडा गंगासागर कहे बनारसी नित कर दरशन ॥
तब आई ब्रह्ममंडलसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥

लावनी।

श्रीगंगाजीके तीर नीर पीनेको नाग यक आया ॥
था बडा व विषधरनाग भाग्य कछु वा दिन वाके जागे ॥
जब जळ पीने वो लगा तो मेंढक देख देख कर भागे ॥
इतनेमें आये गरुड चोंचसे पकडके खाने लागे ॥

झटपट वाको गये निगल प्राण तत्कालै वाने त्यागे ॥
मरतहीविष्णुतनुधारा॥चढगरुडपैयही पुकारा॥अबवाहनीमलाहमारा॥
धन धन गंगाको बिंदु मुझे गोविंदै आप बनाया ॥
श्रीगंगाजीके तीर नीर पीनेको नाग यक आया ॥
शिर मौर मुकुटकी लटक कानमें कुंडल अधिक बिराजैं ॥
गले वैजंतीमाल पीत पीतांबर तनुपर साजै ॥
वो शंख चक्र और गदा पद्मकी सम्पूरण छबि छाजे ॥
यह चरित्र वाके देख देखकर गरुडजी मनमें लाजे ॥
कुछ कहतनहीं बनआवे॥गंगा जोचाहे बनावे॥चाहे शिवको रूपधरावे ॥
है महिमा अपरंपार पार नहिं सुर नर मुनिने पाया ॥
श्रीगंगाजीके तीर नीर पीनेको नाग यक आया ॥
फिर श्रीगंगाकी आप स्तुती करी गरुडने मुखसे ॥
भई प्रसन्न गंगामात तो बाणी बोलीं यक सर मुखसे ॥
था बहुत कष्टमें नाग छुटाया मैंने इसको दुखसे॥
अब तुम इसको वैकुंठ पहुंचावो बसे जाय यह सुखसे ॥
ये गरुडने आज्ञा मानी॥तब उडे बडे बलवानी॥गंगाकी महिमा जानी ॥
झटपट पहुँचे उड धाय उसे वैकुंठके बीच बिठाया ॥
श्रीगंगाजीके तीर नीर पीनेको नाग यक आया ॥
जो ये स्तुती गंगाकी कान दे सुनै औ मुखसे गावे ॥
वो भुक्ती मुक्ती संपूर्ण पदारथ मन मांगे फल पावे ॥
गंगासे बडा नहिं और देव कोई मेरी दृष्टीमें आवे ॥
है धन धन वाके भाग जो दर्शन करे और गंग नहावे ॥
कहै देवीसिंह भज गंगा॥तब तेरो मन होय चंगा॥मन बनारसीनेंरंगा॥
गंगाजीमें तनवोर बोर झकझोरके पाप बहाया ॥
श्रीगंगाजीके तीर नीर पीनेको नाग यक आया ॥

गंगालहरी अधर-बहर छोटी ।

सागरकी गिनी जाँय लहर गिने जाँय तारे ॥
नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥
षट् शास्त्र गिने जाँय गिने जाँय नर नारी ॥
दश दिशा गिनी जाँय सृष्टि गिनी जाय सारी ॥
सिध साध गिने जाँय गिने जाँय आचारी ॥
राजा रानी गिने जाँय खल्क सरकारी ॥
गिने जाँय शाह शाहानी गिने हल्कारे ॥
नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥
गिने जाँय नदी नद सिंध गिने जाँय नाले ॥
गिने जाँय सेतरँग लाल गिने जाँय काले ॥
दरखत डाली जाँय गिनी गिने जाँय डाले ॥
छत्तीस रागनी राग सकल गिनडाले ॥
गिनते गिनते कई हजार सायर हारे ॥
नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥
खग चरिंद जाते गिने गिने जाँय चातर ॥
हरजात गिनी जाय नगर गिने जाँय घर घर ॥
कागज स्याही जाय गिनी गिने जाँय अक्षर ॥
सरदार गिने जाँय गिने जाँय सागर सर ॥
क्याजाने गंगाने कितने शठ निस्तारे ॥
नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥
दिन रात गिने जाँय गिनी जाँय तिथि घडी ॥
शायरी गिनी जाय गिनी छन्दकी लडी ॥
शायर कायर जाँय गिने गिने जाँय कडी ॥
जंगल खेडा गिना जाय गिनी जाँय जडी ॥

यह सत्य सत्य छंद काशीगिर ललकारे ॥
नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥

यमराजका विष्णुसे श्रीगंगापर फिरयाद करना।

अब विष्णुसे जाकर यमने यही पुकारा ॥
गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥
लाखों पापी पृथ्वीपै रोज मरते हैं ॥
क्या कहों मैं वो यक क्षणभरमें तरते हैं ॥
मेरे भयसेभी जरा नहीं डरते हैं ॥
गंगाके गण उनकी रक्षा करते हैं ॥
विन भजन किये होता उनका निस्तारा ॥
गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥
हिन्दू या तुर्क या बेहना डोम कसाई ॥
भंगी धोबी हडफोड या होवे नाई ॥
गंगाकी लहर जिसे दूरसे दी दिखलाई ॥
फिर अंत समयमें उसने मुक्ती पाई ॥
दर्शन करतेही तरा महा हत्यारा ॥
गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥
जो मेरे दूत पापियोंको जाँय पकडने ॥
तौ गंगाके गण आवें उनसे लडने ॥
वो देख देख दूतोंको लगे अकडने ॥
और मारे बाण तनबीच लगे वो गडने ॥
मैं लडलडके कई लाख लडाई हारा ॥
गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥
गंगासे सौ योजन पर एक नगर था ॥
उस नगरमें यक पापीका ऊंचा घर था ॥

वह पाप कर्म कर करता रोज गुजरथा ॥
मर गया तो उसपर पडा एक बस्तर था ॥
गंगाका धोया उसीने उसको तारा ॥
गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥
यह सुनी बात तब विष्णुजी यमसे बोले ॥
गंगाकी महिमा कहां लो कोई खोले ॥
इस नेत्रसे दरशन श्रीगंगाके जो ले ॥
वैकुंठमें वह फिर झूले सदा हिंडोले ॥
कुछ बस नहीं मेरा चले न चले तुम्हारा ॥
गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥
जब मृत्युलोकसे गंगा आप सिधरिहैं ॥
तब वह पापी फिर कौन विधी कर तरिहैं ॥
उसकालमें जो कोइ पाप कर्म कर मरिहैं ॥
वह आन आनकर नरक तुम्हारो भरिहैं ॥
यमराजजी अब थोडे दिन करो गुजारा ॥
गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥
येह सुनी बात यमराजने घर फिर आये ॥
कुछ हँसे और कुछ कुछ मनमें पछताये ॥
मनमारके यह गंगाको वचन सुनाये ॥
अब तो तुम्हरे थोडे दिन रहने पाये ॥
कहें बनारसी कुछ यमका चला न चारा ॥
गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥

बहर छोटी ।

जोलों पृथ्वीपर है गंगाकी धारा ॥
तोलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥

मत डरो कोई यमदूत से मेरे भाई ॥
रक्षा करनेको है श्री गंगा माई ॥
जबसे शंकरने अपने शीश चड़ाई ॥
तब ईश और जगदीशकि पदवी पाई ॥
शिवबना वोही जिसने यक गोता मारा ॥
तौलौं यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥
कुछ जोर न जमको चले पाप नहिं लागे ॥
औ काल भी देखे दूरसे तौ वह भागे ॥
जो गंगाके दर्शन कर काया त्यागे ॥
ओ अमरलोक पुर वसे अलख हो जागे ॥
ये निश्चय करके मानो वचन हमारा ॥
तौलौं यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥
चाहेहो पुत्र कुपुत्र तो माता पाले ॥
कुछ कर्म अकर्म न उसके देखे भाले ॥
जो एक बार प्राणी गंगा में न्हाले ॥
तो जन्म मरणके सकल पापको टाले ॥
गंगाके बलसे दल सब यमका हारा ॥
तौलौं यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥
मत चलो हमारे मित्र किसीसे डरके ॥
निर्भयहो दर्शन श्री गंगा के करके ॥
कहै देवीसिंह गंगा का ध्यान मैं धरके ॥
जैहो भवसागर सहजै आप उतरके ॥
गंगा की महिमा जगमें अपरंपारा ॥
तौलौं यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥

स्तुति श्रीकृष्णके बांसुरीकी–बहर तवीर ।

हरि प्रथम बजाई जब बँसुरी राधावर कुंजविहारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठ धाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥
पडीभनकश्रवणमुरलीकीजब तबसबसखियां उठधायचलीं ॥
कोउ एक दृगमें सुरमादेकर कोउ यककर मेहदी लाय चलीं ॥
कोइके आधे दांतन मिस्सी कोउ आधा शीश गुँधाय चलीं ॥
कोउ आधीसारी तन ढांके कोउ योबन खोल देखाय चलीं ॥
कोऊलट छिटकाय चलीं झटपटलज्जा तज सकल विचारीने ॥
ध्ववि सुनत अचानक उठधाईं तज काजसकल ब्रजनारीने ॥
कोउ पाँवनसे बांधे पहुँची कोउ हाथन पायल डाल चलीं ॥
कोउ कंठमें धारे किंकिणिको और कोउ कटि पहनेमालचलीं ॥
कोउके कानन नथुनी लटकन कोउ खोले शिरके बाल चलीं ॥
कोउके नाकन बाली झुमके जो चलीं तो सब बेहाल चलीं ॥
जब पहुँची कृष्णनिकटसखियांतबहिंलखागिरिवरधारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठधाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥
फिर बोले कृष्ण कौन हो तुम कैसे तुमने शृङ्गार किये ॥
पाँयन पहुँची हाथन पायल क्यों कटि मुक्ता के हार किये ॥
काननमें नथुनी औ लटकन ये भूषण विना विचार किये ॥
नाकनमें बाली और झुमके काहे तुमने ब्रजनार किये ॥
ये सुनत वचन तब दिया ज्वाब ब्रजकी युवती दो चारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठधाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥
जब तनकी सुध कछु नाह रही तब भूषण कौन सुधार चले ॥
मनतो अटका इस बँसुरीमें दृगसे अँशुवनकी धार चले ॥
तुमराग बजाओ राग करो ऐसा नाहिं कोउ विहार करे ॥
मँझधारमें नांव पडी हमरी तुम विन को बेडा पारकरे ॥

तुमपति हमरे हम दासी सब ये दिया ज्वाब दुखयारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठधाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥
लख प्रेम सकल ब्रजवनिता का फिर कृष्ण ने मुरली अधर धरी ॥
मोहन भी वादिन मोह गये वोः तान जो निकली राग भरी ॥
तन मनकी सुध कछु नहीं रही जब श्री राधापर दृष्टि परी ॥
कहे बनारसी बोलो संतो जय कृष्ण राधिका हरी हरी ॥
ऐसी लीला नांहि करी कोउ जैसी करी हरि औतारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठधाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥

स्तुति श्रीकृष्णकी बांसुरीकी—बहर तवील।

हरिबँसुरीकीध्वनिसुनब्रजयुवतींचलींझुंडकेझुंडमगनमनकर ॥
धनधन्यहरीधनधन्यसखीधनधनबँसुरी तनमन लियोहर ॥
मनप्रेम प्रबल अति तनु सुंदर सब वेद सुरति असगुण गावें ॥
तजलाजसकलगृहकाजछोडचलींहरिपदपंकजमनभावें ॥
हरिआननचन्द्रचकोरसखीछबिनिरखिनिरखिकरसकुचावें ॥
कुछ कहि न सकैं हितकी बतियां अति लज्जितमनमें मुसकावें ॥
अतिव्याकुलगातमदनमदकरसखिचाहतमिलेंमनोहरवर ॥
धनधन्यहरीधनधन्यसखीधनधनबँसुरीतनमनलियोहर ॥
मनकी वांछा लख मुर्लीधर ब्रज युवतिनसंग विहार करें ॥
यक यक हरी यक एक सखी यकयकके कर यकयकपकरें ॥
यक यक मुर्ली दैगोपियनकों हरि कहत बजाओ तबहिंबरें ॥
ये प्रेमकथा सुन हँस हँस कर मुखधरत न बजत प्राण विखरें ॥
कहें ब्रजयुवतिनहमकीन्हकहा अबतुमहिंबजाओनटनागर ॥
धनधन्यहरीधनधन्यसखी धनधनबँसुरी तनमनलियो हर ॥
यक यक तरुवरतर यकयक हरियकयकयुवतिनसंग बातहरें ॥
इत घर आवें यशुदाके पास उतगोपियनबीच प्रभात करें ॥

हरिढीठ पकडकर मुखचूमें और बात सखी सकुचातकरें ॥
यह मांगतवर विनती करकर विधना नित ऐसी रातकरें ॥
जब तिनके जोपित आवत सब गृहपावत अपनी पत्नी घरघर ।
धनधन्यहरीधनधन्यसखीधनधनबँसुरी तनमनलियोहर ॥
शिवनारदआदिसकलऋषिमुनिसबदेखतगगनविमानधरे ॥
कौतुक गिरिधरके लख नपरें तनुमानुषब्रह्मअखंडहरे ॥
युवतीतनुनारी वेद सुरति रविलीलाव्रजमें खेलकरे ॥
हरिपुण्यनपापदुःखनसुखकछुवेदान्तकेकर्ताखेदपरे ॥
रचिछंदयहकाशीगिरिस्तुतिकरि मांगत भक्ति पदारथवर ॥
धनधन्यहरी धनधन्यसखीधनधनबँसुरीतनमनलियोहर ॥

निर्गुण पलँग–बहर खडी।

चलो आज हिलमिलके सोवें पीतम प्यारेके अब संग ॥
सात द्वीप नव खंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥
पंचतत्त्वसे अलग है वो और तीनो गुणसे न्यारा है ॥
दिव्यरूप सुंदरसे सुंदर अपना पीतम प्यारा है ॥
दरवाजे पर चौकीदेता जिसके कुतुब सितारा है ॥
जहां न चंदा सूर्य्य अग्नी और पवनका तनिकगुजारा है ॥
सो मेरे इस शरीर में हैं उसीसे है अपना सत्संग ॥
सात द्वीप नवखंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥
सदैव एक रंग बनारहै नहिं वृद्ध होय नहिं बाला है ॥
उसीसे चंदा सूर्य्य आग्निमें प्रकाश और उजियाला है ॥
उसीसे तूं कर नेह अरी बुद्धी वो भोला भाला है ॥
इस शरीर की सेजमें है वो पर इससे निरियाला है ॥
गले उसीसे लगके सोऊं अपने मनमें यही उमंग ॥

सात द्वीप नवखंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥
नेह निवारसे बिना है वो और कंचनके चोरो पाये ॥
लगे हैं जिसमें पंचरंग तकिये तहां सजन बो दरशाये ॥
योगयुक्तिसे शीश महलमें जो प्राणी आये जाये ॥
अपने पतिसे वही मिलें जो प्राणायामसे लवलाये ॥
सोवत जागत चित्त उसीमें लगारहे सुख पावें अंग ॥
सात द्वीप नवखंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥
पतिव्रता है वही जो कोई ऐसे पतिसे भोग करे ॥
दोनोंसुख पावे उससे मिल भोगकरे और योग करे ॥
जन्म मरणके दुःखसे छूटे दूर जगतका रोग करे ॥
देवीसिंह कहे आवागमन मिटजाय न मनमें शोक करे ॥
बनारसी सोवे अपने साईंके संग और नहावे गंग ॥
सात द्वीप नवखंडके ऊपम उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥

निर्गुण वर्षा–बहर खडी।

निरआसरे है निरंकार जहँ अमृतकी वर्षा वरसे ॥
निरआसरे पिवें योगीजन सुधाजिन्हें सद्गुरु दरसे ॥
निरआसरे अनहद घन गरजे नाद वीन बोले चाले ॥
निरआसरे अपनी हरियाली आपीवो देखे भाले ॥
निरआसरे उलटे बहते हैं ब्रह्मांड में नद्दी नाले ॥
निरआसरे दामिन दमकें चलेनिरआसरे बादल काले ॥
निरआसरे वर्षे आषाढ सावन भादों उसके घरसे ॥
निरआसरे पिवें योगीजन सुधाजिन्हें सद्गुरु दरसे ॥
निरआसरे स्वाती की बुंद जब प्राण पपैहा पानकरे ॥
तभी मिटै तृष्णा उसकी जब नारायणका ध्यान करे ॥
निरआसरे हो मुक्त उसीसे वह मुक्ता की खान करे ॥

निरआसरे हैं असोज जो सारी वर्षा में पानकरें ॥
निरआसरे हो गजमुक्ता स्वाती की बूंद जब गज परसे ॥
निरआसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥
निरआसरे ब्रह्मा विष्णु औ वो महेश उसमें नहाते हैं ॥
निरआसरे श्री सूर्य्य किरणों से अमृत जल बरसाते हैं ॥
निरआसरे हैं नक्षत्र जो सब वर्ष वर्ष सुख पाते हैं ॥
निरआसरे हैं चन्द्र जडीको सदापियूष पिलाते हैं ॥
निरआसरे गंगाजल बरसें शिव जो जटा खोलें करसे ॥
निरआसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥
निरआसरे दक्षिण में कंचन गायत्रीने बरसाया ॥
निरआसरे हैं शक्ती औरहै निरआसरे उसकी माया ॥
निरआसरे हैं आदि ब्रह्म ये देवीसिंहने छंदगाया ॥
निरआसरे हैं बनारसी जिसने घटमें दर्शनपाया ॥
निरआसरे वो चिरंजीव जिस जिसकी लगनलागी हरिसे ॥
निरआसरे पीवें योगी जन सुधा जिन्हें सद्गुरुदरशे ॥

लोकालोककी वर्षा–बहर खडी ।

चन्द्रलोकसे अमृत बरसे सूर्यलोकसे बरसे ज्ञान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान वरसे सोहं करते हैं पान ॥
इंद्रलोकसे वर्षा वरसे सकल सृष्टिका हो कल्यान ॥
कुबेरके घरसे धन बरसे पावे तो होवे धनवान ॥
अषाढ सावन भादों कुवांर येचार महीने दो ऋतु जान ॥
स्वातीसे बरसे मुक्ता और अनेक ओषधिकी हो खान ॥
विष्णुलोकसे भक्ती बरसे पूजा जप तीरथ और दान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥
सत्यलोकसे धर्म बरसता सत्य बात बोलें गुणवान ॥

स्वर्गलोकसे स्वरूप बरसे सुंदरताई तन में जान ॥
शिवके लोकसे तप बरसे जो करे सो होवे भानु समान ॥
वेदसे बरसे गायत्री निशि दिन जपते हैं संत सुजान ॥
गऊलोकसे गोरस बरसे लूटैं ब्रजमें श्री भगवान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥
सात स्वर्ग ते गंगा बरसे जिसमें सब करते स्नान ॥
यमके लोकसें यमुना बरसे वेद शास्त्र ये कहे पुरान ॥
शक्तिलोकसे सरस्वती बरसे उत्तम जिसका स्थान ॥
सोमेरी जिह्वा पै बैठके भाषा में करे वेद बखान ॥
गुणबरसे गणपती लोकसे और विद्याका हो सन्मान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥
बरसे राग गंधर्वलोकसे करें अप्सरा सुंदर गान ॥
सदावो गावें भगवतके गुण सुनेसे होवें पवित्र कान ॥
देवीसिंह कहे बनारसीके ख्याल से वरसे मीठीतान ॥
कही ये मैंने निर्गुण वर्षा सुनो लगावो ब्रह्म में ध्यान ॥
सर्व लोक मेरे शरीर में मुझे दिखावे कृपानिधान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्म ज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥

धर्म संन्यास वेदांत गोपिनी प्रश्न–बहर खडी ।

सर्व धर्मसे परे वेदमें लिखाहै सुन संन्यासक धर्म्म ॥
क्या कोई जाने पण्डित कि संन्यासी का कौन है कर्म्म ॥
ग्रहण करें तो बने नहीं और त्याग करें तो क्या त्यागें ॥
सोवें तो निद्रा नहिं आवे जागें तो सोवत जागें ॥
युद्ध करे तो धर्म्म घटे और पापलगे रणसे भागे ॥
त्रयलोकी के दाता हैं फिर क्यों भिक्षा घर घर मांगे ॥
उनकी गती वही जाने नहिं मिले किसीको जिनका मर्म ॥

क्या कोई जानै पण्डित कि संन्यासी का कौन है कर्म ॥
मौनरहे पर बोलें सबसे बरत करें और सब खावें ॥
आसन दृढ होय बाट चलें जित चाहें वो उतही जावें ॥
पढेनहीं एको अक्षर और वेदशास्त्र निशि दिन गावें ॥
आंख मूंद देखें सबको पर आप दृष्टिमें नहिं आवें ॥
वो क्या देखेंगे उनको जिनकी दृष्टिमें लगा है चर्म्म ॥
क्या कोइ जाने पण्डित कि संन्यासी का कौन है कर्म्म ॥
योग विषे वो भोग करें और रोग विषे साधें वो योग ॥
शोक विषे वो हर्ष करें और रोग विषे रहैं सदा निरोग ॥
वियोगमें संयोगकरें संयोग विषे रहै बना वियोग ॥
लोक विषे परलोक सुधारें इसको समझें ज्ञानी लोग ॥
जिनकी मायासे सृष्टीमें व्याप रहाहै सबको भर्म ॥
क्या कोइ जाने पण्डित कि संन्यासी का कौन है कर्म ॥
देह विषे वो रहें बिदेही माया में रहें निर्माया ॥
देवीसिंह ए कहे कि उनका पार किसीनें नहिं पाया ॥
चार वेद षट शास्त्र अठारा पुराणने योहीं गाया ॥
सर्व धर्मसे बडा धर्म संन्यास मेरे मनमें भाया ॥
बनारसी तीनों गुणसे है रहित न समझे धर्म अधर्म ॥
क्या कोइ जाने पण्डित कि संन्यासी का कौन है कर्म ॥

बहर खडी (उत्तर)।

कर्मकरै और फल नाहिं चाहै यहीतो है संन्यासका कर्म्म ॥
धर्म्म अधर्म्म को समकर देखें इससे परेन कोई धर्म्म ॥
करें आत्माको वो ग्रहण और शरीरका त्यागें अभिमान ॥
सोवत जागत सुमरण में रहें सदा रूप देखें निर्वान ॥
निर्बल से नाहिं लडें लडें उससे जो कोई होवे बलवान ॥

कुबेर उनकी आज्ञामें रहें भिक्षासे करते गुजरान ॥
जीव ब्रह्मको एक समझते तनिक न उनके मनमें भर्म ॥
धर्म अधर्म को समकर देखें इससे परे न कोई धर्म ॥
गुह्य ज्ञान की बात करें अज्ञानी नाहिं समझन पावें ॥
येही बोलने में हैं मौन सब अर्थ तुम्हें हम समझावें ॥
भोजन तो ये क्षुधा करे हम कुछ नाहिं खाँय और सब खावें ॥
बैठे रहैं एक आसनपर योग मार्गसे फिर आवें ॥
लोहेसे है कडा और मन मोमसे भी है जिनका नर्म ॥
धर्म अधर्मको समकर देखें इससे परे न कोई धर्म ॥
इंद्रीका जो धर्म है वह अपना अपना करती हैं भोग ॥
अपने को कर्त्ता नहिं माने योग विषे है येही भोग ॥
शरीरको दुख सुख है आत्मा सदा अवध्यहै सदा निरोग ॥
जिनका ऐसा ज्ञान है उनको एकहि है संयोग वियोग ॥
ब्रह्मज्ञान की बात का कोई ब्रह्मज्ञानी पावे मर्म ॥
धर्म अधर्म को समकर देखें इससे परे न कोई धर्म ॥
शरीरको धारे हैं पर वो आप नहीं बनते काया ॥
मायासे हैं वोहिरहित हैं जिनके बीच योगमाया ॥
देवीसिंहये कहै कि जिसने श्री कृष्ण का गुण गाया ॥
बनारसी सुन उस प्राणीने सहजहि परमधाम पाया ॥
जिनके मनमें द्वैत नहीं है वो क्या जाने धर्म अधर्म ॥
धर्म अधर्म को समकर देखे इससे परे न कोई धर्म ॥

योगाभ्यास—बह्र नई।

मैं सत्य सत्य कहूं हाल सुनो अहेवाल तनका बयान ॥
है ब्रह्मांडमें बादसाह ब्रह्मसोई आदि जोति भगवान सोयमभगवान॥
जहँ महातत्त्व है पवन करो तुम श्रवन सोई है शक्त ॥

रहे पारब्रह्मके संगवोःहै अर्द्धंग बात कहूं सत ॥
हैं शीशमें श्री महादेव उन्हींको सेवकरो तुम भक्त ॥
हैं वही ब्रह्मके खवास हाजिर रहैं वहां हरवक्त ॥
सुनप्यारे जहँ तरह तरके रागरंग होते हैं॥
सुनप्यारे उस बादसाह के सभी संग होते हैं ॥

दोहा–हैं चार वो उसके वजीर उनका जुदा जुदा सुन नाम ॥
ब्रह्मा और विष्णुःवो रुद्र करें श्री गणेश पूरणकाम ॥
ये अगम अगोचर छंद हरफ कडी वंद ज्ञान विज्ञान ॥
है ब्रह्मांडमें बादशाह ब्रह्मसोई आदिज्योति भगवान सोयमभगवान॥
दोनयन हैं चौकीदार बड़े हुशियार फिरें दिन रात ॥
हैं खबरदार दोकान इधरधर ध्यान खबरले जात ॥
नाशिका मालनी दोई लिये खुशबोई पुष्प अरुपात ॥
वोःब्रह्म करे सब भोग कही ये महायोगकी बात ॥

तोडा–सुनप्यारे ये जिह्वा पढके सबी वो हालसुनावे ॥
सुनप्यारे और कंठ गंधरव राग रागिनी गावे ॥

दोहा–हैं मुखमें बत्तिस दांत सोई हैं हीरे मोती लाल ॥
वोःब्रह्म पहेनके भूषण सुंदर सदा रहे खुशहाल ॥
दिल दलेल रहता संग करेवोः जंग युद्ध घमसान ॥
है ब्रह्माण्डमेंबादसाहब्रह्मसोईआदिज्योतिभगवानसोयमभगवान ॥
पढ मुखसे चारों वेद खोल दिया भेद सो चारो धाम ॥
ऋगवेद है वद्रीनाथ और श्री जगन्नाथ हैं श्याम ॥
तीसरा अथर्वन वेद न कर निषेदभजो हरनाम ॥
सोई रामनाथ रमिरहे गुणीजन लहें सिद्ध हो काम ॥

तोडा–सुनप्यारे है यजुर्वेदमें बनी द्वारका पुरी ॥

सुन प्यारे कहौ अलख निरंजन छोडो बातें बुरी॥

दोहा—मन घोडे पर असवारी करता ब्रह्म बादशाह राजा ॥
हिरदे हाथी को पारब्रह्म ने खूब तरहसे साजा ॥
दमदिवान दफ्तर दार बडा पुरकार ज्ञान की खान ॥
है ब्रह्माण्डमेंबादशाहब्रह्मसोईआदिज्योतिभगवान सोयमभगवान॥
हैं तरह तरह के महल औ सुंदर पहल हीरोंसे जडे ॥
आ सत्तर दोबहत्तर खाने नव दरवाजे खडे ॥
दशमी खिरकीमें आप रहा वो व्याप शब्द ध्वनि झडे ॥
बाजे नाद बीन और शंख आपनी संख रहे निमछडे ॥

तोडा—सुन प्यारे है शीशमहल में आदि ब्रह्म का बासा ॥
सुन प्यारे अपनी इक्षा कर उसने जगत प्रकाशा ॥

दोहा—वोः परातपर है आप और नहिं कोई उससे परे ॥
ओ अव्यय अविनाशी संन्यासी नहिं जन्में नहिं मरे ॥
है मुक्ति उसीके युक्ति उक्तिसे किया नाम नीसान ॥
है ब्रह्माण्डमेंबादशाहब्रह्मसोईआदिज्योतिभगवानसोयमभगवान ॥
हैपांच तत्त्व का तख्तबना शुभबख्त तीन गुण भरा ॥
सब है मायाका खेल उसीमें मेल निरंजन करा ॥
लेतेज ताजको ईश आप जगदीशशीश परधरा ॥
जो धरता उसका ध्यान ज्ञानसे ओ भवसागर तरा ॥

तोडा—सुन प्यारे रही कलाकीकलगीझलकफलकसेदूनी ॥
सुन प्यारे उस पारब्रह्मकी अगम ज्योति है धूनी ॥

दोहा—तन तख्तके ऊपर बैठ बादशाह करे अदल इंसाफ ॥
चाहे जिसको दे सजा करे वोः चाह जिसको माफ ॥
हर निराकार निरधार वोहे अपरंपार उसे पहेचान ॥

हैब्रह्माण्डमेंबादशाहब्रह्मसोईआदिज्योतिभगवानसोयमभगवान ॥
सब रोम रोम है फौज कररही मौज कटे और बढे॥
कोई पीछे को हटजाय कोई बढजाय कोईजा चढे ॥
हैं दोनों हाथ हथियार करैं सबकार हरीने गढे॥
और शब्द नकारा चोपदार चित नाम नकीब पढे ॥

तोडा—सुन प्यारे ये फक्र फकीरां पारब्रह्मसे मांगे ॥
सुन प्यारे नाभी में सर है भराकमल सबलागे ॥

दोहा—विनलिंग भग पैदा करै सकल संसार ब्रह्म ब्रह्मचारी ॥
औ आपी आप है एक नहीं वो पुरुष नहीं वो नारी ॥
हैं हलकारे दो पांव कहे सब नाँव देवीसिंह जवान ॥
हैब्रह्माण्ड में बादशाहब्रह्मसोई आदिज्योतिभगवान सोयमभगवान॥

योगाभ्यास गोपिनी—बहर छोटी ।

है ऊपर कुआँ औ नीचे जिसके डोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ डोरीके ऊपर घिरनी चक्कर खावे ॥ वो मधुर-मधुर ध्वनि बोले मोहिं सुहावे ॥ जब तलक वो डोरी कुयें में आवे जावे ॥ तब तलक कुआं वो नहीं सूखने पावे ॥ उस कुयें के ऊपर खडी हजारों गोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ मुख बंद कुयें का रहै और पानी दरशे ॥ वोह देखे जिसकी डोर लगी रहै हरसे ॥ जब पनिहारिन कुछ काम नराखै घरसे ॥ तब अमृत जलको छके छुटे सब डरसे ॥ वो नित उठ गागर भरे बनी रहै कोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ जब उलटा डोल वह जाय तो पानी आवे ॥ फिर सींचे अपना बाग अमर फल पावे ॥ है काहे का वोह डोल औ कौन बनावे ॥ जो पूरा योगी होय तो मोहिं

बतावे ॥ उस कुयें के ऊपर नहीं चले वरजोरी ॥ पानी भरतीपनिहा-रिन चोरा चोरी ॥ उस कुयें पै गंगा यमुना सरस्वती हैं ॥ औ महादेव अविनाशी पारबती हैं ॥ नौ नाथ चौरासी सिद्ध और बाल यती हैं ॥ नाना प्रकार की उसमें बेलपतीहैं ॥ है राहवहां की बहुते साकर खोरी॥ पानी भरती पतिहारिन चोरा चोरी ॥ लाखों पनिहारिन एकहै वहां पनिहारा ॥ उस पनिहारेने सबको भरदी धारा ॥ जिसने पाया वह नीर तो जन्म सुधारा ॥ कहै बनारसी उसकी गति अपरं पारा ॥ वो न्हावे उसमें जिसका पंथ अघोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोराचोरी ॥

उत्तर–बहर छोटी ।

ब्रह्माण्ड कुआँ और श्वासा जिसकी डोरी ॥ जिह्वा पनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥ जो गुरू देवे उपदेश कानमें आप ॥ तोजिह्वा उसका करती गुपचुप जाप ॥ सुमरन करनेंसे दूरहोय संताप ॥ येवो चोरीहै जिसमें कुछ नहिं पाप॥ मन मगन रहै गुणगावे नंद किशोरी ॥ जिह्वा पनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥ कर प्राणायाम जब उलटा-प्राण चढावे ॥ तबवोः अमृत फिर उसी डोल में आवे ॥ मुँह उलटा उसका रहे बुंद टपकावे ॥ हो जन्म मरणसे रहित अमर होजावे ॥ मैं सत्य सत्य कहूं हाल बात सुन मोरी ॥ जिह्वापनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥ है नवदरवाजे खुले औ दशवांबंद ॥ जहां आदि-ज्योति है पूरण परमानंद ॥ जो देह भावको छोडरहे निर्द्वंद ॥ वोह देखे उसको कटे जगत्का फंद ॥ निशि दिन खेले फिर आप ब्रम्हसंगहोरी ॥ जिह्वा पनिहारिन पिये अमीरसचोरी ॥ अनहद बाजों के बीचमें घिरनी डोले ॥ हर श्वास श्वास पर मधुर मधुर ध्वनि बोले ॥ जो ज्ञान गंगते अपनी आत्मा धोले ॥ वह देखे जो भीतरकी आंखे खोले ॥ ज्ञानीसे काल भी नहीं करे

बरजोरी॥ जिह्वापनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥ सब सृष्टी है पनिहारि औ ब्रह्म पनिहारा ॥ है सब के बीचमें उसीका देख पसारा॥ कहै देवीसिंह वो सबमें सबसे न्यारा ॥ जिस जिसने उसको लखा वो उसका प्यारा ॥ उस नीरमें काया बनारसीने बोरी ॥ जिह्वापनिहारिन पिये अमीरसचोरी ॥

दवा नारायणके नामकी–बहर खडी।

हर एक ढूंढते हैं जंगलमें दवा रसायण की बूटी ॥
नारायण हैं सरजीवन भाई वो बूटी हमने लूटी ॥
कोई ढूंढता उस बूटीको जिसमें पारा तुरत मरे ॥
कोई खोजता जडी को जो कोई तन कायाका दुःख हरे ॥
बहुत लोग खोदें पृथ्वी को वृक्ष काटते हरे भरे ॥
उनको भी फिर यम काटेगा कहे शब्द ये खरे खरे ॥
हरी हरी बूटी है समझौ हरी नाम है सबसे परे ॥
उस बूटी को जिसने पाया वोः भवसागर सहज तरे ॥
राम रसायण पाई हमनें और रसायण सब छूटी ॥
नारायण है सरजीवन भाई वोः बूटी हमने लूटी ॥
कोई कहे हम सिंगरफ मारें और काढें गंधकका तेल ॥
कोई देखते जडी विरंभी कोई ढूंढते अम्मर बेल ॥
हमने सबको देखा यारो येतो हैं सब झूठे खेल ॥
अमर नाम है दत्त निरंजन उसको अपने मनमें मेल ॥
मनको मारके बना ले कुश्ता जो गुजरे वह दिलपर झेल ॥
तनको सोधके शुद्धकरो तुम तजो झूठ और तजो झमेल ॥
जौन शख्स फूंके धातूको उनके हिये कि हैं फूटी ॥
नारायन है सरजीवन भाई वोः बूटी हमने लूटी ॥
कोई मारते अबरख तांबा कोई फूंकते हैं हरताल ॥

हमने अपने मनको मारा मिले हमें गोविंद गोपाल ॥
कोई कहें हम चांदी मारें जिससे हो कुछ धन और माल ॥
इनकर्मोंको जो कोई करता उसका होता हाल बेहाल ॥
कोई कहे हम सोना मारें और करें पैसों को लाल ॥
ठग ठग के लूटें दुनियाको उनको एक दिन ठगेगा काल ॥
बहुत घोटते खरलमें धातू संतौंने काया कूटी ॥
नारायण है सरजीवन भाई वो बूटी हमने लूटी ॥
कोई मारते हैं कलई को जिसमें होवै पुष्ट शरीर ॥
घरको फूंकके तबाह किया वो अमीर से होगये फकीर ॥
साधूका नहिं धर्म जोकि मारें धातू करके तदवीर ॥
कहे देवीसिंह हरी हरी कहौ यहजिह्वा हैगी अकसीर॥
खाक सारकी जबां रसायन इसमें है हरे एक तासीर ॥
जबांसे वोःमुर्देको जिलादे जबांसे देडाले जागीर॥
बनारसीये कहें हमारी राम नाम हैगी घूटी ॥
नारायण है सरजीवन भाई वोः बूटी हमने लूटी ॥

कामधेनु–बहर लंगडी ।

यह काया है कामधेनु कर प्रेम प्रीति हमने पाली ॥
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देने वाली ॥
मगन रूप मस्तक झलके संतोष सुमतके सींगखडे ॥
नहीं वो मारें किसीसे नहीं मरे और नहीं लडे ॥
हीरे मोती लाल और हरएक रतन रसनामें जडे ॥
कृपा और करुणाके दोनों कान नहीं छोटे न बडे ॥
त्रय गुणके हैं तीन चिह्न कहिं श्वेत श्याम कहि है लाली ॥
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छाफल देने वाली ॥

दया धरम के दृग दोनों जैसे रवि शशिका उजियाला॥
बनी नाशिका नाम निश्चय रूपी सबसे आला॥
अपार महिमा का मुख उसमें मंत्र रूप फिरती माला॥
अपनी कायाको हमने कामधेनु करके पाला॥
जस जिह्वा और दिव्य दंत कल्याण कंठ रेकाकाली॥
सबी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देने वाली॥
परमतत्त्वकी बनी पीठ और उग्रतेजका उद्र भला॥
परमारथकी पूंछ हिलरही करे हर एक कला॥
चतुराई के चारों थनमें सम दृष्टी सम दूध ढला॥
चरचारूपी चरण चारों सुंदर सबसे अबला॥
जगमगात हिरदे में जगमग ब्रह्मज्योतिकी उजिआली॥
सबी पदारथ हैं इसमें इच्छाफल देने वाली॥
हमने धार दुही धीरज की अब अपना उद्धार करा॥
छान छानके दूधको हिरदे की हांड़ी में भरा॥
ज्ञानसे गरम किया इसको सारजीवन जामिन बीचधरा॥
जमादही को मथा छल छिद्र छाछ नहिं रही जरा॥
मुक्ति रूप माखनपाया हुई पूरी मनशा मनवाली॥
सबी पदारथ हैं इसमें इच्छाफल देवेवाली॥
जो मांगे सो पावे इससे ऐसी काया कामधयन॥
विश्वरूप है जो देखे इसको उसको होय चयन॥
बनारसी कहै इसे देखकर खुशी हमारे हुये नयन॥
रंग रंग की पढे वाणी और बोलें मधुर बयन॥
सबकी मनशा पूरण करती कोई को नहीं फेरे खाली॥
सबी पदारथ हैं इसमें इक्षा फल देने वाली॥

ख्याल वेदांत-बहर जीकी ।

सबके बीचमें है और देखाई नहीं दे गोविंद ॥
हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दजी ॥
भीतर की गई फूट देय बाहरसे देख लाई, कहें ये बाप हैं ये माई-जी ॥ मरजावें तो कोई साथ नहिं चले बहन भाई, या चाचा हो या हो ताईजी ॥
झूठ बात नहिं बोलें बोलें सत्य बचन येरिंद ॥
हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दजी ॥
गोदीमें लडका औ ढिंढोरा शहरमें फिरवाते, मसलजो है वोही हमगाते जी ॥ इसी तरहसे घटमें हर बाहर खोजन जाते, मिलेनहिं उलटे फिर आतेजी ॥
मुसलमान मक्के जा भटकें हिन्दूभटकेहिंद ॥
हुआ दुनिया को मोतियाबिन्दजी ॥
अरे मूढ अज्ञान तू क्यों भटकै है चारों धाम, तेरे हैं घटमें आत्मारामजी ॥ उन्हे तू क्यों नहिं देखे जो हिरदेमें करे बिश्राम, नामजप तौ तेरा ही नामजी ॥
घटमें आत्मा सूझपडे नहिं योहि गंमाई जिन्द ॥
हुआ दुनिया को मोतियाबिन्दजी ॥
जगन्नाथ औ बद्रीनाथ सब हम भी फिर आयें, कृष्ण इस हिरदेमें पायेजी ॥ देवीसिंहने ज्ञान ध्यान के सदा छंदगाये, रामके चरणों चितलायेजी ॥
बनारसीने ज्ञानदृष्टिसे दिया जगतको निंद ॥
हुआ दुनिया को मोतियाबिन्दजी ॥

शुद्ध वेदांत-बहर जीकी ।

नहीं करों मैं गृहण और कुछ त्याग न हमसे होय ॥
न पाया कुछ न दीना खोय जी ॥

नहीं रैनिको सोवें हम और दिनमें नहीं जागें, लडाई लडें न हम भागेंजी ॥ ज्ञान अग्निमें दग्ध करें हम कर्मन तनदागें, नदेवें दान न कुछ मांगेजी ॥

सुखपावें तो हँसे नहीं नहिं दुखमें देवें रोय ॥

नपाया कछु न दीना खोयजी ॥

नहीं रैन वहाँ होय और जहां दिनका नहीं प्रकाश, हामरा निशि दिन वहीं निवासजी ॥ नहीं किसीसे दूर बसे हम नहीं कोईके पास, नस्वामी बने न कोई के दासजी ॥

अनहोनी होनी से परे हम सोहँ पद है सोय ॥

नपाया कछु नदीना खोयजी ॥

नहीं शत्रुसे विरोध अपना मित्रसे नहीं सनेह, नहीं हम देह हैं नहीं विदेहजी ॥ वनमें अपना बास नहीं और नहीं हमारे गेह, नचाहें धूप नचाहें मेहजी ॥

मात पिता दारा सुत भगिनी सब हैं और नहिं कोय ॥

नपाया कछु नदीना खोयजी ॥

धर्म्म में हम नहिं पुण्य चाहें और अधर्म में नाहिं पाप, नदें वरदान कोई को शापजी ॥ जिधरको देखें एक ब्रह्म सर्वज्ञ रहाहै व्याप, अलखको लखा अलखभये आपजी ॥

बनारसी कहै एक है वोः मत समझो उसको दोय ॥

न पाया कछु न दीना खोयजी ॥

श्रीकृष्ण और शिवजीका स्वरूप वर्णन–बहर जीकी।

शिव गौरा को सब कोइ कहते ये दोऊ येकी अंग ॥

कृष्ण शिव हम कहते अर्द्धंग भला ॥

आधे शीश पर जटा औ आधे लटके लटकाली ॥

आधे शिव आधे वनमाली जी भला ॥

आधे मुख वेदांत और आधे वेदकी ध्वनि आली ॥
करें आपस में बोला चाली जी भला ॥

दोहरा—कहें गौवरजा सुनो लक्ष्मी देखो पताका रूप ॥
ऐसा रूप नहीं देखाथा सो देखो आज स्वरूप ॥
आधे शिर मुकुट आधे शिर गंग भला ॥
आधे शीशपर चन्द्र और आधे चंदनका है खौर ॥
इधर मुरछल और उधर हो चौर भला ॥
आधे मुख माखन और आधे धतूरेका है कोर ॥
आधा अंग श्याम आधा अंग गौर भला ॥

दोहरा—आधे अंगमें भस्म लगी आधे अंग लगी सुगंध ॥
आधा अंग है क्रोधवंत और आधा अंग आनंद ॥
आधे अंग वस्त्र आधा अंग नंग भला ॥
आधे मुख मुरली बाजे आधे मुख बाजे नाद ॥
न उनका अन्त न उनका आदि भला ॥
आधे मुख अमृत और आधे हलाहलका है स्वाद ॥
दूर करें क्षण में विघ्न विषाद भला ॥

दोहरा—आधे अंगमें सर्प और आधे अंग में भूषण हेम ॥
आधा अंग है कर्म रहित और आधे अंग में नेम ॥
आधा ब्रह्मचर्य आधा सरभंग भला ॥
आधे कमरमें लंगोटा आधे कटकछनी कसे ॥
दोनों अंग एक अंग में बसे भला ॥
आधा आसन गरुडपर आधा नंदीगणपर लसे ॥
ये शोभा देख मेरा मन हँसे भला ॥

दोहरा—अर्ध स्वरूप है महाकाल और आधा पालनहार ॥

काशीगिरि ये कहै है उनकी महिमा अगम अपार ॥
देख सुर नर मुनि होगये दंग भला ॥

एकरूपमें चार रूप–बहर लंगडी।

आधे अंगमें कृष्ण लक्ष्मी आधे में शिव पारबती ॥
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करैं यती ॥
एक समय मैंने भक्ती कर कहा हरीहरसे भाई ॥
एक अंग में मुझे तुम चार रूप देव दिखलाई ॥
शिवके बायें गौरि दाहिने श्री लक्ष्मी यदुराई ॥
भक्तके वशहैं प्रभु यह महिमा वेदोंने गाई ॥
ऐसाई रूप दिखाया मुझको लक्ष्मीवर और गवरपती ॥
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ॥
श्री कृष्णके मोर मुकुट शिवका जूडा बँध रहा विशाल ॥
गौर को सोहेंहार फूलोंके रमाके मुक्तामाल ॥
शिव धारें भस्मी माथेपर श्रीकृष्णके केसर भाल ॥
रमाको सोहैं वह भूषण दिव्य गवरके लपटे व्याल ॥
चारवेद चारोंकी स्तुती करें न पावें पाव रती ॥
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करैं यती ॥
श्री कृष्णके शंख हाथमें शिवजी करमें लिये कपाल ॥
रमा बजावें वो चुटकी गौरा दो करसे दें ताल ॥
मनमोहनकी मुर्ली बाजे शिवका डमरू बजे धमाल ॥
गौरके माथे पै चंदन रक्त रमाके बिंदीलाल ॥
शिव योगी हरि ब्रह्मचारी लक्ष्मी कुँवारी और गौर सती ॥
एक अंगमें रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ॥
श्री कृष्णके चक्र सुदर्शन शिवजी करमें लिये त्रिशूल ॥
पार्वतीके हाथमें खड्ग रमाके कमलका फूल ॥

देवीसिंहने कहा ख्याल यह वेद पुरानोंके अनुकूल ॥
बनारसीके छन्द में कभी न हरगिज निकले भूल ॥
जो इस पदको सुने औ गावै उसकी होजाय तुर्तगती ॥
एक अंग में रूप है चार ये वर्णन करैं यती ॥

हरिहरात्म मूर्ति--बहर जीकी ।

श्रीकृष्ण शिव एक रूप हैं रहते एकी संग, हरि हर दोनों हैं अर्द्धांगभला ॥ आधा अंगहैं श्रीकृष्णका आधा शिवकाजान, कहां ये परम पुरातन ज्ञान भला ॥ कृष्ण करें शिवका स्मरण शिव धरें कृष्णका ध्यान, आत्मा एक एक स्थान भला ॥

दोहा–शिवजी साधें योग कृष्णजी करते भोग विलास ॥
योग भोग दोनों एकी दोनोंका ब्रह्म में वास ॥ वह पहेने भूषण वह रहैं नंग भला ॥ कृष्णपढें गीता और शिवजी पढें आप वेदांत, वो करते क्रोध वो रहते शांत भला ॥ कृष्णकरैं क्रीडा ब्रजमें शिव रहैं सदा एकान्त, दोनोंकी सुंदर शोभा कान्त भला ॥

दोहा–शिवका सुमरण करते करते कृष्णजी होगये श्याम ॥
शिवजी होगये श्वेत जपा करते हैं कृष्णका नाम ॥ ऐसा नहीं कोई का सत्संग भला ॥ कृष्ण बजावें मुरली मुख धर शिवजी गाते गान, निकलें दोनों में एकी तान भला ॥ कृष्ण भरें भंडार जगतके शिव देते वरदान, करें दोनों जनका कल्यान भला ॥

दोहा–कृष्ण करैं वैराग तीव्र और शिव धारैं संन्यास ॥
वो उनको सेवक हैं और वो हैंगे उनके दास ॥ करें राक्षसों को दोनों दंग भला ॥ कृष्ण सोवते शेषकि सेज्या पर करके

आराम, करें शिव मशान में विश्राम भला ॥ कृष्ण करें शिव की सेवा शिव करें कृष्ण का काम, रटो दोनोंको आठो याम भला ॥

दोहा—शिव पूजें विष्णु के चरण करें कृष्ण लिंग पूजा ॥

हरी हरातम है यक मुरती और नहीं दूजा ॥ उनके शिर मुकुट उनके शिर गंग भला ॥ त्रयी गुण से शिव रहित कृष्ण हैं तीन लोकसे परे, भजो चाहे हरि भजो चाहे हरे भला ॥ शिवने त्रिपुरासुरको मारा कृष्णसे कौरवमरे, येदोनों कोऊसे नहीं डरे भला ॥

दोहा—शिवके संग रहैं सदा योगिनी और भूत वैताला ॥

कृष्ण लिये ग्वालनी संगमें ब्रजके सारे ग्वाला ॥ वो पीती दूध वो पीते भंग भला ॥ कृष्ण बने गौरा जी शिवजी बने लक्ष्मी आप, न उनको पुण्य न उनको पाप भला ॥ कृष्णहरें बाधातनकी शिव दूर करें संताप, मेरा मन दोनों में रहा व्याप भला ॥

दोहा—कृष्णबने नंदीगण शिवजी गरुडरूपलें धार ॥ वो उन पर बैठें और ओ होते उनपर असवार ॥ ये दोनों एक हैं और बहुरंग भला ॥ कृष्ण पारथी पूजें शिवजी पूजें शालिग्राम, बना दोनों का सुंदर धाम भला ॥ शिवकी काशी बनी बना श्री कृष्ण का गोकुल ग्राम, देवीसिंह दोनोंका ले नाम भला ॥

दोहा—शिवका शिवाला बना कृष्ण काहै ठाकुरद्वारा ॥ बनारसी ये कहैं मुझे दोनोंका नाम प्यारा ॥ उठैहै मनमें येही तरंग भला॥

लक्ष्मी गौराका अभेद छंद ।

वोही लक्ष्मी वही गौरा जी चार वेद में देख ॥ शक्ति है एक जुदे दो भेष भला ॥ विष्णुके संग रहैं सदा लस्मी शिवके संग पार्वती ॥ लखी नहिं जाय दोनोंकी गती भला ॥ लक्ष्मीके पति इन्द्रिजीत है गौरा के पति यती ॥ लक्ष्मी कुआंरी गौरा सती भला ॥

दोहा—लक्ष्मी को चढें पुष्प और गौरा को चढें बेलपती ॥ उनकी बुद्धी निर्मल है और है उनकी मती सुमती ॥ रूप दोनों का अलख अलेख भला ॥ लक्ष्मीके मस्तक पर सोहै सुंदर बेंदी भाल ॥ गौरके मस्तक चन्द्र विशाल भला ॥ लक्ष्मी के उर पडा हार है जिसमें मोती लाल ॥ गौरि के कंठ मुंड की माल भला ॥

दोहा—लक्ष्मी के दोनों करमें है कड़े जडाऊपडे ॥ गौरके कर सोहैं कंगन दोनों के भाग हैं बडे ॥ लिखी विधनाने ऐसी रेख भला ॥ लक्ष्मी के सेवक हैं सो सब करते सुंदर भोग॥गौरिके सेवक साधें योग भला ॥ लक्ष्मी को जो सुमरे उसको कभी न व्यापे सोग ॥ गौरि को भजे सो रहे निरोग भला ॥

दोहरा—क्षीरसिंधुमें वसै लक्ष्मी नारायण के पास ॥ गौर बसे शिव संग जहां सुंदर पर्वत कैलास ॥ भक्तजन लेते उन्हें परेख भला॥ लक्ष्मीका सीतल स्वभाव है जल और चन्द्रमा जान ॥ गौरिको समझो अग्नि भानु भला ॥ लक्ष्मी के हैं पासमें हीरे लाल मोतिन की खान ॥ गौरि की विभूती है धनवान भला ॥

दोहा—लक्ष्मी में बसे गवर गवर में करें लक्ष्मी बास ॥ सुनो इधर धर ध्यान तुम हमसे इनकी उनकी रास ॥ है उनकी कुंभ और उनकी मेख भला ॥ श्री लक्ष्मी पहने तनुके ऊपर वस्तर लाल ॥ गवरजा ओढ रही मृगछाल भला ॥ कहीं भार्या बनी कहीं जननी हो करें प्रतिपाल ॥ बनी कहीं अंत काल का काल भला ॥

दोहा—ब्रह्मा लिखते थके शेषजीने नाहिं पाया पार ॥ बनारसी ये कहै कहूं मैं कहां तलक विस्तार॥मुझे दोनों की भक्ति विशेष भला ॥

ख्याल अद्भुत—बहर जीकी।

जो चाहे सो करे प्रभू उसकी गति लखी न जाय ॥ कर्म के लिखे

को देय मिटाय जी ॥ कितने ही मरगये तो उनको पलमें दिया जि-
लाय ॥ काल को देखो कालै खाय जी ॥ लूला चढे पहाड के ऊपर
विना पौरुषसे धाय ॥ एक तृणमें त्रय लोक समाज जी ॥ सेतबांध-
के समुद्र में हरि पत्थर दिये तराय॥ कर्म के लिखे को देय मिटा-
यजी ॥ मूरुख चातुर को देता एक पलमें वेद पढाय॥जिये ओ सदा
जो विषको खायजी ॥ मीन धूपमें मगन रहे नाहिं पानी उसे सुहाय ॥
कहो कोई इसके अर्थ लगायजी ॥ लोहा कंचन बने जो उसको पारस
देव छुवाय ॥ कर्मके लिखे को देय मिटायजी ॥ विधवा होय सुहा-
गिन उपजे पुत्रतो करे सहाय ॥ आगको पानी देय जलायजी ॥ भूखा
भोजन नहीं करे और पेट भरा सभखाय ॥ शेर को भेडी देय भगा-
यजी ॥ भृंगी कीडे को अपने सम लेता आप बनाय ॥ कर्मके लिखेको
देय मिटाय जी ॥ मार्कंडेजी बारा बरसकी आये उमर लिखाय ॥
लिखी विधनाने बहुत चित लायजी ॥ सोतो होगये चिरंजीव मैं सत्य
सत्य कहूं गाय ॥ प्रभूके आगे कर्म लजाय जी ॥ बनारसी कहे नरसे
प्राणी नारायण होजाय ॥ कर्म के लिखे को देय मिटायजी ॥

सिद्धांत-बहर जीकी ।

चार फरिस्ते हुकुम में हाजिर रहैं मेरे दरबार ॥ लिये वो चार
चार तलवार जी ॥ जिधर इशारा करूं उधर दलके दल डारें मार ॥
करें वो दुष्टों को मिसमारजी ॥ आंखें उनकी लाल बनीरहें उत-
रे नहीं खुमार ॥ है ताकत उनमें बिना सुमारजी ॥ कोई न पापी
बचे जडें जिसवक्त वोकातिलवार॥ लियेवोचार चार तरवारजी ॥
कोई अगर छेडे औ करै कुछ मुझसे दारो मदार॥ दिखावें उसी को
वोः फिर दार जी ॥ हत्यारों का तनुसे शिर करदें दम्में नादार ॥
हुकुम येहै दावर दादारजी ॥ मशरिग से मगारिबतक घूमें चारो
तरफ वोः चार॥ लिये वो चार चार तरवार जी ॥ कोई नहीं जीते

उनसे जो लडे सो जावे हार ॥ करें वो चारो तरफ गोहार जी ॥ जिस जिसको वो मारें उसका कर डालें आहार ॥ चोट उनकी क्यासकें सहार जी ॥ एक हाथसे काटैं वह काफिर की लाख कतार ॥ लिये वो चार चार तलवार जी ॥ नाम एक का सुनो शनिश्चर दूजे मंगलाचार ॥ तीसरे को समझो एतवार जी ॥ एक वृहस्पती सदा सुखी रहैं मेरे चारो यार ॥ उतारें कुल पृथ्वीका भारजी ॥ मेरे कहेसे दुर्बुद्धीका कर डालें संहार ॥ लिये वो चार चार तलवार जी ॥ कांप उठे आसमां जिसघडी मारें वोः किलकार ॥ मरें सब दुनिया के मक्कारजी॥ बनारसी कहे तीन लोकमें मचे वो जय जयकार ॥ बचे नहिं कोई भी बदकार जी ॥ सतयुग को दे राज और कलियुग को डारे फटकार ॥ लिये वो चार चार तलवार जी ॥

श्रीकृष्णके लटकी स्तुति।

श्री गिरिधरने लटकाली लटकाली आनन पर आला ॥ अति विचित्र लटकी लटक लटककर अमृत रसको चाखें॥ जो सर्प ओस जिह्वासे चाटके प्राणको अपने राखें ॥ शशिमंडल कीसी शोभा उपमा वेद भी ऐसी भाखैं ॥ राधे सखियन से कहैं घूमके मनको मेरे सुलाखैं ॥

तोडा—मोहनी अलकन में बसी—छबि भांत भांतकी फसी ॥ मानो बने कृष्ण महेश पहेन कर नागन कीसी माला ॥ श्री गिरिधरने लटकाली लटकाली आनन पर आला ॥ कोइ बाबी मेंसे लपक चलै कोइ गिडली मारके बैठे ॥

कोई उगल के मनको खडे और कोई संगनार के बैठे ॥
कोई फनसे फुफकारें और कोई केंचली उतार के बैठे ॥
मानो विष भरे भुजंग वो मलयागिरि विचार के बैठे ॥

तोडा—कोइ श्वेत लाल कोइ पीले रंग रंगके सर्प रंगीले ॥
रोली केसर चंदनसे चर्चके अद्भुत रंग निकाला ॥
श्री गिरिधरने लटकाली लटकाली आनन पर आला ॥
उपमा एक और कहूं जो सुनो कोउ कविसे कही न जावे ॥
मानो कजलीबनसे सुगंध नानाप्रकार की आवे ॥
एक तो मन उलझा काव्य में दूजे कृष्णकी लट उलझावे ॥
जो कुंज कुंजमें परदेशी भूला नहिं रस्ता पावे ॥
तोडा—हरिके लट भूलनी वारी—भूले ब्रजके नरनारी ॥
जो प्रेम जाल में फँसा वहीं वो बसा न गया निकाला ॥
श्री गिरिधरने लटकाली लटकाली आनन पर आला ॥
अति उत्तम छबि अलकन की सुंदर श्याम घटासी दरशे ॥
जब कृष्ण करें स्नान तो मोती झूम झूम के बरसे ॥
वो घुंघर वारे केश छाये चहुँदेश बसे अंबर से ॥
स्तुति कर करके थके शेष और महिमा को जी तरसे ॥
तोडा—जो इस पदको कोइ गावे—वो भुक्ति मुक्ति सब पावे ॥
कहे बनारसी भजराम कृष्ण गोविंद और श्री गोपाला ॥
श्री गिरिधरने लटकाली लटकाली आननपर आला ॥

ख्याल अधर।

कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नया निकाला ॥
श्री कृष्णकी अलकें अलख केशसे शेष लजत धरणीधर ॥
घन घटा देखकर घटत निशा अति छकत कहत धरणीधर ॥
काली काली लट कला करै चित हरत तकत धरणीधर ॥
रसना सहस्रसे रटत रटत दिन रात थकत धरणीधर ॥
तोडा—करसे गहकर छिटकाई—नागिना देख लहराई ॥ कालीने शंका खाई—लेखनी लेखना लिखत अलक जद दिखत कृष्ण की

झाला ॥ कान्हाने लटलटकाके लटका लटका नया निकाला ॥ दृग चंचल चतर हरीके नेत्र लागत खंजन ते नीके ॥ करें लहर लकीरें लाल लगत कारे अंजन ते नीके ॥ गडगये कलेजे आय धायके चन्द्र किरणते नीके ॥ रस सागर ते अति सरस हरन चित लगत हरिनते नीके ॥

तोडा–शर चलत नेत्र ते तीखे–जद लडत दृगन ते दीखे ॥ हरि चरित्र कैसे सीखे ॥ कसकत हिरदे दिन रैन नयन ने ऐन कलेजा शाला ॥ कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नया निकाला ॥ आनन की षटदश कला दिन्नते हीरे लाल लजाये ॥ दर्शन कारण षट दर्शन आसन त्याग त्याग कर आये ॥ शंकर इन्द्रादिक सहित चरण नंगे कर करके धाये ॥ श्रीकृष्णकी लीला देख छंद आनंद से कथ कथ गाये ॥

तोडा–तन चंदन हार चढाये–अक्षत ले शीश लगाये ॥ हिरदे चरणन चितलाये ॥ नंदलाल कंसके काल काट दिया अंधकार का ताला॥कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नयानिकाला ॥ हर निराकार निरधार चार कर त्रई ताल केकरता ॥ षट राग तीस रागिनी नारायण तीन ताल के करता ॥ सच्चिदानंद आनंद कालके काल कालके करता ॥ हैं आदि अनादि अगाध कृष्ण अक्षय अकाल के करता ॥

तोडा–कहै काशी गिरि हरि हर हरदिनरैन ध्यान हिरदेधर ॥ रज चरणन की अंजन कर ॥ कहा अधर छंद धर ध्यान ज्ञान दे दान नन्द के लाला ॥ कान्हा ने लट लटका के लटका लटका नया निकाला ॥

श्रीकृष्णके विश्वरूप की मूर्ति।

नंदनँदन ब्रजराज कि छबि अब कोटिन भानु प्रकाश करें ॥

उदित करें चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाश करें ॥
कोटिन शीश नेत्र कोटिन अरु न कोटिन कर्ण हरीके हैं ॥
कोटिन हैं नाशिका हरी की कोटिन वर्ण हरीके हैं ॥
कोटिन मुख कोटिन जिह्वा कोटिन गति शर्ण हरीके हैं ॥
कोटिन भुजा उदर कोटिन न अरु कोटिन चरण हरीके हैं ॥
शैर—कोटिन हरीके मुकुटहैं कोटिन हैं तिलक भाल ॥
कोटिन हरीके कंठहैं कोटिन मुक्ता माल ॥
कोटिन मणी हरी की हैं कोटिन हरीके लाल ॥
कोटिन हरीके भाव हैं कोटिन हरीकी चाल ॥
कोटिन पग पाताल छुवे अरु कोटिन आश अकाश करें ॥
उदित करें चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाश करें ॥
कोटिन रूप हरीके हैं और कोटिन नाम हरीके हैं ॥
कोटिन कर्म हरीके हैं और कोटिन काम हरीके हैं ॥
कोटिन ग्राम हरीके हैं और कोटिन धाम हरीके हैं ॥
कोटिन शैव हरीके हैं और कोटिन बाम हरीके हैं ॥
शैर—कोटिन हरीके वेद हैं कोटिन हरीके मंत्र ॥
कोटिन हरीके शास्त्र हैं कोटिन हरीके तंत्र ॥
कोटिन हरीकी पूजा हैं कोटिन हरीके यंत्र ॥
कोटिन से हरि अंत्र हैं कोटिनसे हैं निरंत्र ॥
कोटिनको सुख देंय हरी कोटिनके मनमें त्रास करें ॥
उदित करें चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाश करें ॥
कोटिन इन्द्र हरीके हैं और कोटिन राज्य हरीके हैं ॥
कोटिन हैं गंधर्व हरीके कोटिन साज हरीकेहैं ॥
कोटिन माया हरीकी हैं कोटिन समाज हरीके हैं ॥
कोटिन मित्र हरीके हैं कोटिन मुहताज हरीके हैं ॥

शैर–कोटिन हरीके गज हैं और कोटिन खडे तुरंग ॥
कोटिन हरीके रथ हैं और कोटिन हैं रथके संग ॥
कोटिन हरीके वेष हैं कोटिन हरीके रंग ॥
कोटिन हरीकी लहर हैं कोटिन उठे तरंग ॥
कोटिन हरी वैकुंठ करैं चाहे कोटिन कैलास करें ॥
उद्दित करैं चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाशकरें ॥
कोटिन हैं गोपिका हरीकी कोटिन ग्वाल हरीके हैं ॥
कोटिन धेनु हरीकी हैं कोटिन गोपाल हरीके हैं ॥
कोटिन सिंधु हरीकेहैं और कोटिन ताल हरीकेहैं ॥
कोटिन रत्न हरीके हैं और कोटिन थाल हरीके हैं ॥

शैर–कोटिन हरीके दैत्य हैं कोटिन हैं देवते ॥
कोटिन हरीके नामको हैं मुखसे लेवते ॥
कोटिन हरीके नाँव हैं कोटिन हैं खेवते ॥
कोटिन हरीके चर्णको हैं करसे सेवते ॥
देवीसिंह कहे बनारसीके घटमें हरी निवास करें ॥
उद्दित करैं चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाश करें ॥

श्री सीताजीके वियोग में–बहर लंगडी।

श्री सीताजीके वियोगमें भये राम दुर्बल तनु छीन ॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥
उठें तो कांपें चरण खडे होवें तो लरजे सकल शरीर ॥
धनुष वो ताने तो छुटे चुटकीसे धीरजमें तीर ॥
क्रोधसे कांपे तीन लोक और जरे राक्षसन की सब भीर ॥
रावण मनमें डरे देखे जो क्रोधित श्री रघुवीर ॥

शैर–प्रथम तो उनका राज पाट योगमें छूटा ॥
औ खानो पान सियाके वियोग में छूटा ॥

अवधका बास गया तात स्वर्गको पहुँचे ॥
भरतका साथ भी देखो वो शोगमें छूटा ॥
शरीर तो पींजर सब बन गया मनरहे सीता में लवलीन ॥
निर्बल होय के लडे रावण से प्रेमके प्रभु आधीन ॥
दिवसको होय संग्राम निशाको करें कहो किसविधि दरशैन ॥
मुख ढापें तो झरे झरनासे प्रभुके वो दोउ नैन ॥
करें जो मुखसे बातती निकले जिह्वा से कुछके कुछ वैन ॥
लषण सुनें तो लख प्रभु वियोग में हैं अति बेचैन ॥
शैर–ये कष्ट देख के लक्ष्मणने वो विचार किया ॥
मरेगा कल वो रावण मिलेगी आन सिया ॥
कालकेवश है वोही जोकि प्रभुसे झगडा ॥
हमारे रामसे लडके ये जगमें कौन जिया ॥
दुर्बल भये तो मन नाहिं हारा याही ते लेहैं सब छीन ॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥
भोर होत मुख धोय कियाजबरामचन्द्र जीने स्नान ॥
पूजन विधिसे करी फिर उठा लिया वह धनुष औ बान ॥
चले साथ देखने युद्ध लछमन भ्राता और श्री हनुमान ॥
पहुंचे रण में जहां रथपर बैठा रावण बलवान ॥
शैर–रामको देखके रावणने धनुषको ताना ॥
औ मारे पांच बाण तब ये रामने जाना ॥
है इसकी आज मौत कालने इसको घेरा ॥
तो रामजीने भी अपनाय धनुष संधाना ॥
अंग तो दुर्बल थाही पर सीताकी शक्तिथी परवीन ॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥
असोज काथा मास और वोह शुक्लपक्ष दशमीका दिन ॥

राम औ रावणके उसदिन चले बान कोटिन गिन गिन ॥
रावणके बाणोंको राम काटें तृणवत पल पल छिन छिन ॥
रावणके शिर कटें उपजें इतने में छिप गया दिन ॥
शैर–हृदय में अपने वो रखताथा ध्यान सीताका ॥
सोउसके मनसे गया पलमें ज्ञान सीताका ॥
उसी समय में वोह मारे जो बाण दशप्रभुने ॥
रहा इस जगत् में देखो वहमान सीताका॥
काटकें उसके दशो शीश फिर अपनेही में करलिया लीन ॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥
गिरा वह रथसे पृथ्वीपर तो कहा कहां है कहां है राम ॥
इस कारणसे मिला वह अंत समयमें उत्तम धाम ॥
किसी वहाने अंत समय में राम रामका कहै जो नाम ॥
कहै देवीसिंह मिले वो राम में और पावे आराम ॥
शैर–ये छंद रामका अपने जो मुखसे गावेगा ॥
तरेगा वो भी इसे जो सुने सुनावेगा ॥
ये पूरी होगई रावणके मारने की कथा ॥
वोही समझेगा इसे जो के लव लगावेगा ॥
रामचन्द्रने लेकै सीता लंक विभीषणको देदीन ॥
निर्बल होय के लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥

स्तुति शिवजी के त्यागकी–बहर खडी ।

धन धन भोलानाथ तुम्हारे कौडी नहीं खजाने में ॥
तीन लोक वस्ती में बसाये आप बसे वीराने में ॥
जटा जूट का मुकुट शीशपर गलेमें मुंडोंकी माला ॥
माथे पर फूटासा चन्द्रमा कपालका करमें प्याला ॥

जिसे देखके भय व्यापे सो गले बीच लपटा काला ॥
और तीसरे नेत्रमें तुम्हारे महाप्रलयकी है ज्वाला ॥
पीनेको हरवक्त भांग और आक धतूरा खाने में ॥
तीन लोक बस्तीमें बसाये आप बसे वीराने में ॥
चर्म शेरका वस्त्र पुराना बूढा बैल सवारीको ॥
तिसपर तुम्हरी सेवा करती धन धन गौर विचारी को ॥
वोतो राजाकी पुत्री और व्याही गई भिखारी को ॥
क्या जाने क्या देखा उसने नाथ तेरी सर्दारी को ॥
सुनी तुम्हारे व्याह की लीला भिखमंगों के गाने में ॥
तीन लोक वस्ती में बसाये आप बसे वीराने में ॥
नाम तुम्हारे अनेक हैं पर सबसे उत्तम है नंगा ॥
याही ते शोभा पाई जो विराजती शिरपर गंगा ॥
भूत प्रेत वैताल साथमें ये लस्कर सबसे चंगा ॥
तीन लोकके दाता होकर आप बने क्यों भिखमंगा ॥
अलख मुझे बतला ओ मिले क्या तुमको अलख जगाने में ॥
तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे वीराने में ॥
येतो सर्गुण को स्वरूप है निर्गुणमें निर्गुण हो आप ॥
पलमें प्रलय करो छिन में रचना तुम्हें नहीं कुछ पुण्य नपाप ॥
किसी का सुमिरन ध्यान न तुमको अपनाही करते हो जाप ॥
अपने बीचमें आप समाये आपी आप में रहे हो व्याप ॥
हुआ मेरा मन मगन ये सिठनी ऐसी नाथ बनाने में ॥
तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे वीराने में ॥
कुबेर को धन दिया और तुमने दिया इन्द्रको इन्द्रासन ॥
अपने तनपर खाक रमाई नागों के पहने भूषण ॥
भुक्ति मुक्ति के दाता हो मुक्ती भी तुम्हारे गहें चरण ॥

देवीसिंह कहै दास तुम्हारा हित चित से नित करे भजन ॥
बनारसी को सब कुछ बख्शा अपनी जबां हिलाने में ॥
तीन लोक बस्तीमें बसाये आप बसे वीराने में ॥

ख्याल शिवजीका—निर्गुण खडी।

शिवजी तो कुछ सूम नहीं जो धनको धरें खजाने में ॥
सारी वसुधा बाँट दई मशहूर है यही जमाने में ॥
राई भर चाँदी नहिं सोना हीरे मोती लाल नहीं ॥
जिह्वा से सब कुछ देदें जिस को वह हो कंगाल नहीं ॥
विभूतीमें जो कुछ उनके वह कुबेरके घर माल नहीं ॥
दीन के ऊपर दया करें कोइ ऐसा दीनदयालु नहीं ॥
भागीरथ को गंगा देदी मुक्ती मिले नहाने में ॥
सारीवसुधा बाँट दई मशहूर है येही जमाने में ॥ १ ॥
वेद न जाने भेद कुछ उनका पुरान पावे पार नहीं ॥
शास्त्र न जाने गती कुछ उनकी शिव सा कोई अपार नहीं ॥
जहाँ परहै उनका आसन वाँ किसी का है विस्तार नहीं ॥
रवि शशि अग्नि पवन भीतो कोई उनके पहुँचे द्वार नहीं ॥
निर्गुण में तो ब्रह्म वोही हैं सर्गुण हैं लिंग पुजाने में ॥
सारी वसुधा बाँट दई मशहूर है येही जमाने में ॥ २ ॥
तीन लोक के बीचमें कोई नहीं है ऐसा वरदानी ॥
कोई नहीं योगी ऐसा और कोई नहीं ऐसा ध्यानी ॥
भिक्षुक भेष न देखो उनका वह स्वरूपहैं निरवानी ॥
सर्प न लिपटे जानो तनमें वहतो भक्त सब हैं ज्ञानी ॥
खुलें आँख जब भीतर की तब आवे दरशन पानेमें ॥
सारी वसुधा बाँट दई मशहूर है येही जमाने में ॥ ३ ॥
निंदामें स्तुती करे तो इसी में वह होते हैं मगन ॥

रूप अमंगल मंगलदायक उनका तो उलटा है चलन ॥
प्रेम से उनको गाली दो तो उसी को वह समझे हैं भजन ॥
जो कोइ उनको जहर चढाये उसीको वह देते अन धन ॥
और कुछ उनको ख्वाहिश नहँ वह मगन हों गालबजानेमें ॥
सारी वसुधा बाँट दई मशहूर है येही जमाने में ॥ ४ ॥
शेशि न उनके लिंग न उनके चर्ण न उनके और सब है ॥
ऐसा कोई विरला जन जाने उसे नहीं व्यापे फिर भय ॥
देवीसिंह यह कहे अरे नर कहु तू मुखसे जै शिव जय ॥
बनारसी जय जय करनेसे शिव स्वरूप में होगया लय ॥
राजा हिमनचल दंग होगये पारवती के व्याहन में ॥
सारी वसुधा बाँट दई मशहूर है येही जमाने में ॥ ५ ॥

शिवजीका बांटना–बहर खडी।

धन धन भोलानाथ बांट दिये तीन लोक इक पल भरमें ॥
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घरमें ॥
प्रथम दिया ब्रह्मा को वेद वो बना वेदका अधिकारी ॥
विष्णु को देदिया चक्र सुदर्शन लक्ष्मी सी सुंदर नारी ॥
इन्द्र को देदी कामधेनु और ऐरावत सा बलकारी ॥
कुबेर को सारी वसुधाका कर दिया तुमने भंडारी ॥
अपने पास पात्र नाहिं रक्खा रक्खातो खप्पर करमें ॥
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौड़ी नहीं रखी घरमें ॥
अमृत तो देवतों को दिया और आप हलाहल पान किया ॥
ब्रह्मज्ञान देदिया उसे जिसने कुछ तुम्हारा ध्यान किया ॥
भागीरथको गंगा देदी सबजगने स्नान किया ॥
बडे बडे पापियों को तुमने एक पलमें कल्यान किया ॥
आप नशेमें चूर रहो और पियो भांग नित खप्परमें ॥

ऐसे दीनदयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घरमें ॥
रावणको लंका देदी और बीसभुजा दशशीश दिये ॥
रामचन्द्रको धनुष बाण वो तुमहीतो जगदीश दिये ॥
मनमोहनको मोहनी देदी मोर मुकुट तुम ईश दिये ॥
मुक्ति हेतु काशी में वास भक्तोंको विश्वावीस दिये ॥
अपने तनुपर वस्त्र न राखो मगन रहो बाघम्बर में ॥
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घरमें ॥
नारदको दई बीन और गंधर्वोंको रागदिया ॥
ब्राह्मनको दिया करम कांड और संन्यासीको त्याग दिया ॥
जिसपर तुम्हरी कृपा हुई उसको तुमने अनुराग दिया ॥
देवीसिंह कहै बनारसीको सबसे उत्तम भाग दिया ॥
जिसने पाया उसीने पाया महादेव तुम्हरे वरमें ॥
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घरमें ॥

ख्याल श्री हनुमान जीका पंच मुखी कवच का माहात्म्य इसके पढने से होगा॥

बहर खडी तीन तीन मिसरेका चौक ।

महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुम्कुम् अगरम् ॥
ज्ञानवान अभिमान रहित निर अहंकार हर योगी ॥
इंद्रीजीत कामना त्यागी नचकामी नचभोगी ॥
रूप आनंदम् परमानंदम् महावीर मस्तकम् ॥

प्रथम मुखकी स्तुति ॥ १ ॥

दशकंधर अभिमान हनन् लंका दाहन बजरंगी ॥
पूरणब्रह्म अखंडसच्चिदानंद साध सत्संगी ॥
नाम उच्चारत नित गोविंदम् ॥
हमावीर मस्तकम ललित सेंदूरम् कुम्कुम् अगरम् ॥

द्वितीय मुख की स्तुति ॥ २ ॥

रक्तम् चीर गदा कर शोभित पुष्पमाल उरधारन ॥
दैत्यन् दलन हनन दुष्टन दल सकल शत्रु संहारन ॥
शब्द ध्वनि गर्जंत हरि हरि बम् बम् ॥
महावीरमस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम अगरम् ॥

तृतीय मुख की स्तुति ॥ ३ ॥

शिवशंकर सर्वज्ञ स्वरूपम् विश्वेश्वरम् विशालम् ॥
परम वैष्णव शुद्ध आत्मा कालंकाल अकालम् ॥
बहु विस्तारम् मम किम् वर्णम् ॥
महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम अगरम् ॥

चतुर्थ मुख की स्तुति ॥ ४ ॥

जटा जूट मकराकृत कुंडल रत्न जडित तनु भूषण ॥
पंचममुख सुखदायक दाता देओ पति निर्दूषण ॥
छंद काशीगिरि शास्तर कथितम् ॥
महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम अगरम् ॥

इति पांचों मुख की स्तुति सम्पूर्णम् ॥ ५ ॥

विश्वरूपी बाग ।

विश्वरूप खिल रहा बाग जिसमें आदम की गुलजारी ॥
रंग रंग के फूलहै तरह तरह की फुलबारी ॥
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण ये चारो दीवार बनी ॥
हरेक तरफसे नदियों की हैं छूटी नहेर घनी ॥
सात सिन्ध सोइ तलाव सातो सबका मालिक वही धनी ॥
चाहे बनावे चाहे एक पलमें करदे फनाफनी ॥
विश्व बागके भीतर उसके कुदरत की फैली क्यारी ॥

रंग रंग के फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी ॥
नवखंडोके महल बनाये दशो दिशा के दश द्वारे ॥
त्यार किये हैं बागमें चौदा भुवन न्यारे न्यारे ॥
आशमान की छात लगाई जिसमें जड दिये हैं तारे ॥
गरज गरज घन करैं छिडकाव छोडते फौवारे ॥
चांद औ सूर्य्य चारो तरफ की करते हैं चौकीदारी ॥
रंग रंग के फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ॥
चमत्कार का चमन लगाया पारब्रह्म ने आपी पाप ॥
हर जर्रे में झलकता हरशय में वो रहा है व्याप ॥
इसी बागके भीतर बैठे ऋषी मुनी सब करते जाप ॥
कोई गावते भजन और कोई रहे पंच अग्नी ताप ॥
साधु संत करैं शैर बागमें परमहंस या ब्रह्मचारी ॥
रंग रंग के फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ॥
कल्पवृक्ष औ मलयागिरी वो फलेहैं उसमें अमृत फल ॥
कभी न सूखें कि जिसमें ज्ञान रूप है गंगाजल ॥
देवीसिंह कहै हरी कृपासे जिसकी हो बुद्धी निर्मल ॥
ऐसे बागमें अमर वोः होय न आवे उसे अजल ॥
विश्व बागको मालिक है वोही श्री कृष्ण गिरिवरधारी ॥
रंग रंग के फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी ॥

भक्तियोग–बहर जीकी ।

भोजन हरिके प्यारे वोतो हैंगे कालके काल, कालको क्या समझे ...ालजी ॥ निरंकारजो भजे उसे नहिं व्यापे भव जंजाल, उसी ...ी रचना तीनो कालजी ॥ आठ यामले नाम उसीका शेषनाग ...ाताल, चतुरपद पक्षी जपते व्याल जी ॥ भीड पडी जहँ जहँ संतों ...र हुये आप रछपाल, बचाये ब्रजमें गोपी ग्वालजी ॥

दोहा–सदा भक्तके काज को, उठ धाये तत्काल ॥
ग्राहसे गज को छुटादिया, ऐसे नन्द के लाल ॥
जो कोइ उनको सुमरे उनका होय न बाँका बाल ॥
कालको क्या समझे वो माल जी ॥

पूंछा तेरा राम कहां जब गिर्द अग्निदीबाल, दिखाया त्रास वो खड्ग निकालजी ॥ उसने कहा है मुझमें तुझमें सबमें श्रीगोपाल, करेव सब जग की प्रतिपालजी ॥

दोहा–खंभ फाड प्रकटे ऐसे और धरा रूप विक्राल ॥
हरिणाकश्यपु दैत्यको मार किया पैमाल ॥
उसकी याद में जो रहते वो सदा बजावें गाल ॥
कालको क्या समझे वो मालजी ॥

श्री कृष्णके मित्र सुदामा ज्ञानी द्विज कंगाल, पढेथे दोनों एक शालजी ॥ शरण गये वो हरीके होगये एक पलमें निहाल, मिल निर्द्धनको वो धन मालजी ॥ उसकी याद बिन प्राणी जैसे सूख जल बिन ताल, नाम जप साईंका रहु लालजी ॥

दोहा–विना भक्ति नहिं मुक्ति है कहां तक कहूं अहवाल ॥
नाम लिये से तरगये कई पापी चंडाल ॥
लाख चोटले रोक जो रक्खे उसके नाम की ढाल ॥
कालको क्या समझे वो मालजी ॥

उसकी यादमें मीरानाची देदे दोऊ ताल, गावती फिर प्रभुके ख्या-लजी ॥ उसकी याद में वोह ताकत है कोटि व्याध देटाल, कभी नहिं आवे उसे वबाल जी ॥ देवीसिंह कहै बनारसीको उसका हुआ विशाल, देखता दिलमें वही जमालजी ॥

दोहा–निहुरके चलना जहांके अंदर यह है बडा कमाल ॥

जिस दरख्त में मेवा होवे झुके उसीकी डाल ॥
नाम प्रभूको प्यारा भक्तोंको नहीं होय जवाल ॥
कालको क्या समझे वो मालजी ॥

परमेश्वरके मिलनेका मार्ग–बहर खडी।

नरतन पाय जतन करे ऐसे जिस्में वोः करतारामिलें ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नहिं वारंवार मिलें ॥
बने हैं पूरुब कर्म कुछ ऐसे उसीकी है यह प्रभुताई ॥
जो तूने संसारमें हैं यह सुंदर नर देही पाई ॥
पायके ऐसी कंचन काया भजन करो हरको भाई ॥
जन्म जन्म की बिगडी बात सब इसी जन्म मे बनजाई ॥
सुख दुख भोग पिता और माता और सकल संसार मिलें ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नहिं वारंवार मिलें ॥
मिला तुझे अनमोल रत्न ये अब उपाय तू ऐसा कर ॥
त्याग सकल कामना जगत् की हित चित से हर नाम सुमर ॥
वासुदेव भज नारायण तू कृष्ण कृष्ण और कहो हर हर ॥
यीते ये भव सिंध जगतसे क्षणमें जाये पार उतार ॥
जन्म मरण नहिं होतेरा नहिं जगमें फिर औतार मिले ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नहिं वारंवार मिले ॥
कर विचार मनमें अपने तू किस कारण जगमें आया ॥
किस कारण संसारमें तुझको मिली है यह कंचन काया ॥
जिसने कुछ नहिं भजन किया नहिं मुखसे गुण गोविंद गाया॥
सुंदर जन्म गंवाय वृथा वो अंतकाल फिर पछताया ॥
लख चौरासी पडे भरमता यमदूतोंकी मारामिले ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नहिं वारंवार मिले ॥
दुर्लभ ये जामा नरकाहै मिला बडे संयोगों से ॥

देवीसिंह कहता है सदा समझायके ये सब लोगों से ॥
भजन करो आनंद रहो और छूटो दुख सुख भोगोसे ॥
हर्ष सदा मनमें व्यापे और शुद्ध चित्त रहो सोगोंसे ॥
बनारसी कहै और जन्ममें नहिं उसका दीदार मिले ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नहिं बारंबार मिले ॥

ज्ञान नौका-बहर खडी ।

भवसागर है कठिन कि इसमें और नहीं कोई खेवैया ॥
दीनदयालु जो कृपा करैं तो पार लगे मेरी नैया ॥
गहरी नदिया थाह मिले नाहिं चारो तरफसे उठे बयार ॥
माया मोहका जाल पडा उसमें किस विधि से उतरे पार॥
चारो तरफ जो देखो तो कुछ नजर न आवे वारापार ॥
कितने ही गये डूब इसी में गोते खाखा के मँझधार ॥
भवसागर के पार उतारे कोई नहीं ऐसो भैया ॥
दीनदयालु जो दया करै तो पार लगे मेरी नैया ॥
चले जो आंधी भवसागरमें तब उसमें वोंह उठे तरंग ॥
लोक कुटुंब के सब रोवें और कोई न देवे उसका संग ॥
काल बली जब आकर घेरै कोई न जीते उससे जंग ॥
जो कोई हरिका भजन करै तो मौत भी उससे होजाय दंग ॥
सब कोई हैं अपने स्वारथी क्या बाबा और क्या मैया ॥
दीनदयालु जो कृपा करै तो पार लगे मेरी नैया ॥
भयके इसमें भंवर पडे और चिताकी चादर न्यारी ॥
काम क्रोध और लोभ मोहके मगर मच्छ करते ख्वारी ॥
सातो समुद्र जरासे हैं औ भवसागर सब से भारी ॥
उससे पार वोही उतरे जो नाम जपे गिरिवर धारी ॥
अंतकाल में पापी रोवे करै आह दैया दैया ॥

दिनदयालु जो कृपा करैं तो पार लगे मेरी नैया ॥ ३ ॥
सौ होवे तो हजार मांगे हजार होतो ढूंढे लाख ॥
लाख होयँ तो करोड चाहें कहैं बढे कछु उसमें साख ॥
दया धर्म्म नहिं हिरदे में तो अंत में जलके होजाय राख ॥
बनारसी कहे खुन्नीलाल तूनाम सुधारस मनमें चाख ॥
रामनामका सुमिरणकर मन मुख से कहु तू कान्हैया ॥
दीनदयालु जो कृपा करैं तो पार लगे मेरी नैया ॥ ४ ॥

शरीरका भेद–बहर लंगडी।

आज तलक नहिं कहा किसीने और नकोई कह सकेगा अब ॥
आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥
अगर तुम्हें मालूम होय तो कहो मायने इसके सब ॥
आईने में शकल नजर नहिं आये इसका कौन सबब ॥
और बात मैं कहूं आपसे इसके तईं सुनना साहब ॥
उलटा दरिया चले कहां पर इसका ज्वाब दीजिये ग कब ॥
अचरजये मैं रोज देखता हूं इन आंखों से बेढब ॥
आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥
ऐसी बात बतलाये ओही जिसको देखलाई देहैरब ॥
अव्वल माया माया में जोरू जोरू में माकी छब ॥
आगे इसके एक बात है येही मुझे है बडा अजब ॥
आजुरदा ओ कभी न होवे जिसके ऊपर पडे गजब ॥
इमानसे देखा मैंने तो मुझे नजर आया जब तब ॥
आसमान हो तले जमीं ऊपर इसकाकहो क्या मतलब ॥
नीचे को ऊंचा समझे ओ जीसे इल्मका होवे कसब ॥
आदम होके याद न भूले आपेको पहिचाने तब ॥
आपेको जो पहचाने ओ आपी आप है अब और जब ॥

अल्ला अकबर आदम ईदम मशरिक मगरिब अरब खरब ॥
अंदर दिलके देख अरे नादान तुझे गरहो कुछ ढब ॥
आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥
अगचें जो तुम सुनो तो मैं सच कहताहूं उसका करतब ॥
आदि कुंवारी बनीरहै और कुल जहानसे करे कसब ॥
आनके अपने खसमको मारा बनी सोहागिन लाल ओ लब ॥
उसे नहीं कोइ कहे रांड सुन बनारसी ओ बडी चरब ॥
इसके मायने वोही बतावे जो कोइ प्रभुका करे अदब ॥
आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥

होली निर्गुण–बहर छोटी।

होलीमें इज्जत रहे तो खेलो होली ॥ ओ होली मत खेलो जो होय ठठोली ॥ पांचो भूतों को मारके तू पिचकारी ॥ रंग हरीके रंगमें इन्हें तोहो हुसियारी ॥ सरबोर उसीमें करदे काया सारी ॥ हरवक्त नाच और गाव तु गुण गिरिधारी॥तू ज्ञान गुलाल से भरले अपनी झोली॥ ओ होली मत खेलो जो होय ठठोली ॥ तुम काम क्रोध कुमकुमेको अपने मारो ॥ वोःलडो लडाई कालसे भी नाहिं हारो ॥ दो प्रेम कि गाली प्रभु को उसे पुकारो ॥ औ कबीरके संग आत्मज्ञान विचारो ॥ जो ज्ञानी होतो पहिचानो ये खोली ॥ ओ होली मत खेलौ जो होय ठठोली ॥ तुम ज्ञान अग्निमें लोभ औ मोह जलाओ ॥ लौ उस मालिकसे अपनी आप लगाओ ॥ तुमतत्त्व तालदे मृदंग बीन बजाओ ॥ अनहद बाजे को सुनो तो उसको पाओ ॥ मत कीचड में तुम गिरो जो आवे डोली ॥ ओ होलीमत खेलो जो होय ठठोली ॥ जलगइ हुलका प्रह्लादको आँच न आई ॥ ऐसी होली खेलो तो होय बडाई ॥ कहे देवीसिंह तुम सुनो हमारे भाई ॥ हे बनारसी की सबअद्भु-

त कविताई ॥ सुन मिनोचेहर की बात रँगीला भोली ॥ ओ होली मत खेलो जो होय ठठोली ॥

लावनी वाल्मीकजीकी–बहर जीकी ।

चाहे जपो तुम मरा मरा चाहे तुम भजलो राम ॥ उलटा सीधा राम नाम हर विधिसे आता कामजी ॥ त्रेतायुगमें एक पुरुष करता था बटमारी ॥ कितनेहूंको मारा उसने पाप किये भारीजी ॥ हत्या करकै उसकी सूरत होगई हत्यारी ॥ बहुत किये अपराध बोझसे पृथ्वी तक हारी ॥

तोडा–धर्मरायभी जीमें डरे–यह पातक कोई कहांधरे ॥
अब यह पापी कैसे तरै ॥

दोहा–कभी न सुमिरा रामको ना दया करी नहिंदान ॥ कितनोही का धनहरा मारी कितनो की जान ॥ कौन पुण्य से होगा इसका वाल्मीकि सा नाम ॥ उलटा सीधा रामनाम हरविधिसे आता कामजी ॥ १ ॥ एक समय नारदमुनिजीने किया उधर फेरा ॥ वाल्मीकिने आकर नारदमुनि कोभी घेराजी ॥ नारदमुनिने कहा वचन सुनले तू यह मेरा ॥ क्यों मुझको मारे है मैंने कियाहै क्या तेराजी ॥

तोडा–जदपापी बोला ललकार–मेराती है एहीकार ॥
कितनोहीं को डाला मार ॥

दोहा–नहीं मेरी कोई वृत्त है करता मैं खेती ॥ कुटुंब अपना पालताहूं लूटमारसेती ॥ क्याजाने कितनों से मैंने किया यहां संग्राम ॥ उलटा सीधा राम हर विधिसे आता कामजी ॥ २ ॥ वाल्मीकि को फिर नारदमुनिने यह समझाया ॥ तैंने धन लूटासो तेरे कुटुंबने खायाजी ॥ दौलतका हिस्सा तेरे सबघरभरने पाया ॥ पापजो तैंनेकिया उसे नहीं किसीने वटवायाजी॥दारा सुत भगिनी भाई सबसेतू कहु यह जाई ॥ पाप यह मेरालोबटवाई ॥

दोहा—जो वो तेरे पापको लेवें सब बटवाई ॥ तोतू मुझको मारियो अपने गृहसे आई ॥ इतना सुनकै वाल्मीकि उठधाया अपने धाम ॥ उलटा सीधा राम नाम हरविधि से आता कामजी ॥ ३ ॥ चलते चलते वाल्मीकि पहुँचा अपनेडेरों ॥ भाई बंधु अरु लोग वहांके सब उसनेटेरेजी ॥ सुनसुनके सब उठठाढेभये आ बैठे चौफेरे ॥ वाल्मीकिने कहा वचन यह सुन लौ सब मेराजी ॥ जोजो धनमैं हर लाय सो सो सब तुमने खाया ॥ पाप मेरा नहिं बटवाया ॥

दोहा—अब तुम मेरे पापको सब कोई बटवावो ॥ मैं लाऊँ धन लूटके तुमघरबैठे खाओ ॥ जितनी दौलत हरूंगा मैं सब तुहींको दूंगा दाम ॥ उलटा सीधा राम नाम हरविधिसे आता कामजी ॥ ४ ॥ वाल्मीकि का सुना बचन सब बोले नर नारी ॥ क्या जाने हम तैंने है कितनोंकी जान मारीजी ॥ हमैं पापसे कामनहीं है तुही पाप धारी ॥ पाप कियेसे अंतसमयमें होती है ख्वारीजी ॥ वाल्मीकि होकेलाचार ॥ छोड़ दिया अपना घरबार ॥ मनमे करता शोच विचार ॥

दोहा—भाई बिरादर त्यागके अब चलूं गुरूके पास ॥ वोचाहै तो पापका एकपलमें करदे नाश ॥ अब घरसे कुछ काम नहीं वसूंगा मैं इसग्राम ॥ उलटा सीधा राम नाम हरविधिसे आताका-मजी ॥ ५ ॥ नारायणने करी कृपा जबहुआ उसे वैराग ॥ जितने खोटे कर्मथे उनको छिनमें दीना त्यागजी ॥ नारदमुनिके पास आया और जागे उसकेभाग ॥ दियाशीश उनके चरणोंमें किया बहुतअनु-रागजी ॥ कहागुरूजीसुनोवचन ॥

दोहा—भाई विरादर कुटुंब के कोई नहीं वाट पाप ॥ तुम आप-नी कृपा करो काटो मेरे संताप ॥ तुमहो गुरू मैं हूं चेला शिरझुका-किया परनाम ॥ उलटा सीधा राम नाम हर विधिसे आताका-

मजी ॥ ६ ॥ फिर नारदमुनिने देखा अब हुआ इसे कुछ ज्ञान ॥ रामनाम रटनेसे होवैगा इसका कल्यानजी ॥ वोहीमंत्र उपदेशदिया और बताय उस्को ध्यान ॥ इसी नामसे पापतेरे होवेंगे पुण्यसमानजी ॥ अब तेरा होगयाभला किसीकामत काटियोगला ॥ पाप तेरे सब दियेजला ॥

दोहा—वाल्मीकिने रामनाम का मनमें जापकरा ॥ रामरामके नाममें निकले मरामरा ॥ बडे शोचमें वह आया पग लिये गुरू के धाम ॥ उलटा सीधा राम नाम हर विधिसे आता कामजी ॥ ७ ॥ वाल्मीकिने कहा गुरूजी रामनाम गया खोय ॥ मैं कहताहूं रामराम जी तो मरामरा मुखहोयजी ॥ नारदमुनिने कहाजपै हैं यही नाम सबकोय ॥ मरा मरा कहनेसे रामजी सबदुख डालै धोयजी ॥ वाल्मीकि निश्चयकरके बैठ गया आसन भरके ॥ उलटा नाम हिरदै धरकै ॥

दोहा—नारदमुनि तौ चलदिये वो बैठा ध्यान लगाय ॥ मरा मरा रटने लगा गई भूख प्यास विसराय ॥ वर्षाऋतु जाडा झेला गरमीमें सहअतिघाम ॥ उलटा सीधा राम नाम हर विधिसे आता कामजी ॥ ८ ॥ शरीरकी सुधि नहीं रही और तनपै जमगइ घास ॥ और आशसब छोड लगाई मरामराकी आसजी ॥ जबतौ रामने करीकृपा आपहुंचो उसकेपास ॥ वाल्मीकिके घटमें अपना किया रामने वासजी ॥ ब्रह्मज्ञान देदिया उसे—अपनी आत्माकिया उसे लगाकंठसे लिया उसे ॥

दोहा—जबतोताडीखुलगई भयेवाल्मीकिचैतन ॥ कंचन सा तन बनगया पायोनिर्गुणदरशन ॥ वाल्मीकिके घटमें रामने किया आपविश्राम ॥ उलटा सीधारामनाम हरविधिसे आताकामजी ॥ ९ ॥ मरामरा कहनेसे होगये वाल्मीकिज्ञानी ॥ रामनाम रामायण-

कीकथाकहीहैगई सिद्धवानी ॥ दसहजारवरसोंकी बात आगे स पहचानी ॥ भूत भविष्यत वर्त्तमान ये तीनो राहजानी ॥ उलटा नाम जपाभाई ॥ तिसपर यह पदवी पाई ॥ वाल्मीकिकी कविताई ।

दोहा–विष्णुसहस्रनाममें श्रीरामनामहै सार ॥ जोकोइ सुमि रामको उनका होता उद्धार ॥ सकल कामना मिलै उसे जो ज नाम निष्काम ॥ उलटा सीधा रामनाम हरविधिसे आता का जी ॥ १० ॥ मरा मरा कहनेसेहैं ऐसे पापी तरते ॥ रामरामजो रटैं वो क्याजाने क्या करतेजी ॥ रामनामते समुद्रमें अबतक पहा तरते ॥ वोभी होजाय रामरामको जो हिरदे धरतेजी ॥ रामनामकी सबमाया ॥ पारकिसीने नहिंपाया ॥ यही नाम चहुँदिशि छाया ।

दोहा–जोकोइ ऐसे छंदको गावे सुनै दै कान ॥ भुक्ति मुक्ति पावै वही और हो उसका कल्यान॥कहै देवीसिंह बनारसी है रामनाम सर- नाम ॥ उलटा सीधा रामनाम हर विधिसे आताकामजी ॥ ११ ।

लावनी अहंकार नाशनी।

जो कहता हम करते वो दुख भरता है ॥ जो करता जगके का वही करता है ॥ जो कहता हमने वेद पढे हैं चारी ॥ उसको कहते हरि इसकी मति है मारी ॥ कोइ कहता हमक्षत्रीहैं हम ब्रह्मचारी ॥ सब अहंकारमें फँसेहुये नर नारी ॥ जाहं बुद्धीको तजे करैं नाचारी ॥ उसको मिलते यक पलभरमें गिरिधारी ॥ जो निष्फल पूजाकरै वही तरताहै ॥ जोकरता जगके कार वही करताहै ॥ १ ॥ जो कहता हमतो नित्यदान करतेहैं ॥ उसका परमेश्वर नहीं मान करते हैं ॥ जो देते वस्तु मनमें गुमान करतेहैं ॥ वोस्वर्ग छोड फिर नरक पानक- रतेहैं ॥ जो अहंकार तजि हरिका ध्यान करतेहैं ॥ उसका स्वामी आदर अरु मान करतेहैं ॥ जोकरताहै सो वोही वोही धरताहै ॥ जो करता जगके कार वोही करताहै ॥ २ ॥

जो कहता हमहैं बडेकवीश्वरज्ञानी ॥ उसको हरि कहते इसकी मिथ्याबानी ॥ कोइ कहता हमहैं बडे वीर बलवानी ॥ उसको हम कहते यहतोहैं दृहकानी ॥ कोइ वनके बैठे राजा और कोइ रानी ॥ इस पृथ्वी परहैं बडेबडे अभिमानी ॥ इस अहंकारसे अपना दिल डरताहै ॥ जो करता जगके कार वही करता है ॥ ३ ॥ जोकहता मैंने बडा जंगजीताहै ॥ वहमरताहैफिर कभी नहींजीता है ॥ जिस जिसने मनमे अहंकारजीताहै ॥ वहदो दिनमें दुनियासे हो वीताहै ॥ अब देवीसिंह दिलपटाहुवा सीताहै ॥ जोकर्मकिया प्रभुके अर्पनदीताहै ॥ कहै बनारसी हरिभक्तनहींमरताहै ॥ जोकरता जगके कार वही करताहै ॥ ४ ॥

वचन पलटने वालेका जो हाल होताहै वहसही लिखा बहर छोटी।

जोजबांसेकहिके सखुन पलटजातेहैं शिरदगाबाजके अकसरकट जाते हैं ॥ जो कहतेहै वो करते हैं पूरेनर ॥ चाहे इसमें होजायकलमध डसेसर ॥ मैंकहूं तू झूंठाकौल किसीसे मतकर ॥ जो कहिके सखुनको नहींकरै वोहैं खर ॥ जो झूंठ बोलत हैं वो फिरते दरदर ॥ कहैं सत्यवचन बलि विक्रम राजा गयेतर ॥ जो कायरहैं वीरनते हट जातेहैं ॥ शिर दगाबाजके अकसर कटि जातेहैं ॥ १ ॥ जो कलामपै अपने रहतेहै साकर ॥ तौ लाकलाम वोह खालक मिलता आकर ॥ मत झूंठ किसीसे बोल यह नरतन पाकर ॥ सब बुरा कहैंगे कहूं तुझे समुझाकर ॥ जो करे दगा अपने घरमें बुलवाकर ॥ लेउसका दिलासाई उससें आकर ॥ नाहिं मिले हशरतकजब दिल फट जातेहैं ॥ शिर दगाबाजके अकसर कटजातेहैं ॥ २ ॥ पूरोंका सखुन नहिं लाखों में टलताहै ॥ सर सखुनके आगे शूरोंको चलता हैं ॥ जो सच्चाहै वह कुटुंबसे फलताहै ॥ उसका चिराग उसके आगे बल-

ताहै ॥ जो करके दगा यारोंके तईं छलताहै ॥ वो नरककुंडली
तशमें जलताहै ॥ सच्चोंके आगे झूंठे घटजातेहैं ॥ शिर दगाबाज
अकसर कटजातेहैं ॥ ३ ॥ जो कलामको झूंठा मुखसे फरमाते
वो अंतसमय दोजखमें डालेजाते ॥ कहै देवीसिंह जे साईंसे
लाते ॥ वह भवसागर यक लहजामें तर जाते ॥ छंद बनायके तो स
मिसरागाते ॥ हरनाम सुमिरके सभामें चंगबजाते ॥ कहै बनारसी
सखुनमें डटजाते हैं ॥ शिर दगाबाजके अकसर कटजाते हैं ॥ ४ ॥

भगवानसे विनय–बहर छोटी।

कर दया दासके कष्ट हरोगिरिधारी ॥ करुणानिधि करुणा क
मैं शरण तिहारी ॥ सब शंकट मेरे दूर करौ अबस्वामी ॥ ऋधिसि
धिसे मुझे भरपूर करो अबस्वामी ॥ अपने अब मुझे हुजूर करौ तु
स्वामी ॥ चर्णों की मुझे तुम धूरकरो अब स्वामी ॥ यह कामत
मेरा जरूर करौ अब स्वामी ॥ भक्तोंमें मुझे मशहूर करौ अ
स्वामी ॥ हो निर्भय पूरणब्रह्म आप अवतारी ॥ करुणानिधि कर
णाकरो मैं शरण तुम्हारी ॥ १ ॥ सबसंतोंको आपी तुमने ताराहै
ग्रहसे यह गजको तुम्हींने उवाराहै ॥ प्रहलाद कि खातिर नरसिं
तनु धाराहै ॥ नखसे नाभीकोचीर असुर माराहै ॥ मुझको तो ना
श्रीनारायण प्याराहै ॥ प्रभु तेरे बिन अब कोई न हमाराहै ॥ क्य
मेरे वास्ते करी देर वनवारी ॥ करुणानिधि करुणा करौ मैं शरण
तुम्हारी ॥ २ ॥ पांचौ पंडाका संग कियाहै तुमने ॥ ब्रजमें सखिय
नसे रंग कियाहै तुमने ॥ कालीकोनाथके तंग कियाहै तुमने ॥ कं
सासे जाय फिर जंग कियाहै तुमने ॥ हरएक राक्षसको तंग कियाहै
तुमने ॥ सब असुरोंका चौरंगकियाहै तुमने ॥ अब मेरे पांचभूतोंका
मार मुरारी ॥ करुणानिधि करुणाकरौ मैं शरण तुम्हारी ॥ ३
सब कुसूर मेरा माफ आप अब कीजे ॥ शिर चरणोंमें अपने मेर

धरलीजे ॥ यह उम्र सदा दिन रात हर घडी छीजे ॥ कर मेहरप्रभू कछु भक्ति आपनी दीजे ॥ एक अरजी मेरी गरीबकी सुनलीजे ॥ दिलभक्ति में तुमरी सदा हमारा भीजे ॥ हरि हरलो तनकी पीर हुवा दुखभारी ॥ करुणानिधि करुणाकरौ मैं शरण तुम्हारी ॥ ४ ॥ तुम जो चाहो सो करो आप यदुराई ॥ राईसे गिरि करदेते गिरिसे राई॥है सत्य सत्य सांची तेरी प्रभुताई ॥ तरगये वोही जिसने तुमसे लौलाई ॥ कहै देवीसिंह जिन तुम्हारी महिमा गाई ॥ वह भवसागरके पार उतर गया भाई ॥ कहै बनारसी यह राखो लाज हमारी ॥ करुणानिधि करुणा करौ मैं शरण तुम्हारी ॥ ५ ॥

ख्याल निर्गुण चौकड–बहर शिकस्ता।

बहुत दिनोंपर बिछीहै चौसर सम्हलके खेलो ये चालक्याहै ॥ जो फेकूं पांसे तो छूटै छक्के नलो दमनकी मजाल क्या है ॥ मैंहूं जुवारी सुघड खिलाडी हमेशह जीतूं कभी नहारूं ॥ सदा पडे पो दुई दूरहो चौरासी यों घर घरकी नरदमारूं ॥ पडे अगरचे जो तीन काने तो अपने दिलमें मैं यह विचारूं ॥ ये तीन गुणहैं सभीके तनमें इनसे बलके अलग सिधारूं ॥ हैं चार काणें वो चौथा पदहै मिला अब हमको मलाल क्या है ॥ जो फेकूं पांसे तो छूटैं छक्के नलोदमनकी मजालक्या है ॥ १ ॥ हैइसमें पंजडी सो पांचतत्त्व मैं इनसें गोटी बलावचाके ॥ और फेकूं छकडी ले आऊं सत्ता सतको सद्गुरुके पास नाके ॥ है दाँव अट्ठासो आठ सिद्धी नव ऋद्धी मैं रक्खूं मनाके ॥ पडें अगर छः चहार दश तो दशो द्वार देखूं दिल लगाके ॥ नरंग अपना मरे किसीसे मैं अब समझताहूं कालक्याहै ॥ जोफेकूं पांसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मजालक्याहै ॥ २ ॥ आये हमारे वो दशपो ग्यारा सो ग्यारहो रुद्र हैं वदन में ॥ और बारहराशैंसो दोनों बारह समझशो

चतूकुछतूं अपने तनमें ॥ बडे हैं इनमें वो दोनों तेरा मैं तेरा तेर
कहूंहूं मनमें ॥ तू चौधरीहै जहां का मालिक नज़र पडे चौदहै
भुवनमें ॥ करूं भजन मैं ये पंद्रहों दिन माया मोहका वो जाल
क्याहै ॥ जो फेकूं पाँसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मजाल क्या
है ॥ ३ ॥ हैं आतमा सोलहों कलाये सो पाँसे में सोलहों बनाये।
वो आये सत्रह ये सतरहा अब हरी हरीके गुण गाये ॥ पढे
अठारह पुराण हमने और अर्थ उसके ये दिल्में पाये ॥ उठे रंग
बदरंगभी उठगये वो सारी मायाको जीतलाये ॥ बनारसीका सदा
बनारस बना हुआहै वबाल क्या है ॥ जो फेकूं पाँसे तो छूटें छक्के
नलोदमनकी मजाल क्याहै ॥ ४ ॥

ख्याल जीकी लयका।

नहीं मेरे ये शरीरहैं नहीं है मुझको दुख द्वन्द ॥ मेरा है रूप
सच्चिदानन्दजी ॥ नहीं लाभ नहीं मोह नहीं बुद्धि नाहिं अहंकार ॥ नाहिं
आचार औ नहीं विचारजी ॥ नहीं रात नाहिं दिन नहीं तिथि घडी लग्न
नाहिं वार ॥ नहीं है अपना पारावार जी॥नहीं उजड नाहिं जंगल बस्ती
नहिं कुटुंब घरवार ॥ नहीं दारा सुत नहीं परिवारजी ॥

दोहा–नहीं शीश नाहिं मुख नाहिं जिह्वा नाहिं वाणी नाहिं हाथ ॥
नहीं उद्र नहीं लिंग चरण नाहिं नहीं वर्ण नाहिं जात॥नहीं वेद नाहिं शास्त्र
नहीं श्लोक नहीं पदछंद ॥ मेराहै रूप सच्चिदानंदजी ॥ १ ॥ नहीं काम
नाहिं कोध नहीं कुछ ज्ञान नहीं अज्ञान ॥ नहीं कोई मंत्र तंत्र नहीं ध्या-
नजी ॥ नहीं नेम नाहिं संयम पूजा नाहिं तीरथ स्नान ॥ नाहिं व्रत होम
यज्ञ नाहिं दानजी ॥ नहीं योग नाहिं भोग नहीं संयोग मान अपमान ॥
नहीं वनवासी नहीं स्थानजी ॥

दोहा–नाहिं सीधा नाहिं गोल नहीं दुबला औ नाहिं मोटा ॥

नहिं टेढा नहिं वेडा बहुत नहीं बडा नहीं छोटा ॥ नहीं तुर्श नहीं लौन अलौना नहिं कडुवा नहिं कंद ॥ मेराहै रूप सच्चिदानन्दजी॥२॥ नहीं सुखी नहिं दुखी नहीं धनवान नहीं कंगाल ॥ नहीं मंत्री और नहीं भूपालजी ॥ नहीं सिंधु नहिं नदी नहीं है कूप बावडी ताल ॥ नहीं है आकाश नहीं पातालजी ॥ नहीं श्वेत नहिं पीत नहीं है कपोत नीला लाल ॥ नहीं है वृक्ष फूल फल डालजी ॥

दोहा–नहिं हीरा नाहिं मोती माणिक नहीं रत्नकी खान ॥ नहीं खड्ग नहिं चक्र नहीं त्रिशूल धनुष नहींबान ॥ नहीं जाग्रत नहीं स्वप्न सुषुप्ति नहीं खुला नहीं बंद ॥ मेराहै रूपसच्चिदानंदजी ॥ ३ ॥ नहीं त्रिदंडी नहीं वनखंडी नहीं ब्रह्मचारी ॥ नहीं मुंडित न जटाधारीजी ॥ नहीं अग्नि नहिं पवन न पानी नहिं मीठा खारी ॥ पशु नहिं पुरुष नहीं नारीजी ॥ नहींशैव नहिं शाक्त नहीं वैष्णव नहीं आचारी ॥ नहीं हलका और नहीं भारीजी ॥

दोहा–नहिं मीमांसक नहीं जैनी नहीं उदासीन मतवाद नहीं ॥ देव गंधर्व यक्ष नहिं नहिं विघ्न विख्याद ॥ नहिं बिजली नहिं घन नहिं तारे नहिं सूरज नहिं चंद ॥ मेरा है रूपसच्चिदानंदजी॥४॥नहीं शिष्य नहिं गुरू न माता पिता नहीं भ्राता॥नहिं रिस्ता और नहिं नाताजी॥ नहिंबैठा नहिं खडा नहीं आता है नहिं जाता ॥ नहीं भूखाहै नहीं खाताजी ॥ नहीं लेय नहिं धरे नहीं देता नहिं दिलवाता ॥ सखी नहीं सूम नहीं दाताजी ॥

दोहा–नहीं कर्मकी रेख लेख नहिं नहीं पढाजाता ॥ नहीं मौनहो रहै नहीं बोले नहिं बुलवाता ॥ नहिं पक्षी नहिं फंद कहै नहिं जाल नहीं फरफंद ॥ मेराहै रूपसच्चिदानंदजी ॥ ५ ॥ नहिं हिन्दू नहिं मुसलमान याहूदी नहीं फिरंग ॥ नहीं कोई रूप नहीं कोइ रंग

जी ॥ नहीं बीन बाँसुरी नहीं करताल ताल मृदंग ॥ नहिं जलतरंग नहिं उपंगजी ॥ नहिं कलँगी नहिं तुर्रा नहीं अनघडडुडा नहिं चंग ॥ नहीं कोई संगहै नहीं आसंगजी ॥

दोहा—आपी आपमें आपहै रहा आपमें व्याप ॥ नहींस्वर्ग नहिं नरकहै नहीं पुण्य नहिं पाप ॥ बनारसी कहै रूप हमारा अखंड परमानंद ॥ मेराहै रूपसच्चिदानंदजी ॥ ६ ॥

मथनी श्रीकृष्णके खेलकी—बहर छोटी।

यह नंदलाल यशुदाकादुलारोकानियां ॥ लैगयो सखीरी मेरीदधि की मथनियां ॥ सुनसखी एक दिन कान्ह मेरे घर आया ॥ दधिगोरस दी ढलकाय औ माखन खाया ॥ दधिकी माथानिया हाथमें लेकर धाया ॥ मैं देखा चोरी करत पकड बिठलाया ॥ उन फाडो मेरो चीर मैं तोरी तनियां ॥ लै गयो सखीरी मेरी दधिकी मथनियां ॥ वोः कुस्तं कुस्ता मुस्ती करने लागा ॥ मथनी भी लेगया हाथ छुडाकर भागा ॥ इतनेंमे होगया भोर ससुर घर जागा ॥ पतिने मुझको अकलंक लगाकर त्यागा ॥ डरसास ननद का हमसे लडे जेठनियां ॥ लैगयो सखीरी मेरी दधिकी मथनियां ॥ सुन सखी श्यामसे मथनी क्योंकर पाऊं ॥ मोहिं माँगत आवे लाज बहुत सकुचाऊं ॥ है नया नेह समींते सन्मुख जाऊं ॥ दूरीसे नटवर वेष देख ललचाऊं ॥ मुखधर बांसुरी बजावे तान रसभिनियां ॥ लै गयो सखीरी मेरी दधि की मथनियां ॥ वोह सुंदर सांवरा मेरी नजर जब आवै ॥ पलकों से मारे शैन नैन मटकावे ॥ बंशीमें मोहनी डाल मुझे बिलमावे ॥ एक नजर दिखाकर तन मन हरले जावे ॥ है ब्रजमें प्रकटो बडो वो छैल चिकनियां ॥ लै गयो सखीरी मेरी दधि की मथनियां ॥ माथेपर चंदन मोर मुकुट शिर साजे ॥ कानों में कुंडल कर मुर्ली बीराजे ॥ एक पडी वो नाक बुलाक अधिक छबि छाजे ॥ साँवरी सुरतपर

पीत पिंताबर राजे ॥ कठ किंकिणी वाजे पग म्याने पैंजनियां ॥ लै गयो सखीरी मेरी दधिकी मथनियां ॥ भोला मुख भोली बतियां लगती प्यारी ॥ मन चाहे चितसे प्रेम राह रस न्यारी ॥ ग्वालन की लगन से मगन हुये गिरिधारी ॥ कहै देवीसिंह मैं कृष्ण तेरी बलिहारी ॥ दिन रात तुम्हारा ध्यान धरै ये दुनियां ॥ लैगयो सखीरी मेरी दधि की मथनियां ॥

ख्याल तवहीर–बहर तबीर।

मैं देखू हूं सबके है सर पर वही पर अपनातो रख्तावो सरही नहीं ॥ ये सितम हैं की उसके हैं चश्म कहां पर ऐसी किसी की नजर ही नहीं ॥ है दैरो हरम में वो जलवे कुनापर अपना तो रखता औ घरही नहीं ॥ वोःमकीं है अजब के मकांही नहीं वो मक्का है अजीबके दरही नहीं ॥ है उसका वह मसकन पाक जहां वहां बहमो गुमाका गुजरही नहीं ॥ नतो दिन है वहां नतो शबहै वहां वहां देखो तो शम्सो कमर ही नहीं ॥ हैनूर का उसके जहूर खिला पर है वो कहां ये खबरही नहीं ॥ ये सितम है के उसके हैं चश्म कहां पर ऐसी किसीकी नजर ही नहीं ॥ वो जलवा है उसका तमाम जगह कोइ और तो जलवागरही नहीं ॥ कहीं मिस्लेनूर अया है वोही कहीं मफी है मुजहर ही नहीं ॥ ये जमीनो फलकका है उसके सिवा कोई मालक जेरो जबरही नहीं ॥ सरदार है कुल आलम का वोही कोई उसपै तो है अपसरही नहीं ॥ जो चाहे सो करता है आपवही कुछ उसको किसी का खतरही नहीं ॥ येसितम है के उस्केहैं चश्म कहां पर ऐसी किसीकी नजर ही नहीं ॥ वोः अजीबहै नखले मुरादे चमन कहीं हस्ती में ऐसा सजरही नहीं ॥ तरो ताज निहाल लतीफ है वोः कोई उस्से तो हैबेहतरही नहीं ॥ कहीं नखल में शाख हैं बर्ग कहीं कहीं गुलमें तो लगता समरही नहीं ॥ उसे जाके चमन में जो

घुडे अगर तो ओ पाये नसी मो सहर ही नहीं ॥ वोह सज रहै बहार जिसे है सिदा कभी बादे खिजांसे नजरही नहीं ॥ ये सितम है के उसकै है चश्म कहां पर ऐसी किसीकी नजर ही नहीं । जिसे इश्क खदान जहां में हुआ कोई उससे तो है ब रही नहीं । बादिलही हुये कुछ अकलो कहे मगर ये भी नहीं तो वशरही नहीं ॥ कहे काशीगिर ला॰ परवाहै वोदकुछ खाहीसे सीमो जरही नहीं ॥ वो रुतवाहै उसका केशाहा काभी कुछ आगे तो उसके वकरही नहीं ॥ जो फकीरों के फैजै सखून में हैं वोहजवां में किसी के असर ही नहीं ॥ ये सितमहै के उसके हैं चश्म कहांपर ऐसी किसीकी नजरहीनहीं ॥

ख्याल तौहीद बंदा खुदाय–बहर नवीर।

जिसे जिस्म का अपने गुरूर नहो उसे मौतका खौफो खतरही नहीं ॥ नतो खाहिश उसको बिहिस्त कीहै कुछ दोजखका भीतो डरही नहीं ॥ वो मकाँ है मेरा तनहाई में जहाँ शम्शो कमरका गुजरही नहीं ॥ नतो आवो हवा नतो आतिशवाँ कोई मेरे सिवा तो वशर ही नहीं ॥ जिसके परदा दुइका वो दूर हुआ तो फिर उसमें खुदामें कसरही नहीं ॥ जहाँ देखे वहाँपै है नूरे खुदा कोई और तो आता नजर ही नहीं ॥ कोई लाख तरेसे जो मारे उसे पर उसका तो कटता वो सरही नहीं ॥ न तो खाहिश उसको वहिस्त की है कुछ दोजख काभी तो डरही नहीं ॥ १ ॥ जिसकी एक निगहहै तमाम जगह उसके आगे तो जेरो जबर ही नहीं ॥ जिसे अल्क फैहम में है दखल बडा उसके आगे तो इल्म हुनरही नहीं ॥ जिसके कबजेमें गंज है वहदतका कोई उस्सा तो दौलत वर ही नहीं ॥ जो कुछ आया वो उसनें लुटाही दिया कुछ पास में रखता वो जरही नहीं ॥ हर हालमें जो के खुशी है वशर ऐसा होता किसीका गुजर ही नहीं ॥ नतो

खाहिश उस्को वहिस्त कीहै कुछ दोजख काभी तो डरही नहीं ॥ २ ॥ उसके जर्रेसे नूर हजार बने उसके आगे तो शम्शो कमरही नहीं ॥ जिसने देखा उसे वह उसीमें मिला कोई और तो उसका है घर ही नहीं ॥ मैने दोनों जहां में जो देखा तो क्या कोई और तो मेरा जिगर ही नहीं ॥ सिवा उसकेन कोई रफीक मेरा मुझे और किसीका फिकर ही नहीं ॥ जोहैं बन्दा उसीका न गन्दा हुआ कोई गैरका उसपे असरहीनहीं ॥ नतो खाहिश उस्को वहिस्त कीहै कुछ दोजख काभी तो डरही नहीं ॥ ३ ॥ मुझे ख्याल उसीका हैं आठों पहर मैंने याद किसीकी तो करहीनहीं ॥ जबसे देखा उसे तो मैं भूला सभी पर भूलामैं उसकातो दरही नहीं ॥ वो दिल हीमें मुझको दिखाई दिया कहीं करना पडा कुछ सफर ही नहीं ॥ दरिया है ये देवीसिंहका सखुन कहीं ऐसीतो लहरो वहर हीनहीं ॥ है नाम वो तेरा काशीगिर कोई और तो ऐसा नसर ही नहीं ॥ नतो खाहिश उसको वहिस्त कीहै कुछ दोजखकाभीतो डरही नहीं ॥ ४ ॥

फकीर के चार हुरूफ यही दुरुस्त हैं चहार-दर्वेश गलत—बहर खडी।

फेसे फख्र और काफसे कुदरत रेसे रहम और येसे याद ॥
चार हर्फ हैं फकीरीके जो पढे तो हो दिल शाद ॥
फकीर होना बहुत कठिन है जिसमें फख्रकी हो नहीं बू ॥
और कुदरत भी नहो तो ऐसी फकीरी परहै थू ॥
रहम नहो दिलमें तो दुनिया छोड नहोना फकीर तू ॥
यादे इलाही जो कोई करे तू उसके कदम् को छू ॥
शेर—यह चारो बात हों जिसमें वह फकीरी को करे ॥
नाहिं तो क्यों जटा बढाके बोझ सिरपे धरे ॥
इस्से बहतर है कि दुनिया में तू रह और कुछदे ॥

मैं यह करताहूं फकीरी तो है परे से परे ॥
ऐसी फकीरी मत करना जो चारो बात होवें बरबाद ॥
चार हर्फ हैं फकीरी के जो पढे तो हो दिल शाद ॥ १ ॥
फख्र वह कुदरत रहम और यादे इलाही भी हैं बहुत कठन ।
वह फकीर है के जिस की आठ पहर उस्से है लगन ॥
फिर उस को क्या ख्वाहिश है दुनिया की और क्या करनाधन।
फकत गुजारा यहां करनाहै इसीमें रहे मगन ॥
शैर–आगया माल तो दम्में लुटा दिया उसने ॥
किसी को देदिया कोईसे लेलिया उसने ॥
नतो लेनेकी खुशी कुछभी नगम देने का ॥
काम नेकीका जो कुछ बन पडा किया उसने ॥
इसके मायने वह समझे जिस्के दिलमें पूरा इतकाद ॥
चार हर्फ हैं फकीरी के जो पढे तो हो दिलशाद ॥ २ ॥
और काम सब सहल है पर मुशकिल है फकीरी का करना ॥
वह फकीर है के जो कोई जीतेजी समझे मरना ॥
जीते जी जो मरे तो उस को मौतसेभी नहिं हो डरना ॥
अगर मरेतो खुदामें मिले नहिं हो दुख भरना ॥
शैर–खौफ दोजख का न कुछ और न खुशी जन्नतकी ॥
किया दोनो को तर्क वसये उसकी मन्नत की ॥
दीनो दुनिया को छोड कर मैं उसकी जात हुआ ॥
नतो हिन्दू ही रहा में नमैंने सुन्नत की ॥
चार हर्फ ये पढे और गुने तो वह कहलाये आजाद ॥
चार हर्फ हैं फकीरी के जो पढे तो हो दिल शाद ॥ ३ ॥
चार किताबे पढे तो क्या और सुने अगरचे चारों वेद ॥
पर नहिं उसको गुने तो कभी नहो पूरी उम्मेद ॥

और इल्म कितने सीखे इस दिलपर आपने उठाके खेद ॥
पर मुशकिल है जहां में सुनो फकीरी का कुछ भेद ॥
शैर-मैंने देखा के फकीरों केहैं मौताज सभी ॥
फकीरी मुझको मिले और नामिले राज कभी ॥
खुदाने अपनी जुबाँ फख्र से मिलाई है ॥
हुक्म में उसके है वो साज और सामाजसभी ॥
बनारसी भी फकीर है और देवीसिंह मेरे उस्ताद ॥
चार हर्फ हैं फकीरी के जो पढे तोहो दिलशाद ॥ ४ ॥

लावनी तौहीद-बहर लंगडी ।

खुदा से जो कोई मिला तो वह फिर खुदा हुआ नहिं जुदाहुवा ॥
नक्की उसको मिलि और दुई कातोहर गया दुवा ॥
यकताई के आलिम में हर वक्त चूर रहता हूं मैं ॥
दुई वालों से तो लाखों कोस दूर रहता हूं मैं ॥
अन अल हक जो कहे तो उसके संग जरूर रहता हूं मैं ॥
पेशानी में तो उसकी बनके नूर रहता हूं मैं ॥
शैर-अगर वह खाकमें लोटें तो गिल अक्सीर बनजाये ॥
करेंमिसको तिला उस गिलं की वहतासीर बनजाये ॥
जबाँ से जिसको कुछ कहदें तोवह फिर पीर बनजाये ॥
खुदासे गर कहें तु बन तो वह तसवीर बनजाये ॥
कभी नहिं हारे दुनिया में उन्होंनें वह जीताहै जुवा ॥
नक्की उसको मिली औरदुई कातो हरगया दुवा ॥ १ ॥
आब का कतरा मिले जो दरियामें तो वह दरिया बनजाय ॥
खुदासेजोकोई मिले तो बेशक वह मौला बनजाय ॥
नूर में जिसकामिले नूर कुलजहां का वह जलवा बनजाय ॥
दुई को करदे दूर तो आलम में यकता बनजाय ॥

शैर–मिला चाहे तो उससे मिल तू अब अपनीही हस्तीमें ॥
हमेशांमस्त झूमा कर सदा रहो अपनी मस्तीमें ॥
कभी शहेरा में घूमा कर कभी जाबैठ बस्तीमें ॥
कभी रहो बुत परस्तीमें कभी रहो हक परस्तीमें ॥
जिसने समझा एक वह तो फिर मौत को जीता नहिं मुवा ॥
नक्की उस्को मिली और दुईकातो हर गया दुवा ॥ २ ॥
हमदश अव्वल खानम वाहेद यकता उसमें दुई नहीं ॥
वारे मेरे दिल के इसमें दुई तो मुलतक हुई नहीं ॥
जोके जिनस मैंने पकडी वह चीज किसीकी हुई नहीं ॥
बात खुदासे तो मेरे सिवा किसीकी हुई नहीं ॥
शैर–कलामें मारफत मेरी जबाँसे हरघडी निकले ॥
कि जैसे सिफत मौलाकी कुरआँसे हरघडी निकले ॥
गिरेबाँफाडकर हम इस जहांसे हरघडी निकले ॥
बयाँ तोहीद तो मेरे बयांसे हरघडी निकले ॥
जिसने खेल खेला है खुदा से जुवा फिर उसने कहांछुवा ॥
नकी उसको मिली और दुई कातो हर गया दुवा ॥ ३ ॥
नेक जो है वह एक समझते एक नाम से काम मुझे ॥
मुफ्त मिला वह खर्च नहीं करनीपडीछः दाम मुझे ॥
उस मालिकका नाम लियेसे मिला बहुत आराम मुझे ॥
अबतो यहीं लौ लगी रहती है आठो जाम मुझे ॥
शैर–दुईका उठगया परदा तो यकताई नजर आई ॥
नाफिर बाबा नजर आया नवह माई नजर आई ॥
अगर रुसवा हुए हम तौ न रुसवाई नजर आई ॥
जब अपने आपको देखा तो जेबाई नजर आई ॥

बनारसी नहिं थका अब उसके कांधेका उठगया जुवा ॥
नक्की उसको मिली और दुईका तो हरगया दुवा ॥ ४ ॥

लावनी तौहीद—बहर लंगडी ।

पास न कौडी रही तो मैंने मुफ्त खुदाको मोल लिया ॥
ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछन दिया ॥
पाया खजाना गयेबका मैंने कभी नहीं घटनेका है ॥
चाहे जितना मैं बाटूँ कभी नहीं बटनेका है ॥
खर्च न कौडी होय फकत यह जवाँ हीसे रटने का है ॥
ऐसा सौदा तो कोई फकीरसे पटने का है ॥
शैर—न रही पासमें मेरे जो एक लंगोटी ॥
मुडाया उसको भी सिरपर मेरे जोथी चोटी ॥
किया सवाल तो सबकी सही खरी खोटी ॥
लगी जो भूख तो खाई वह माँग कर रोटी ॥
पियास लगी तो पानी भी जैसा ही मिला वयसाही पिया ॥
ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥ १ ॥
यह बाजार निरगुन का है मैं खरीदार मालिक का हूँ ॥
मालिक भी हूँ और मैं ताबेदार मालिक का हूँ ॥
वह मेराहै दोस्त और मैं भीतो यार मालिक का हूँ ॥
जो चाहे सो करूं मैं मुखतियार मालिक काहूँ ॥
शैर—यह हाटमें जो गया उसका वह हुआ सौदा ॥
न खर्च कुछ भी पडा मुफ्त में मिला सौदा ॥
हम हाथ उसके बिके जिसे यह किया सौदा ॥
न कोई देख सकेहै मेरा छुपा सौदा ॥
कभी नहीं घाटा होवेगा अब मेरा खुल गया हिया ॥
ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥ २ ॥

रोजगार करना होवेतो ऐसा रोजगारी तू बन ॥
खर्च न जिसमें पडे तो ऐसा बेपारी तू बन ॥
लूट खजाना खुदा के घरका ऐसा वटमारी तू बन ॥
तूभी लुटादे जहांमें कुछ तो उपकारी तू बन ॥
शैर—यह हाथ जिसके लगा माल वह निहाल हुआ ॥
निहाल वह भी हुआ इसमें जो पामाल हुआ ॥
खुदा की राहमें गरचे कोई कंगाल हुआ ॥
तो आखिरश को फिर वह पूरा कोटीवाल हुआ ॥
हिन्दू मुसलमाँ से मैं कहता क्या सुनी या होवेशिया ॥
ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥ ३ ॥
यह है रम्ज फकीरों की इस सौदे का कुछ मोल नहीं ॥
छपाले इसको हर एक के आगे यहतो खोल नहीं ॥
खामोशी का आलम है इस जापर निकले बोल नहीं ॥
कहे देवीसिंह अरे तू अमृतमें विष घोल नहीं ॥
शैर—बुरा न मान मेरी बात सुन भला होगा ॥
इसे खरीद करे वह जो दिल जला होगा ॥
यह राह सख्त है इसमें जो कोई चलाहोगा ॥
तो उसके पाको हरएक हूरने मला होगा ॥
बनारसी ने सबको छोड लिया वासुदेव और राम सिया ॥
ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥ ४ ॥

पंथ प्रेमका—बहर लंगडी ।

दुनियामें लाखोंई पंथको हमने देखा भाला है ॥
परजो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निराला है ॥
कोई बदनपर खाक मले और सेहेली कफनी डाले हैं ॥
कोई रंगावे वस्त्रको अपना भेष संभाले हैं ॥

कोई मौन होकर बैठे नहीं किसीसे बोले चाले हैं ॥
कोई फडाये कान को पियें वो मदके प्याले हैं ॥
कोई ने लम्बा तिलक दिया और पहने तुलसी माला है ॥
पर जो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निराला है ॥
कोई रात दिन खडे रहै और कोई हाथ उठाये हैं ॥
किसीको देखा तो वह बैठे और ध्यान लगाये हैं ॥
किसीने अपने बदनको दागा तनुपर छापे खाये हैं ॥
किसीने अपने शीशपर लंबे बाल बढाये हैं ॥
किसीके तनुपर वस्त्र नहीं और कोइ ओढे मृगछाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निराला है ॥
कोई सेवडा बना और कोइ कहै कि हमतो दंडी हैं ॥
कोइ तपस्या करें और कोइ बने वनखंडी हैं ॥
किसी के मठपर ध्वजा उडे और कहीं फरकती झंडी हैं ॥
बिनाइश्क के हुवे जो फकीर वो पाखंडी हैं ॥
किसीने मसजिदबनवाई और कोईने रचा शिवाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निराला है ॥
कोई कहैं हम यती हैं और कोइ बना जगत् में वैरागी ॥
बिनाइश्क के किसी की लौ नहिं सद्गुरूसे लागी ॥
बनारसीने इश्क में अपनी जीते जीकाया त्यागी ॥
दुईन मुतलकरही और दुबधाभी सुनके भागी ॥
रामकृष्णका सखुन यही समझो तुम सबपर बालाहै ॥
पर जो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निरालाहै ॥
तथा–दुनियामें कहते हैं सबी आशिक का दरजा आला है ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूक का रुतबा बाला है ॥
आशक था मजनू पर वह लैला का तावेदार रहा ॥

गमें इश्कमें हमेशा लैलाके बीमार रहा ॥
गया तन बदन सुखपर अपने दिलसे ताकतदार रहा ॥
दिलहीमें अपने वह करता लैलाका दीदार रहा ॥

शैर–जबां पर हर घडी उसके कलामें विर्द लैलाथा ॥
कुरांथा हाथमें तिसपरभी वह लैला पै शैदाथा ॥
बताओ इश्क क्या है इसकी सूरत किसने देखी है ॥
बलाये नागहानी थीं दुआ जिस दिन यह पैदाथा ॥
आशक भी है मस्त वही जो वहदत में मतवाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूकका रुतबा बाला है ॥
तख्त सल्तनत तर्क किया वह आशके रांझा हीर हुआ ॥
खाक बदन पर मली और शाहसे बडा फकीर हुआ ॥
कालीकामर ओढ चराई गाय नहीं दिलगीर हुआ ॥
हुकुम हीरका जो माना तो वोः औलियापीर हुआ ॥

शैर–पकडकर शेरको जंगल में क्याही घातसे मारा ॥
वह ताकत हीरकी उसमेंथी जिसकी जातसे मारा ॥
सुनो दुनियामें माशूकोंका चरचा तुम जरा मुझसे ॥
जिसे मारा उसीको यक जरासी बातसे मारा ॥
वोः आशिक पक्काहै जिसने अपनाही घर घाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूकका रुतबा बालाहै ॥
शीरीके ऊपर आशक फरहाद एक मजदूर हुआ ॥
गजब इश्क है जिसे यह लगावोः चकनाचूर हुआ ॥
शीरीके रुतवेसे कुछ फरहादको भी मखदूर हुआ ॥
बाद मर्गके वोः दोनों मिले नाम मशहूर हुआ ॥

शैर–जिसे माशूक चाहे क्यों न उस आशककिइज्जतहो ॥

बनाये या बिगाडे यह तो सब अख्तियार है उसको ॥
कहां वह शाहजादी और कहां फरहार की इज्जत ॥
बनाई बस वह शीरीने इसे आशक होतो समझो ॥
आशकने सर दिया तो क्या माशूकने उसे सम्हालाहै ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूकका रुतबा बाला है ॥
हम जिसके आशिक हैं उसका हुकुम बजाया करते हैं ॥
जो जो कहे वो काम उसका करलाया करते हैं ॥
लाख तरहके सदमें अपने दिल पै उठाया करते हैं ॥
सितमगार का सितम नहीं जबांपर लाया करते हैं ॥
शैर—फलक पर वोह है और हम इस जहांके बीच रहते हैं ॥
वो:तो है लामकां हम हर मकांके बीच रहते हैं ॥
तबक चोंदाके ऊपरसे सदा आतीहै कानोंमें ॥
वहां उसकी जबां ह्यां हम कुरांके बीच रहतेहैं ॥
देवीसिंह कहै बनारसी भी आशक भोला भालाहै ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूकका रुतबा बाला है ॥

खुदाके नूरकी तारीफ सिरसे पैर तक।

कहरना जो अन्दाजगजबहैअजबहुस्नदमकेदमदम् ॥ चालमें छलबल इशारेनहीं तेरे आफतसे कम् ॥ गरचे हुस्न तेरेकी सिफतकोईलाखतरहसे करेरकम् ॥ क्या ताकतहै जो उसके हाथमें ठहरे लोहेक लम् ॥ जायेताज्जुब है जलवातेरा जलबेगरबनासनम् ॥ तेरेनूरसे हुआकोहतूरमेंवह मूसाबेदम ॥ हाथमलायकमलैं हूर हैरतखाखाके छुयेकदम् ॥ जिनो बसरसबतेरी ताबेदारीकरते हर दम् ॥ सर तापा तस्वीर खिची कुदरतकी तेरी विनाकलम् ॥ चालमेंछलबल इशारे नहीं तेरे आफतसे कम् ॥ १ ॥ सर तेराहै हरसरका सरदारतुहै शाहेआलम् ॥ उसके ऊपर ताजकलगी औछत्रझलकेझमझम् ॥

जुल्फमुशलशिलमे वहपेंचेहै औरतेरे हरवालमें खम् ॥ गोया नागिन
माहपर आई चाटनेको शबनम् ॥ यामैं जुल्फको अब्र कहूं या ला
अलीफयानसर नजम् ॥ यामैं उनकोकहूंजुलमात याकेजादुयेसितम्
आगेलाखो तिलिस्महैं जुल्फोंमें तेरे तेरीकसम् ॥ चालमेंछलबल इशा
नहीं तेरे आफतसे कम् ॥ २ ॥ देख तेरे माथेको फलकपर आफता
खाता है शरम्॥चीनेजबींसे किरन खुरशैदकीकांपे होकेबहम् ॥ सिफ
करूं अबरूओंकी तौ शमशीर पर होशम्शीरे अलम् ॥ याके कमाहैबन
मुलतान्की याहैतेगे दुदम् ॥ मिजे तीरपैकांहै या नशतरहै या ब
रछीबल्लम् ॥ यक पलमें वह करैंकतलाम् करैं एकपलमें रहम् ॥ ते
रीनजर गर फिरैतो फिरहोजायँ कतललाखौं रुसतम् ॥ चालमें छ
लबल इशारे नहीं तेरे आफतसे कम्॥ ३ ॥ चेहरागोल अनमोल बे
जिस्से रश्ककमर को होवेगम् ॥ चश्मवह नरगिशकबैलसे खिले
गोयाबागे इरम् ॥ देखके बीनीकी तेजीको हरयकका हो नाकमेंदम् ।
गजब फडकहै तेरेनथुनोंकी कहैं किसतौरसेहम् ॥ रुखसारोंपर छु
टापसीना जैसेदोदरियाये अगम् ॥ बात बातमें दिल्लगी शीरीं स
खुन औ जबां नरम् ॥ हरयक आनमेंजान निकाले अदाअजायबहु-
स्नयम् ॥ चालमें छलबलइशारे नहीं तेरे आफत से कम्॥ ४ ॥ और
जोकरूंतारीफ तेरे दंदाँकी ऐदिलजाने दिलम् ॥ या वह गौहरहै
बेशकीमत याने हीरोंकी किसम् ॥ देख लबों पर पान कि लाली ला-
लोंका रुतबाहोकम् ॥ खालेजकन पर आनतर उगद सुरैया हुआ
खतम् ॥ चाहेजनखदां देखके तेरी चाहमें डूबाकुलआलम् ॥ कदवह
कयामतकी जिस्से सर्वासिहीको होमातम् ॥ गलासुराहीदार औसी-
नासाफ आईनासा उत्तम् ॥ चालमें छलबलइशारे नहीं तेरे आफत
से कम्॥ ५ ॥ दस्तवह नाजुक गोलकलाई हिनाहथेली में रहीरम् ॥
देख वह सुर्खी खूनेदिल कितनोंकाहो दममें दम् ॥ नाखूंवो गोयाहि

लाल औ मखमली मुलायमबना शिकम् ॥ नाफवह सागर कमर-चीतेसी वह जानूं नूरके थम् ॥ देखझलक कदमोंकीतेरेपैरोंमें आ-नकरपडापदम् ॥ बनारसीकहै मैं आशिक तेरे नाम काहूं हमदम् ॥ नारंगीसी एडीतलुवे मलै तेरे बाबा आदम् ॥ चाल में छलबल इशारे नहीं तेरे आफतसे कम् ॥ ६ ॥

ख्याल इश्क मार्फत–बहर लंगडी।

कूंचेजानाकी दिलपरगरजरा किसीके हवा लगी ॥ रहानीमजां न उसकोताबेउम्रतकदवालगी ॥ अदाहुवाजीजानसे जिसको प्या-रीतेरीअदालगी ॥ गदा हुआ वह इश्ककी जिसकेदिलपर गदालगी ॥ सदा अनल हकक हूं जबांसे मुझे वहप्यारीसदा लगी ॥ खुदीमिटगई खुदा की याददिलपर अब खुदालगी ॥ चोंटइश्ककी जिसके दि-लपर जरालगी या सिवालगी ॥ रहानीमजां न उसको ताबे उम्रतक दवालगी ॥ १ ॥ तिला कर दिया मिसकोखाकपातेरी उसे यकतिला-लगी ॥ दिलादेअपनादीद तबीयततुझसे ऐदिलालगी ॥ सिलाय क्यों कर जखमजिगरके जिसको इश्ककी शिलालगी ॥ मिलाखाकमें खाक-सारी जिसको कामिलालगी ॥ इश्कके बीमारोंको और कोई दवा न तेरे सिवा लगी ॥ रहानीमजां न उसको ताबे उम्रतक दवा लगी॥२॥बला-कैरे दिन रात इश्ककी जिसके पीछे बला लगी ॥ भलाहो क्योंकर वह जिसको तेग इश्ककी भला लगी ॥ मलाकरूं तलुवे तेरे मुझको यह चाह बरमला लगी ॥ चला लामकांचालकदमों में मेरे चंचला लगी ॥ तूहै शमामें परवाना मुझको तो तेरी वह लवा लगी ॥ रहा नीमजां न उसको ताबे उम्रतक दवालगी॥३॥अथाहहैदरियायेइश्कका कहो इसकी किसको थालगी ॥ नथाजोइस्में वह डूबाहरागिजइसकीनथालगी ॥ कथाछंद देवीसिंहने उन्हेइश्ककीप्यारीकथालगी ॥ जथावालेहैंजो

शायर उन्हेंबात यह यथालगी ॥ बनारसीको सिवाइश्कके और बा
नहिं रवालागी ॥ रहानीमजां न उसको ताबे उम्रतकदवालगी ॥ ४

परमेश्वर भजनमें रोनेकी तारीफ–बहर लंगडी।

रहेउम्रभरदरियामें निकले तो खुश्कगौहर निकले ॥ सदआफरी
हैं जो मेरीचश्मसे मोती तर निकले ॥ मिजैकीनोकोंपर जिसदम व
अश्कहमारे तुलनिकले ॥ आकींये हुवा केजैसे खारके ऊपर गुलनि
कले ॥ चश्महमारे उन्हें देखनेको जोयहखुलखुलनिकले ॥ अश्कज
गुलरूबने तो दीदेभी बुलबुल निकले ॥ गरनिकले इलमास तो क्य
वहभी सूखे कंकर निकले ॥ सदआफरीं है जो मेरी चश्मसे मोतीत
निकले ॥१॥ कहों मैं क्या क्या तशभीदू जो बनबनकेर आँशूनिकले ।
मैंवहदतकेंगोया कतरे बहिश्तसे चूं निकले ॥ मैंनेकहा ऐ अश्कमे
रीचश्मोंसे जिसतरह तू निकले ॥ क्याताकतहै जोऐसीलडीबनके
लूलू निकले ॥ कहींजवाहर निकले तो वहभी स्वामिंलपत्थर निकले ।
सदआफरींहै जोमेरीचश्मसे मोतीपर निकले ॥२॥ रोया फिराके यार
मेंमैं तो क्या क्या अश्क बन्बन् निकले ॥ यकींयह हुआकि दरिया
इसीसे गंगोजमन निकले ॥ और भी कुछकहताहूं सुनो इसजबांसे
जोकि सखुन निकले ॥ अब्र पुतलियां बनीतो चश्मभी दोसावन
निकले ॥ अश्कमेरे पुरआब है गौहर खाली खुश्क जिगर निकले ।
सद आफरीं है जोमेरीचश्मसे मोतीतर निकले ॥ ३ ॥ फुरकतेजाना मे
जो कभी हमरोते जारजार निकले ॥ तार नटूटाहारसे तोफा गुथे
हारानिकले ॥ क्याताकतइसदरियाकेगरवारसे कोईपारनिकले ॥ बना–
रसीकेहै जो निकलेमगरतोहमींयार निकले ॥ औरजोनिकलेरत्नवह–
भीअश्कोंसेमेरेबतर निकले ॥ सद आफरीं है जोमेरीचश्मसेमोतीतर
निकले ॥ ४ ॥

खुदाके नूरकी आखोंकी तारीफ–बहर लंगडी ।

तेगलगे तलवारलगे औरतीर लगे तो चैनपडे ॥ नैन के मारे
तडपते हैं कितने बेचैनपडे ॥ एकझलक मूसाको नजर गरपडी तो
वह लग गईनजर ॥ गिराकोहपर नउसको तनोबदनकीरहीखबर ॥
जिसेइशारे रोजकरे वह क्योंकर उसका होवेगुजर ॥ जियेकिसतरह
औरफिरमरे भलावहकहो किसपर ॥ दिलका हाल दिलहीजाने जो
जखमाजिगरपर ऐनपडे ॥ नैनकेमारेतडपते हैं कितने बेचैनपडे ॥१॥
तोपलगेबन्दूकलगे तो इसकी भी होदवाकहीं ॥ अगर दुगाडे नैनके
लगें तो फिर वह बचेनहीं ॥ बरछीसे बचगये कटारीकी चोटें कितनों
ने सहीं ॥ नोंकपलककी जराभीचुभी तो वह रोदियेवहीं ॥ नींदकहां
आती है जागतेहैं हम तो दिनरैनपडे ॥ नैनकेमारे तडपते हैं कि
तने बे चैनपडे ॥ २ ॥ बांकमेंहै क्या बांकपना और खंजरमें वह आब
कहां ॥ चश्मकेआगे दिखाई दे है किसीका रुआबकहां ॥ अगर
नशेकीकहो तो देखीऐसी भला शराबकहां ॥ मस्तानोंसेभी गरपूछो
तो आये जवाबकहां ॥ लाखोंदल कटजायँ मेरेकातिलकी जिधरको
नैनपडे ॥ नैनकेमारे तडपते हैं कितनेबेचैनपडे ॥ ३ ॥ वहहैंचश्म-
खूंरेजअबइनसेखूंनकादावा कौनकरे ॥ डारपेंचढके बोला मन्सूरके
अबहम नहींमरे ॥ उसे मिले दीदारजो आशक मस्ताने हैं सरसे-
डरे ॥ बनारसी कहे हम हैं सरमदके पीरसुनहरे भरे ॥ शबोरोज
हर वक्तजबांसे कहते हैं यही बैनपडे ॥ नैनकेमारे तडपते हैं
कितने बेचैनपडे ॥ ४ ॥

जीवनमुक्तका ख्याल ।

मनको मारके बनायामुर्दा जबयहतन आबादकिया ॥ पहनके
कफनी फकीरोंने तो कफन आबादकिया ॥ बस्तीको समझेउजाड
शहरा औ बनआबादकिया ॥ मालखजाना तर्ककर फखरकाधन

आबादकिया ॥ लौमें शोलेनूरके अपनाजलाके मन आबादकिया। आहसे अपनी मेहर औ चरखेकोइन आबादकिया ॥ जिसेकहेंवीरानासबमैंने वह वतन् आबादकिया ॥ पहनके कफनी फकीरोंने तो कफन आबादकिया ॥ १ ॥ गुलखाखा गुलबदनपें मैंनें वहगुलशन् आबादकिया ॥ जिसगुलशन्‌सेगुलोंकाहुस्न चमन् आबादकिया ॥ कहकेजबांसे वहकुमबइजनी अपना सखुन आबादकिया ॥ जिलाया मुर्दा हुक्मसे उसका कफन आबादकिया ॥ जीतेजी जो मरा उसीने तो मुर्दन आबाद किया ॥ पहनके कफनी फकीरोंने तो कफन आबाद किया ॥ २ ॥ गमखाखा इसदिलपर हमने रंजोमें हल आबाद किया ॥ दीवानोंको पढके दीवानापन आबादकिया ॥ तख्तसल्तनतछोंड खाकपर वहआसन आबादकिया ॥ जिसआसनसे इन्द्रका इन्द्रासन आबाद किया ॥ तर्क किया दुनियाका रास्ता और चलन आबादकिया ॥ पहनके कफनी फकीरोंने तो कफन आबादकिया ॥ ३ ॥ अश्कसे अपने दुर्वेशोंने दुरे रतन आबाद किया ॥ इश्कमें पैदाकिया गम गममें जशन आबादकिया ॥ जिसजा आशक बैठरहे उसजा मसकन् आबादकिया ॥ कहेदेवीसिंह नाम अपना रोशन आबादकिया ॥ बनारसीने करके इश्क आशकीका फन आबाद किया ॥ पहनकेकफनी फकीरोंने तो कफन आबादकिया ॥ ४ ॥

आशकके आहकी तारीफ–बहर लंगडी।

मेरी आहका तीर तोड गरदूं को गयालामकांतलक ॥ बेअदबीअबबहुतसीहुईकहूँमैं कहांतलक ॥ हुआइश्कका जोरजबइसदिलमें तो मैंने आहकरी ॥ सातोफलकको चीर करलामकानकी राहकरी ॥ वहांजो देखा नूरखुदाका उसने पाकनिगाहकरी ॥ और जहांमें नहीं फिर किसीकी मैंनेचाहकरी ॥ आशकसादिक नाममेरायहरोशनहै कुलजहांतलक ॥ बे अदबीअबबहुतसीहुई कहूं मैकहांतलक ॥ १ ॥

अजब मजा पायाहै हमने अपनी आह सोजांके बीच ॥ हुस्नखुदाई दिखाईदेहै मेरी जांकेबीच ॥ नहीं वहजलवा मलकमें देखा और नहूर गिलमाकेबीच ॥ नहींमेहरमेंनहीं वहझलकमाहेताबांकेबीच ॥ मेरी आहरोशनहै सातोंजमी औ कुलआसमांतलक ॥ बे अदबी अब बहुतसीहुईकहूंमैं कहांतलक ॥ २ ॥ इसी आहसे इश्कयहपैदाहुआ और आशक नामहुआ ॥ इसी आहसे जहांमें सारेमैं बदनामहुआ ॥ इसी आहसेहुआ सखुनमस्तानामस्त कलामहुआ ॥ इसी आहसे वह पैदा मैं वह दत का जामहुआ ॥ मेरी आह है लिखीदेखलो जाके कलमें कुरांहतलक ॥ बे अदबी अबबहुतसीहुई कहूंमैं कहांतलक ॥३॥ इसी आहसे कुफ्र तोड के काफरको मारा हमने ॥ इसीआहसे किया दुश्मन पारापारा हमने ॥ इसी आहसे पायावह दिलमें दिलपर प्यारा हमने ॥ इसीआहसे कर दिया फनारंज साराहमने ॥ बनारसी कहै जहांवहहकहै मेरी आहहै वहांतलक ॥ बे अदबी अबबहुतसी हुई कहूं मैं कहांतलक ॥ ४ ॥

जो आशकको छेडे उसका ये हाल हो ।

हमआशकहैं हमेंनछेडोछेडके पछतावोगे तुम ॥ आहसे गरदूं गिरपडैगा तोदबजावोगेतुम ॥ गरहमको छेडोगे तो निकलैगी इसदिलसे आतिशेआह ॥ आगलगैगीवह जिससे कुलजहान होवेगातबाह ॥ कहांभागके बचोगे तुम फिर कहीं नहीं पावोगे राह ॥ हक्कुलाये बातहै इसकाहै अल्लाही गवाह ॥ जिसने आशकको छेडा वह नहींबचा हरगिज वल्लाह ॥ कसमखुदाकी बातयह कुलजहान में है आगाह ॥

शेर—तुम्हें वाजिब नहीं है आशकोंको जोर दिखलाना ॥

जोहोवे नातवांउसको नजोर और शोर दिखलाना ॥

अगरतुमजोरदिखलावो तो फिरमतकोर दिखलाना ॥

जो भागे इश्कके मैंदांसे उसको गोर दिखलाना ॥

आशके दिलको कभीसतानेसे न चैनपावेगोतुम ॥ आहसेगर दूंगिरपडेगा तो दबजावोगे तुम ॥ १ ॥ शबोरोज हम आप मरेरहते हैं हिज्रगमके मारे ॥ हमेंसतानातुम्हेंनहींवाजिब है मेरेप्यारे ॥ अभी आहगर करूंगा तो बरसेंगे फलक से अंगारे ॥ कोई बचेगानहींमरजायँगेकुल बिनमारे ॥ मेरी आहसेडरें अवलियापीर पयगम्बरभी सारे ॥ इसीवास्ते नहींभरताहूं मैं आहोंकेनारे ॥

शैर–अभी गर उफ्फकरदूं कुलजहांपलमें उलट जाये ॥
जमींऊपरहो और ये आसमांपलमें उलटजाये ॥
ये मोसमसबउलट जाये समा पलमें उलट जाये ॥
हरेकदरिया उलट जाये तवांपलमें उलट जाये ॥

हमतो आपीजलेहैं हमको औरभी जलवावोगेतुम ॥ आहसेगर दूंगिरपडैगा तोदबजावोगेतुम ॥ २ ॥ छेडाशम्सतबरेजको वह मुलतान अबतलक जलतीहै ॥ वहांसे आतशदेखलो अबतकनहीं निकलती है ॥ और छेडासरमदको दिल्ली इधरसे उधर उछलतीहै ॥ आशिके सादिकके आगे रुसतमकीनहीं चलतीहै ॥ मेरी आहसे समाहै रोशन आतश अबतक बलतीहै ॥ काफरको येजलादेती है औमुझको फलतीहै ॥

शैर–निकालूं दिलसेमैंगरयारबअपनी आहसोंजांको ॥
जलाडालूं हजारोंकोसतकजंगल बियाबाँको ॥
करूं मैं खाकसा इस आहसे बस्ती औ बीरांको ॥
कयामत आहसे करदूंदिखाऊंमैं वह तूफांको ॥

छेडछाडगर करोगेआशकसे तोघबरावोगे तुम ॥ आहसे गरदूंगिर-पडेगा तो दबजावोगेतुम ॥३॥जिसने आशककोछेडा फिर उसकाघर बरबादहुआ ॥ गयाहस्बको नहीं वह दुनियामें आबादहुआ ॥ दो-

जब उसकोमिली और वहबहिश्तसे बेदादहुआ ॥ नाम उसीका जहांमे काफर और जल्लाद हुआ ॥ येहै सखुन आशकोंकाइसपर जिसजिसको एतकाद हुआ ॥ दोनोंजहांमें उसीकाभलाहुआ दिलशादहुआ ॥

शैर—सदाये आशकोंकी है भला होवे भला होवे ॥
अदापरउसकीयेदिलदेखियेकिसादिनअदाहोवे ॥
उसीकानाम रोशनहो जो उल्फतमेंजला होवे ॥
कहै येछन्द देवीसिंह मेरा दिलवर खुदाहोवे ॥

बनारसी यह कहे अगर नापाक इश्कगावोगे तुम ॥ आहसे गरडूंगिरपडेगा तो दबजावोगे तुम ॥ ४ ॥

खुदासे बन्देका सवाल जबाव—बहर लंगडी ।

खुदातूहै बरहक तो मैंभी हकजबांसे करताहूं ॥ आब जो तूहै तो मैंभी लहर बहरमेंरहताहूं ॥ अगरतूहै आतश तो मैंभी उसीका अंगाराहूंगा ॥ तिलाजो तूहै तो मैं जेवर तेराप्याराहूंगा ॥ गरतुहै सीमावतो मैंभीसनम् पारापाराहूंगा ॥ आहनतू है तो मैंभी बनातेराआराहूंगा ॥ जो तूहै दरिया तो मैंह्वां मौजरवाँहो बहताहूं ॥ आबजो तूहै तो मैंभी लहरबहरमें रहता हूं ॥ १ ॥ तुहीतो है दममें दमतो मैंभी आदम कहलाताहूं ॥ हुश्नजो तूहै तो मैं जलवातेरा दिखलाताहूं ॥ गरचे तू खामोशरहै तो मैं नहीं जवाँ हिलाताहूं ॥ तुहीहै मेरा तोमेप्यारे अबतेरा कहाताहूं ॥ तुही नहींगमखायतो फिर मैं जहांमें किसकीसहताहूं ॥ आब जोतूंहैं तो मैंभी लहर बहर में रहताहूं॥२॥ तेरानहींकोई दीन तो मेरीजातका कौनठिकानाहै ॥ तुझे न जाना तो फिर मुझको किसने पहिचाना है ॥ तुहै फख्र तो मेराभी दिलफकीर तेरादीवानाहै ॥ तुहै लामकां तो मेरेमकांको किसने जानाहै ॥ तुहै सांवलियाशाह तो प्यारे मैं नरसीमहेताहूं ॥ आब

जोतूहै तो मैंभी लहर बहरमें रहताहूं ॥३॥ तूहै शम्स तोमैंभी शम्
तबरेज जहांमें आयाहूं ॥ मुझमें तूहै औरमैं तेरेबीच समायाहूं
गरतूहैनापैद तो मैंभी नहीं किसीकाजायाहूं ॥ बनारसी कहे जो
कुदरत तो मैंभी मायाहूं ॥ तूने पकडा हाथमेरा मैं बाजू तेराग
ताहूं ॥ आबजोतूहै तो मैंभी लहर बहरमें रहताहूं ॥ ४ ॥

खुदासे बन्देका सवाल जबाब।

खुदातूगरहै इश्कतोमै आशकहूं हरनूरानीका ॥ शान जो तूहैं त
मैंपुतला हूंतुझलासानीका ॥ अगरतूराजेनिहांहै तोमैं पोशीदा इसत
न्मेंहू॥तूहैगुलिस्तां तोमैंभी गुंचाउस गुलशन् मेंहू॥तूहैंचाह तो मैंभ
डूबा प्यारेचाहे जकन्मेंहूं ॥ भलातूलौ है तो मैंभीहरदम् उसीलगन
मेंहूं ॥ तेरीनहीं तस्वीर मुझे खींचे यह न रुतवामानीका ॥ शानजो
तूहै तौ मैपुतला हूं तुझलासानीका ॥ १ ॥ तूहै पाका तो मेरा भ
दिलसाफ मिस्ले आईनाहै ॥ जानजोंतूहै तो मेरा तेरेहाथमें जीनाहै
अगर तू दानिशवरहै तो दिलमेरा दानाबीनाहै ॥ बुलंदहै तू त
मेरातेरेबामपरजीना है ॥ तूहै मौजदरिया तो मैंभीहूं वहबुलबुल
पानीका ॥ शानजो तूहै तोमैंपुतला हूं तुझलासानीका ॥ २
तूहैखुदा तो मैंभीतेरेसे जुदानहीं जीजानसेहूं॥ यकीनतूहै तो मै स
त अपने ईमानसे हूं ॥ तूहैदोस्त मेरा तो मैंतेरायार भीहरएक आन
सेहूं ॥ तूहै तसव्वर तो मैंभी पूरा अपने ध्यान सेहूं ॥ तूहै लिबास
नंगशौकहै मुझेतने उरयानीका ॥ शानजोतूहै तोमैं पुतलाहूं तु
लासानीका ॥ ३ ॥ तूहैएकतो मुझसा दुसरा और जहां में कौनसाहै।
कल्मातूहै तो मेरेसिवा कुरांमें कौनसाहै ॥ देवीसिंहकहे वगैरतेरमेर
जांमें कौनसाहै ॥ नातबांनीमें और ताकते तमांमें कौनसाहै ॥ यह
सखुन है विर्दआशके बनारसी हक्कानीका ॥ शान जोतूहै तोमें पुत-
लाहूं तुझ लासानीका ॥ ४ ॥

तारीफ सनमके पान खानेकी–बहर लंगडी ।

क्याही झलक दंदामें हुई प्यारे तेरे मुसुक्यानेसे ॥ बर्कतडपने-
लगीअखतररहे मूंहदिखलानेसे ॥ अजब तिलस्महुवा जालिम तेरे
डसपान चबानेसे ॥ मरजांगौहर जमुर्रद निकल पडे हर्खाने से ॥
ाफक्कादमफकहुवा बहुत फूलीथी वह सुखी पानेसे ॥ अनारके भी
ाने मौताज होगये दानेसे ॥ देखतेरे दंदाँकी झलक उठिगये लोलाल
मानेसे ॥ बर्कतडपनेलगी अखतररहेमूंह दिखलानेसे ॥ १ ॥ भूलजाय-
ौहरी परखना रतन औ फिरैं दिवाने से ॥ दन्दांतेरे देखपायें गर-
कसी बहानेसे ॥ कितने ही गये डूब वहसागरमें भी गोता खानेसे ॥
रनहीं वाकिफहुये वहभी ऐसे दुर्दाने से ॥ सूखगया वहलहू तेरे
ांतों की सिफत सुनानेसे ॥ बर्कतडपनेलगी अखतररहे मूंहदिख-
ानेसे ॥ २ ॥ शरमिन्दा होगयेजवाहर दाँतोंकेचमकानेसे ॥ खून-
गलनेलगे हीरे क्याहोपछतानेसे ॥ देखेंमुरस्से साज तो रहजाँय
पनाकाम बनानेसे ॥ यह वह जडतहै जडी बस खुदाके हाथलगा-
से ॥ आजमुझे मिलगयामजा इस हँसीमेंतुम्हें हँसानेसे ॥ बर्कतडप-
लगी अखतररहेमूंह दिखलानेसे ॥ ३ ॥ टुकडेहोंयाकूत तेरे दाँतो
रूबरूआनेसे ॥ करै चमेलीबात यहअपने और बेगानेसे ॥ पानने
ी पाईलाली उसमाहलकाके खानेसे ॥ इसी वास्तेवोवहस्तीमें आये
ारानेसे ॥ यहदन्दांनिकलेहैं बेबहाखुदाके सुनो खजाने से ॥ बर्क-
डपनेलगीअखतर रहे मूंह दिखलानेसे ॥ ४ ॥ बनारसीने कहा हाल
ह अपनेमन मस्तानेसे ॥ इनदन्दांमेंदेखले खुदामेरे दिखलानेसे ॥
कजायेगा औनादाँ तूलामकानके जानेसे ॥ यहीं देखले नूरदन्दां-
यारकेआनेसे ॥ ऐसी सिफतदांतोंकी कीसीसेबनै नहींमरजानेसे ॥
र्कतडपनेलगी अखतर रहे मूंह दिखलानेसे ॥ ५ ॥

पानके लालीकी तारीफ-बहर लंगडी ।

पानकी लालीसे वह झलकदन्दां में तेरे लालोंकी बनी ॥ ला
बदक्शांदेखकर जिसेखायँहीरेकीकनी ॥ आज जो तू हँसके बोला
दहनमें वह दन्दांचमके ॥ जिगर छिदगया हरएक गौहरका सुनो म
गमके ॥ सुनते ही यह सिफत सूखकर होशउडगये शवनमके
क्या ताकत है मुकाबिल दन्दांके अखतर दमके ॥ हरएक जवा
के ऊपर प्यारे तेरे दन्दां हैं गनी ॥ लाले बदक्शां देखकर जिसेखा
हीरेकीकनी ॥ १ ॥ अगर चमेलीको देखूं तो उसका सु
लिबास कहां ॥ मरजांटुकडे हुआ उसको जीनेकी आसकहां
झूंठनहींबोलूंगासनम् मुझको कोईका पासकहां ॥ सचकहता
मुकाबिल दन्दांके इलमासकहां ॥ क्या ताकत गर इनके रूबर
चमक सकै कोइ और मनी ॥ लालेबदक्शां देखकर जिसेखायँ हीरे
कनी ॥२॥ इन्हें देखकर बर्कतडपतीहै वह आसमांके ऊपर ॥ सद
करदूं शफकको भी इनदन्दांके ऊपर ॥ किसीसे निस्बतकभी न
नहींलाऊं इस जबांके ऊपर ॥ दन्दांतेरे झलकतेहैं वह लामकां
ऊपर ॥ सायततू पीसेजो दांत तो दम्मेंकरदे फनाफनी ॥ लालेबद
क्शांदेखकर जिसेखायँहीरेकीकनी ॥ ३ ॥ गरजो कोई याकूत क
तो जबांको उसकी कटवाऊं ॥ अनारकेभी कहैंदाने तो काटक
खाऊं ॥ और जो कहै गौहरकी लडी तो उसकोभी मैं छिदवाऊं
किसीसे निस्बत नदूं नहिंसुनूं न खातिरमें लाऊं ॥ बनारसी गर
कहै तो क्या दिलमें उसके अबयही ठनी ॥ लालेबदक्शांदेखकर जिसे
खायँ हीरेकी कनी ॥ ४ ॥

ख्याल तौहीर अर्थात् वेदांत मतलब उलटा-बहर लंगडी ।

बुराकिया तो भलाहुआ चोरी करनेसे शाहबने ॥ गदासे होगये

ादशाह बंदेसे अल्लाहबने ॥ जातसेहोवेजात जो कोई तो उसका
ह दीनबने ॥ सकल शबाहत बिगाडे तब चेहरा रंगीनबने ॥ इमा-
स छोडे इमानको पूराजभी यकीन बने ॥ लौमेंशोले नूरके
ले तो वोलौलीनबने ॥ जबाँकटीतबबोलनलागे फूटेनयन
ागाहबने ॥ गदासे होगये बादशाह बन्देसे अल्लाहबने ॥ १ ॥ करके
ार देखा हमने तो आजाबसे बडासबाबबने ॥ लाजवाब गरसनन्
होतो खूब जवाबबने ॥ मय वहदत कहतेहैं उसे जो अश्कसेमेरे
राबबने ॥ लज्जते शिरीमिले जब जलके जिगर कबाबबने ॥
खानेसे बहिश्त औरमय खानेसे दरगाह बने ॥ गदासे होगये
दशाह बन्देसे अल्लाहबने ॥ २ ॥ सिरकोकाटके अपनेदस्तपर रक्खे
ं सरदारबने ॥ मालमुल्क सबतर्क कर बैठै तो जरदारबने ॥ ता
रदिल्को कभी न उडनेदेतो वह परदारबने ॥ जिंदा उसको सम-
तेहैं हम जो मुर्दार बने ॥ चलनसे जब बदचलनहुये तो लामका-
की राहबने ॥ गदासेहोगये बादशाह बंदेसे अल्लाहबने ॥ ३ ॥ जिसे
हैं सब हराम हमने देखा वही हलालबने ॥ घोलके जिसने लगालि
ाहीवह फिरलाल बने ॥ जोकिहुये पैमाल जहांमें वह साहबेकमाल
ने ॥ बनारसीके सखुन पर क्या ताकत कोइ ख्यालबने ॥ जमींसे
गये आसमान और अखतरसे हम माह बने ॥ गदासेहोगये बाद-
ाह बन्देसे अल्लाह बने ॥ ४ ॥

रंजमें राहत इश्क पूरा—बहर लंगडी।

में आशकहूं रंजो अलमका गरये मेरे पास न हो ॥ मुझमरीजको
फिर यकदम जीनेकी आश न हो ॥ बेचैनीसे उल्फतहै बे
लीसे याराना अपना ॥ हिजरहै अपना दोस्त औवतन है वीराना
पना ॥ आहकी नकदी पासमेंहै खाना है ममखाना अपना ॥
नायहीहै किसीके ऊपर जीजाना अपना ॥

शैर–फ़ुरकते यार वह क्या क्या मजे दिखाती है ॥
बेक़रारिहि मेरे दिल्को बहुत भाती है ॥
वस्ल होता है तो वो बात चली जाती है ॥
इन्तजारीसे तबीयत् नहीं घबराती है ॥

रंगजर्द नहींहो अपना औ चेहरा मेरा उदासनहो ॥ मुझमरीजको तो फिर यकदम् जीनेकी आशनहो ॥ १ ॥ जो आशक सादिक उनकी जीस्त जानका खोना है ॥ यही खुशीहै जो उसदिलबरकी यादमें रोना है ॥ खाकके सोनेसे बत्तर पन्ना औ चाँदी सोना है बजूसे बेहतर हमें अश्कोंसे मूंहका धोना है ॥

शैर–टपक के आँशू जो रुखसार पर ढलकते हैं ॥
तौ मेरी आँखमें जोहर हरएक चमकते हैं ॥
ये मस्त दोनों हैं और दो जहाँको तकते हैं ॥
दीवानेदीद के हैं अब ये कब झपकते हैं ॥

जौर जुल्म और जफामें अपना दुरुस्त होश हवास नहो ॥ मुझमरीजको तो फिरयकदम् जीनेकी आशनहो ॥ २ ॥ प्यास हमारी बुझती है इसखूने जिगरके पीनेसे ॥ वाकिफहुवाहूं मैं अपनी चाहके जरा करीनेसे ॥ कामनहीं काशीसे मुझे नहीं मक्के और मदीनेसे और न आरजु हमें मरनेकी न मतलब जीनेसे ॥

शैर–आतिशे इश्कसे जलके जिगर तरहोता है ॥
जेरसायेसे शनमके ये जबर होताहै ॥
औबेखबरीसे दिलहर्गिज न खबरहोताहै ॥
नफाहै इश्कमें येही जो जरर होता है ॥

गर्चे कत्ल नहीं होवें हमतो काम इश्कका रासन हो ॥ मुझमरीजको तो फिर एकदम् जीनेकी आशनहो ॥ ३ ॥ दर्दहमारा दिल

रहे हरवक्त इसीसे यारीहै ॥ बेददोंसेभी अपनी कुछ नहीं गिले गुजा-रीहै ॥ सूलीपर मन्सूर ने वो अनलहक्क सदा पुकारी है ॥ जानगई तो बलासे नाम तो उसका जारी है ॥

शेर–इश्कबाजीमें अगर जानकी बाजीहोजाय ॥
तो तबीयत् यह मेरी खूबसी राजीहोजाय ॥
चाहे हमपर हो जफा या दगाबाजी होजाय ॥
रजामें राजीहै उसके जो वहराजी हो जाय ॥

बनारसी कहैं अगर्चें मेरा मुरसद देवीदास नहो ॥ मुझ मरीजको सो फिरयकदम् जीनेकी आशनहो ॥ ४ ॥

जो रंजउठावेगा खुदाको पावेगा–बहर लंगडी।

कहा ये मुझसे रंजने गर्चें आशक्क मेरे पासनहो ॥ तौ दुनियामें आशकी आशक की फिर रासनहो ॥ इश्कहै मेरा मकाँ औ मैं रहताहूं उसीके खानेमें ॥ वह नहीं आशककि जिसके दर्दनहोवै शा-नेमें ॥ तीरमेंक्याहै लुत्फमजा मिलजाय जो रहो निशानेमें ॥ बस्तीमें नहीं गुजर आशकहैं मस्तवीरानेमें ॥ सूखगया मजनू औ वह ताकत बनीरही मस्ताने में ॥ अबतक जिसकानाम रोशनहै सुनो जमानेमें ॥

शेर–हैकहां तकलीफ व तलुवोंमें जो चुभतेहैं खार ॥
हँस पडा मंसूर तो शरमा गई उस जापे दार ॥
रंज ये कहताहै आशक वह करै जो जां निसार ॥
हर कदमपर तीरहों पर दिलमेंहो वह जिक्रेयार ॥

चोट न आशकसहै और अपना खूपीनेकी प्यासनहो ॥ तौ दुनियामें आशकी आशककी फिर रासनहो ॥ १ ॥ दम्भरका है रंज औ फिर राहत है कयामत तक बाबा ॥ उठाले शिरपर अलम तो देखे लुत्फ इसमें क्या क्या ॥ रंज यही कहताहै जो आशकपक्का होतो इधरकोआ ॥ जुल्मसे मुतलक नडर और खौफ न अपने

दिलमें खा ॥ सरको काटकर सरमदने जिसवक्त हथेलीपर रक्खा ।
उसीवक्तसे नाममुतलक न बादशाहका रक्खा ॥

शैर–करदिया तख्ततबाह देहलीकी अब उडती है धूल ॥
क्याखतासरमदकीथी थीशाहकीमुतलकयहभूल ॥
देखिये अब इस गुलिस्तांमें वह कब आयेंगे फूल ॥
गर करे यह अर्ज आशक तो खुदा को हो कबूल ॥

रंजने ये फर्माया आशकको मेरा कुछ पासनहो ॥ तो दुनियामें आशकी आशककी फिर रासनहो ॥ २ ॥ आरेसे चिरजाँयनहीं घबराँय जो आशकहैं पक्के ॥ सीनासामनें करैं दिलबर जो चोटमारे तक्के ॥ कभीननिकलैमकांसे वह गर लाख वजेके दे धक्के ॥ दरेयारको छोडनहीं जाँय वह काबे औ मक्के ॥ जैसेजुवारी जोरूहारके होजाते हैं भवचक्के ॥ तौभी अपनी जबाँसे कहाकरें वहपौछक्के ॥

शैर–इश्कमें बाजीहे सरकी काम दौलतका नहीं ॥
इस्से बेहतर खेल हमने और कोइ देखानहीं ॥
जिसने अपनाशिर न बेचा कुछ मजाचक्खानहीं ॥
आशकोंने जीतेही जी तन वदन रक्खा नहीं ॥

लाखवजेके सदमोंमें गर दुरुस्त होश हवास नहो ॥ तौ दुनियामें आशकी आशककी फिर रासनहो ॥ ३ ॥ खाख में गर मिलजाय गोरसे गुल होकरके निकलतेहैं ॥ अजबहैआशकमर्गके बादभी फूले फलते हैं ॥ रोशनहों कुल आलम् में जो खडे इश्क में बलते हैं ॥ उन्हें देखकर जो पत्थर हों तो वह भी पिघलतेहैं ॥ देवीसिंहके सखुनपर शायर हरेक हाथको मलते हैं ॥ चारोंतरफसे वाह वाह करैं औ बहुत उछलतेहैं ॥

शैर–ये कला में मारफत है रंजसे राहत मिले ॥

जोकि डूबा चाहमें तो फिर उसे चाहतामिले ॥
गम अगर खाये तो उसको रोज फिर न्यामतमिले ॥
दीदउसदिल्बरकाजीते जी औताक्यामतमिले ॥
रंजये बोला बनारसीसेगरतू मेरादासनहो ॥ तौदुनिया में आशकी आशककी फिर रासनहो ॥ ४ ॥

बागे बहेश्तमें खुदाके आनेकी तारीफ-बहर लंगडी।

बागबागहुआ बाग आप जब आये बागेइरमकेबीच ॥ फूलफूलके गिरपडे हरयकफूल हरकदमके बीच ॥ जुल्फ मुसलसिल देखपेंचमें आया सम्बुल चमन के बीच ॥ नैनने तेरे शर्मदी नरगिसकाले हिरनके बीच ॥ फूलरही है फुलवारी वो प्यारे तेरी फबनकेबीच॥ कदपर सदकेकरूं में सर्वसिही गुलशनके बीच ॥
शैर—करूं लबपर तसदुःखलाल गुह्लालेके दोटुकडे ॥
औदंदां मोतिआंदेखे तो उसकी आब सब उतरे ॥
अगचें मुस्कराके और करे कुछबात तूहँसके ॥
तोहोवे बेकली हरयक कलीफूटे खिलें गुंचे ॥
कौनवोहैखुशबू जो बसीहै नहीं तेरे दमकदमके बीच ॥
फूलफूलके गिरपडे हरयकफूल हरकदमके बीच ॥ १ ॥ रुखसारोंको देख गले गुल गुलाब तेरी लगनके बीच ॥ सदा सुनेतो धुनेसिरतूती आगिलगे अगनकेबीच ॥ भराहुआहै चाहहुस्नका आपकीचाहे जकनकेबीच ॥ डूबगये हम न दहशतकरी जरा इस मनके बीच ॥
शैर—फिदा दिलहै गुले राना तेरे ऊपर हरेक गुलका ॥
दिखाबादेबहारी और पिला दे जाम उस मुलका ॥
मचें वो कहकहे और चहचहे गुलहो तजम्मुलका ॥
खुलेंपरबाल कुमरी के कहा ले मान बुलबुलका ॥
शाखशाखहो हरी शजरकी लगे कलम हरकलम के बीच ॥ फू-

लफूलके गिरपडे हर यक फूल हर कदमके बीच ॥ २ ॥ नजर पडी जिसवक्त गुलिस्तां की तेरे पैरहनके बीच ॥ चाक गरेबां किया ग शखाके गिरे गुलधरन के बीच ॥ वह है नजाकत आपमेंयेहै कहां जुही यासमनके बीच॥बनबनके सब फूल फूले हैं तेरे योवन के बीच॥

शैर–हुआ मुर्गाने चमनका दिमागतर बूसे ॥ महक आने लगी उल्फतकी वो तुझगुलरूसे ॥ सिफतमैं किसतरह तेरी करूं कौनमुहसे ॥ खारकीबात न तूनेकरी कभीमुहसे ॥ लगीचाटने तलवे तेरे आई तरीशबनमकेबीच ॥ फूलफूलके गिरपडे हरयक फूलहर-कदमके बीच ॥ ३ ॥ मुरझायादिल हारहुआ हुईगुलजारी गुलब दनके बीच ॥ खिजाकामुतलकनाम नहींरहा गुलोंकेवतनकेबीच ॥ झुकझुकके सब करैं डालियां सिजदा तेरे चरण के बीच ॥ कहै देवी सिंह ख्याल तौहीदमारफत सखुनके बीच ॥

शैर–खिंचा नक्शा मेरे दिलपर है वहतेरी सफाईका ॥ बसीतस्वीर आंखों में और है जलवा इलाहीका॥ किसीको ताजबख्शा और किसीको तख्त शाहीका ॥ गदाई हमकोदी जिसमें दियादावा खुदाईका ॥ बनारसीकहै गजबझलकहै तेरे कदमके पदमके बीच ॥ फूल-फूलके गिरपडे हरयकफूल हर कदमके बीच ॥ ४ ॥

दवाइश्कके बिमारीकी किसीनेन लिखीसोहमनेलिखी।

तुस्खा इश्कका लिखताहूं गर किसीको ये आजारभी हो ॥ जहरे हलाहल पीये तो जीये औ ताकत दारभीहो ॥ जख्म जिगर पर कारी हों और भीतर उसके गारभीहो॥ गुले धतूरा लगे तो गुलशन बाग बहारभी हो ॥ लगें इश्कके तीर और ऊपरसे पडती तलवारभी हो ॥ झुकादे सरको तो उस्से मौततलक लाचारभी हो ॥

शैर–यारको मिलनेका तुस्से जो कुछ इनकारभीहो ॥

तु आंखें बंद जो करले तों ओदीदारभी हो ॥
बातही बातमें उस्से कभी तकरारभी हो ॥
जबाब उसका न तुदे तो फिर वो यारभीहो ॥
मैं तो यही लिखताहूं इश्कका भला कोई वीमारभी हो ॥
जहेरे हलाहल पीये तो जी यै औ ताकतदारभी हो ॥ बेचैनी हो दिलपै वँधा आँसुओंका हर दंतारभी हो ॥ दवाहैं उसकीके कुछ इस दिलको सबरो करारभीहो ॥ शोरोफिगांहो जबापर हरदम आहे आती शवारभी हो ॥ जिगर जलाये तो दिलहो रोशन उस्से प्यारभी हो ॥
शेर–मिसले मनसूर जो उलफतमें तुझे दारभी हो ॥
तु हो बेखौफ तो फिरदार वो नादारभी हो ॥
किसीके इश्कमें दिल तेरा बेकरारभी हो ॥
मिले वो तुझको जोजाँ उसपैसे नीसारभीहो ॥
तडफे मुर्ग मिसमिलकी तरहसे और जीना दुशबारभी हो ॥
जहरे हलाहल पिये तो जीये ओ ताकतदारभी हो ॥
तेरे मारनेके खातर वो जुलफजो उसकी मारभी हो ॥
बलायें उसकी तू सरपर ले तो दिल हुसियारभी हो ॥ रशके चमनकी लगनमें तूगर सूखके मिसले खारभी हो ॥ गुलोंके ऊपर जो खुलखायें तो गुले गुलजारभी हो ॥
शेर–सनमकी चाहमें ऐदिल तु अशके बारभी हो ॥
जो गोता मारके डुबे तो उसके पारभी हो ॥
अश्क गौहरका गलेमें किसीके हारभी हो ॥ ओ माला माल हो जो उसका खरीदारभी हो ॥ दर्दसरी हो इश्ककी औ उलफतका चढा बुखारभीहो ॥ जहरे हलाहल पिये तो जिये औ ताकतदारभी हो ॥ मिसलेकैस सहारमें तो तू दिवाना आसके जारभी हो ॥ खयाले लैलासे तेरा वहीं वस्ल दिलदारभी हो ॥ इश्कके सौदेमें जो किसीका

छूट गया घरवाभीहो ॥ लुटादे सबकुछ मालो असवाव तो फिर ज
दारभी हो ॥

शैर–कत्लकरनेको जो वोह इश्क सितंगारभी हो ॥
जान देनेको तु अपनी वहीं तै आरभी हो ॥
दामें काकुलमें तेरा दिल जोगिरफ्तारभी हो ॥
बलाशे उसकी नतुडर जो मारामारभी हो ॥
देविसिंहकहे बनारसी गर इश्कमें कोइ मुरदारभी हो ॥
जहरे हलाहल पीयें तो जिये औ ताकतदारभी हो ॥

ख्याल सूमोकाकंजूसका बुरा हाल–बहर लंगडी।

इस दुनियामें आये खुदाके हुये न प्यारे चले गये ॥ किसीको
कुछ नहिं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥ शिकममें जबतक कैद रहे
तो कहा खुदाकी करेंगे याद ॥ बाहर आये तो रोनें लगे करी मासे
फरियाद ॥ दूधपिआमाका औ छाती मली किया जोबन वर बाद ॥
लगे मांगने खीलोने खेल कूदमें हो रहे शाद ॥

शैर–लगी हवा जो जमानेकी तो सब भूलगये ॥
पिया जो दूध मुफतका तो उसमें फूलगये ॥
कभी सोये जो पालनेमें पाँपसारके वह ॥
तो नींदऐसी वह आईके उसमें झूल गये ॥
कभीहिंडोले पर जागे बाबाने उतारे चले गये ॥

किसीको कुछ नहिं दिया तो हाथ पसारे चलेगये ॥ दौलत वरके
घरमें पैदा हुये तो गहने सोनेके ॥ बहुत दिनोतक उन्होंने बदनपे
पहने सोनेके ॥ चांदीके नहिं पहनूंगा अबलगे वह कहनें सोनेके ॥
हमेशा जेवर बदनपर लगे वो रहिने सोनेके ॥

शैर–रहे जब तकसवहनादाँ तो सबने प्याराकिया ॥

किसीको बोसा दिया और किसीको यार किया ॥
लगे पढनेको इल्म मोलवी पंडितके यहां ॥
तो कुछ दिनोंमें दिलको खूब होशिआर किआ ॥
इधर उधर आँखोंको लडा मारे नज्जारे चले गये ॥ किसीको कुछ नहीं दिआ तो हाथपसारे चले गये ॥ जिसदिन पैदाहुये ओ तो उसदिनका हाल सभ भूलगये ॥ खुदासे वादा किया उसका खयाल सभ भूलगये ॥ किसीसे जो कुछ लिया तो ओ उसकाभि माल सब भूलगये ॥ ये नहीं समझे कभी आयेगा काल सब भूलगये ॥
शैर—नशाचढा जो जवानीका तो मद होश हुये ॥ किसी ने कुछ भी जो मांगा तो ओखामोश हुये ॥ कोइ कहने लगा अपनी जो वो तकलीफकाहाल ॥ खयाल कुछनकिआ और न उधर गोश हुये ॥ लालाजी लेने आये देने के मारे चले गये ॥ कीसी को कुछ नहीं दीया तो हाथ पसारे चले गये ॥ खोया लडकपन खेलकूदमें गई जवानी रांडके साथ ॥ हमेशां सोहवत तो उनकी रही ओ भडवे भांडके साथ ॥ दांत टूटगये तो फिर रोटीलगे ओ खाने खांडके साथ ॥ बैलजोबुढ्ढाहुआ तो कहांमिले फिर सांडके साथ॥
शैर—जमा जोरी जो उनोनेतो वो आजार हुआ ॥ उसीमे मालों मताभी बहुत सा ख्वार हुआ ॥ कभी खैरातनकी औ नादिआ भूखोंको ॥ तो उनके घरमें वह हुकमा ओंका दरबार हुआ ॥ कोइ लागीरहोके मरगये कोइ वने करारे चले गये ॥ किसीको कुछनहीं दिआतो हाथ पसारे चले गये ॥ लाखोंमें कोइहुआ सखी और बहुत जहा में देखे सूंम ॥ कहे देवीसींह तो आखिरसूमो का फूटा मकसूम ॥ बनारसी कहे मैंने देखा खूबमुझे येहै मालूम ॥ मेरी नसीहत अगर माने तो हो मुलको में धूम ॥
शैर—ये शकुन मैंने कहा कुछ भी ज्ञान में आया ॥ जरा तो मु-

खसे कहो हांकेध्यानमें आया ॥ केसिरफ़ सुनेहीं आयेथे न कुछ भ
समझे ॥ तुमे हमारी कसम कुछभी कानमे आया ॥ सुमोसे ले
नेको कहा तो ओ दइमारे चले गये ॥ किसीको कुछ नहीं दिअ
तो हाथ पसारे चले गये ॥

खुदाकी राहमें जो चाहे चलता है उसका हाल-बहर लंगडी।

कूंचैजानामें गरकोईधरके जराकदम निकला ॥ फिर वो न नि
कला उसीकूंचेमें उसका दम्निकला ॥ येहैरास्ता सख्त गर कोई
इससें नागहां आनपडा ॥ जानबूझके फिरवोदेता है इसीमें जान
पडा ॥ कहींतपिशमें तपे कहीं कांटोंका नजर मैदानपडा ॥ कदम
कदम पर अबहमको लूत्फइश्कका जानपडा ॥

शैर—हमें गुलशनसे भी बेहतर हैं इश्कके कांटे ॥ येफर्श खारके
तोफाहैं मुझे मखमलसे ॥ कहूं मैं किस्से सुनै कौन इश्कके किस्से ॥
जो देखें हाल हमारा तो कैस भी रोदे ॥ रहाबहांका वहीं देखने जो
अपनाहमदम निकला ॥ फिर वो न निकला उसी कूंचेमें उसका
दम्निकला ॥ १ ॥ मजाचाहका जिसने देखाहोगा वहडूबाहोगा ॥
बहरे इश्कमें जोतैराहोगा वहडूबा होगा ॥ अश्क चश्मसे जिसके बहता-
होगा वह डूबाहोगा ॥ चाहे जकनपरजोशैदाहोगा वहडूबाहोगा ॥
शैर—बहरेउल्फत का किसीको भी किनारा नमिला ॥ या खुदा
नाखुदाका ह्वांपरइशारा नमिला ॥ किश्ती हरगिज न मिली कुछभी
सहारानमिला ॥ थाहमुतलकनमिली दम भी गुजारा नामिला ॥ लगा
न थलबेडा उसजापरसे नकोई आदम निकला ॥ फिरवह ननिकला
उसीकूंचेमें उसका दम्निकला ॥ २ ॥ इश्कको जो देखा तो खडा
है मेरे शिरपर दारालिये ॥ हुस्नको देखा तो वहधमकाता है तलवार

लेये ॥ जुल्फयही कहती हैं किमैंने कितनेई आशक मार
लिये ॥ चश्मइशारेकरे हैंजादूकेहाथियारलिये ॥ कौनइसकत्लके मैं
हासे निकल जायेगा ॥ किसतरहकाकुलेपेंचांसेनिकल जायेगा ॥ कोई
इश्कके तूफांसे निकल जायेगा ॥ न निकल जायेगा गरजांसे नि-
कल जायेगा ॥ तानकेअबरूतू जिसपर वहलेके तेगे दूदम् निकला ॥
कर वहन निकला उसीकूंचेमें उसकादम्निकला ॥ ३ ॥ कत्लहुआ
ह जिसने इस मैदांमें आकेकदममारा ॥ गिरा जमींपर न उसनेआ-
करी औनदम्मारा ॥ उसके हुस्नके आलम्ने एकआलम्का आ-
दम्मारा ॥ कहेदेर्वीसिहगयामेंभीइस्में उसदम्मारा ॥ इश्कनेदारप-
मन्सूरकोचढायाहै ॥ हुस्नने यारके कोहतूरकोजलायाहै ॥ नूरने
उसकेहरयकनूरको बनायाहै ॥ शहूरउसमे बेशहूरको बतायाहै ॥
नारसीकर तर्क जहांको सीधा राहे अदम् निकला ॥ फिरवह न
निकला उसीकूंचेमें उसका दम्निकला ॥ ४ ॥

सनम्के जुल्फसे लगाके सब ओर तारीफ–बहर लंगडी ।

जुल्फसिआसे मारसिआहैं चश्मसेलाली मुलमें है ॥ नकशा
दका कयामतधूम यह आलम कुलमें है ॥ सरसे हर सरदारबने
शानीसे जलवे खुरशीद ॥ चीनेदर्वीको वहहै तहरीरन जिसकी
दोशुनीद ॥ अबरूसे झुकी कमाम् औ पैदाहुआफलकपर माहेईद॥
जरेबुरांने पाई बाढकिया लाखों कोशहीद ॥
र–हैकुरांमे हक जो बिस्मिल्लाः अबरूसे बनी ॥
औ अलीकी तेगभी वल्लाहअबरूसे बनी ॥
और सिफत क्या क्या करूंमै कुछ कहाजातानहीं ॥
जोचलाझुकके तो उसकी राहअबरूसे हनी ॥

तुझगुलका चर्चा गुलेराना यही तो हरबुलबुल में है ॥ नक
कदका कयामतधूम यह आलम् कुलमें है ॥ १ ॥ मिजैसे पैकां
औनशतर चुभे रगेजांपर आकर ॥ खारभी उस दम् खटकनेल
मेरेवाँपर आकर ॥ निगाहसे वह तलवार चली सो लगी नीमजां
आकर ॥ आहभी मुतलक न ठहरी मेरी इस जबांपर आकर ॥
शैर–हैं शरारत वह तेरी चितवन में ऐरश्केकमर ॥

होरहा जीसे जहांके बीचमें जादूसे हर ॥
लडगई जिसशख्सकी वह आँखतेरी आँखसे ॥
फिरउसे तेरेसिवा कुछभी नहीं आतानजर ॥

वहीजिक्र मयखानेमें और यही सदाकुलकुलमें है ॥ नक्शाक
का कयामत धूम यह आलम्कुलमें है ॥ २ ॥ बीनीसेबना अलि
तेरे रुगसे वह पैदा नूरहुआ ॥ जिसकी झलकसे गिरामूसा औखा
कोहतूरहुआ ॥ लबसे लाले यमन बनेयाकूतभीवहीं जरूरहुआ
औदंदांसे बने गौहर तो क्याही जहूरहुआ ॥
शैर–है झलक हीरोंमें ऐप्यारे तेरे दंदानसे ॥

बर्फभी चमकी वही दांतों में तेरीशानसे ॥
औ जबाँस वर्गगुल पैदाहुआ रंगीन वोह ॥
हरसखुनशीरींतेरा निकलेहै क्याही आनसे ॥

बादेसबा कहती है यही औ वदी वही जिक्रहरगुलमें है ॥ ३ ॥ चा
जकनसे आशकसादकके दिलमें वय चाह हुई ॥ लगाझांकने कु
जिस जिसकी उधर निगाहहुई ॥ गलेसे मीनाबना सुराही भी उसके
हमराहहुई ॥ कहै देवीसिंह सिफत किस्से तेरी अल्लाह हुई ॥
शैर–थकगयेलाखोंहि शायर करके सब तेराबयाँ ॥

पर न पाया राज तेरा तूतौहै राजेनेहाँ ॥
किसकी ताकतहै जोहो आगाह तेरेहुस्नसे ॥

यक झलकमेंगिरपडा मूसाभीहोकर नातवाँ ॥ बनारसीने यही
लेखा काबे काशी गोकुलमें है ॥ नकशा कदका कयामत धूम ये
आलम् कुलमें है ॥ ४ ॥

आशकमैंहूं उसगुलका जिस गुलपर फिदाहैं सारेगुल ॥ बाहरमें
भी न जिसकेनाम खिजाँकाहै बिलकुल ॥ सदारहै सर सब्ज वह उसकी
महकसे मस्ताना पनहो ॥ दीद उसगुलकी करे तो दिलमेंदीवानाप-
नहो ॥ अदासे उस समशादकी आशकमें तो आशकानापनहो ॥
क्योंनहीं गुंचेखिलें जब उसमें मुसक्यानापनहो ॥

शैर—बनायै क्योंन उस गुलशनमें कुमरी आशियाँ अपना ॥
गुलेगुलजार गुलरू और जहाँहो बागबां अपना ॥
नहींसैयादकाडर कुछ न मुतलकखौफेजाँ अपना ॥
मकांहै लामकां अपना निशांहै बेनिशां अपना ॥

गुंचेभी यही टचक चटकके करें चमनमें शोरोंगुल ॥ बहार में भी
न जिसके नाम खिजाँकाहै बिलकुल ॥ १ ॥ पेंचसेंजुल्फेसियः फामके
दिलमें इश्क पेंचां बनजाय ॥ मुश्के खुतनभी महेक जुल्फोंसे वह
परेशाँ बनजाय ॥ वालसे आये बबाल संबुल परजो जुल्फ पेंचांबन-
जाय ॥ नाफे आहूका मुंहकाला हो घासरैहाँ बनजाय ॥

शैर—पडे झूमर वो उस्के रुखपर जुल्फोंका जो मुंह खोले ॥
तो अशरतका हिंडोला देखकर खाये वह झकझोले ॥ और
सुंबुलाकुल सूंघलेकाला न अपने मुंहसे कुछबोले ॥ यकींएहै किपीनेके-
लिये अपने जहर घोले ॥ जुल्फ अंबरीहै या सोसने गुलहै तेरी काली
काकुल ॥ बहारमें भी न जिसके नाम खिजाँ का है बिलकुल ॥ २ ॥
चश्मसे नरगिस शरमिन्दाहो सरको झुकायें खडारहे ॥ आँख उस-
गुलसें कभी मुतलक न मिलाये खडारहे ॥ कदसें सर्व सनोंवर गु-
लशनमें गडजाये खडारहे॥दहनसे गुंचा तंगहोकर शर्मायेखडारहे

शैर—सफाई देखकर उसकी समन मैलाहो गुलशनमें ॥
वोः नाजुकपन न जूहीमें जोकुछहै यारके तनमें ॥ हिनादेखे थेलीको तोखूं उगलाकरे मनमें ॥ सदा उसकी सुनेंतूती तो भागे कोई बनमें॥ शाख शाखपे यहीचहचहा करताहै शैदा बुलबुल बहारमें भी न जिसकेनाम खिजाँ काहै बिलकुल॥३॥रस्के चमन गु बदनको गुलदेखे तौ गरेबाँचाककरे ॥ हरएक गुलिस्तांका वोः य दम् भरमें दम् नाककरे ॥ गर्चे कोई मुर्गाने चमन जो उससे मुहब्ब पाककरे ॥ बहेरे उश्कका खुदा उस आशकको पैराककरे ॥
शैर—सबा आईजो गुलशनमें तो उसकी क्या बन्आई है ॥ न वाकिफथी जिसबूसे वो सब उसमें समाईहै ॥ न मुतलक खार गुल शन्में न कुछ गुलकी बुराई है ॥ नहीं गिलमें लगावो गुल वहाँ जल खुदाईहै ॥ बनारसीको उस गुलरूने पिलादिया वो जामें मुल वहारमेंभी न जिसके नाम खिजाँकाहै ॥ ४ ॥

लावनी।

जुल्फकोतेरी मारकहे तो मार मारसे कटवाऊं ॥ सम्बुले पेंचा कहे तो पेंचमें मैं उसकोलाऊं ॥ कदसे सर्वकी निस्बत देतो खोदव उसको गाडूंमैं ॥ अगर सनोवरकहे तो चमनसे अभी उजाडूं मैं ॥ जालसे निस्बतदे जो फिल कीलातसे उसे लताडूंमैं ॥ पंजये मर जाँकहेतोदस्तसे अभी उखाडूं मैं ॥ काकुल को गरदाम कहे त जालमें उसकों उलझाऊं ॥ संबुले पेंचाकहे तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ॥ १ ॥ चष्मतेरे नरगिस जो कहे तो आंखको उसकी फोडूंमैं ॥ दंदा गौहरकहे तो दांत सब उसके तोडूंमैं ॥ दहनको गुंचा कहेतो उसके मुंहको पकड मरोडूंमैं ॥ जानके निस्बत येदेतो जान न उसकी छोडूं मैं ॥ अगरतेरीकाकुल उलझे तो क्योंकर उसको सुलझाऊं ॥ संबुले पेंचा कहे तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ॥ २ ॥ जकनको तेरे चाह कहे तो कुएमें उसे डुबाऊंमैं ॥ पेशानीको कहै

ुरशेदतो उसे घुमाऊं मैं ॥ गलेको मीना कहे तो गर्दन उसकी
भी कटाऊं मैं ॥ बीनीको गर अलिफ कोई लिखे तो उसे भुलाऊं
ं ॥ गेसूको कहे तो घटा तो उसका घटाके रुतबा मैं आऊं ॥ संबुले
ंचाकहै तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ॥ ३ ॥ जबाँको तेरी कहै बर्गगुल
सकी जबां निकालूं मैं ॥ हिलाल अबरू कहे उसके टुकडे करडालूं
॥ सीने को कहे आईना तो उसे न देखूं भालूमैं ॥ कमरको तेरी
गर मूंकहे तो उसे छिपालूं मैं ॥ बनारसीकहै तेरेबाल की कहींभी
स्बत सुनपाऊं ॥ संबुले पेंचाकहै तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ॥ ४ ॥

लावनी ।

मेरी नजरके बीचमें तेरे दो रुखसारे फिरते हैं ॥ जिधरको देखूं
धर तेरे रुखसारे फिरते हैं ॥ तेरे इश्कमें फलकके उपर लाख
तारे फिरते हैं ॥ शमशो कमरभी इश्कमें मारे मारे फिरते हैं ॥
रे इश्कमें जिसके सरपरभी वोः आरे फिरते हैं ॥ सरपर उसके हुमा
या पर पसारे फिरते हैं ॥

शैर—इश्कमें दरों बदर जो तुम्हारे फिरते हैं ॥ कभी तो उनकेभी
ुन औ सितारे फिरते हैं ॥ आंखमें जिसकी वोः तेरे नजारे फिरते
॥ रहम होताहै उन्हें हम पुकारे फिरते हैं ॥ इधर उधर और
धर तिधर सब तेरेही प्यारे फिरते हैं ॥ जिधरको देखूं उधर तेरे
खसारे फिरते हैं ॥ फंसे इश्ककी कीचडमें जो पैर उधारे फिरते
॥ कदममें उनकी वोः तो अकसीर के गारे फिरते हैं ॥ जो केतने
रियां होकर उस सनमके द्वारे फिरते हैं ॥ उनके जामें पे कुरबां
ल्बास सारे फिरते हैं ॥

शैर—जहांमें जो कोई तेरे सहारे फिरते हैं ॥ वोःहै आलममें पर
से किनारे फिरते हैं ॥ मौतका खोफ नहीं सर उतारे फिरते हैं॥
से दुरवोः एकी विचारे फिरते हैं ॥ कभी फिरे कावेमें कभी जा
कुर द्वारे फिरते हैं ॥ जिधरको देखूं उधर तेरे रुखसारे ॥ फिरते

हैं ॥ कोइ तसौवरमें तेरे वोः बलख बुखारे फिरते हैं ॥ कोई चाह
आपकी तख्त हजारे फिरते हैं ॥ कोई तो जा जमनापर कोइ गं
किनारे फिरते हैं ॥ मिले तु उनको गरज जो मनको मारे फिरते हैं

शेर—तर्क दुनियाको किये जो विचारे फिरते हैं ॥ मैं जो देख
ओही तेरेदुलारेफिरतेहैं ॥ मिले जो तुस्से जहांसे वोः न्यारे फिरतेहैं
यादमें तेरी वोः प्यारे हमारे फिरते हैं ॥ कोई करते खैरात फिर
कोइ बने पिंडारे फिरते हैं ॥ जिधरको देखूं उधर तेरे रुखसारे फिरते
हैं ॥ तेरे इश्कमें खाकसार हो हम भी बारे फिरते हैं ॥सदा अनलहक
जबाँसे हम ललकारे फिरते हैं ॥ देवीसिंहभी लिबास तनपर खाकका
धारे फिरते हैं ॥ जबांको अपनी नामसे तेरे सुधारे फिरते हैं ॥

शेर—जो तुजको भूले वोः दुनियामें हारे फिरते हैं ॥ कामके
कुछभी नहीं वोः नकारे फिरते हैं ॥ तेरी कुदरतसे तो हम बे सहारे
फिरते हैं ॥ हम अपने दिल हीमें तुझको निहारे फिरते हैं ॥ बनार
सीकी आंखमें हरदम तेरे इशारे फिरते हैं ॥ जिधरको देखूं उधर तेरे
रुखसारे फिरते हैं ॥

लावनी ।

लाखों वजहके रंजो अलम गम सनम वो दिखलायेतो क्या॥नालां
इश्कसे न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ इश्कमें लैलाके मजनूंने
कभी जबांसे आह न की ॥ जिस्मको काटा खुशीसे तिरछी जरा
निगाहनकी ॥ चाह में सीरींके कोहकलने और बातकी चाह नकी ॥
सरसे तेगा लगाया किसीसे कुछ सल्लाह नकी ॥ जो ऐ दिल आशके
जांबाज है वोः इश्क करतेहैं ॥ वोः जांदेते हैं उलफतमें नहीं मरनेसे
डरते हैं ॥ वीसाले यार होता है मसीरे बाद मरनेके इसीसे आशके
सादिकभी जीते जीहि मरते हैं ॥ दर्द इश्कसे मिस्ले जरस फुरक
तमें चिल्लाये तो क्या ॥ नालां इश्कसे न होना जान तलक जाये

तो क्या ॥ और जले खांनेभी इश्कमें बहोत उठाये रंजो मेहन ॥ हुये झांकती चाह यूसुफमे फिरी हरां बन बन ॥ और इश्कमें शाह बलखनें छोडा तख्त शाही वो वतन ॥ फकीर होकर फिरा सहरामें खुदासे लगी लगन ॥

शैर–खुदा उलफतमें मिलताहै जो अय दिल इश्ककामि लहो ॥ मिले क्योंकर नवोः दिलबर ये दिल जिस जिसपे माइ लहो ॥ तवन्ना है विसाले यारमें जो जान खोते हैं ॥ तो क्यों उ ससे न फिर वादीज फना जन्नतमें वासिलहो ॥ दिलारामवो मिले ये दिल तक्लीफ अगर पाये तो क्या ॥ नालां इश्कसे न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ और सुनो यक बात मुझे वोःभी इस- दम है याद पड़ी ॥ इसी इश्कमें उठाइ रांझेने तकलीफ बड़ी ॥ हुई किसीसे तहना आजतक ये मंजिल है बहुत कडी ॥ इसी इश्कमें मियां मंशूरके फांसी गले पडी ॥

शैर–हजारों जानसे मारे गये इस इश्क उलफतमें ॥ रहा कोई मिजाजी भला कोई हकीकतमें ॥ किसीने जिस्मकी अपने उतारी खाल सरतापा ॥ किसीने शौकसे अपना कटाया सर मोहव्बत में ॥ यादमें उस दिलरुबाकी आफत सरपर गर आये तो क्या ॥ नालां इश्कसे न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ फँसा राहावोः हस्र तलक जो दामें इश्कमें हुआ असीर ॥ कभी न छूटा कि जिसका इश्क हुआ फिर दामनगीर ॥ बनारसी कहे अपनी कसम मैं इसी इश्कमें हुवा फकीर ॥ खाकसारहो फिरा सहरामें हमेशां बेतौकीर ॥

शैर–रँगे कपडे जो उल्फतमें तो रंगीनी नजर आई ॥ जो खा- क इसतर मली तनपर तो सब कुछ आबरू पाई ॥ पहनके इश्ककी कफनी किया आबाद सहराको ॥ फिरा चारों तरफ वहसतमें बन-

कर मैं तो सौदाई ॥ उसके इश्कमें सरपर गर आराभी चल जाय
क्या ॥ नालां इश्कसे न होना जान तलक जाये तो क्या

ब्रह्मज्ञान इश्क मार्फत परमेश्वरके दर्शनमें—बहर खडी

सूरत उस माहरूकी हरदम आंखमें अपने बस्तीहै ॥ लाख इ
बादतसे ज्यादा दुनियामें हुस्न परस्ती है ॥ क्याहोताहै वजू कि
और क्या मसजिदमें जानेसे ॥ क्याहोताहै नमाज पढके सरको वह
झुकानेसे ॥ किया न जिसने इश्क जहांमें उठा न हात जमानेसे
जीते जी वो नहीं मिला तो मिलेगा क्या मरजानेसे ॥ अजब मज
पाया है मैंने आंखमें आंख लडानेसे ॥ जिसमें देखा उसीको देख
लगाहै तीर निशानेसे ॥ इसी सबबसे दिलमें मेरे आठ पहर यह
मस्तीहै ॥ लाख इबादतसे ज्यादा दुनियामें हुस्न परस्ती है ॥ १ ॥ गय
अगर कावे को तो क्या वहां खुदा मिल जायेगा ॥ हैरां होकर फिर
उलटा अपने घरको फिर आयेगा ॥ कोई अगर धन लुटा के अपना
बुतखाना बनवायेगा ॥ पासकि दौलत खोकर फिर क्या वहांपै पत्थर
पायेगा ॥ जबतक उस माहरूसे अपनी आंखको नहीं लडायेगा ॥
इस दुनियामें आकर फिर क्या देखेगा दिखलायेगा ॥ यही सुनाहै
जहांमें मैंने जहांतलक यह हस्तीहै ॥ लाख इबादतसे बढकर दुनियामें
हुस्न परस्तीहै ॥ २ ॥ रँगे अगर कपडे और मन नहिं रँगा तो फिर
वो रंग है क्या ॥ छोडके वो माहरू बुतोंका संग कियातो संग क्या
क्या ॥ तनसे नंगा रहा जोदिलमें नंगनहीं तो नंग है क्या ॥ नशाचढा
नहीं इश्कका पीलीभांग तो फिर वो भंग है क्या ॥ दिलमें आईचली
गई तो ऐसी भला तरङ्ग है क्या ॥ तनधोया और मन नहीं धोया
उनः भला फल गंग है क्या ॥ चश्ममेरी रोरोके यही कहती जिस
वक्त बरस्तीहै ॥ लाख इबादतसे बढकर दुनियामें हुस्न परस्ती
है ॥ ३ ॥ कुरानकी आयतें पढो और इश्कका दिलमें जिक्रनहो ॥

फिर तुमको क्या खुदा मिले चाहे अपना शिर धुना करो ॥ पेटके खातिर पण्डितके घर जाकर वेद पुराण पढो ॥ दो अक्षरनहिं पढे प्रेमके मौतसे फिर किसतरह बचो ॥ आग बालके तपो अगर चाहे उलटे होकर लटको ॥ बिना इश्कदीदार न उसका मिले मुफ्त काहेको जलो ॥ बनारसीके इसी सखुन पर आशक सारी बस्ती है ॥ लाख इबादतसे बढकर दुनियामें हुस्न परस्तीहै॥४॥देखलिया आँखोंने नागहां एक दमभर जोबनतेरा ॥ मेरा क्या रहा हुवा खुदबखुद ये सब तन मन तेरा ॥ जिस्मको मैं समझाथा अपना बनाये अब मसकन तेरा ॥ आह क्या करूं लूट गया हुआ ये अब सब धन तेरा ॥ देखतेही वो झलक बना मैं आशके जाने मन तेरा ॥ लगा ये कहने रास्ता सख्तहै बहुत कठन तेरा ॥

शैर–तने उरियांहै तू और कुछ न पैरहन तेरा ॥ लिबास किसपै करे तू कहांहै तन तेरा ॥ जहाँन माहो मेहरहै वहां वतन तेरा ॥ तेरा नहीं जन्म नहीं और नहै मरन तेरा ॥ चला न अपना जोर जो देखा मुझे तो हुआ वदन तेरा ॥ मेरा क्या रहा हुआ खुद बखुद ये अब तन मन तेरा ॥ ज़ुल्फ तेरी नागिन है या है ये जङ्गल मुश्के खुतन तेरा ॥ पेंच है तेरा या है कुछ इसीमें नाजुक पन तेरा ॥ याहैं ये अबरे नैसां या सम्बुलीवोहै गुलशन तेरा ॥ जाल है तेरा फसाहै इसीमें आशके तन तेरा ॥

शैर–तंग गुंचेको करें क्यों न वो दहन तेरा ॥ वर्क तडपे जों ओ देखे कहीं मंजन तेरा ॥ नूर चश्मोंका जो देखें कहीं खंजन तेरा ॥ क्यों न अंजन करे आंखों में निरंजनतेरा ॥ आशके बुलबुल कहते हैं गुलजार है तेरा चमन तेरा ॥ मेरा क्यारहा हुआ खुदबखुद ये अब तन मन तेरा ॥ चले जिस घडी मैदांमें ऐ कातिल तीरो फिगन तेरा ॥ बचे न कोई जो निकले जबांसे हुकुम बिजन तेरा ॥ राहु चाँद

से लडे तो क्या सरकटा है वो दुश्मनतेरा ॥ मेहर मुनौवर रोजो श
फलकपैहै रौशन तेरा ॥

शैर–कत्ल दुश्मनको करे चक्रसुदर्शन तेरा ॥ मौतभी कुछ
करे जिसपै हो अमन तेरा ॥ पताल पाँहैं तेरे और हैसर गगन तेरा
तूतो निर्गुण है और गुण है ये सब सखुन तेरा ॥ मशरिकसे मगरि
तक देखा बस्ती वीरांबन तेरा ॥ मेरा क्या रहा हुआ खुद बखुद
अब तन मन तेरा ॥ कहीं पै मक्का बना तेरा और कहीं पै वृन्दाव
तेरा ॥ कहीं पै काशी कहीं दरिया है गङ्गो जमन तेरा ॥ देवीसिं
कहे दुनियामें है अजब वो चालो चलन तेरा ॥ किसीको मुतल
नहीं मालूम जो कुछ है फन तेरा ॥

शैर–जहांमें है ये जहां तकसे अंजुमन तेरा ॥ जोदेखे इसक
तो बिल्कुल ये है दर्पण तेरा ॥ मेरी आँखों में बना क्याही है रौजन
तेरा ॥ ये वो दूर्वीनहै करती है जो दरशन तेरा ॥ बनारसी कहै कि
सीका कुछ नहीं सब है नन्दनँदन तेरा ॥ मेरा क्या रहा हुआ खु
बखुद थे अब तन मन तेरा ॥

ब्रह्मज्ञान इश्कमार्फत ।

सर है उसीका धड है उसीका सब है उसीका मेरा क्या ॥ तूकहै
मेरा बताये मुझे भला है तेरा क्या ॥ जुल्फ उसीकी नूर उसीका
उसीकी है यह पेशानी॥चीने जबीं हैं उसीकी शान उसीकी लासानी॥
अबरू हैं खमदार तेगपर जैसे बाढ्यो बुरांनी ॥ मिजातीरहैं चश्मखू-
नीमें डोरे तूफानी ॥

शैर–अलिफ अल्लाह की बीनी और रुखसारे येहैं उसके॥तु अपनी
क्यों बताये देख रुखसारे येहै उसके ॥ वही देखे वो दिखलाये औ
नज्यारे ये हैं उसके ॥ तू अपना यार समझा है जिन्हें प्यारे येहैं
उसके ॥ गैर की चीजें बताये अपनी तू अब बना लुटेरा क्या ॥ तू

हे मेरा बता ये मुझे भला है तेरा क्या ॥ लबेलाल याकूत हैं उसके और दंदां गौहर उसके ॥ जबाँ वर्गगुल में देखो हैं क्या क्या जौहर सके॥बात बात में फूल बरसते लिखेहैं वह दफतर उसके ॥ उसीकी रत सब हैं जो बशर हैं वोहैं बशर उसके ॥

शैर—अगर तुम चाहसे देखो तो है चाहे जकन उसकी॥मिलें सब सकी चीजें उसको जिसको हो लगन उसकी ॥ बनी गर्दन सुराही सी और है उसमें फबन उसकी॥अदा अन्दाज कद उसका और है बाँकी रन उसकी ॥ उस्की चीज अपनी कर देखे आंख में हुआ अँधेरा या ॥ तू कहे मेरा बताये मुझे भला है तेरा क्या॥कांधा उस्का बाजू स्के हाथ सब उसके हाथमें हैं ॥ पंजे ये मरजां अँगुलियाँ ये अब सके हाथमें हैं ॥ बनाये नाखूं हिलाल उसने वोः ढब उसके हाथमें ॥ मतकहो अपने अरेये जब तब उसके हाथ में हैं ॥

शैर—वोसीना साफ है उस्का तुझे कुछ है खबर उसकी ॥ शिकम सका मुलायम है और है नाफे भवँर उसकी ॥ कहांदेखी किसीने सी तो वोहहै कमर उसकी ॥ नजर आये जिसे वो दिलको भी रदें नजर उस्की ॥ ये तन उसका बना अरे नादान तेरा यां डेरा या ॥ तू कहे मेरा बता अब मुझे भला है तेरा क्या ॥ तू कहेता जानू मेरे चसीके हैं ये दोनोंथम् ॥ इसी सबबसे जमीं असमांसब सपर रहाहै थम् ॥ उसीकी बनी पिंडलियांओर पाझुठनहींमें करूं म ॥ उसीके तलुवे और एडी को चूमे बाबा आदम ॥

शैर—जिसे कुछ इश्क हो उसका वो समझे मायने इसके॥लिखातो कुरां में यों कहां हैं हाथो पा उसके ॥ सखुन यह मेरा रिंदाना मझमें आये है किसके ॥ नूर उसका ही मैं देखूंहूं चेहरे पर तो जिस

तिसके॥ बनारसी कहे मत कहो अपना तुझे बहेमने घेराक्या
तू कहे मेरा बताये मुझे भलाहै तेरा क्या॥

सिफत खुदाके अबरुवोंकी।

हुआ तअज्जुबरुख पर मैंने किया तेरे अबरूका दीद॥महे च
दहपे पैदा हुआ कहांसे माहे ईद॥ भूल गये हाफिज बिसमिल्ला
देख तेरे अबरुवोकीशान॥ होश न उनको रहा किसतरहसे वो प
सकें कुरान॥ जुलफिकारभी म्यान फेककर गेरतसे बन गई क
मान॥ झुकी इसलिये के जिसमें नजरपडे कुदरते सुभान॥ खुदा
वोः अबरुवोंमें आयेत लिखीजो था मतलब तौहीद॥ महे चार
हपे पैदाहुआ कहांसे माहे ईद॥१॥ कभीतो वो तलवार बने औ
कहीं पे वो जमधरवनजा॥ खाडा विछुआ कहीं वो तेगे अजलसर
परबनजां॥ रोजेहश्र को हिसाब करनेके खातिर दफ्तर वनजां।
मौतभी इनसे डरे जिसवक्त के ये खंजरबनजां॥ तडपके बोले येही
सखुन जो हुये तेरे अबरूके शहीद॥ महेचारदहपे पैदा हुआ कहां
से माहे ईद॥२॥ कांपउठे आसमां अगचैं जरा तेरा अबरू हिल-
जाय॥ करे कयामत उधरको जिधर तेरा कातिल दिलजाय॥ ता-
नके तू जिसवक्त इने क्या जाने किधर जालिम पिलजाय॥ लाखों
विस्मिल तडपते फिरें जो ये गोशा मिलजाय॥ कशीद करके दि-
लमें अपने येही लगा कहने खुरशीद॥महेचार दहपे पैदा हुआ क-
हांसे माहे ईद॥ ३॥ क्यों जायें कावेको भला उस यारके अबरू
छोडके हम॥ अबकाबेसे यहां बैठे हैं भवें सीकोडके हम॥ यारके
रुखपर दोकावेदिल उसीसे अपना जोडकेहम॥ करेंगे सिजदा इने
मुहउस कावेसे मोडके हम॥ पढेये जिसने दोहरुफ वो हुयेतेरे अ-
बरूके मुरीद॥ महेचारदहपे पैदा०॥ ४॥ खुदाने दो खत अबींके

। अपने हाथसे लिखे अजीब ॥ ऊपर उनको बनाया नीचे इसके
लेखा नसीब ॥ पढै अगर सरनामांये तो मौला उसका बने हबीब ॥
कहे देवीसिंह फिर उसका बाल न वांका करे रकीब ॥ बनारसीकहे
सके मायने कहो करो कुछ गुफ्ते शुनीद ॥ महेचार दहपे पैदा
आ कहाँसे माहे ईद ॥ ८ ॥

जुल्फ और आखोंकी तारीफ।

लगा जंग दिलमें होने जिसवक्त आंखसे आंख लडी ॥ मार जु-
फसे तोवो क्या क्या आशक पर मारपडी ॥ इधरतो यह बरछी
ाला ले तीर तुपक तैयार हुई ॥ उधर जुलुफ के सामनेपडे तो
ारामार हुई ॥ बहीं खूनकी नदियां वो जिसवक्त चश्म खूँखार हुई ॥
ल्फ भि उस्के साथ खम ठोक कातिले वारहुई ॥

शैर—चश्मने करके इशारा कमाँ चढाईहै ॥ जुल्फने बल वो
खाया के घटा छाई है ॥ देखली हमने के इसवक्त कजा आई
॥ आँख मैंने जो लडाई तो ये लडाई है ॥ चश्मने घायल किया
ल्फ को देखा तो है बला बडी ॥ मार जुल्फसे तो वो क्या क्या
ाशकपर मार पडी ॥ चश्मने ले तलवार किया यकवार तो कुछ
ला नगया ॥ जुल्फके आगे तो मुँह मुझसे मुतलक खोला न गया ॥
ष्मने खंजरसे ऐसा काटाके फेर डोला न गया ॥ जुल्फ देखकर
हर पीनेको तो घोला न गया ॥

शैर—चश्मने झुकके जो मारा तो मैं वहां ही रहा ॥ जुल्फके
र्द जो घूमा तो परेशांही रहा ॥ निशांने चश्मसे मेरा न कुछ नशां
रहा ॥ जुल्फने ऐसा मरोडाकि नातवांही रहा ॥ चश्मके जो आया
रूबरू वहीं सांग सीनेंमे गडी ॥ मार जुल्फसे तो वो क्या क्या
ाशक पर मार पडी ॥ चश्मने वो दिखलाके बाँकपन् मारा और

फिरलालहुई ॥ जुल्फ यार की तो वो मेरे जीका जञ्जाल हुई। चश्म तो गोली भर औ रञ्जक जमाके गोया दुनाल हुई ॥ जीन मुझको पडा मुश्किल के जुल्फ वोवाल हुई ॥

शैर–चश्मने दूरसे देखा तो लगाई वो नजर ॥ जुल्फने पेंचअ माराके रही कुछ न खबर ॥ चश्मने मुझपै किया क्या हीवो जा वो शेहर ॥ जुल्फ ने ऐसा डसा दिल पै है काले की लहर ॥ लडी आंख जिसवक्त यारसे क्याजाने थी कौन घडी ॥ मार जुल्फ से तो वो क्या क्या आशक परमार पडी ॥ खूब हुआजो इन्होंने मारा दुनि या में तो नाम हुआ॥विना इश्कके जहांमें कहा कोई सरनाम हुआ। देवीसिंह कहे बनारसी तू आशके सादिक आम हुआ ॥ मरा कह तू अमर दुनियामें तेरा कलाम हुआ ॥

शैर–जुल्फ बखुल्हैल और चश्म हैं यह नूरे खुदा ॥ मुआ जो इस्से वो हरगिज न हुआ उस्से जुदा ॥ किया मेरा तो ये दोनों ने दो जहाँमें भला ॥ बलासे मरगया छुटी तोये दुनिया की बला ॥ डरे नहीं मुतलक खिलकत सुनती है ये मेरे गिर्दखडा ॥ मारजुल्फसे तो वोह क्याक्या आशक परमार पडी ॥

परमेश्वरसे मिलने की मस्ती–बहर लंगडी।

मिला हमें गुलजार वो गुलरू अब गुलखाना नहिं चहिये॥मैं वहे-दत में मस्त मैंहूं मै खाना नहिं चहिये॥दिलको रौशन किया तो फिर तन वदन जलाना नहिं चहिये ॥ आहकि आतश बले वहां आग लगाना नहिं चहिये ॥ बहेरइश्कमें बहे उसे दरियामें बहाना नहिं चहिये ॥ डूबा चाहमें उसे फिर कुयें झकाना नहिं चहिये ॥ इश्कका सौदा हुआ हमें होना दीवाना नहिं चहिये ॥ मैं वहदत में मस्तमें हूं मै खाना नहिं चहिये ॥

जो घायलहै इश्कके उनपर तेग चलाना नहिं चहिये ॥ सरसे
रे हैं जो आशक उन्हें सताना नहिं चहिये ॥ जिसजा तबियत
डी वहांसे दिलक हटाना नहिं चहिये ॥ बढाके उल्फत यारसे
यार घटाना नहिं चहिये ॥ चढी इश्ककी लहर हमें अब जहर
पेलाना नहिं चहिये ॥

मैं वहदत में मस्तमैं हूं मै खाना नहिं चहिये ॥

अपनी जानमें जानको पाया और जमाना नहिं चहिये ॥ अलग
हुये हम हमें अपना और वेगाना नहिं चहिये ॥ दिलमें दैरो हरम
नाया अबबुतखाना नहिं चहिये ॥ लामकानको छोड जन्नतमें जाना
हिं चहिये ॥ पीवो मुहब्बत की मै मैंने और पैमाना नहिं चहिये ॥

मैं वहदतमें मस्तमैं हूं मै खाना नहिं चहिये ॥

हरेक मकां हैंगे आशकोंके एक ठिकाना नहिं चहिये ॥ अजा
हैं जो उन्हें फिरजादमें आना नहिं चहिये ॥ इश्कका बाना पहिन
कलँगी तुर्रेका बना नहिं चहिये॥ पाक इश्कको करो नापाक का
ाना नहिं चहिये ॥ देवीसिंहकहे सखुन पर कमती सखुन बनाना
हिं चहिये ॥

मैं वहदतमें मस्त मैंहूं मै खाना नहिं चहिये ॥

फिदाहुआ दिल मेरा जिसदिनसे तुझको दिलबर देखा ॥ कहीं
देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥ तेरे हुस्नके सानी हमने
ौर नहीं सुन्दर देखा ॥ आफताबसे तुझे महताबसेभी बेहतर
खा ॥ तेरी चमक औ दमकके आगे और न जलवेगर देखा ॥ मैंने
ारे तुझे अपनी नजरोंमें भर देखा ॥ जैसा देखा तुझको वैसा
हीं परी पैकर देखा ॥

कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥

बयां क्या करूं यार तेरे दंदाका वो जौहर देखा ॥ लाल न

देखा नहीं ऐसा कोई गौहर देखा ॥ गजब हैं तेरे नैन न ऐसी तेग नहीं जमधर देखा ॥ खांडा बिछुआ नहीं हमने ऐसा खंजर देखा ॥ हुआ बहुत हैरान शहेर सहेरा तुझको दरदरदेखा ॥

कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥

आशक होकर तुझपर अपने इश्कको हमने करदेखा ॥ जो कुछ हैसो तुही तुझको अपना अपसर देखा ॥ जैसी खुशबू तुझमें वैसा नहीं मुश्क केसर देखा ॥ दिमाग अपना तेरी खुशबूसे मवत्तर देखा ॥ तेरे इश्कमें प्यारे मैंने गली गली घर घर देखा ॥

कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥

देवीसिंह यों कहेके जिसने तुझे एक पलभर देखा ॥ मस्त रहा वो इश्कका जोर शोर खुशतर देखा ॥ बनारसीने तेरे इश्कमें खाकका वो बिस्तर देखा ॥ शाल दुशाले छोड मृगछाला वाघम्बर देखा ॥ कई दफे देखा था तुझे अब मैंने तुझको फिर देखा ॥ कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥

सनमके पान खानेकी तारीफ–बहर लंगडी।

पान कि लालीसे जो मेरे वह दिलबरके लबलालहुये ॥ लाले बदकशांसेभी बेहतर पैदा अब लाल हुये ॥ काकुलसे काले हुये पैदा जुल्फसे अफई मार हुये ॥ पेशानीसे नूर टपका तो फरिश्ते चार हुये ॥ अबरूसे खम् खाखाके खंजर बिछुवे खमदार हुये ॥ और मिजगांसे तीरे पैकां नशतर पुरकार हुये ॥

शैर–चश्मसे पैदा हुवा नरगिस हरेक गुलजार में ॥ औ वो बीनासे अलिफ खींचा गया हरकारमें ॥ है वह जलवा कुदरती दोनो तेरे रुखसारमें ॥ जिस्से रौशन चांद औ सूरज हैं इस संसारमें ॥ पानकी रंगत पाकर दंदां गौहरसे जब लाल हुये ॥

लाले बदकशांसे भी बेहतर० ॥

जबांसे पैदा कुरां हुआ और अक्ल से इल्म हजार हुये ॥ चाहे
कन् से चाह के दिलमें खुद बखुद गार हुये ॥ गलेसे बनी सुराही
लसब तेरे गलेके हार हुये ॥ हुस्नसे तेरे परी पैकर बनकर
य्यार हुये ॥

शेर—तेरे सीने की सफाई से सफाई होगई ॥ ताकते बाजूसे अब
ाकत् सवाई होगई ॥ हाथसे तेरे सखावत् की सखाई होगई ॥ पंज
मरजां से लग लाले हिनाई होगई ॥ देखके रंगी नाखूनोंको शर-
न्दा तब लाल हुये ॥

लाले बदकशांसे भी बेहतर० ॥

शिकम् से नर्मी बनी कमरसे पोशीदा सब हाल हुये॥और जानू-
तेरे दो नूरके थम्भ कमाल हुये ॥ कदम् से सिजदा बना औ पा-
ने को सात पताल हुये॥चालसे तेरी बन गये फील न वो बेचाल हुये॥

शेर—कदसे तेरे अब तलक सर्वेचमन आबाद है॥और अदा तेरी
आशक का सदा दिलशाद है ॥ नाजसे तेरे बनी अन्दाज की
याद है ॥ हर सरापेसे सरापा तेराही ईजाद है ॥ जो पत्थर तलवों
तेरेलग गये वहतो सब लाल हुये ॥

लाले बदकशांसे भी बेहतर० ॥

ठोकरसे तुझ जानाकी लाखों मुर्दे उठ खडे हुये ॥ आपके पाये
वश हैं मेरे दिल पर पडे हुये ॥ तेरी चञ्चलाहटसे सदमे बर्कके
लपर वडे हुये ॥ कदमबोसी में तेरी हम दिलो जान्से लडे हुये ॥

शेर—हक्कानीका कहना कुछ नहीं आसान है ॥ यह सखुन
ाझे वही जो आशके मस्तान है ॥ देवीसिंह की शायरी पर जी
जां कुर्बान् है ॥ जिस्के हर नुकते के ऊपर हर शख्स का ध्यान
॥ बनारसी के खूने अश्क सब टपक के यारबेलाल हुये ॥

लाले बदकशांसे भी बेहतर० ॥

आपेको भूल जाय परमेश्वरको याद रक्खै–बहर लंगडी ।

भूल गये हम अपनेको भूले तेरी तसवीर नहीं ॥ तीर इश्कक लगा वोह तीरके कोई तीर नहीं ॥ तेरे इश्कमें हुआ गदा मुझस तो कोई फकीर नहीं ॥ वोः रुतबा है गदाके सानी शाह वजीर न हीं ॥ क्या कुसूर है मेरा जो मैं तेरा दामन गीर नहीं ॥ ऐसी प्या करी हमने तेरी तकसीर नहीं ॥ सरको झुकाया मैंने क्यों मारि तूने समशीर नहीं ॥

तीर इश्कका लगावोः तीर० ॥

तेरे हुस्नके रुतवे को कुछ पाती लैला हीर नहीं ॥ गजब हैं ते बोल ऐसी तो शक्कर शीर नहीं ॥ है तो प्याला जहर इश्कका य कुछ मीठी खीर नहीं ॥ पिये जो इसको रहै फिर उसका दिल दिलगी नहीं ॥ पडे इश्कके जख्म मेरे दिलसे जाती यः पीर नहीं ॥

तीर इश्कका लगावोः तीर० ॥

जो आशक होगया तेरा वो कभी हुआ गमगीर नहीं ॥ इश्क न जिसने किया वो पहुँचा तेरे तीर नहीं ॥ तेरे दरकीमिले खाक मुझको चाहिये अकसीर नहीं ॥ अबतो प्यारे तेरे बिन दिलको होता धीर नहीं ॥ हाथ मलैं जर्राह करसकैं कुछ मेरी तदवीर नहीं ॥

तीर इश्कका लगा वोः तीर० ॥

सौदाई होगया जहांमें कहीं रही तौकीर नहीं ॥ कहे देवीसिंह तेरे आगे तो मैं फकीर नहीं ॥ कहीं पर वोढे शाल दुशाले कहीं व-दन पर चीर नहीं ॥ बनारसी यों कहे तुझको पायेंवे पीर नहीं ॥ तुही एक है अमीर प्यारे तुझसा कोई मीर नहीं ॥

तीर इश्कका लगावोः तीर० ॥

खुदाकी ज़ुलफ और रुख दोनोंकी तारीफ-बहर लंगडी।

काकुल पुर खम आरिज रौशन दोनोंको क्यायार लिखूं॥ मार ज़ुल्फको औ रुखको हरदम शोले मार लिखूं॥ निसबत् है ये जा गरचे मूजी पुरे शरार लिखूं॥ दाम हुमाकाम जुल्फका रु-को हुमा इजहार लिखूं॥ अच्छी नहीं है ये भी तशभी क्या ता-र परदार लिखूं॥ सम्बुले तर मैं जुलफको वरगे समन रुखसार लिखूं॥ ये सबजे हैं जमींके इन को हो के क्यों लाचार लिखूं॥

मार ज़ुल्फको० ॥

काकुलको मैं कालीघटा औ रुखको बर्कआसार लिखूं॥ घ-के निस्बत न इनसे दूं नबर्क वेकार लिखूं॥ उसको तो जुलमा-लिखूं और हैवां उसे हरबार लिखूं॥ वो तोर पुरखम् नहीं औरवां येंजिनहार लिखूं॥ काकुलको मैं लैल लिखूं॥ आरिजके तई हार लिखूं॥

र ज़ुल्फको० ॥

गरदिशमें लैलो निहार है कहां तलक दिलदार लिखूं॥ उसको हां औ उसको सुनिये लाले जार लिखूं॥ तशभी सब उस्से हैरां दाग हैंवो क्या खार लिखूं॥ रुखको कुरआंविरहमन काकुलको ार लिखूं॥ इसमें झगडा हिंदू मुसलमां हैगा क्या इसरार लिखूं॥

मार ज़ुल्फको० ॥

रुखको हरदम शमये रौशन काकुलको धुंआंधार लिखूं॥ ये ो गलत् है और तशभी इसकी यकवार लिखूं॥ उसको मौजे व र लिखूं उसे आईना बेदार लिखूं॥ मौज न यकजा आईना हैरां क्या शार लिखूं॥

ज़ुल्फ सुवैदा बनारसी रुख नूरे हक गुलजार लिखूं ॥ मा
ज़ुल्फको० ॥ १४ ॥

सनमके ज़ुल्फ की तारीफ-बहर लंगडी।

नाजो अदासे चला नाजनीं दो ज़ुल्फें लटका लटका ॥ लटक
आलम दिखाया जब उसने लटका लटका ॥ देख तमाशा उ
ज़ुलफोंका फँसा दाममें कुल आलम् ॥ पेंचमें उसके पडा है यार
येबिल्कुल आलम् ॥ ऐसा बांधा खैंच ज़ुल्फ में मचारहा है गुल
आलम् ॥ उसके फन्दसे कहो अब क्योंकर जाये खुल आलम् ॥
नशेमें है शरशार पीके गेसुये जहरका मुल आलम् ॥ हुआ दिवान
देखकर उसकी वो काकुल आलम् ॥ फेरमें ज़ुल्फों के फिरता है
कुल जहान भटका भटका ॥ लटका आलम दिखाया जब उसने० ॥

गदा अम्बिआ शाह औलिया और जो ज़ुल्फ देखे गरदूं॥महकसे
उसकी होवें सब मस्त और आये दिलमें ज़ुनूं ॥ ज़ुल्फ मो अम्बरी
देखके आलम् आशक होगया गूनागूं ॥ लाम कहूं मैं या इनको
लामकानका अलिफ लिखूं ॥ जिसदम् उसने बालमरोडे लाखों
अफई का हुआखूं ॥ सबके जहर को निचोडा क्या ताकत कोई
कोईचूं ॥ कालेने सरको पटका जिस दम उसने लटको झटका ॥
लटका आलम दिखाया जब उसने० ॥

हिला हिलाके ज़ुलफ दुता कितनोंके तईं हलाल किया ॥ मार
मारके मार सदहा को हाल बेहाल किया ॥ मशरकसे मगरिबतक
उसने अजब ज़ुलफका जालकिया ॥ उसके बीचमें डालकर कितनों
को पैमाल किया ॥ जिस दम उसने ज़ुलफ बनाके टेढा बाँका बाल
किया ॥ कालभी उसको देखकर डरा औ अपना काल किया ॥
फटकारा जब ज़ुलफको उसने कोई सामने नहिं फटका ॥ लटका
आलम दिखाया जब उसने० ॥

दोनों रुखसारोंके ऊपर लट लटकी घुंघर वाली ॥ गोया माहके गिर्द घिर आई घटा कालीकाली ॥ छिटकाके जब जुल्फ सनमने इधर उधर रुखपर डाली ॥ बयां क्या करूं बनाई अजब वो कुदरत की जाली ॥ देवीसिंहके छन्द रङ्गीले और सदा भोली भाली ॥ सुनेसे जिसके हुई हरएक शायरको खुशियाली ॥ मतलब है तौहीद जुल्फमें और मारफतका खटका ॥ लटका आलम दिखाया जब उसने ० ॥

दरख्त जवाहिरातका मतलब तौहीद–बहर खड़ी।

तुख्म लाल याकूत कि टहनी बर्ग जमुर्रद मोती गुल ॥ फल लटके मणियोंके जिसमें जो देखे लेले बिलकुल ॥ शबनम है इल्मास के उसके बर्ग बर्ग पर पडी हुई ॥ हरेक शाख कुन्दन और नीलमसे हैं उसकी जडीहुई ॥ जिसके हाथ में उस दरख्तकी एकभी यारव छडीहुई ॥ साथ बादशाहतसेभी वो कीमत उसकी वडी हुई ॥ उस दरख्तके मेवेसे हरदम टपके तौहीद कि मुल ॥

फल लटके मणियोंके जिसमें ० ॥

बनी मुरस्से की जमीन और फौवारे बिल्लूरकेहैं ॥ उसदरख्तके ऊपर बैठे हरेक जानवर नूरकेहैं ॥ फुनगी है पारसकी उसमें रखवाले सब हूरके हैं ॥ वो दरख्त नजदीक है उसके खरादार जब दूरके हैं ॥ सौदा उनसे बने वहां पर करे नजो कोई शोरोगुल ॥

फल लटके मणियोंके जिसमें ० ॥

उस दरख्तको हमने तो आबे हयातसे सींचा है ॥ वडी मशक्कत करी है अपनी करामातसे सींचा है ॥ किसीसे कुछ नहिं काम लिया अपनिही जातसे सींचा है ॥ क्या कोइ जानेगा इसकोके

कान घातसे सींचा है ॥ हुआ वो जब तैयार तो शैदा बना मेरा ये दिल बुलबुल ॥

फल लटके मणियोंके जिसमें ० ॥

उस दरख्तकी सायामें हम टांग पसारे सोते हैं ॥ अगरचेजायें कहीं तो फिर हम उसी तुख्मको बोते हैं ॥ जहां पर अपना दिल चाहे वैसेही शजर सब होते हैं ॥ बनारसी ये कहेके उसपर कुरान पढते तोते हैं ॥ उस दरख्तकी हवा लगे तो जिगरकी आंखें जायें खुल ॥

फल लटके मणियोंके जिसमें० ॥

हाल फकीरीका सच्चा–बहर डेवढी, राग सोरठ।

फकीरी खुदाको प्यारी है ॥ अमीरी कौन बिचारी है ॥ बदनपर खाक़ है सो अकसीर ॥ फकीरोंकी है यही जागीर ॥ हाथ बांधे खडे रहें अमीर ॥ पादसाहो या होय वजीर ॥ सदा ये सच्च हमारी है ॥ गदाकी खुदासे यारी है ॥

फकीरी खुदाको प्यारी है ० ॥

है इनका नाम सुनो दुरवेश ॥ कोई नहिं पाये इनसे पेश ॥ खुदासे मिले ये रहें हमेश ॥ कोई नहिं जाने इनका भेश ॥ कभी गिरीया ओ जारी है ॥ कभी चश्मोंमें खुमारी है ॥

फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥

है इनका रुतबा बहुत बलन्द ॥ खुदाके तईं य हुआ पसन्द ॥ पादशासे भी ये बने दुचन्द ॥ इन्हे मत बुरा कहो हरचन्द ॥ इनकी दिलपर असवारी है ॥ ऐसी नहिं कहीं तयारी है ॥

फकीरी खुदाको प्यारी है ० ॥

चीथडे शालसे हैं आला ॥ चश्म हरतालसे हैं आला ॥ चनेभी

ालसे हैं आला ॥ चलन हरचाल से है आला ॥ जख्म जो जिगर पर
ारी है ॥ वही दिलपर गुलजारी है ॥
फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥
पांवमें पडा जो है छाला ॥ वोः भी मोतियोंसे है आला ॥ हाथमें
ूटासा प्याला ॥ जामें जमशेदसे भी बाला ॥ अगर कोई हफ्त
जारी है ॥ वोः भी इनकाही भिकारी है ॥
मकां लामकां फकीरोंका ॥ निशा वे निशां फकीरोंका ॥ फख्रह
हां फकीरोंका ॥ खुदा है इमा फकीरोंका ॥ ताकते सब्र वोः भारी
॥ मौत तक जिनसे हारी है ॥
फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥
बढ गये बाल तो क्या परवा ॥ उतर गई खाल तो क्या परवा ॥
ागया माल तो क्या परवा ॥ हुये कङ्गाल तो क्या परवा ॥ खुदा
जनावे बारी है ॥ काशीगिरिको यादगारी है ॥
फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥

तीनों अवस्थाका हाल अव्वल दोयम सोयम-बहर लंगडी ।

वहशतने लाखों बातें बेहूदा बकवाई मुझको ॥ माशूको में वहा
ाच नजर पडा सांई मुझको ॥ औवल तो मैं उसके गममें जार जार
ाया यकबार ॥ अश्ककी खडियां देख कर शरमाय गौहरका हार ॥
तावीने किया मुझे बेचैन करी मैं बहुत पुकार ॥ याहकताला देखिये
ास दिन यह टूटेगा तार ॥ आंखें भर भरके कहती ये दांई और बांई
ुझको ॥ माशूकोंमें वही० ॥
दोयम मुझको हुआ इश्क दिलमें शोचा मैं आशकहूं ॥ अजब
मेरा वही माशूक बनाजो गूंनायूं ॥ हरयकसे पूछा मैंने जो इ-

इश्कमें थे आशक वेचूं ॥ कोई न बाकीरहा अबक्या लैला और क्या मजनूं ॥ जो आशक थे पाक उन्होंने बातें सुनवाईं मुझको ॥ माशूकोंमें वही० ॥

सेयुम हमने अपने दिलको समझाया करके हुशियार ॥ तू क्यों गाफिल हुआ चल देख तेरा वह कहां है यार ॥ दिल ने मुझसे कहा मुझे क्या देर है तू हो जल्द तयार ॥ मेरा तेरा सङ्ग है चलो देखिये वोः गुलजार ॥ देख पडी उसजा पर यार अपनेकी परछाईं मुझको ॥ माशूकोंमें वही० ॥

आखिरको गफलतका परदा खुला मिला अपना महबूब ॥ कहे देवीसिंह मेरा वोः खूबा है खूबोंमें खूब ॥ बनारसी ये कहे इश्कके दरियाम गये लाखों डूब ॥ मैंने उसमें तैरकर पाया वह अपना असलूब ॥ होकरके लाचार छोड गई गफलतकी झांईं मुझको॥ माशूकोंमें वही० ॥

शतरंज इश्ककी–बहर खडी ।

वाजी खेली इश्ककी हमने जरा किया शशपञ्ज नहीं ॥ खेलले हर कोई जिसको यह वोः वाजी शतरञ्ज नहीं ॥ अक्कश्का तो कुछ जोर नहीं जो घोडोंसे चलकर जीते ॥ फीलकी क्या ताकत है जो इस बाजीको वलकर जीते ॥ यह तो इश्कका दल है इसको क्या पैदल दलकर जीते ॥ रुखका रुख फिर जाय न वह इस बाजीको छलकर जीते ॥ मेरे सिवा कोई और जहांमें उठासके यह रञ्जनहीं ॥ खेल ले हर कोई० ॥

वजीरका क्या बकर इश्कमें पाहशाह तक हुये गदा ॥ जो के चाल चूका वह मारा गया मेरी है यही सदा ॥ हमने अपने सरकी बाजी लगाके इसमें दांव बदा ॥ जान बेचकर जो खेला वह जीता

सको मिला खुदा ॥ वो क्या करेगा मात के जिसके काबूमें हैं पञ्ज
हीं ॥ खेलले हर कोई० ॥

अरदबमें नहिं आया वादशाहकी अपने ली चोट बचा ॥ उसीने
ंडा किला जहांमें कोई न उस्से कोट बचा ॥ तिरछे होकर च-
ोगे तो क्यों करके सकोगे गोटबचा ॥ उसका माल लुट गया
ली थी जिसने जरकी पोटबचा ॥ मुझे किस्त नहिं लगीके मैंने जमा
ल्या कोई गञ्जनहीं ॥ खेलले हर कोई० ॥

ये शतरञ्ज इश्ककी इसको खेले वही सयाना है ॥ बडे बडे हो-
यें जिच्च नहिं भेद किसीने जाना है ॥ ये है इश्कका ख्याल सदा
ाशकोंके मनमें माना है ॥ बनारसी जीतेजी अबतो निर्गुण वीच
माना है ॥ रामकृष्णके शीरीं सकुनको पाये शीर बिरञ्ज नहीं ॥
लले हर कोई जिसको यह वोः बाजी शतरंज नहीं ॥

़फत खुदाके चेहेरेकी जिस्मे कुलकुरान—बहर खडी।

कुरानकी आयतें हम उसके रुख नायाबसे लिखते हैं ॥ लाज-
ब उसको हम अपने इस जवाबसे लिखते हैं ॥ अलिफको हम-
ीं लिखेंगे वोनी उस गुलरूकी लिखते हैं ॥ बिसमिल्लाको छोड
फत उसके अबरूकी लिखते हैं ॥ लामसे कुछ नहिं काम झलक
सके गेसूकी लिखते हैं ॥ ऐनको करके अलग आंख हम उस
हूकी लिखते हैं ॥ तेको तर्ककर चीने जबीं दिलकी किताबसे
खते हैं ॥ लाजबाव उसको० ॥

नुक्तोंको कर अलग हम उसके रुखे खालको लिखते हैं ॥ हरेक
म स बेहतर उसके हरएक बालको लिखते हैं ॥ कोई लिखेंसे जीम्
खे कोई दाल जालको लिखते हैं ॥ हम इनको गये भूल सिर्फ
के जमालको लिखते हैं ॥ अरबी फारसी हिन्दी तुरकी सब
ताबसे लिखते हैं ॥ लाजवाब उसको० ॥

कुल कलामुल्लाः हम उसके सारे खतको लिखते हैं ॥ ओर म
यने कुरानके उसकी उलफतको लिखते हैं ॥ जेर जबरसे जबरदस्त
उसकी ताकतको लिखते हैं ॥ पेशसे बेहतर पेशानी उसकी किस
मतको लिखते हैं ॥ रुखे रौशन आला हम उसका महताबसे लिखते
हैं ॥ लाजबाव उसको० ॥

कलमेसे बढकर अपने दिलवरकी बातको लिखते हैं ॥ मुसल
मान हिन्दुओंसे आला उसकी जातको लिखते हैं ॥ वो हैंगे नादार
जो उसकी तायदातको लिखते हैं ॥ देवीसिंह दिलपर उसकी हर
करामात्को लिखते हैं ॥ बनारसी तो हिसाब उसका बे हिसाबसे
लिखते हैं ॥ लाजबाव उसको० ॥

जीव ब्रह्मकी एकतायी–बहर खडी ।

हमदमहम्मे हम् हम् दम्मे दम्मे जलवा आलमका ॥ आलम्में
है सनम् सनम्में आलम है उस जालमका ॥ दिलमें दिलबर दिल
बरमें दिल दिलमें उसकी यादरहे ॥ यादमें अशरत अशरतमें मै मै
में नशा इजाद रहे ॥ नशेमें मस्ती मस्तीमें वहदत वहदतमें दिल-
शाद रहे ॥ शादमें शोर औ शोरमें शोहरत शोहरतमें आबादरहे ॥
आबादीमें आदम् आदम्में दम् दम्में दम्दमका॥आलम्में है सनम्०

आशकमें है इश्क इश्कमें नूर नूर में हकताला ॥ हकतालामें
रहम् रहम्में करम् करममें उजियाला ॥ उजिआलेमें ताब ताबमें
माह माहमें है हाला ॥ हालेमें अख्तर अखतरमें चमक चमकमें
छब आला ॥ आलामें वोः खूब खूबमें रूप रूपमें रंग चमका ॥
आलम्में है सनम्० ॥

शोकमें उसके जौक जौकमें रूह रूहमें रूहानी ॥ रूहानीमें
उन्स उन्समें प्यार प्यारमें जिन्दगानी ॥ जिन्दगानीमें जान जानमें
जाना जानामें जानी ॥ जानीमें वोः हुस्न हुस्नमें जेब जेबमें लासानी ॥

शासानीमें सिफत सिफतमें लामकानघरहाकम् का॥ आलम्में है स०
चाहमें मन औ मनमें चरचा चरचेमें उसकी कुदरत॥ कुदर-
में है बाग बागमें चमन चमनमें गुलखिलकत्॥ खिलकतमें
खुशबू खुशबूमें खिला खिलेमें है रंगत॥ रंगतमें रस रसमें
अमृत अमृतमें पाई लज्जत॥ लज्जतमें तौहीद देवीसिंह कहे ख्याल-
नहमदमका॥ आलममें है सनम ०॥

ख्याल खुदा हममें और हम खुदामें—बहर लंगडी।

दिलमें दिलबर दिलबरमें दिल सनममें हम और हम में सनम्॥
महमदममें मेरा इस दममें है मेरा हमदम॥ जान मेरी जानामें है
ः जाना मेरी जानमें है॥ प्राण हैं उसमें मेरे वोः प्यारा मेरे प्राणमें
॥ तनो बदन सब उसमें हैं वोः इस तनके दरम्यानमें है॥ हरेक
ान है यारमें यार मेरा हर आनमें है॥ मैं उसमें हूं रमा वोः मेरे रूम
ममें रहा है रम दम हम दममें ०॥
गुल गुलशन सब उसमें है वोः गुलहर गुलगुलशनमें है॥ फबन
ऐसी फबी उसमेंके वोः हरफबनमें है॥ गुन्चेदहन सब उसीमें
वोः हरयक गुन्चेदहनमें है॥ चमन हुस्नका है उसमे औ वोः हु-
के चमनमें है॥ मेरे मनमें बसा है वोः उसके मनमें बस रहे हैं
॥ दम हम दममें ०॥
कुल जहान रौशन उस्में वोःरौशन आलम कुलमें है॥ भरी
हब्बतकी मुल उस्में और वोः उस मुलमें है॥ काकुल लटकी
लमें मेरे ये दिल उसकी काकुलमें है॥ आशके बुलबुल हैं उस
ल्में वोः गुलबुलबुलमें है॥ कुल आलममें नूर उसीका उस्के नूरमें
ल आलम॥ दम हम दममें० ॥
नूरमें उस्की पेशानी नूर उसकी पेशानीमें है॥ जिगरमें जानी
ा ये जिगर मेरा जानीमें है॥ जिन्दगानी उस्में मेरी वोः मेरी

जिन्दगानीमें है ॥ नूरानी हैं सब उसमें वोः हर नूरानी में है ॥ बन
रसी कहे इस्में फर्कनहिं मुझको अपने सरकी कसम ॥ दम हम दममें

खुदाकी तस्वीर अपनी दिल आईने में खींचना- बहर खडी।

करे अगर मन मुसौवरीतो यारकी अब तस्वीर को खैंच ॥ सान
उसकी तू बन्जा दिलदारकी अब तस्वीर को खैंच ॥ जैसे आब
हबाब बनजाय पानीकी तस्वीरको खैंच ॥ फिर पानी पानी कर
उस जानीकी तस्वीरको खैंच ॥ नूर वोही बनता है जोले नूरानीक
तसवीरको खैंच ॥ हक भी लेता हैं आशके हक्कानीकी तसवीरक
खैंच ॥ बागबागहो दिल तेरा गुलजारकी अब तसवीरको खैंच
सानी उसकी तू बन जा ० ॥

शमयसे हुईशमय रौशन जब उस लौकी तसवीरको खैंच ॥ तू
भी रौशन खुदासे हो अब उस लौकी तसवीरको खैंच ॥ फिरपायेग
ओ नादां कब उस लौकी तस्वीरको खैंच ॥ इस जामें से खिचेग
जब तब उसलौकी तसवीरको खैंच ॥ शोलय नारहुआ रौशन उ
नारकी अब तस्वीर को खैंच ॥ सानी उसकी तू बनजा ० ॥

बनी मूर्तेंगिलकी गुल हुई उस गिलकी तसवीरको खैंच ॥टटींत
मिट्टी होगई गिलके दिलकी तसवीरको खैंच ॥ पत्थर शिल होजा
जो लेवे उस शिलकी तसवीरको खैंच ॥ कत्ल होके मिलजा उस
उस कातिलकी तसवीरको खैंच ॥ देखलेतू इसपारसे अय उसपारक
अब तसवीरको खैंच ॥ सानी उसकी तू बनजा० ॥

कर दिलको आइना औ इसमेंले उसकी तसवीरको खैंच ॥ बत
ओ इसके सिवाय किसमें ले उसकी तसवीरको खैंच ॥ जिस्मसे म
रख काम तू जिसमले उसकी तसवीरको खैंच ॥ बनारसी अ

जिस तिसमें ले उसकी तसबीरको खैंच ॥ फारगे गमहोजा ऐदिल फफारकी अब तसबीरको खैंच ॥ सानी उसकी तू बनजा० ॥

नसीहत बंदेको समझानेकी-बहर छोटी।

तू जिस्म जिगर औ जान नहीं जानाना ॥ फिर क्यों नाहिं कहता खुदा जो हैं तू दाना ॥ किसने तुझको बांधा है बना जो बंदा ॥ और कौन पेंचका पडा है तुझपर फंदा ॥ तू अपने आपको देख नहो मतमंदा ॥ है कौनसी वोः बदबू जो हुआ तू गंदा ॥ गर तूने अपने ई जिस्म नहिं जाना ॥ फिर क्यों नाहिं कहता खुदा० ॥

ये हाथ पांव औ सर भी नहिं कुछ तू है ॥ सीना औ बाजूपर भी नहीं कुछ तूहै ॥ जनखा औरत औ नर भी नहीं कुछ तूहै ॥ जिन्न देव परी पैकरभी नहीं कुछ तूहै ॥ तू अपने बीचमें आपी आप समाना ॥ फिर क्यों नहिं कहता खुदा० ॥

रोना औ तडपना आह नहीं कुछ तूहै ॥ मुंह जबां चश्म वल्लाह नहीं कुछ तूहै ॥ काबा किबला दर्गाह नहीं कुछ तूहै ॥ औ हरामकी भी राह नहीं कुछ तूहै ॥ मसजिद भि नहीं तू बना नहैबुतखाना ॥ फिर क्यों नाहिं कहता खुदा० ॥

तकदीर और पेशानी भी तु नहीं है ॥ आतिश औ हवा गिल पानी भी तू नहीं है ॥ अरवाह और गिलमानी भी तू नहीं है ॥ इस जिस्म की जरा निशानी भी तु नहीं है ॥ ये बनारसी का समझ सुखुन मसताना ॥ फिर क्यों नहिं कहता खुदा० ॥

ख्याल होलीका इश्क मार्फत-बहर छोटी।

आतेही इश्कने यहां मचादी होली ॥ वोः आतिश और तन नफस जलादी होली ॥ चश्मोंसे बरसने लगा खूने रङ्ग पानी ॥ और इश्क भी करने लगा वोः ऐंचातानी ॥ मैं हँसूतो गालीदे मुझे दिल-

जानी ॥ ओ लोग बजावें ताली सुनो कहानी ॥ नहिं देखी थी सो मुझे दिखादी होली ॥ वोः आतिश औ तन फूस जलादी होली ॥

गमके गुलालने ऐसी धूल उडाई ॥ अब सिवा खुदाके कुछ नहिं देय दिखाई ॥ तन बदनमें जीते ही जी आग लगाई ॥ जो होनी थी सो होली मेरे भाई ॥ शाबाश इश्कने खूब लगादी होली ॥ वो आतिश औ तन फूस० ॥

जिसवक्त वोः आया दिलमें इश्क रँगीला ॥ थाचेहरे का रँगलाल सो पड गया पीला ॥ औ जामा जोथा खिचा वो होगयाढीला ॥ तिसपर भी दोस्तोंने कर दिया येः गीला ॥ हजरते इश्कने मुझे खिलादी होली ॥ वो आतिश औ तन फूस० ॥

दिल तडप तडपके अपना नाच दिखाये ॥ वोः इश्क न अपने कुछ खातिरमें लाये ॥ दिल आह आह कर शोर औ धूम मचाये ॥ पर इश्क न इसकी मुतलक सुने सुनाये ॥ लो सुनो दोस्तो तुम्हें सुनादी होली ॥ वोः आतिश औ तन फूस० ॥

थकगये इश्कको कबीर गाते गाते ॥ जिसको देखा वोः आये ढोल बजाते ॥ कोइ सर पर डाले खाक कोई चिल्लाते ॥ कहें बनारसी हम इश्कमें हैं मदमाते ॥ जो हक कुल्लः थी मैंने गादी होली॥ वोः आतश औ तनफूस जलादी होली ॥

मतलब तौहीद खुदाका सरापा–खरी रंगत।

जितने दिन है इस दुनिया में किसीका नहिं मजहब है वो ॥ सब में है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ बुतखाना बनवाया किसीने मसजिदको भी चुनवाया ॥ अपने अपने दीनका देहेरा सबने सबको दिखलाया ॥ उस मालिकको भूलगये जिससे ये नर जामापाया ॥ इसमें उसको नहिं देखा है जिसकी ये कंचन काया ॥ मैं अपने तनमें देखों हर घडी किमेरा रब है वो ॥ सब में है और अलग

सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ हिन्दूतो बुतखाने में पत्थरसे टक-
ते सरको ॥ मुसलमान मस्जिदमें गिरके सिजदा करते हैंदरको ॥
और सुनो अंगरेज बडा कहते अपने गिरजा घरको ॥ इसी तरहसे
रेक भूले पर नहिं पाया उस हरको ॥ मुझे इसीमें मिला और जा
मिले किसीको कब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने
अजब है वो ॥ कोई ढूंढता पोथी में और कोई देखता किताब में ॥
लाख तरहसे देखो पर वो आता है कब हिसाब में ॥ उसे जो देखा
चाहे तो वो है इसें जाम नयाब में ॥ इसीके भीतर देखे तो फिर प-
चे आलीजनाब में ॥ बहुत सख्त है मंजिल ये औ राह बडी बेढब
वो ॥ सब में है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ बेस-
झी इस कदर जहां में है किखुदाको समझें गैर ॥ सरेने बांधीमुइकें
और तौहीदसे रखते बिल्कुल वैर ॥ करें फकीरों से झगडा किसतर
से उनका होगा खैर ॥ अपना आपा नहीं देखें है जिसमें चौदा
तबककी सैर ॥ जैसा देखो वैसा दीखे दिल आईना हलब है
॥ सबमे है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब हैवो ॥ सुनो
सरापा उसका तो वह जुलफ में उसके खमवी है ॥ नागिन्भी हैं साँप
भीहैं अमृतभीहै और सम् भीहै ॥ माथे पर है मेहर तसद्दुक चश्ममें
आमे जमभी हैं ॥ अबरू में जुल्फिकारहै शमशीर और तेगे दुदम्वी
॥ रहेम करे तो रहीम है और कहेर करे तो गजब है वो ॥ सबमें है
और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ मिजे में उसके तीर
रे हैं और कारी नश्तर भी है ॥ चितवनमें है चोट दूरकी जादू
और सहर भी है ॥ बीनी में अल्लाह अलिफ है इल्म भी
और हुनर भी है ॥ तडफ न बिजुली में ऐसी नथुनों की फडक
कदर भी है ॥ दहनमें गुंचालाल लबे शीरीं भी और बेलब है
॥ सब में है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ दंदा

में मोती हैं बेबहा और हीरोंकी कनी भी हैं ॥ कहूं मैं अपनी जबांसे क्या क्या जो जो उसमें भनी भीहैं ॥ उन्हीं में है खानये खुदा और कहीं कहीं पर अनीभी हैं ॥ अगर्चे पीसें दांत तो वो इस दुनिया ऊपर गनी भी हैं ॥ नाम मेरे दिलबरके लाखों इसीसेतो बेलकब हैवो ॥ सब में है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब हैवो ॥ जबांसे उसकी जो निकले वो सच्च है ऐसी जबां है वो ॥ जकन में उसकी चाहसे डूबा यू-सुफ ऐसा कुआं हैंवो ॥ सीनेमें आईनासाफ बाजुओं में ताकत तमा हैवो ॥ पंजे में पंजये अलीहै और पंजे मरजां हैवो ॥ नाखूंनों में हि-लालहै और शिकममें नर्मी सब हैवो ॥ सबमें है और अलग है स-बसे देखा मैंने अजब हैवो ॥ नाफमें है वो भमरके चक्कर में आये आ-शकका दिल ॥ कमर में तो है राजे निहां राज वो हुआ किसको हासिल ॥ जानूमे बिल्लूरकी शाखें नूर पिंडलियों में कामिल ॥ क-दम कदम पर नाजो करशमां आशकों को करता बिस्मिल ॥ जिस्म भी है बे जिस्म भीहै क्या लिखूं कि कैसी छब हैवो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब हैवो ॥ हुये हजारों बली जहांमें लिखीं कितावें वह तौहीद ॥ कह कहके थक गये सभी पर खतम हुई नहिं गुत्फे शुनीद ॥ कटा के सर को लिखी मसनवी जानिबेचकर पाया-दीद ॥ बनारसी रोरोके हुआ खुशतब हासिल हुई उसको ईद ॥ कहना सुनना कुछ नहिं बनता मुझको तो यक सबबहैवो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥

ख्याल मार्फत तौहीद अपनेको पहिचानना-बहर शिकस्ता।

हुआ जो आनेसे अपने वाकिफ तो मैं अनल हक यों कह पु-कारा ॥ तुम्हें जो मालूमहो कहो तुम किसी का इसमें है क्या इ-

ारा ॥ अजब तमाशा ये देखा मैंने कि पारा पारा हुआ जो पारा ॥
नलाया उसको तो एक होकर मिला वो आपी से अपना प्यारा ॥
सी तरहसे जुदा मैं उससे हुआ मिला उसका फिर सहारा ॥ तो
स्ल होकर हुआ मैं एकता दुई से मैंने लिया किनारा ॥

शैर–लडगई आंख वो मारा जो नजाराउस्से ॥ दमबदम साफ
ब होता है इशारा उस्से ॥ छिपाके आंखमें मैंने चुरालिया उ-
को ॥ हुआ रोशन मेरी पुतलीका यतारा उस्से ॥ समझ तुम्हें
र होतो समझलो येमन खुदा है सखुन हमारा ॥ तुम्हें जो मालूम
कहो तुम किसीका उसमें है क्या इजारा ॥ ये जिस्म में दमदमा
दमका के एक दम है यहां गुजारा ॥ हुआ जो कोई वहां से वा-
ुफ न उसको हरगिज किसीनें मारा ॥ यहांतो मरगये मुफतमे
ितने हुये सिकंदर वो शाह दारा ॥ रहा वो कायम मरा न हरगिज
ि जिसने छोडा बलख बुखारा ॥

शैर–किसीने उसके लिये तखत हजारा छोडा ॥ किसीने मालो
हल मुल्क ये सारा छोडा ॥ मैं तुमसे पूंछताहूं तुमने यहां क्या
ोडा ॥ ये सुनके मरगये अश्कोंका तरारा छोडा ॥ कई मर्तबा कहके
नल हक ये सरको मैंने दिया खोदारा॥तुम्हें जो मालूम हो कहो
म किसीका इसमें है क्या इजारा ॥ जो समझ आई कुछ अपने ताईं
मैंने फिर ऐसाही विचारा ॥ ये जिस्म मैंतो नहीं हों मुतलक
ो नूरहूं जिसका कुल पसारा ॥ किया ये दिलके तईं आइना और
कशा उसका यहां उतारा ॥ लगा वो कहनेकि मैं खुदाहूं कहो
र इसमें क्या मेरा चारा ॥

शैर–जामें वहेदत जो दिया उसने दुबारा मुझको ॥ दिखाया
ालमें मस्ती का शरारा मुझको ॥ सराब वस्लकी पीतेही मैं
होश हुआ ॥ सरेहकी बात नहीं शेख गवारा मुझको ॥ मैं गमसे

दूर और जहां में एकता और लामकां में रहूं विचारा ॥ तुम्हें ज
मालूम हो कहो तुम किसीका इसमें है क्या इजारा ॥ ये पेट भ
भरके तुमने अपना बनायाहै दुनियामें पेटारा ॥ अगचें भूखे रह
तो पाओ अजीब लज्जतका वो छोहारा ॥ न उसमें गुठली न जिस्
छिलका न वो मुलायम न वो करारा ॥ भरा सरासर है उस
अमृत वो खाये जो है खुदाका प्यारा ॥

शैर–शिकमको तुमने जहांमें न जो मारा होगा ॥ किसतरहसे
वो खुदा यार तुम्हारा होगा ॥ हाले तौहीद न समझे तौ खिसार
होगा ॥ मौतके बादभी मरमरके तु हारा होगा ॥ बनारसी कहत
मैं वही हूं ये जिस्म मैंने उसीपे वारा ॥ तुम्हें जो मालूम हो कहो
तुम किसीका इसमें है क्या इजारा ॥

ख्याल खुदासे जुदा न होनेका–बहर शिकस्ता ।

जुदा न तुझसे हुआ मैं हरगिज न मुझसे तरी जुदाई होगी ॥
किया जो तूने खुदीसे बाहर तो मेरे ह्यां अब खुदाई होगी ॥ ओ
फौज मोजे बहेर जो उलफतकी लहेर इस दिलपर आई होगी ॥ तो
चश्मके चश्मेसे वो दरिया बहाके दुनिया बहाई होगी ॥ ओ अश्क
गौहरकी माला मैंने गलेमें अपने पिनहाई होगी ॥ सदफकीतो
आगे मेरेही आंखोंके वो कैसी बुराई होगी ॥

शैर–दीदये तरसे मेरे ऐसी तराई होगी ॥ चर्ख पर बारीषे मौसम
की चढाई होगी ॥ जिक्र रोनेका जो आये तो मैं तूफां करदूं ॥
नरोऊँ इतना तो फिर मेरी हँसाई होगी ॥ न अब तकब्बुर रहा दुई
का दुईभीदेती दोहाईहोगी ॥ किया जो तूने खुदीसे बाहिर तो
मेरे ह्यां अब खुदाई होगी ॥ जो दस्तमें मेरे उस सनमकी ओ

हुंची आकर कलाई होगी ॥ तो हाथ मलते ओ होंगे दुश्मन कहां
फर उनको कलाई होगी ॥ औ हाथ डाले गलेमें मेरे अदा जो
सने दिखाई होगी ॥ तो बाजू टूटेंगे वो रकीबोंके और न उनकी
ाई होगी ॥

शैर—आंख तुझसे जो किसीनेभि लडाई होगी ॥ तो फतेयाब हयां
सकी लडाई होगी ॥ देख तो उसको जरा खोल के चश्मे दिलको
ांख फिर तुझसे किसीने न मिलाई होगी ॥ नदीनो मजहब का
ब घमंड है तो क्यों न मेरी सफाई होगी ॥ किया जो तूने खुदीसे
हर तो मेरे हयां अब खोदाई होगी ॥ अगचें उस शमये नूर से-
किसीने भी लौ लगाई होगी ॥ तो नाम रौशन उसीका होगा
ोबात उसकी बनाई होगी ॥ औ कूचचे जाना कि किसीने करी
गचें गदाई होगी ॥ तो पादशाहतसे भी सल्तनत जहां में उसकी
ाई होगी ॥

शैर—पास जबतकसे खुदा के न रसाई होगी ॥ रूबरू मौतके
र उसकी हँसाई होगी ॥ अब कमां हाथ कजाके है निशानेसे बचो॥
शये यार में छिपनेसे रिहाई होगी ॥ कहाँ यहाँ जिस्मका गुरूरहे
मैंने शोहरत मचाई होगी ॥ किया जो तूने खुदी से बाहर तो मेरें
अब खुदाई होगी ॥ है राह उल्फत की सख्त मुश्किल भला
सीने जो पाई होगी ॥ तो मंजिले जाना पर पहुंचके उतारी उसने
ाई होगी॥ऐ देवीसिंह अब ये रूह जिसकी खुदा में जाकर समाई
ी ॥ तो आना जाना न होगा वाँसे वो बात उसकी बनाई होगी ॥

शैर—बे वजेह लावणी जिसने कहीं गाई होगी ॥ अपनी फिर आ
खाक उसने उडाई होगी ॥ हाले तौहीदसे वाकिफ जो हुआ
हुआ ॥ बात उसको न दुई की कभी भाई होगी ॥ बनारसीने

सदा अनलहक खूदा या तुझको सुनाई होगी ॥ किया जो तूने खुदी
बाहर तो मेरे ह्यां अब खोदाई होगी ॥

बागे वहिस्त औ बागे दुनिया दोनोकी सिफत-बहर शिकस्ता ।

ओ बागे जिन्नत ये बागे दुनिया है दोनों बागों का एक माली
अजब करश्मे के तुख्म वोये कि सब गुलों में है बूनिराली ॥ व
वो हूरें यहां ये परिया वहां मलक यां वशर जलाली ॥ वहांवो
जवां यहां ये गुलची खुशी वहां है यहां बहाली ॥ वहां है तूवां य
सनोबर झुकाई जिसने गुलों कि डाली ॥ वहां अजायब हैं मुर्ग
गमां सरा यहां बुलबुलें है आली ॥ किसीकी रंगत सफेद हैगी
किसी की जर्द और किसीकि काली ॥ अजब करश्मे के तुख्मबोये
कि सब गुलों में है बू निराली ॥ वहां जो तसनीम सुल सबील
बनाई उम्मां की ह्यांपनाली ॥ वहां मोहैया है जामे कौसर य
है लाले की भी पयाली ॥ वहां जो गुंचाशिगुलफा ताजा भ
सिगुल्फों से ह्यां लवाली ॥ वहां जो सरसब्ज है शजर सब
यहां नख्ल है न खाली ॥ कोई शिगुल्फा तरी किसीपर कुबू
कोई किसीपे लाली ॥ अजब करश्मेके तुख्म बोये कि स
गुलों में है बू निराली ॥ वहां जो मेवे अजायब हैगे तो फ
यहां हैं लगे जमाली ॥ जो खास बातें वहां तो आम हैं सखुन यह
कुछ नहीं है जाली ॥ वहां जो सकले हें सबकी नादिर तो सूरतें
ह्यां भोली भाली ॥ वहांके गुलसे खिजल जो लाला तो सांवली
यहां कलाली॥ खिजां न उसके बहारको है न उसके गुलको हैं पाय-
माली ॥ अजब करश्मेंके तुख्म बोयेकि सब गुलों में है बू निराली ॥
हैं ऐसे पानीसे बाग सींचे हरे हुये गुलशने जवाली ॥ ये कहते
देवीसिंह कुलसे वही है दोनों जहां का वाली ॥ जो अपनी दिखला

ाने गुलको तो वोउठे बुलबुले नेहाली ॥ हरेक अदा है अजायब सकी हरेक तरा है नई निकाली ॥ बनारसीका सखुन ये सच्चा ी मार्फतकीहै बोला चाली ॥ अजब करइमेके तुख्म बोये के सब लोमें है बू निराली ॥

ख्याल तौहीद–बहर शिकस्ता।

सबाभी चलने में थर थराये नदिलको ताकत नताब दमको ॥ ला वहां किसतरह से जाये और कौन पाये मेरे सनमको ॥ हां फरिश्ता भी दम न मारे वहां कोई क्या धरेकदमको ॥ गुजर माहो मेहरका मुतलक न बार है साहबे हसमको ॥ बुलंदी पस्ती खाई उसने बनाया हस्तीको और अदमको ॥ सबो सें रुतबा है सका अफजल कहूं मैं क्या फजल औ करमको ॥ हजार बुल ल करे इरादा गुलों से फेर अपने चश्मे नमको ॥ भला वहां किस रहसे जाये और कौन पाये मेरे सनम को ॥ वोही हुआ मौजूदे रिस्तां तेरी उसीसे गुले इरमको ॥ नजुल्फ हूरो परी कि पहुंचे हैं सके काकुल के पेंच खमको ॥ कहीं पै खाक और बादे आतिश हीं पै जारी किया है जमको ॥ उसीसे अर्बा अनासर हैंगे बहम ल हर गमो अलमको ॥ हरेक फरदे बशर खुदा है गवाह कहताहूं कसमको ॥ भला वहां किसतरहसे जाये और कौन पाये मेरे नमको ॥ इसी तमन्ना में हाथ मलते हैं जिनके कोई पहुंचादे मको ॥ बराये अल्लाह उसीके दरतक करेंगे क्या हमदरो दिरमको॥ हमन और शेख उसीकी उलफत में भूले बुतखानयेहरम्को ॥ ारब्बेहै बेचूं और चरावस न दख्ल कुछ वां है बेश कमको ॥ हो स्त जबरीलका भी शहपर हजार उडे वो जता हममको ॥ भला ां किस तरहसे जाये औ कौन पाये मेरे सनमको ॥ सराबे वहदत मस्त हैंगे जो उसके समझें न जामे जमको ॥ जहां कि कैफियत

उनको हासिल उसीके देखेसे भूले गमको ॥ समझते अमृतसे भी बढके जो सादिक़ आशिक हैं उसके समको ॥ रहीम है वो करीम हैवो बनारसी रोक़ले क़लमको ॥ मकान है लामकां उसीका तुयार रख दिलमें इस रक़मको ॥ भला वहां किसतरहसे जाये औ कौन पाये मेरे सनमको ॥

तकलीब में घबराना नहीं चाहिये यह सच्चे आशक का काम है–बहर लंगडी ।

जरा आह ना करी इश्क़ में सब आफत भाईं मुझको ॥ कहीं चाह में गिरा कहीं नजर पडी खाईं मुझको ॥ किसीने अपना संग दिया नहिं हमतो आप हैं अकेले ॥ जहां न कोई मिला उस जापे किये हमने मेले ॥ लाख वजह के सदमें औ गम सब अपने दिलपर झेले ॥ सरको काट के हथेली पर रखके सरपर खेले ॥ बिन मुर्शिद के नहींहै हम और नहीं किसीकेहैं चेले ॥ जिसे इश्कका मजा लेना हो वो हम से लेले ॥ इश्क बहुत मुश्किल है फिर आता ये नंगे पाईं मुझको ॥ कहीं चाह में गिरा० ॥

और सुनो अहवाल इश्क में कहीं पहेन बैठे जंजीर ॥ ऐसा फसाया याद में उस्की ये दिल किया असीर ॥ देखके मेरा हाल शर्ममें आई शीरीं लैलाहीर ॥ मजनूं रांझा हुआ फरहाद बहुत सुनके गमगीर ॥ और भिजो आशक थे उनको लगा मेरे वो गम का तीर॥ लगे मचाने शोर ए आशक हैं कोई अजब फकीर ॥ जो आशक थे पाक उन्होंने बातें बतलाईं मुझको ॥ कहीं चाह में गिरा० ॥

एक वक्त हुआ ऐसा इश्कमें यारो हम बीमार हुये ॥ बेतावी से बात करने को भी दुशवार हुये ॥ गया तन वदन सूख जिगरपर लाख वजेह के गार हुये ॥ मरहम लगाया तो उससे और जख्म पुरकार हुये ॥ बहुत दवाई करी मेरी वोह तबीब सब लाचार हुये ॥

रेरी सूरत देख कर जिन्दे भी मुर्दार हुये ॥ मैं तो बिस्मिल रहा ळगी नहीं लाखों वोदवाई मुझको ॥ कहीं चाह में गिरा ० ॥

यहां तलक होगया हाल तिस पर नहिं मैंने आहकरी ॥ अपने दिलको किया मजबूत औ यह सल्लाह करी ॥ उसदिलबरका दिदार करने की इस दिलसे चाह करी ॥ और रास्ते छोड कर पाक इश्ककी हा करी ॥ देवीसिंहने उसके सिवा नहिं किसी की कुछ भी खाह करी ॥ खुशी हुआ वोः तो उसने रहम की भला निगाह करी ॥ नारसी ये कहे इश्कने कर दिया गोसाई मुझको ॥ कहीं चाह में गिरा कहीं नजर पडी खाई मुझको ॥

पानके खाने की सिफत–बहर लंगडी।

पानके खातेही उस सनमके दहन में क्या क्या रंग हुये ॥ हीरे मोती ाल मरजां औ जमुर्रद संग हुये ॥ एक रंगमें चार रंग जब हुये तो या क्या रंग खिला ॥ जिसने देखा उसीने कहा इन्हें क्या रंग मिला॥ ाहै जिला दांतों मे किये तो जिलाकोभीदेती है जिला ॥ चमक मकसे तो जिसकी हरदम ये तडपे है दिला ॥

शैर–किसी जा पर तो उजलीसी है वो कुछ इनमें तैयारी ॥ किसी जापर तो सुर्खीने करी है क्या गुलेनारी ॥ किसी जापर ी सब्जीने वोहै सब्जेकी जांमारी ॥ कहीं रंगत गुलाबीहै गोया ारोकी वां यारी ॥ देखके चारो रंग जवाहर लड लडके चौरंग ये ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद संग हुये ॥ पहले पिया ानो का लहू और पीछे किया आशकों काखूं ॥ गजब हैं दंदां ेखे कोई क्या ताकत इनका मजमूं ॥ चश्मको सब कहते खूनी मैं इनको खूखार लिखूं ॥ ये क्या घाट हैं खून करने में ही हैं अफलातूं ॥

शैर–अगर देखा जो तुम चाहो तो कोई तोफा गिलौरीलो ॥ है
जिस्में नूर मौलाका कहो उस्से कि तुम खावो ॥ जो ओ खाये तो
फिर उसके दहन को तुम जरा देखो ॥ करो टुकडे जिगर अपना
न आशक होतो आशकहो ॥ देखके इन दंदा का जौहर आशक
जौहरी दंग हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुरंद संग हुये ॥
अजब तरहका तिलिस्म देखो उसके उस दन्दान में है ॥ येतो स
फाई कहां हीरे मोती की खान में है ॥ लाले बदकशां में क्या की
मत जो कुछ इनकी शानमें है ॥ कहां बिके ये बताओ बात ये कि
सके ध्यानमेंहै ॥

शैर–इन्हें परखे वही जौहरी हो जिस्की पाक बीनाई ॥ नजर ना
पाक करने से तोहो फिर उसकी रुसवाई ॥ खुदाके घरसे तो इज्जत
उन्होंने इस कदर पाई ॥ इन्हीं से देख लो बिल्कुल है इस चेहेरे कि
जेबाई ॥ किया सितम्पर सितम् ये मुसक्या करके जिस दम नंग
हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुरंद संग हुये ॥ येदंदा है
उसके जिसके माहो मेहर अखतर हैं बने ॥ आमाल अपने हुये वाला
तो मेरे दिलगर हैं बने ॥ अब मुझको क्या कमी रही ये पास मेरे
गोहर है बने ॥ लाल भी अपने पास इल्मास के भी जेवर हैं बने ॥

शैर–येवो नग हैं हकीकत इनके आगे क्या नगीने की ॥ येवो
मीना है जिस्से जेब हो दुनिया में मीने की ॥ खुदाने इनको तो
रंगत वो दी है इसकरीने की ॥ मिले लज्जत इन्हींसेतो भला खाने
औ पीनेकी ॥ बनारसी को खुदाने बख्से कभी न जरसे तंगहुये ॥
हीरे मोती लाल मरजाँ औ जमुरंद संग हुये ॥

खुदाकी तारीफ जिसतरह कुरान में लिखीहै–
बहर छोटी ।

कायम है खुदा एकजा वोह न आये जाये ॥ परकुदरत उस्की

रजा झलक दिखाये ॥ नहिं चले फिरे नहिं खाय न पीवे पानी ॥
ाहिं घटे बढे है ज्यों का त्यों रव्वानी ॥ मैंने देखा आंखोंसे वह मेरा
ानी ॥ ओ वहां है और मैं उसकी यहां निशानी ॥ जो वगैर देखे
हे वो बात किहानी ॥ देखे तो नूर में मिले नूर नूरानी ॥ नहिं
हले न डोले बोले नहिं बतलाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा झ-
क दिखाये ॥ शोलये नूर कुछ उसके नहीं बदन है ॥ दिलजांसे
री उसकी लगी लगन है ॥ मैंने भी यही समझाकि न मेरे तन है ॥
छ सहेल नहीं ये समझभी बहुत कठनहै ॥ नहिं मिलता उसका
कसीको भी दर्शन है ॥ ओ आपी आप अपना देखे जोबन है ॥
कता है दुईकी बात न सुने सुनाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा
लक दिखाये ॥ वोः आपी हाकिम आपी वही गवाह है ॥ आपी
बंदा आपी वोह अल्लाह है ॥ आपी है बना वो मेहर और आपीमा
है ॥ है सबमें सबसे अलग ये उसकी राहहै ॥ बेगम है उसको कि-
ीकी भी नहिं चाह है ॥ बेचश्म है देखे सबको अजब निगाह है ॥
ामकाँ है वोह नहिं हटे किसूके हटाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा झ-
क दिखाये ॥ मशरकसे मगरिबतक सबमें शामिल है॥पर अलग है
रा खुदा बडा कामिलहै॥नहिं अकल है पर वो अकलसेभी आकिल
॥ नहिं अदल है वो पर अदलकाभी आदिलहै ॥ नहिं आबो हवा
ातश और नहीं वो गिल है ॥ कहे देवीसिंह बस उसीमें मेरा दिल
॥ और बनारसी कुछ गाये नहीं बजाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा
लक दिखाये ॥

ाशूक और आशिकके पैरहनकी तारीफ–बहर लं०।

तुझको तो ऐ गुल गुलशनमें फर्श इतरसे तर चहिये ॥ मुझको
यारे खाकका उस जापर बिसतर चहिये ॥ गिर्द तेरे चेहरेके हर-
म उस महका हाला चहिये ॥ तेरे दरकी खाक मेरे मुँहपर आला

चहिये ॥ तेरे गलेमें गजमुक्ता और लालोंकी माला चहिये ॥ मे
गलेमें वो लपटा चौतरफा काला चहिये ॥ तुझे तखत सल्तनत
चहिये मुझको मृगछाला चहिये ॥ तेरे कदममें पदम पावोंमे मे
छाला चहिये ॥ तुझे सोनेको पलंग हमे पडनेको तेरा दर चहिये
मुझको प्यारे खाकका० ॥

तेरे दस्तमें छडी फूलकी चढनेको घोडा चहिये ॥ मेरे हाथ
अजदहेका उस दम कोडा चहिये ॥ तुझको तो ऐजान हमेश
करना नकतोडा चहिये ॥ मुझको जालिम कभी नहीं तुझसे मुँह
मोडा चहिये ॥ तेरे वास्ते शाल दुशालेका तोफा जोडा चहिये ॥
मेरे वास्ते फटासा कम्बलभी थोडा चहिये ॥ तुझे चाहिये रङ्गमहल
हमें तेराही कूंचा घर चहिये ॥ मुझको प्यारे० ॥

तेरे तो खासेमें खूब तोफा मेवा हरदम चहिये ॥ मेरी गिजा है
मुझे खानेको हरदम गम चहिये ॥ तुझको तो ऐ नाच रंग यक आ-
लमका आलम चहिये ॥ मेरे दिलको हमेंशा तुही एक जालिम
चहिये ॥ तेरेवास्ते परी हूर महेताब और शबनम चहिये ॥ मेरी
सदाहै मुझे अब तुही फक्त हमदम चहिये ॥ अब तो आरजू यही
तेरे कदमोंमें मेरा सर चहिये ॥ मुझको प्यारे० ॥

तू तो है सरदार तुझे करनेको सरदारी चहिये ॥ हमे हमेशाँ
तेरी करना ताबेदारी चहिये ॥ तुझको तो अपने जोबनकी करना
तैयारी चहिये ॥ हमको अपने बदनकी जरा न हुसियारी चहिये ॥
तुझको डंके निशान और हाथीपर अम्बारी चहिये ॥ मुझको करना
तेरी अब फरमाबरदारी चहिये ॥ जलेबमें हरदम तेरे सब फौजोंका
लश्कर चहिये ॥ मुझको प्यारे० ॥

तेरे बदन पर यार सुनहरी मीनेका गहना चहिये ॥ अपने तन-
पर हमें सेली कफनी पहेना चहिये ॥ तू चाहे झटकार मुझे दावन

रा गहना चहिये ॥ जहां रहे तू तेरी खिदमतमें मुझे रहना चहिये ॥
ीसिंह यों कहे तेरे सब जोर जुल्म सहना चहिये ॥ बहरे इश्कमें
केहो बिना आब बहेना चहिये ॥ बनारसी ये कहे मेरे अब दिलको
ही दिलवर चहिये ॥ मुझको प्यारे खाकका उस जापर विस्तर० ॥

ज औराहत दोनोंको एक समझना चाहिये–बहर लं०

ऐ गुल तेरी उल्फतमें गुलजार भिहै और खार भिहै ॥ बडा
तफ है इश्कमें भार भिहै और प्यार भिहै ॥ कभी इशारा अब-
का है और कभी तलवार भिहै ॥ कभी वस्लका हमसे एकरार
हि इनकार भिहै ॥ कभी गालियां झिडकी है और कभी शीरीं
फतार भिहै ॥ कभी खिजा है कभी गुलशन है बाग बहार भिहै ॥
ला ये मंशूर दारपर दार भिहै दीदारभि है ॥ बडा लुत्फ है० ॥
कभी तौक गर्दनमें पडा और कभी फूलोंका हारभिहै ॥ कभी बर-
ा वदन है कभी तनपे शृंगार भिहै ॥ कभी सैर सहराकी है और
भी कूंचा बाजार भिहै ॥ कभी है राहत कभी रञ्जीदा दिल बी-
र भिहै ॥ कहा लैलासे मजनूने अबसुलः भिहै तकरार भिहै ॥
डा लुत्फ है० ॥
कभी हँसी दिल्लगी कभी रोना अश्कों का तार भिहै ॥ कभी
ार का छिपाना कभी निगाहे चार भिहै ॥ कभी गलेसे लगे कभी
करता दारो मदार भिहै॥ कभी जिलाये कभी यक अदासे डा-
मार भिहै ॥ कभी करे ऐयारी वो औ कभी वो बनता यार
है ॥ बडा लुत्फ है० ॥
कभी जख्म पुर होंय जिगरके कभी बदन पर गार भिहै ॥ कभी-
खुश कभी वो करता दिल बेजार भिहै ॥ देवीसिंह ये कहै मेरा
शोख सितमगर गार भिहै ॥ जो चाहे सो करै अब वही दिलका

मुखतार भिहै ॥ बनारसी कहे नेकी बदी दोनोंका उसे अखत्या भिहै ॥ बडा लुत्फ है० ॥

होली जिस्मकी मतलब तौहीद–बहर लंगडी ।

बनी मेरे इस जिस्म कि होली लगी इश्ककी आग भला ॥ लग गलेसे सनम को तन में खेलूं फाग भला ॥ भर भर के चश्मों मे अश्क करदूं आंखें रंगीन भला ॥ सुर्ख गुलाबी और केसरिया रंगत तीन भला ॥ रोरोके जामें को मवत्तर करूं बजाऊं बीन भला ॥ लौमें शोले नूरके रहूं सदा लवलीन भला ॥

शेर–बनाया उसने मुझे वोः फकीर होलीमें ॥ के आये बेनवाले ले अबीर होली में ॥ उन्हीं में मिलगये मुझको कबीर होली में ॥ सुनाये मैंने उन्हें वो कबीर होली में ॥ लडूं भिडूं गालियां खाऊं न-हिं रक्खूं दिलमें लाग भला ॥ लगा गलेसे सनम को तन में खेलूं फाग भला ॥ प्यारा कि पिचकारीसे उसने किया मुझे रँगलाल भला ॥ खुशी हुई वो तो उडगया गमका सबी गुलाल भला ॥ अनहद बाजे बजें मगज में कई वजह की ताल भला ॥ राग वो दी-पक सुने जोहो साहबे कमाल भला ॥

शेर–लिया है अबके भला मैंने योग होली में ॥ मैं अपने योगसे करता हूं भोग होली में ॥ लगाहै इश्क का ऐसा हो रोग होली में ॥ जिगर भी जलगया करके वियोग होलीमें ॥ नींदकहांआती है मुझे मैं रहों रातो दिन जाग भला ॥ लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥ मैं अपने दिल में देखूं है इसीमें उसका नूर भला ॥ उसीसे खेलूं मैं होली उडादूं तनकी धूर भला ॥ हाथ पांव लकरिया हैं इनको मुझको नहीं गुरूर भला ॥ ये मै नहीं हूं और हूं इनमें पर इनसे दूर भला ॥

शैर—ये मैंने पीरसे सीखा है खेल होली में ॥ अब अपने यारसे बताइूं मेल होली होलीमें ॥ मलूंमैं यादका इतरो फुलेल होली में ॥ कि जिसकी बूसे मिटे कुल झमेल होलीमें ॥ गिरें नहीं मेरे सरसे इज्जत रमत की पाग भला ॥ लगा गलेसे समनको तनमें खेलूं फाग भला ॥ ऐसी होली ओ खेले हो जिस्को कुछ फहमीद भला ॥ कहे वीसिंह ये है होली भी और तौहीद भला ॥ इसीमें देखूं नाचरंग इसी में उसका दीद भला ॥ इसी जिस्म में करूं मैं खुदासे गुफ्त नीद भला ॥

शैर—उडादे दिलसे खुदी की तु खाक होलीमें ॥ तो होवे दम्मे रा जिस्म पाक होली में ॥ ये अबकी मानले मेरी तू साक होली- ॥ तर्क दुनियाको तू कर तो हो धाक होलीमें ॥ बनारसी तेरी ली में है इश्क ज्ञान वैराग भला ॥ लगा गलेसे सनम को तनमें लूं फाग भला ॥

परमेश्वरके यादमें रोनेकी तारीफ—बहर छोटी ।

अश्कों से मेरे गौहरकी लडी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियों । बडी लगी है ॥ कभी मीजयकी नोकों पर यों अश्क खुलते है ॥ लमास के टुकडे कांटों पर तुलते हैं ॥ जिसवक्त ये आंसू सीने पर लते हैं ॥ तो दाग जिगरके साफ मेरे धुलते हैं ॥ इस धारसे दुरदाने । छडी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियों कि बडी लगी है ॥ कभी ूने अश्क अश्कोंसे मिल बहेता है ॥ तोलालका दिल भी गौहर में हता है ॥ बेबहा है इनका मोलन कोइ कहेता है ॥ जो आश्के जो- री है वोह इन्हें चहता है ॥ इस कदर मेरे चश्मों से झडी लगी है ॥ दुकान अब मोतियों कि बडी लगी है ॥ फुरकते यार में दिलको करारी है ॥ सब इसीसे रातो दिन गिरिया जारी है ॥ अश्कोंसे मेरे

गौहर ने जोकी यारीहै ॥ बस इसीसे उसने पाई आबदारी है ॥ दोनों आंखों से मेरे दुलडी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियों कि बडी लगी है ॥ वो देवीसिंह ने तुख्मं मुहव्वतबोया ॥ तो रोजे हस्त्रको बडी चैन से सोया ॥ और बनारसी उस यादे खुदामें रोया ॥ अश्कों से गौहर वे विधे का हार पिरोया ॥ आंखोंसे मेरे बारिश हर घडी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियों कि बडी लगी है ॥

ख्याल इश्कके दर्दका—बहर छोटी ।

आशक के दर्दको आशक हो सोइजाने ॥ हीरे कि खानको कोई जौहरी पहचाने ॥ जिसके पांवों में कभी न जाय बेबाई ॥ वो क्या जाने दुनिया में पीर पराई ॥ ये मसल है मैंने सुनी सो तुम्हें सुनाई ॥ आशक मरीजकी कहां है लिखी दवाई ॥ मजनूंकी तबीबोंने जो फस्त कराई ॥ लैलाके निकला खून तो ओ घबराई ॥ आशकका दुखडा जाने आशक स्याने ॥ हीरेकी खानको कोई जौहरी पहचाने ॥ फरहादने अपने सरपर तेशामारा ॥ ये सदमा शीरींको नहिं हुआ गवारा ॥ वो मुवा वोभी मरगई हाल सुनसारा ॥ वो उसकी प्यारी हुई वो उसका प्यारा ॥ रांझेने इश्कमें छोडा तख्त हजारा ॥ तो हीरने उसपर तन मन धन सब वारा ॥ हो खाकसार सहेरा की खाक जो छाने ॥ हीरेकी खानको कोई जौहरी पहचाने ॥ जिस आशकने है अपना जिगर जलाया ॥ तो इश्कमें उसका रौशन नाम कराया ॥ आशकने रंजमें तो राहतको पाया ॥ यह गैरसे सदमा कभी न जाय उठाया ॥ जिसके दिलमें है खुदाका इश्क समाया ॥ वो खुशी हुआ गर किसीने उसे सताया ॥ ये इश्क कोई पूरा दुनिया में ठाने ॥ हीरेकी खानको कोई जौहरी पहचाने ॥ जिसके दिलमें है दर्द वही है दाना ॥ ये दर्दका तो दुनिया में नहीं ठिकाना ॥ बेरहमजे हैं आशकको कहे दीवाना ॥ इस जहांमें उन-

का बेहत्तर है मरजाना ॥ जिसके दिलमें दिलबरका इश्क समाना ॥
ो खुदाको देखे देखे नहीं जमाना ॥ देवीसिंहकी बातें सब रुस्तं
नी माने ॥ हीरेकी खानको कोइ जौहरी पहचाने ॥

ख्याल खुदाके फजलका–बहर खडी ।

मेहेर जो उस्की होवे तो वह मार मोरसे डरे नहीं ॥ चींटी पर
हाथी चढबैठे तो ओ चींटी मरे नहीं ॥ वह चाहे तो शराब को आ-
बेहयातका जामकरे ॥ खुशी जो उसकी होवे तौ वो कुफुरको भी
इस्लाम करे ॥ नवाजियोंसे खफा रहे रिन्दोंके साथ कलाम करे ॥
बुतखाने मस्जिदको तोडकर मैखाना सर्नाम करे ॥ ऐसे ऐसे काम
तो उसके सिवा और कोइकरे नहीं ॥ चींटी पर हाथी चढ बैठे तो वो
चींटीं मरे नहीं ॥ डाले कोई बारूदमें आतिष औ वो दारू जले
नहीं ॥ हजार मनकी चक्की हो पर एक मूंगको दले नहीं ॥ पानीपर
तैरे वो बतासा लाख वर्ष तक गले नहीं ॥ उसके कुदरतके आगे
कुछ जोर किसीका चले नहीं ॥ सब उसके नजदीक है और कोई
बात तो उस्से परे नहीं ॥ चींटी पर हाथी चढ बैठे तो वो चींटी मरे
नहीं ॥ बांधे कच्चे सूतसे जिसको वो कैदी क्यों कर छूटे ॥ मदद
जोउस्का होतो आहन की संगल दममें टूटे ॥ बडेबडेरुस्तम को
कायर मारके सरतापा लूटे ॥ पत्थर पर राई दे मारे तो पहाड दम
में फूटे ॥ सब कुछ वो करता है पर अपने जिम्मे कुछ धरे नहीं॥
चींटी पर हाथी चढ बैठे तो वो चींटी मरे नहीं ॥ गलियोंके पत्थर-
को वो चाहे हीरे मोती लाल करे ॥ बना दे वो कोयलोंकी मोहर
एक दममें माला माल करे ॥ देवीसिंह कहे बनारसीके ख्याल पै
कोई खयाल करे ॥ क्या ताकत है कालकी जो फिर उसका बांका
बाल करे ॥ ऐसा सखुन सुननेसे दिल हरचन्द किसीका भरे नहीं॥
चींटी पर हाथी चढ बैठे तो वो चींटी मरे नहीं ॥

तथा ।

खुदा फज़्ल जो करे तो बंदा किसी से मुतलक डरे नहीं ॥ मौत भि उसका कुछ न करसके कभी वो हरगिज मरे नहीं ॥ अदना को आला करदे वो अपनी जबाँ हिलानेसे ॥ लिखा हुआ तकदीरका भी मिट जाये उसके मिटाने से ॥ बुतखाना काबा है बना अब उसी के देख बनाने से ॥ उसके काम हैं अलाहिदा इस दुनिया और जमानेसे कुल उसका अख्तियार जहां में और कोई कुछ करे नहीं ॥ मौतभि उसका कुछ न करसके कभी वो हरगिज मरे नहीं ॥ राई को पर्वत करदे औ पर्वत से राई करदे ॥ दुई हो जिस्के दिल में वोः चाहें तो कताई करदे ॥ दोस्त को वो दुश्मन करदे औ दुश्मन को भाई करदे ॥ बेवकूफको अकल दे और स्याने को सौदाई करदे ॥ मेरा दमतो सिवा खुदाके किसी का भी दम भरे नहीं ॥ मौत भी उसका कुछ न करसके कभी वो हरगिज मरे नहीं ॥ क्या जाने क्या लिखा है इस तकदीर में और क्या लिखेगा वो ॥ रोजे अज्लका किसे हाल मालूम इसे तुम बतला दो ॥ जो तुम इससे नहीं हो वाकिफ तो इस-पर कायम न रहो ॥ जो चाहे सो करे वही हर वक्त उसीकी याद करो ॥ वोः सबके नजदीक भीहै और कोई तो उस्से परे नहीं ॥ मौत भी उसका कुछ न कर सके कभी वो हरगिज मरे नहीं॥खाक को वोः अकसीर करे और आब को वोः गौहर करदे ॥ पत्थर को पारस करदे और लोहे पर जौहर करदे ॥ देवीसिंह ये कहे वोः बंधु-येको सबका अप्सर करदे ॥ बनारसी बे पढा है उसकी जबां पै कुल दफ्तर करदे॥ अकल और तकदीर काभी बिनखुदा काम कोई सरे नहीं ॥ मौत भी उसका कुछ न करसके कभी वो हरगिज मरे नहीं॥

ख्याल खुदाके ढूंढनेका—बहर छोटी ।

हम तेरे इश्कमें यार बहुत दिन भटके ॥ अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके ॥ कई बार गया सर तेरे इश्कमें कटके ॥ फिर-

पाया हमने नाम तुम्हारा रटके ॥ किये रंज अलम मंजूर जरा नाहिं ठटके ॥ दिलकी दहसत सब निकल गई छट छटके ॥ कई लाख वजेहके दिये हैं तूने झटके॥अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके॥ जिसवक्त तेरी वह जुल्फ नागनी लटके ॥ कोइ इधरसे होजाय उधर उधरसे चटके ॥ गर देखे कालानाग तो सरको पटके ॥ चढ जाय जहर जुल्फोंका वो घरको सटके ॥ हम आशक हैं मजबूत कहां जाँय हटके ॥ अब मिला सनम तू हमैं खुले पट घटके ॥ लैलासे लगाया दिल मजनूने डटके ॥ तन बदन दिया सब काट उसीसे अटके ॥ शूली पै चढा मंशूर उसी पर मटके ॥ नाहिं जरा नोक सूलीकी जिगरमें खटके ॥ देखा जो तुझे दिलगया जहांसे फटके ॥ अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके ॥ जब खुले किवांड़े यार कपटके पटके ॥ दिलमें पाये दीदार वो वंशीवटके ॥ शिर मोर मुकुट कटि कसे जरीके पटके ॥ कहै देवीसिंह है अजब खेल नट खटके ॥ कहे बनारसी हम आशक नागर नटके॥अब मिला सनमतू हमें खुले पट घटके ॥

ख्याल खुदाकी यादका—बहर छोटी।

हर जगे पै देखा कहीं नहीं तू देखा ॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ गये बिहिश्तमें हम वहां न तुझको पाया ॥ बुतखाने में भी नहीं नजर तू आया ॥ काबा किबला मक्का मस्जिद ढुंढवाया॥ काशी मथुरा में बहुत दिनों भरमाया ॥ जाजाकर गंगासागर सिंधु नहाया ॥ मैं तेरे इश्कमें चारो तरफ उठधाया ॥ नहिं मैंने प्यारे और कहीं तू देखा ॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ जंगल बस्ती सब उजाड हमने छाना ॥ नहिं देखा तुझको देखारे सभीज-माना ॥ कोइ मतवाला कहता है कोई मस्ताना ॥ जो जो कुछ जि-सने कहा वो हमने माना ॥ कूबकू फिरा दर दरका हुआ दिवाना॥

नहिं पाया प्यारे तेरा कहीं ठेकाना ॥ अब याद करी तो दिल
यहीं तुदेखा ॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ सरपटकपटक
कर पहाडपर देमारा ॥ और आह आह कर करके बहुत पुकारा ॥
देखा देवल देहरा और ठाकुरद्वारा ॥ सरतापा सबको देख देख क
हारा ॥ घर बार तजा आलमसे लिया कनारा ॥ जैसी कुछ गुजरी
वैसे किया गुजारा ॥ ये बातें हमको याद रहीं तू देखा ॥ जहां याद
है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ सब देखा हमने गुलशन और गुल्लाला॥
बन फकीर बन बन फिरा पहन वनमाला ॥ देखा पत्ता पत्ता औ
डाली डाला ॥ है सब में तू औ सबसे रहे निराला ॥ यह बनारसीका
कलाम रसका ढाला ॥ है अरज मेरी यह सुनो नंदके लाला ॥
तुझ दिलबर पर आशक हूं महीं तू देखा ॥ जहां याद है तेरी वहीं
वहीं तू देखा ॥

इश्ककी दावत–बहर डेवडी, राग सारंग ।

इश्क हजरतनेकी हम पै मेहर्बानी ॥ करों मैं क्या क्या मेहमानी ॥
नजर देनेको दिलमैं अपना लाया ॥ इसके बहुत पसंद आया ॥
इश्कने मेरा जब लख्ते जिगर खाया ॥ तो मैंने और भी बतलाया ॥
खून आशकका ये है ताजा पानी ॥ पीजिये इश्क मेरे जानी ॥ अश्क
गौहर का जब गले हार डाला ॥ इश्कने कहा ये है आला ॥ चश्ममें
भर भर कर वो मै गुल्लाला ॥ इश्कके तईं दिया प्याला ॥ बन पडी
मुझसे जो कुछ कि कदरदानी ॥ इश्ककी सबी बात मानी ॥ जि-
गर पर मेरे जो थे उल्फत के गार ॥ देखाया इश्कको वोः गुलजार॥
और सीने पर गुल खाये कई हजार ॥ दिखाई इश्क के तईं बहार ॥
माल जर सारा देकरके यही ठानी ॥ किया तन अपना उरयानी ॥
और एक तोफा जो था सबमें भारी ॥ जान होती सबको प्यारी ॥
इश्कके ऊपर वोः भी देने वारी ॥ नजी देने से हुआ आरी ॥ कहूंमें

सके आगे अब क्या बानी ॥ इश्कके हाथ है जिंदगानी ॥ कि मैं हूं
गाशक है इश्क मेरा सरदार ॥ हम हैं उसके फरमाबरदार ॥ वजुज
गाशकी के कुछ और न मेराकार ॥ इश्कके सिबा न कोई यार ॥
कहै देवीसिंह है बनारसी ज्ञानी ॥ हरेक छंद जिसका हक्कानी ॥

इश्कके आनेकी खातर और दावत-
बहर मेरी जानकी।

आवो आवोजी मेरे महाराज इश्क आवोजी मेरी जान॥आज तुम
यहीं करो आराम ॥ आज तुम्हें देखा है बहुत दिनसे था नाम
सरनाम ॥ देखातो लिबासे नंग वदन नाजुकहै मेरी जान ॥ तेरा
जामा है तने उरियां ॥ यहीं तौर मेरा है हमेशा रहूं लबे विरिया ॥
दरदीदये तरहै आप तो मैं रोता हूं ॥ मेरी जान रहें हरवक्त चश्म
गिरियां ॥ आप देखें हूरोंको मेरी आंखोंमें बसे परियां ॥

तोडा-मेरा तेरा दो नहीं एकही दिलहै ॥ जख्मीहै जिगर तेरा
तो मेरा घायल है ॥ मेरी जान दुईका मेरा न तेरा कलाम ॥ आज
तुम्हें देखा है बहुत दिनसे था नाम सरनाम ॥ तू जख्म जिगर
खाखाके खून पीताहै मेरी जान ॥ तो मैं गम खाके जिऊं जानी ॥
प्यास अगचें लगे तो फिर रोरोके पीऊं पानी ॥ तू वियाबान सहे-
राकी सैर करता है मेरी जान ॥ मुझे भातीहै वीरानी ॥ मुझमें
तुझमें कुछभी फर्क नहीं है मेरे दिलजानी ॥

तोडा-तू राजेनेहां है तो मैं छिपा हूं तनमें ॥ तू मेरे दिलमें बसा
मैं तेरे मनमें ॥ मेरी जान न भूलूं तुझे मैं आठो जाम ॥ आज तुम्हें
देखा है बहुत दिनसे था नाम सरनाम ॥

मालूम हुआ गर्दिश तुझको भाती है मेरी जान ॥ तो मैं खुशहूं
हैरानीमें ॥ तूने गुलखाये तो दाग मुझे दिये निशानीमें ॥ तूमज-

नूकी सूरतहै आशके लैला मेरी जान ॥ लिखा तेरी पेशानीमें ॥ मैंभी बहुत लागीरहूं इश्क लग गया जवानीमें ॥

तोडा–तूगदा हुआ दुनियाकी खाक उडाई ॥ मैंनेभी खाकसारीमें धूममचाई ॥ मेरी जान हुये हम तुम दोनों बदनाम ॥ आज तुम्हें देखा है बहुत दिनसे था नाम सरनाम ॥

बे खौफ है तुझको नहीं किसीका डर है मेरी जान ॥ तो मुझकोभी है नहीं खटका ॥ मेरा तेरा दोनोंका दिल उसीसे है अटका ॥ मंशूर है तू तो मैंभी शम्स तबरेज हूं मेरी जान ॥ आशकी काहै यही लटका ॥ खाल उतारी दार चढे ये प्यारका है झटका ॥

तोडा–कहे बनारसी नहिं मरे किसीके मारे ॥ कै लाखदफा गर्दन पर फिर गये आरे ॥ मेरी जान जिस्मसे मुझे तुझे नहिं काम ॥ आज तुम्हें देखाहै बहुत दिनसे था नाम सरनाम ॥

तकलीफमें बहुत आरामहै आशकके वास्ते–मार्फत मेरी जानकी ।

आफत है इश्क आफत है इश्क आफत है मेरी जान ॥ पर है इस आफतमें आराम ॥ आशक हो सोइ जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥ अव्वल है इसमें जानो मालका खोना मेरी जान ॥ कि दोयम जिगर जलाना है सेयुं अपने सरपै कोहगम अलम उठाना है ॥ जो जो इसमें तकलीफ हैं मुझसे सुनलो मेरी जान ॥ मुझे यह सभी सुनाना है ॥ कोई कहे वहशी और कोई कहता दीवाना है ॥ जंजीर तौक यह सब इसका जेवर है मेरी जान ॥ आशकोंका यही बाना है॥और कहांतक कहूं इस्में जीतेइ मर जानाहै ॥

तोडा–जो इसे करे मंजूर तो फिर क्या डरहै ॥ आशकको मरनेका कहां खौफ खतर है ॥ मेरी जान वो तो चाहताहै जहां में

ाम ॥ आशक हो सोइ जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥ जिस
जेसके पीछे पडा इश्क यह आकर मेरी जान उसे मिट्टीमें मि-
ठाया है ॥ किसीको सूली दिया किसीका सर कटवाया है ॥ और
किसीकी इसने तनसे खाल उतारी मेरी जान ॥ फिर उसमें भुस
नरवाया है ॥ उसी खाल को उसने फिर कोडोंसे उडाया है ॥ लि-
या तख्त ताज सब लूट बादशाहोंका मेरी जान ॥ फिर उनको गदा
नाया है ॥ बियाबान सहेरामें उन्हें कांटों पे घुमाया है ॥

तोडा–जिसको ये रंज सहना वो वो इसमेंआये ॥आये तो नहीं
स आफतसे घबराये ॥ मेरी जान तो फिर हो दुनियामें सरनाम ॥
आशक हो सोइ जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥ जालिम हैं
इश्कके और जुल्म लाखों है मेरी जान ॥ सरपे आरे भी चलतेहैं ॥
हरे इश्क में जो डूबे वो नहीं उछलते हैं ॥ हिंदू या मुसलमां शेख
ब्रहमन सारे मेरी जान ॥ अपने हाथों को मलते हैं ॥ इसकी राह
में जो आये वो नहीं निकलते हैं ॥ यह वो आतिश हैं जिससे आग
दा हो मेरी जान ॥ जिगर में शोले बलते हैं ॥ जैसे आपसे जले
ती आशक भी जलते हैं ॥

तोडा–जो जले तो उनकी हुई रोशनी आला ॥ मशरिकसे ता
गरिब उनका उजियाला मेरी जान ॥ पिये वो मै वहेदत का जाम
आशक हो सो जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥ कहे चुके अब
म अपना भी हाल कहते हैं मेरी जान ॥ इश्क में गया मेरा सब
ीन ॥ मुफ्त में उस माशूकने जबरन्से ये लिया दिल छीन ॥
ाहिं इधरके हम नाहिं उधरके कहो किधरके मेरी जान ॥ रहे जंग-
लके तिनके बीन ॥ दोनों जहांमें इश्कने मुझको करदिया तेरह
ीन ॥ सोलहो कला जब उसने मुझे दिखाई मेरीजान ॥ हुआ फिर
सी में मैं लवलीन रंजको हम राहत समझे ये दिलसे हुआ यकीन ॥

तोडा—कहे बनारसी राहत हैं रंजराहत है ॥ मुझको तो हमेशा इसीकि कुछ चाहतहै ॥ मेरी जान इश्क में मिला मुझे गुलफाम ॥ आशकहो सोइजाने फासिक क्या जाने यह काम ॥

इश्कमें सब्रकरनातकलीफमेंघबरानानहीं-मार्फतबहर मेरीजानकी ।

अय दिल तू अब लग गया तो क्यों घबराता मेरी जान ॥ सब्रकर मिलेगा तेरा यार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुलजार ॥ फिर दिलने मुझसे कहा कि मैं हूं आशक मेरी जान ॥ जरा नहिं होय सब्र हमसे ॥ बेताब हुआ सीमा बसे ज्यादा जालिमके गमसे ॥ कोई लगादे मेरेपर तो उडूं इसखातर मेरीजान ॥ मिलूंमैं अपने हम दमसे ॥ बेचैन हुआ इसकदर मेरा दम घबराया दमसे ॥

तोडा—जलदीसे मुझे कोई वहां तलक पहुँचादे॥यक नजर रहेमकी जरा मुझे दिखलादे ॥ मेरी जान मुझे दीदार सिर्फदरकार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुलजार ॥ फिर मैंने दिलसे कहा अरे बेसब्र मेरी जान ॥ सब्र है बडी चीज प्यारे ॥ उसीको दिलबीर मिले जो कि अपने दिलको मारे ॥ जो आशक हैं वोह जरा आह नहिं करते मेरी जान ॥ चले चाहे गर्दन पर आरे ॥ उश्क किया मंशूर मारे सूलीपर नज्जारे ॥

तोडा—फिरओही शम्स तबरेज हुआ मस्ताना॥है जिसके इश्कको कुल आलमने जाना ॥ मेरीजान किया अपने दिलको हुशियार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक औरखलक तलक गुलजार ॥ फिर दिलने मुझसे कहा बहुत बेकल हूं मेरी जान ॥ याद उस दिलबर की आये ॥ रहे रहेके रोता हूं रातो दिन यह दिल घबराये ॥ किस

तरहतामुल करूं सब्र नहिं आता मेरी जान ॥ बातनहिं किसी कि अब भाये ॥ इश्क आग लगी तनमें गमसे जिगर जलाजाये ॥

तोडा–दिल खाकसार करदिया खाक में मिलके ॥ अब जरा चैन नहिं पडती बिन कातलके ॥ मेरी जान मिलेगा कब हमको दिल-दार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुल-जार ॥ फिर मैंने दिलसे कहा बात यक सुन तू मेरी जान ॥ सब्र है आशकका खाना ॥ जो चाहे सो होवे इश्क में गमपर गम खाना ॥ कइ लाख वजेह से बहुत तरह समझाया मेरी जान ॥ कहा सब आइकोंका माना ॥ सुनके इश्कका हाल मेरा कहेना दिलने माना ॥

तोडा–फिर इसे सब्र होगया मिला वोः हमदम ॥ ये कहे देवी-सिंह दूर हुआ दिलका गम ॥ मेरीजान कहे छंद बनारसी ललकार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुलजार ॥

खुदाके नूरको अपने दिल में देखना मतलब तौहीद–बहर मेरी जानकी ।

वोः झलक तेरी है फलक मलक नहिं पाये मेरी जान ॥ मेहर तकसे शरमाया जी ॥ नहीं देखाई देता है नजरों में समायाजी ॥ क्या गजब है तेरी शान जान कुरबान मेरी जान ॥ ठान कर दिल पर अपने जी ॥ सभी काम दिये छोड लगे अब तुझको जपने जी ॥ भर पूर नूर जहूर हूर से बेहतर मेरी जान ॥ मुझेवोः आये सपने जी ॥ तुझे ख्वाब में देख गये हम वनको तपने जी ॥

तोडा–कुछ दिनों तलक तप किया किये बहुतेरा ॥ पर वहां ठेकाना हमें लगा नहिं तेरा ॥ मेरी जान मुल्क दर मुल्क फिरआ-याजी ॥ नहीं दिखाईदेताहै नजरों में समायाजी ॥ है अजब चाहकी आह दाह नहिं बुझती मेरी जान ॥ राहजो इश्ककी आतेजी ॥ लाखों

वजह के रंजो अलम गम सितम उठातेजी ॥ हैरां वीरा मैंदा में बहुत फिरते हैं मेरी जान ॥ पास गैरोंके जातेजी ॥ उन्हें नहीं तू मिले कोई घर बैठे पातेजी ॥

तोडा–हर दम दम दम रहे रहे के घबराता है ॥ वल्ला तेरा गम मुझे रोज खाता है ॥ मेरी जान इश्कने खूब सतायाजी ॥ नहीं देखाई देता है नजरों में समायाजी ॥ हम दम तेरा गम अलम रहा करता है मेरी जान ॥ हुआ दिल पारे पारेजी ॥ तेरे इश्क में मरा मुझे अबकोई न मारेजी ॥ दुशवार यार दीदार तेरा हरबार मेरी जान ॥ मिले नहिं सदा नजारेजी ॥ आह बडा अफसोस के तेरे जुल्म इशारेजी ॥

तोडा–क्या कुसूर मेरा है तु मुझे बतलादे ॥ यक नजर रहम की जरा हमें दिखलादे ॥ मेरी जान मेरा अब दम घबरायाजी ॥ नहीं देखाई देता है नजरों में समायाजी॥ है कहेर इश्ककी लहेर जहर नहीं उतरे मेरी जान ॥ ठहरते इसमें पूरेजी ॥ वोः आशक नहिं मिले तुझे जो रहें अधूरेजी ॥ एक आन में तेरी आन आन मिलती है मेरी जान ॥ तुझे जाने मनशूरेजी ॥ कहे देवीसिंहमस्त मेरा दिल तुझको घूरेजी ॥

तोडा–कहे बनारसी मैं बहुत हुआ हैरान ॥ पर और न देखा कहा तेरा मक्कान ॥ मेरी जान तुझे इस दिलमें पायाजी ॥ नहीं देखाई देता है नजरोंमें समायाजी ॥

इश्कके आने की दावत–बहर डेवढी, राग सारंग ।

इश्क आवोजी मैं सरपर बिठलाऊं ॥ कहोसो खातिरको लाऊं ॥ जो निमकीं चाहो तो पियो हमाराखूं ॥ चरपरा कहो तो दिल से कूं ॥ अगर मैं मांगोतो अभी अश्क भरदूं॥जो तुम लैला होतो मैं मजनूं ॥ काट दूं बोटी दिल अपना परखाऊं ॥ कहोसो खातिरको लाऊं ॥

गर सीरीं को कुछ चाहे तबीयत अब ॥ तो मेरे मिलादो लब से ब ॥ आज आये हो फिर आओगे तुम कब ॥ येजी चाहता है टादूं सब ॥ भला मैंढूंढूं तो कहां तुम्हें पाऊं ॥ कहो सो खातिर ो लाऊं ॥ बना दुँ कपडे सब उतार तनकी खाल ॥ तुम इनको हिर रहो रंग लाल ॥ तुम्हें ख्वाहिश होगर कुल दुनियाका माल ॥ ो दंदां बनादूं गौहर लाल ॥ मुझेगर वेचौ तो अभी मैं विकजाऊं॥ कहोसो खातिर को लाऊं ॥ जो जेवर पहरोतो मेरी उस्तखांका ॥ कां हाजिर है लामकां का ॥ शौक गर तुमको कुछ होवे गुलि-तांका ॥ मेरा तन बना बोस्तांका ॥ मैं इसके ऊपर अब लाखोंगुल ाऊं ॥ कहो सो खातिर को लाऊं ॥ सुनो गर गाना तो ऐसी हिच कयांलूं ॥ मैं इसमें सबी राग कहदूं॥जान तक मांगो तो कभी करूं हिं चूं ॥ तसद्दुकतनो बदनसे हूं ॥ मैं तुम पर वारी हर तौरसे हो ाऊं ॥ कहो सो खातिरको लाऊं ॥ कहा ये मैंने तो इश्कभी यों ोला ॥ तु आशक है बाला भोला ॥ भेद सब उसने अपना मुझसे ोला ॥ तो दोका एक हुआ चोला ॥ कहे काशीगिरि अब आगे क्या ाऊं ॥ कहो सो खातिर को लाऊं ॥

जहरको आबे हयात समझना इश्कमें मतलब तौहीद-बहर छोटी।

इस कदर इश्कमें हुईं मुझे तलमलियां ॥ खागया समझके कंद हर की डलियां ॥ कौसर के धोखे पिया जहर का प्याला ॥ मस-दको समझ खारों पर बिस्तर डाला ॥ काकुल पै हाथ पहुंचा ो निकला काला ॥ मन मारके मैंने भरा आह का नाला ॥ दिल डका तो दरियामें तपीं मछलियां ॥ खागया समझके कंद जहर ी डलियां ॥ इस्लाम समझके दीनो मजहब को छोडा ॥ और

ईमां समझके कुफरसे नाता जोडा ॥ समझा था जिसको वहुत वो निकला थोडा ॥ इसलिये ये मुंहको कुल जहान से मोडा ॥ मालूम हुआ जो इश्कमें थीं छलबालियां ॥ खागया समझके कंद जहर की डलियां ॥ अब खुदा समझकर नजर बुतो पर डाली ॥ और अजल समझके दिलमे आह निकाली ॥ समझेथे जिसको भरा वो निकला खाली ॥ जाहर करनेको हुआ तो बात छिपाली ॥ है मेरे इश्ककी अर्श तलक झल झलियां॥खागया समझके कंद जहर की डलियां॥ दोसमझके पाया एक एक खो बैठे ॥ लौलगा सनम की यादमें जो जो बैठे ॥ हम दुई से इस दुनियामें हाथ धोबैठे ॥ अब तनहाई में आपी आप हो बैठे ॥ कहे बनारसी उलफत की बातें भलियां ॥ खागया समझके कंद जहर की डलियां ॥

सब काम छोडके पाक इश्कको करो तो जल्द खुदा मिले—बहर लंगडी ।

नेम धर्म्म औ कर्म्म दीन ईमानको दूर करो बाबा ॥ आशके सादिक बनो दिल इश्कमें चूर करो बाबा ॥ तसबी को तोडों मालाको छोडों हाथ प्यारेका गहो ॥ गले सनमके लगो कुछ हाले दिल दिलबरसे कहो ॥ टीका तन मन क्या करना मत पढ नमाज रोजेन रहो ॥ गमके भोजन करो जो गुजरे वो इस दिल पै सहो ॥ तीरथ वरत सभी छोडो दरियाये इश्कके बीच बहो ॥ इसीमें गंगा और यमुना काशी मक्का तुरत लहो ॥ मिला चाहो उस यारसे तो तुम इश्क जरूर करो बाबा ॥ आशके सादिक बनो दिल इश्कमें चूर करो बाबा॥आचारका डालो अचार इस बातका जरा विचार करो ॥ पाक मुहब्बत करो और जहांमें कोई यार करो ॥ दिलसे दिल और मिला जिगरसे जिगर खूब सा प्यार करो ॥ लडा नजरसे नजर उस दिलबरका दीदार करो ॥ पिवो मुहब्बत की शराब दिलका कबाब-

ख्यार करो ॥ बनो वैष्णो जो तुम यह मेरा कहा अखत्यार करो ॥
टके भंग छानो औ नशे का खूब सुरूर करो बाबा ॥ आशके
दिक बनो दिल इश्कमें चूर करो बाबा ॥ वेद पुरान कुरान कि
तोंसे है इश्ककी बातबडी ॥ ब्राह्मण सैयदकी जातोंसे है इश्ककी
ात बडी ॥ और जहांके फनहैं जितने सबसे इश्ककी घात बडी ॥
ाफते जाँहै इश्ककी राहमें है आफातबडी ॥ जितने घाट है जहां
सबसे इश्ककी है बिसरातबडी ॥ बारिशे मौसम से तो है रोने की
रसात बडी ॥ लडो इश्कके मैदां में यह मनमनसूर करो बाबा ॥
ाशके सादिक बनो दिल इश्क में चूर करो बाबा ॥ कथाको क्या
थते हो छोड दिवानों को दीवाना हो ॥ गाने बजानेका है वोः
जा जो कोई गाये रोरो ॥ हमने इश्कमें धरा कदम सर दिया जान
पनी दीखो ॥ लुत्फ उठाया इश्कका रंजको राहत समझाजो ॥
नारसी ये कहे इश्क करते हैं इस जहां में जो जो ॥ मिलेंवो हकसे
ई लामकां में उसके साथ में सो सो ॥ इश्क किया चाहो तो यार
नहीं जरूर करो बाबा ॥ आशके सादिक बनो दिल इश्कमें चूर
रो बाबा ॥

दवा इश्क की जिससे मुर्दा जीता है—बहर लंगडी।

मिलाके लबसे लब उसने कितनोहीं की लाश जिलाई है ॥ लबे
ार को लिखो मुर्दों की यही दवाई है॥मैं हूं मरीजे इश्क मुझे ईसा
कसतरह आराम करे ॥ जुबांयारकी जुबांसे मिले तो ओ कुछकाम
रे ॥ गुंचे दहन गरबोसा मेराले तो काम तमाम करे॥मुझमरीज को
ालाये जहां में अपना नाम करे ॥

शेर—बजुज इसके कहां जीने की अब उम्मीद है मुझको ॥ लबे
ीरीं में बिलकुल लज्जते तौहीदहै मुझको ॥ येही मेरीदवा और इत-
ाही फहमीद है मुझको ॥ मिला दे लब से लब मेरे वोही फिरईद है

मुझको ॥ ये इलाज मेराहै और कुछ इसी में शफा सफाईहै ॥ लबे यारको लिखो मुर्दों की यही दवाई है ॥ न कुछ कीमिये में कीमत और न ये बात अकसीर में है ॥ नहीं हिकमत में नहीं कुछ हुक्माकी तदबीर में है ॥ अगर जिलाये मुझको तो ये ताकत कहां फकीर में है ॥ जीस्त हमारी उस लबे यारकी ओः तासीर में है ॥

शैर—मिले उसके दहनसे जब दहन मेरा तो जी जाऊं॥ तमाशा इश्कका तुमने न देखा हो तो दिखलाऊं ॥ दहाने यार की लज्जत अगर्चें कुछ भि में पाऊं ॥ तो उट्ठे लाश मेरी कब्रसे जिंदा मैं कह-लाऊं ॥ यही आशकोंकी है दवा उस इश्कने मुझे बताई है ॥ लबे यारको लिखो मुर्दों की यही दवाई है ॥ मिलाके मुँहसे मुँह मेरे और हँसके वोः कुछ बात करे ॥ मुझ मरीजको जिलाये मौतको भी फिर मात करे ॥ क्या ताकत है कजा कि जो फिर मेरे ऊपर घात करे ॥ अगर सामने आये बेजा अपनी औकात करे ॥

शैर—वोः उसके होठमें अमृत है के मुर्दा भि जी जाये ॥ जो कुश्ता इश्कका होवे तो उसमें जान फिर आये ॥ सदाये कुम्बैजनी जब वोः अपने मुँहसे फरमाये ॥ तोउसके हुक्मसे उट्ठूवही जांबख्श कहलाये ॥ वहीखुदाहै मेरा औ कुछ उसीके यहां खुदाई है ॥ लबे यारको लिखो मुर्दोंकी यही दवाई है॥ जिसके इश्क में मरा हूं मैं वोः चाहे तो फिर जिला सके ॥ खुशी जो उसकी होवे तो जामे वस्ल भी पिला सकै ॥ क्या ताकत यह लाश मेरी कोई वगैर उसके हिलासकै॥ उसी में कुदरत येहै कि दिलसे दिलको मिला सकै ॥

शैर—बुलाओ उस मसीहाको मेरी अब जान जाती है ॥ जिलाये जल्द मुझको वोः नहीं तो शान जाती है ॥ मैं आशक हूं उसीका इश्ककी अब आन जाती है ॥ मिलादे लब नहीं तो जान और पहेचान

नाती है ॥ बनारसीने दवा आशकों की यह अजब बनाई है ॥ लवे यारको लिखो मुर्दों की यहीदवाई है ॥

ख्याल मय बहदतका जो वलियोंने पीहै-बहर छोटी।

बिन पिये जहां के बीच जिऊं मैं कैसे ॥ भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥ मैं वहेदत का मुस्ताकहूं यक्क मुद्दतसे ॥ वाकिफ हूं मैं कुछ मस्तानों की आदतसे ॥ जिसवक्त नशा शरसार हुआ शिद्दतसे ॥ बेहोश हुआ इस दुनियाकी विद्दतसे ॥ हरवक्त जबांसे कहा करूं मैं ऐसे ॥ भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥ शोलये नूर दिलमें मेरे भबकेहै ॥ अशरत की मै हरदम उसमें टपके है ॥ लौलगीहै और दिल उस लौमें लपके है ॥ इस नशे से अब कब आंख मेरी झपके है ॥ आती है यही आवाज हर जगह नैसे ॥ भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥ मालूम हुआ मै मौत कि येः दारू है ॥ हर गुलोंकि रूहहै खिंची ये वो गुलरू है ॥ रिन्दानो की महफिलमें यही महरू है ॥ और इस्से बेहतर नहीं कोई खुशबूहै ॥ तूपिला दे मुझको यार बन पडे जैसे ॥ भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥ यक रोज सामने मेरे मुहतासिबआये ॥ बोले मैं पीना कौन तुझे सिखलाये ॥ औ देख कराबे मैके वोः घबराये ॥ बोला मैं येः क्या खुदाने नहीं बनाये ॥ फिर कहने लगे मुहतासिब भी मुझसे यूंसे ॥ भरदेप्याला लबरेज साकिया मैसे ॥ बीनो रबाब मिरदंग कि तयारी हो ॥ मीने में मीने की मीनाकारी हो ॥ गुल पास में बैठे हों और गुलजारी हो ॥ कहे बनारसी उस वक्त वोः मै जारी हो ॥ हर-वक्त राग फिरबजा करै इस लैसे॥भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे॥

ख्याल शराब अंतहूरा जो हम पीते हैं-बहर छोटी।

मे वोह है इसे क्या पियेंगे ऐसे वैसे ॥ वोः पियेंगे जो मै होके

मिले हैं मैंसे ॥ मिलगया जब उसके रंगमें रंग गुलाबी ॥ आगया नशा वहदत का मुझे शिताबी ॥ है जिगर यह मेरा जला औ भुना कबाबी ॥ हुई दिलको सेरी गई वोः सब बेताबी ॥ क्या जाने शेख मस्ती केहै प्याले कैसे ॥ वोः पियेंगे जो मै होकें मिले हैं मैंसे ॥ यह सफेद भी और सुर्ख जाफरानी है ॥ हो रुखपे आब पीनेसे येः वोः पानी है ॥ मजहब इसका रिन्दाना लासानी है ॥ टपके है नूर चेहर पै वो पेशानी है ॥ जोवेताले हैं वाकिफ नहीं इस लैसे ॥ वो पियेंगे जो मैहोके मिले है मैंसे ॥ यह फकीर इसकी लौ सबसे दूनीहै ॥ मै खाने में जगती जिसकी धूनीहै ॥ लडने में शूरमांहै औ-रयेः खूनीहै ॥ है वगैर इसके जो बस्ती सूनीहै ॥ यहीसदा कन्हैयाने भी बजाई नैसे ॥ वोः पियेंगे जो मै होके मिले हैं मैसे ॥ दारुये शफा है इसी से हम पीते हैं ॥ पीते हैं बहुत पर ऐसी कम पीते हैं ॥ रम रहे हैं उसमें हम वोः रमपीते हैं ॥ और देवीसिंह भी दमपर दम पीते हैं ॥ गाये बनारसी इसीकि ध्वनिमें लैसे ॥ वोः पियेंगे जो मै होके मिले हैं मैसे ॥

ख्याल शराबके पीने में जो लुत्फ है वो मुझे मिला—बहर छोटी ।

वोः मजामिला मुझको इस मै नोशीमें ॥ छुट गई ये दुनिया आ-पसे बेहोशीमें ॥ मैंने कुछ इरादा किया न मै पीनेका ॥ वोः काम जो देखा मीने में मीनेका ॥ था नकशा उसमें खिचा सदा जीने का ॥ औ रंगभि उसमें भराथा रंगीनेका ॥ पीतेही जबां आई खुद खामो-शीमें ॥ छुटगई ये दुनिया आपसे बेहोशीमें ॥ लेतेही जाम अंजामवोः उसका पाया ॥ गफलतने होशियारीका मजा दिखाया ॥ जिसवक्त नशा वो मेरी आंखमें आया ॥ बन्देसे खुदाने मुझको खुदा बनाया ॥ आगया जमाना मुझे फरामोशीमें ॥ छुटगई ये दुनिया

ापसे बेहोशीमें ॥ मौसम तो गुलाबीसे न कोई आला है ॥ दिल
सी इश्कमें मेरा मतवाला है ॥ चश्मोंने रंग अब लालीपर डाला
॥ जामे जमसे बढकर मै का प्याला है ॥ ये सखुन जुबांसे कहा
र्मजोशीमें ॥ छुट गई ये दुनिया आपसे बेहोशीमें ॥ आबे हैवांमे
हां भलायः आबहै ॥ दो जेहां में आला सबसे बनी शराबहै ॥ वेद
ौ पुरान कुरानका यही जवाबहै ॥ आजाब न इसको कहो ये बडा
वाबहै ॥ पी बनारसीने सनमकी आगोशीमें ॥ छुटगई ये दुनिया
ापसे बेहोशीमें ॥

़्याल खुदाके दीदारकी शराब मैं पीता हूं—बहर छोटी

साकिया पिला सागरे दीद उस मुलका ॥ वहेदतहो जिस्में भरी
स्ल तुझ गुलका ॥ अब मये मुहब्बत आकर मुझे पिलादे ॥ और
ामतु अपनी दीदका मुझे दिलादे ॥ दिलसे दिल अपने जिग-
से जिगर मिलादे ॥ दीदार कि दारू सेतू मुझे जिलादे ॥ गुलहो
ुलशनमें मचे शोर कुल कुलका ॥ वहेदतहो जिस्में भरी वस्ल
ुझ गुलका ॥ शौके शराबका भरके पैमानाला ॥ इश्ककी सुराही
ाथमें जानानाला ॥ मय पिला मुझे उस नूर का मै खानाला ॥ गुल-
ानमें गुलाबी रंग तुशाहानाला ॥ मालूम हालहो नशेमें आलम
ुलका ॥ वहेदत होजिस्में भरी वस्ल तुझ गुलका ॥ मैं तुझे
ेलाऊं तू मै मुझे पिलाये ॥ जब लुत्फ इश्कका खूब दूबदू आये ॥
कहूं और देतूभी यही फर्माये ॥ वोः बात हो जिसकी बात न
ोई पाये ॥ कुदरतका कराबा मेरे जाममें ढुलका ॥ वहदतहो
जिस्में भरी वस्ल तुझ गुलका ॥ शीशे दिलमें भरदे तू मेरे अंगूरी ॥
सलिये कि होवे दिलकी दूर कदूरी ॥ वो जलवा अपनादिखादे
ुझको नूरी ॥ कहे बनारसी दिलकी मुरादको पूरी ॥ मैपीके चहक
ा रहेयेः दिल बुलबुलका॥वहेदतहो जिस्में भरी वस्ल तुझ गुलका॥

ख्याल जो मेरे आँखोंसे शराब टपकती है मस्तीमें वोः मैं पीता हूं-बहर छोटी।

चश्मोंमें भराहै रंग गुलाबी गुलका ॥ अश्कोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ ये आंख मेरी वहेदतका पैमाना है ॥ अब इसी को हमनें समझा मैखाना है ॥ चश्मोंसे ज्यादा कोई न मस्ताना है ॥ देखो तो इसमें क्या रंग शाहाना है ॥ हैभरा नशा आंखोंमें आलम कुलका ॥ अश्कोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ जब चुयेंगे आंशू मेरी चश्म गिरियांसे ॥ मै समझके हम पीवेंगे इन्हेंजी जांसे ॥ मै खोरीका नाहिं लेंगे नाम जबांसे ॥ रोरोके पियेंगे अश्क लबे बिरियांसे ॥ हुचकियोंसे मेरे होगा शोर कुलकुलका ॥ अश्कोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ बादाम भिये हैं नरगिसके प्याले हैं ॥ देखा हमने ये पूरे मतवाले हैं ॥ येनैन हमारे गुलशन गुल्लाले हैं ॥ मैकेइनमें भररहे नदी नाले हैं ॥ जबचाहे खुमके खुम दम्मेदे ढुलका ॥ अश्कों को पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ उसपरीका आलम आंखों में छायाहै ॥ इसबादेकशीसे अब दिल घबरायाहै ॥ मैसे ज्यादा अश्कोंमें मजा पायाहै ॥ मजमून ये देवीसिंह ने नया-गाया है ॥ हैयही सखुन आशक सादिक बुलबुलका ॥ अश्कों को पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥

ख्याल शराब का मुझको अपने हाथसे खुदा पिलाता है-बहर लंगड़ी।

मेरा जाम हरवक्त हरघडी दम्पर दम साकी भरदे ॥ मै खाने में जो कुछ अबरहा है वोः बाकी भरदे ॥ इसीका मैं प्यासा हूं मेरे सागर में कुलसागर भरदे ॥ और जहांमें जहां कुछ मिले वो तू लाकर भरदे ॥ मैं तो नहीं करने का नहीं दिल खोलके तू दिलबर भरदे ॥ प्यार से अपने मेरे प्याले में परी पैकर भरदे ॥

शैर—करूं मैं इसके तईं जिस घडी खाली भरदे ॥ प्यारसे अपने
ारी आके तू प्याली भरदे ॥ जहांतक होवे तेरे पास कलाली
भरदे ॥ सफेद जर्द गुलाबीमें भी लाली भरदे ॥ रहूं सुर्खरू
ारे रूबरू अपनी मुश्ताकी भरदे ॥ मैं खाने में जो कुछ अबरहा
वोःबाकी भरदे ॥ अबतो दौर आया है मेरा तू जाये बिल्लू-
ी भरदे ॥ भरदे केतकी की मैं और इसी में अंगूरी भरदे ॥ शीशे
दिल है साफ मेरा तू इसी मे मय नूरी भरदे ॥ भरदे करावा सुराही
ी मेरी पूरी भरदे ॥

शैर—मरीजे इश्कहूं प्यारे मुझे दारू भरदे ॥ जिऊं मैं जिसके पिये
मुझे वह तू भरदे ॥ खिचेहों जिस्में हरएक गुलवोःतू गुलरू भ-
दे ॥ रूहहोजिस्में तेरी मुझको वोःमहरू भरदे ॥ करूं धूम कुल
ालम में वोःशोरय आफाकी भरदे ॥ मय खानेमें जो कुछ अब-
हाहै वह बाकी भरदे ॥ रँगूं मैं अपना दिल मयसे तू इसीकी रंगी-
ी भरदे ॥ तल्ख भी भरदे तुर्श और तोफा शीरीनी भरदे ॥ लगा-
ऽ दस्तरखान तु उसमें गिजावोः नमकीनी भरदे ॥ शौकहो दिल
मेरे तू इसी कि शौकीनी भरदे ॥

शैर—मैं तुस्से कुछ नहीं मांगूं शराबतू भरदे ॥ मिलाके उसमें वोः
ोडा गुलाब तू भरदे ॥ आब जिस आब में होवे वोःआबतू भरदे ॥
ालकहो दिल में मेरे आफताबतू भरदे ॥ बनी रहे लाली दुनियामें
अपनी अशफाकी भरदे ॥ मय खाने में जो कुछ अब रहाहै होः
ाकी भरदे ॥ पास न आये गैर मेरी महफिल तू रिंदानी भरदे ॥
ास्त रहूं मैं सोहबते यारबमस्तानी भरदे ॥ बनारसी की जुबांन में
ातें हक्कतू हक्कानी भरदे ॥ चश्म में उसकी नूर तू अपना नूरानी भरदे॥

शैर—मये वहेदत जो तेरे पासहै मुझको भरदे ॥ जो मांगूं एक मैं

प्याला तो मुझेदो भरदे ॥ फिर तीसरा जोमैं मांगूं तो खुशीहो भरदे ॥ नदेतू गैरको प्यारे येः मुझेतो भरदे ॥ जो कुछ मेरा निकले वो आजतू सबकी बेबाकी भरदे ॥ मयखाने में जो कुछ अबरहा है वोः बाकी भरदे ॥

मय अंतहूरा जो जन्नतमें लोग पीते हैंवो मुझे खुदा यहां पिलाता है-बहर लंगडी ।

जन्नतमें जो सुना तो ह्वां पर भी वो सदाये है कुलकुल ॥ पिऊं न क्यों मुल जो मुझको खुदा पिलाये वोः बिल्कुल ॥ मस्ताना मैं बनूं और मौला बने मेरा आकर साकी ॥ तौशीशे में मै एक कतरा भी नहीं छोडूं बाकी ॥ बे होशी आलम से हो और उधर कि होवे मुश्ताकी ॥ कुलजहान में मेरा फिर मचे वोः शोरे आफाकी ॥

शैर-खुमार उम्रभरउतरेनहींआंखोंसेमेरे-नशेमेंचूररहूं ॥ सुरूर इसकदर होवे कि आसमांपे चढे-खुदीसेदूररहूं ॥ जामें वहेदत जोतू भरकर वोः मुझे आपसेदे-तेरेहुजूररहूं ॥ मयकदेमें कभीजाऊं तो बैठूं पासतेरे-नतुझसे दूररहूं ॥ जुबांमेरी हरवक्त दहनसे यही करे है शोरोगुल ॥ पिऊं न क्यों मुल जो मुझको खुदा पिलाये वोः बिल्कुल ॥ अजब खुदाकी कुदरत यह तलखी है बनी शीरींनीसे ॥ जुबांपे लज्जत येदेतीहै मिलकर निमकीनीसे ॥ और सुनो यक सखुन ये मैं ने कहाहै नुक्तेचीनीसे ॥ हैरां हैं सब रंग मय वहेदतकी रंगीनीसे ॥

शैर-मरीजे इश्क जो होवे तो उसकी जान हैये-येहै दारुये शफा॥ करे जो हकका तसव्वर तो पूराध्यानहै ये-देवेलौ उससे लगा ॥ दीनो दुनिया को बनाहै बडा ईमान हैये-सुनो तो मुझसे जरा ॥ न गब्रहै और न हिन्दू न मुसलमान हैये-येतो है जाते खुदा ॥ करे

ख़ें रूह खुदाके आगे खिचेंहैं जिसमे हरेक गुल ॥ पिऊं न क्यों मुल
। मुझको खुदा पिलाये वोः बिल्कुल ॥ वहिश्त का चश्मा है और
ौशर का पानी शराबहै ॥ ला जवाबहै कहां आवे है वांमें ये आब-
॥ खराबहै वोः शख्सजो कोई इसको कहता खराबहै ॥ आफताबहै
ोशनी इसकी आलीजनाबहै ॥

शेर—शीशये दिलमें इसे भरके तू आखों से मिला—देख इस रंग
ोतू ॥ बनाये जिसने जहां में भला हैं रंग क्या क्या—वोही है तेरा
रू ॥ कहे वो तुस्से कि मय पीतो उस्से मुंहन चुरा—उसीसे करले
जू ॥ पीतेही इसको नजर आये वोः उसका जलवा—मिले गुलजार
ी बू ॥ जाफरान केतकी मुश्क अंबर सब इसमे रहाहै घुल ॥
ऊं न क्यों मुल जो मुझको खुदा पिलाये वोः बिल्कुल ॥ हाथसे
पने गुलन्दाम तू मुझे गुलाबी भर भरदे ॥ किसी को होवे नहीं
लूम बात रहे दर परदे ॥ येहै बात पोशीदा इसके तईं तु जाहिर
त करदे ॥ कहे देवीसिंह हम आशक रिंद तेरे हैं आवरदे ॥

शैर—जाम वो देके बुराई का कुछ अंजाम नहो—पिला तो ऐसी
ला ॥ नाम वो देके जहां मे कहीं बदनाम नहो—नकरे कोई गिला ॥
म वो देके मेरा हाथ येबेदाम नहो—मैं दूँमस्तोंको खिला ॥ काम
देके जहांमें कोई बदकाम नहो—मोहतसिब से न मिला ॥ बनारसी
ी राजे नेहां सब इसी सबबसे रहा है खुल ॥ पिऊं न क्यों मुल जो
झको खुदा पिलाये वह बिल्कुल ॥

ख्याल तौहीद मयका आफताब मुझे पिलाता है—बहर खडी ।

जिधरको देखूं उधर रोशनी आफताबकी तमान है ॥ पिऊं न
य मैं क्योंकर जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है ॥ चश्म नहीं हैं हमें

खुदाने आप गुलाबी जाम दिये ॥ मये दीदके प्याले भरभर मुझे
बरसरे आम दिये ॥ चली वह बादे सबा इस्कदर हाथ हमारे था
दिये ॥ तौभी परी पैकरने मेरे मुँह लगा वो आठो जाम दिये ।
कहे जो इसको हराम उसका खाना पीना हराम है ॥ पिऊं न मय
मैं क्यों कर जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है ॥ एक तरफ आतिश
भडके औ एक तरफ बारिश आब है ॥ मेरे दिलके मयखानेमें
दोनों तरहका हिसाब है ॥ जिगरमें शोला उठे और चश्मोंसे टपके
शराबहै ॥ जुबां यही कहती है मेरी लज्जत इसकी लाजवाबहै ॥ कुल
जहानमें सुनाहो तुमने मस्ताना मेरा नाम है ॥ पिऊं न मय मैं क्यों
कर जिंदा रहूं मेरा यह कलाम है ॥ दिलमें गौर कर देखातो फि
दौर हमारा आयाहै ॥ आज हमें साकीने दुबारा सागर आप पिला
याहै ॥ देख मेरी बदमस्तीको मोहतासिबने यह फर्मायाहै ॥ यह
जोशे वहशत कहांसे तेरी नजरों बीच समाया है ॥ कहा ये मैंने
आंख हमारी मय वहेदतका गुदाम है ॥ पिऊं न मय मैं क्योंकर
जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है ॥ सुना सखुन मोहतासिबने यह तब
उसके दिलमें होश हुआ ॥ यातो मने करताथा मुझे या आपी वोः
मय नोश हुआ ॥ चढा नशा जब इश्कका उसको जहांसे वोः बेहोश
हुआ ॥ कहा पिऊंगा मैं हरदम इतना कहकर खामोश हुआ ॥ बना-
रसी कहे हमें तो इस दारूका पीना मुदाम है॥पिऊं न मय मैं क्योंकर
जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है ॥

अपने जिस्मकामयखानामयेतौहीदवहमुझे पिलाताहै—बहर खडी ।

आतिश इश्ककी भडकरही है इसदिलके मयखानेमें ॥ मये मुह
ब्बत पिला दे साकी उलफतके पैमानेमें ॥ यकताईका आलम हो
और वहेदत काहो रंगभरा ॥ तुझ गुलकी हो खुशबू जिस्में वोः

राब तू पिलाजरा ॥ गमकी होवे गिजा साथमें वह खासा हो पास
रा ॥ और मार्फत काहो मीना करामातका कामकरा ॥ आफता-
की होवे रोशनी मेरे दिल दीवानेमें ॥ मये मोहब्बतपिलादे साकी
ल्फतके पैमानेमें ॥ मस्तीका हो सुरूर हरदम बादे सबाभी चल-
ीहो ॥ और गुलाबी मौसम हो हर गुलसे महेक निकलतीहो ॥
जे बीन औ रबाब वोः काफूरी शर्माभी बलतीहो ॥ जिस महफिल
ो देखके हर मोहतासिबकी छाती जलतीहो ॥ भडक उठे शोलये
र पहेलूमें मेरे शानेमें ॥ मये मुहब्बत पिलादे साकी उलफतके पै
ानेमें॥पास हमारे दिलबर हो फिर और सदाये कुलकुलहो ॥ जोशे
लमें हो कहकहाभी हो शोरोगुलहो॥शीशा सागर सुराहीहो और
लिस्तान गुंचे गुलहो ॥ हाथमें हो दिलबरका हाथ हर बातमें वो
ाकरे मुलहो ॥ कबाब की लज्जत हुई हासिल अपना जिगर जलाने
॥ मये मोहब्बत पिलादे साकी उलफतके पैमानेमें ॥ दीदारतेरा
रू शफाहै जिसे मिला वो मस्त हुआ ॥ बदमश्तों में बैठ बैठ
र बनारसी अलमस्तहुआ ॥ चांद सा चेहरा देखतेही तेरा वो सू-
 अस्तहुआ ॥ दस्तगीर वो हुआ के जिसका तेरे दस्तमें दस्त-
आ ॥ कहा ख्याल तौहीद मजाहै इश्क मार्फत गानेमें ॥ मयेमो-
ब्बत पिलादे साकी उलफत के पैमानेमें ॥

ईकुलजहानमेंअपनेसिवा औरनहींदिखायीदेताहै-
बहर लंगडी।

कहोकिसे मैं देखूं देखा आलम में कुल हमीं तोहैं ॥ कहीपेगुल
कहीं पर आशके बुलबुल हमीं तो हैं ॥ कहीं अनलहक बने
हीं मंशूर कहीं परदार हैं हम ॥ कहींपे सरमद कहीं सरलेनेको
लवारहै हम ॥ कहींशम्सतबरेजकहीं खुर्शीद उसीके यार हैं हम ॥
हीं येक हैं पर देखो विना शुमार हैं हम ॥

शैर—कहीं लैला बने हम और कहीं मजनू की सूरत हैं॥कहीं फरहाद बन बैठे कहीं शीरीं की मूरत हैं ॥ कहीं मस्जिद कहीं मंदिर कहीं काबा कहीं किबला ॥ कहीं हम हैं नजूमी और कहीं ज्योतिष मुहूर्त हैं ॥ कहीं बले खामोश किसी जापर शोरो गुल हमीं तो हैं ॥ कहीं पे गुल हैं कहीं पर आशके बुलबुलहमीं तो हैं ॥ किसी जगह पर शरय कहीं बेशरय में बोले हमीं तो हैं ॥ कहीं पे स्याने कहीं पर बाले भोले हमीं तो हैं॥कहीं पे आतिश आब कहीं पर पडे फफोले मही तो हैं ॥ कहीं पे रत्ती कहीं पर माशे तोले हमीं तो हैं ॥

शैर—कहीं महहैं कहीं अख्तर कहीं पर अब्र नैसां हैं ॥ कहीं हिन्दू हो बुत पूजें कहीं पर हम मुसल्मां हैं ॥ गरज जितनेही दीन हैं कुल जहां में अपनेहीं समझो ॥ मकां हैं लामकां हैं हम तो जाहर भी औ पिनहाँ हैं॥कहीं बने मय खोर किसी जापर साकी मूल हमीं तो हैं ॥ कहीं पे गुल हैं कहीं पर आशके बुलबुल हमीं तो हैं ॥ कहीं पे बन्दे बने कहीं पर खुदा खुदाका नूर हैं हम ॥ कहीं पे मूसा कहीं जलवा और कहीं कोहतूर हैं हम ॥ कहीं किसी के पास रहैं और कहीं किसीसे दूर हैं हम ॥ कहीं मलायक कहीं पर परिस्तान और हूर हैं हम ॥

शैर—कहीं तन पर रमाये खाक हम बन बन में फिरते हैं ॥ कहीं सुमरण हैं हम और हम कहीं सुमरण में फिरते हैं॥तुम अपने दिलमें मुझको गौर कर देखो तो मैं क्याहूं॥हमीं दम हैं हमीं हम दम हमी हर मन में फिरते हैं ॥ कहीं बने पेशानीकहीं उस रुख पर काकुल हमीं तो हैं ॥ कहीं पे गुल हैं कहीं पर आशके बुलबुल हमीं तो हैं॥कहींबादशाहबनेकहीं परआकरहुये फकीर हैं हम ॥ मुरीदभीहैं किसी जा और कहीं पीर हैं हम ॥ कहीं निशाना बने कहीं

पर कमां कमां के तीर हैं हम ॥ कहीं शमा हैं कहीं पर परवाना गुलगीर हैं हम ॥

शेर—जिधर देखो उधर हमको हमीं हरजा पे रहते हैं ॥ कहीं दरिया हैं हम और हम कहीं दरिया में बहते हैं ॥ तबक चौदा के ऊपर यफ मकां है लामकां अपना ॥ वहां कायम हैं और हम येह सखुन इस जापे कहते हैं ॥ बनारसी कहे मुझे अगर देखो तुम बिल्कुल हमीं तो हैं ॥ कहीं पे गुलहै कहीं पर आशके बुलबुल हमीं तो हैं ॥

जो सच्चा आशक है उसका मकां लामकां है—बहर छोटी।

लामकां आशकोंका नहीं कहीं मकां है ॥ जहाँ खुदाहै मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ मालूम है मुझको जोके चीज निहांहै वाकिफ हूं और कहता हूं वोः यार कहां है ॥ हूं जईफपर दिल मेरा बडा जवां है ॥ नाताकत हूं पर मुझमें बडी तवां है ॥ जहां फना है मेरे लिखे वोही जहां है ॥ जहाँ खुदाहै मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ जहां खामोशी है वहीं पे शोरो फिगां है ॥ जहां सर्द है नारा वहीं आतिश सोजाँ है ॥ जहां हिज्र हैं उलफत काभी वहीं सामां है ॥ जहां लहर बहर है वहीं बडा तूफां है ॥ क्या कहूं मैं कहती मेरी यही जुबां है ॥ जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ हूं लिबास पहने पर यह तने उरियां है ॥ बस्तीको समझता हूं मैं ये वीरां है ॥ जहां मुसलमीनहै वहीं पे हिन्दुस्तां है ॥ मस्जिद में मेरे उस बुतका बना निशांहै ॥ आशक की आह है यही तो एक अजां है ॥ हेजां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ जिन्दा है वहीजो जानसे भी हेजां है ॥ करता है सैर वोः इश्कमें जो हेरां है ॥ नादानको भी कहता हूं मैं वोः इसाँ है ॥ येः अक्ल है मेरी और यह फहम कहाँ है ॥ कहेबनारसी हर मिसरा मेरा कुरां है ॥ जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥

अपना जो जिस्म है ओही अव्वल देहली शहर चलता फिरता है—बहर लंगडी।

शहर है देहली एक जगह मैंने चलती फिरती देहली ॥ ये है वो देहली कि जिस्से रोशन है बिल्कुल देहली ॥ चश्म गोश बीनी-मुः दन्दाँ जबां ये इसकी वस्ती है ॥ शिकम वो सीना दस्तपा दु-रुस्त मनमें मस्ती है ॥ यादे इलाही में जिस जिसकी यारो चश्म वरसती है ॥ आँख उसीकी हमेशा करती हकपरस्ती है ॥ आदमके दमसे रोशन गुलजार ये बागे हस्ती है ॥ बेश है कीमत इसीकी और जिन्स सब सस्ती है ॥

शैर—य वो देहली है इसकी सैर कुछ फुकराही करते हैं ॥ औ दुनिया दार जितने है वोः उनका दमही भरते हैं ॥ फकीरी वोः है इसमें जो कदम दमभर भी धरते हैं ॥ मिले मौलासे अपने फख्रमें पूरे उतरते हैं ॥ इसीवास्ते मैंने भी सूरत फुकरा ओं की यहली ॥ ये है वो देहलीके जिस्से रोशन है बिल्कुल देहली ॥ आदमकाहै जिस्म इसे तू समझ ये दिल्लीका दिल है ॥ करे इबादत नहीं तो येभी पत्थर औ सिल है ॥ अकलसे इसको देख तो येतन आब हवा आतिश गिल है ॥ इसी में मौला है बैठा अलग और इस्से शामिल है ॥ विना इबादतके तो जिस्म ये बना छछूंदरका बिल है ॥ बडी है बदबू और इसमें लाख वजेहकी किलकिल है ॥

शैर—है जिसके पास में कुछ धन वो तो गफलत में सोताहै ॥ जो मुफलिस है वो तो खानेहीं और पीनेको रोता है ॥ कोइ कहता ये बेटा है ये नाती है ये पोता है ॥ कोई कहता मेरे आगे तो कुछ नहीं है नहोता है ॥ कर सद्गुरूका भजन जो तूने ये काया कंचन गेहली ॥ ये हैं वो देहलीके जिस्से रोशन हैं बिल्कुल देहली ॥ एसी देहली

कहां मिलेगी फिर तुझको हरबार भला ॥ अब जो मिली हैं तो तु करदे इसको गुलजार भला ॥ तुख्म वोः इसमें बोके जिसमें पैदा नहीं खार भला ॥ यादे इलाही तु कर और इसकी देख बहार भला ॥ छोड कुटुंब परवार तु होजा फकीर और मनमार भला ॥ भला ये चाहो तो दिल में रहम तो कर वो यार भला ॥

शैर—ये दो बातें हैं नेकी की जो करना है तौ तूकरले ॥ नहीं चल छोड दिल्ली को निकल अपना अलग घरले ॥ जो मरना है तुझे तो मोतके पहलेही तूमरले ॥ नकर दिलमें गुरूरे जिस्म तो इस्का दुख हरले ॥ उसके नामकी अपने तनपर पहरले अब कफनी देहली ॥ येहै वो देहली कि जिस्से रौशनहै बिल्कुल देहली ॥ खुदाने इस देहली का बनाया है बो शाहनशाह तुझे ॥ बख्शा तुझको ये तन तख्त बताई राह तुझे ॥ तू इसको पहेचान अगचें हो कुछ खूब निगाह तुझे ॥ इसीमें उसका है जलवा देखजो हो कुछ चाह तुझे ॥ नहींतो ये लुट जायेगी करदेगी खूबतवाह तुझे ॥ विना इबादतकरे क्या जाने क्या अल्लाह तुझे ॥

शैर—विना उसके तसव्वर फिर तुचौरासी में जायेगा॥कहां जायेगा क्याजाने वोः तुझको क्या बनायेगा ॥ काल जिसवक्त आकरके तुझे धक्का लगायेगा ॥ जडी बूटी दवा हुक्मां नतेरे काम आयेगा ॥ बनारसी कहे हरहर भज इसलिये ये है उसकी देहली ॥ येह वो देहली के जिस्से रोशन है बिल्कुल देहली ॥

सिफत खुदाके फकत चेहरे की—बहर शिकस्ता ।

वो नूरे रौशन कमर से बेहतर तबक तबक पर खिला उजाला ॥ किया तावो ताकत गर उस्को देखे वोः मेरा दिलबर हैसप्पे बाला ॥ जो जुल्फ उसका अगचें देखे तो पेंच खाये चमनसे सम्बुल ॥ हरेक

बलमें हैं उसके छल बल वो दामे उल्फत है उस्की काकुल ॥ वो
गेसू उसके तो मुश्के चींहैं गोया गुलिस्तां में सोसने गुल ॥ यां
वो अबरे सिया फलक पर या हैं आयते कुराने बिल्कुल ॥ फसा है
उसमें यह तायरे दिल अजीब फंदा है मुझ पै डाला ॥ क्याताबो ता
कत गर उस्को देखे मेरा वोः दिलबर है सप्पे बाला ॥ हैनो जवानी
में वो पेशानी और उस्का माथा मेहर से रौशन ॥ वो चीने उसकी
किरन हैं खुरकी चमक दमकमें कमर से रौशन ॥ और वो सफाई हुस्न
खुदाई हरेक जिन और वशर से रौशन ॥ औवो पसीना गोया नगी
ना हरेक आबे गौहर से रौशन ॥ सुनी है उसकी सिफतये जिसने
झुकाके माथा जमी पे डाला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखे
वोमेरा दिलबर है सप्पे बाला ॥ वो अबरू दोनो झुके हैं उसके गो
या कमां यकता है खिंचीसी ॥ औ तीरे मिजगां चढे है जिसपर न
जरये किसपर है अब कहेर की ॥ अगर खफा होकर उस सनमने
जरा भि अपनी वो भौं सिकोडी ॥ तो गिर पडे लाखों सर जमीं
पर लगी नयक पल भी उसमेंदेरी ॥ या हैं वो तेगे दुदम चमकते
या खंजरे बुरां है निकाला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखेवोः
मेरा दिलबर है सप्पे बाला ॥ वोः चश्म आहू अगचें देखे तो आंख
हरगिज न हो मुकाबिल ॥ औ सर झुकाकर खडा हो नर्गिस उसी
कि आंखो पेहोके माइल ॥ वो खूनी नैना और टेढी चितवन पडे
जिधर को तो क्या हो हासिल ॥ कोई हो मुर्दा कोईतडपता कोई
शिसिक्ता औ कोई बिस्मिल ॥ औ मस्त दोनों पिये हुये मय भरे
नशे में लिये हैं प्याला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वोः मे
रादिलबर है सप्पेबाला ॥ वो बीनी उसकी अलिफ की सूरत जो उस
को देखे कहे वो अल्ला ॥ फडक वो नथुनो की इसकदरहै किदिल
तडपता है मेरा वल्ला ॥ लभाये शीरीं में है वो लज्जत के ओट चाटें

रेक शौदा ॥ वो बातें उसकी हैं भोली भाली न ऐसी बोली
हीं हो पैदा ॥ सुने अगरचे जो गोश करके ओ उसके बातों
ो फेर माला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वो मेरा दिलबर
सप्पे बाला ॥ कभी अगचें वो हँसके बोले तो चमकें उस गुल
ऐसे दंदां ॥ जिगर गोहरकाछिदे जो देखे औदांत पीशें लाले बद
शां ॥ ये सिफत सुनते ही खून सूखा विका बे कदर जहां में मर्जा॥
ौ बर्क ऐसी गिरी तडप कर किहोश उसका हुआ परेशां ॥ बयां
या करूं दहन का उस्के हुआ तंग दिल न बोला चाला ॥ क्या
ाबो ताकत गर उसको देखे वो मेरा दिलबर है सप्पे बाला ॥ येफक
चेहरेकी यक सिफतहै जो अक्ल अपनी में कुछथा आया ॥
यां वो मैंने किया ज़ुबाँ से प भेद उसका जरा न पाया ॥ कोई कि
ाबें बनाके थक गये किसीने सीखा किसी ने गाया ॥ हजारों मु-
लांकरोडों स्याने कोई इमतहांन उसकी लाया ॥ फजल उसीका
वातो देखा बनारसी ने वोः वारी ताला ॥ क्या ताबो ताकत गर
स्को देखे वो मेरा दिलबर है सप्पे बाला ॥

ख्याल उलटा मतलब सीधा मुश्किल–बहर लंगडी ।

बुतासे मैंने कुरान सीखा काबे में पोथियों की बात ॥ दीनसे जब
हुआ बेदीन बना फिर खुदाकी जात ॥ जब मुस्से आपडी लडा-
भाग गये तो जीता जंग ॥ जख्म जिगरके हुये आरामलगे जब
ीरो तुफंग ॥ बेहोशीहुई दूर लगा मय पीने मयखोरोंके संग ॥
जब इश्कका रास्ता उलटा और सीधा है ढंग ॥ जोरू खसम
रगये तो शादी हुई खुशीसे चढी बरात ॥ दीनसे जब मैं बना
दीन हुआ फिर खुदाकी जात ॥ गदा हुआ तो भीख न मांगी
ुटाया सबी खजानेको ॥ पादशाह जो बना मुहताज रहा हरदानेको ॥
हांको जिसने तर्क किया तो पाया असल ठेकाने को ॥ जीते जी

जो मेरा वह जीता सबी जमानेको ॥ मिली ऐश अशरत मुझको जबसे अपनी खोई औकात ॥ दिनसे जब मैं बना बेदीन हुआ फिर खुदा की जात ॥ मस्जिद में नाकूस बजाऊं मंदिर में देता हूं अजां ॥ बुतखाने में करूं सिजदा तोहो दंडवत वहां ॥ जिसकी कुछ सूरतही नहीं देखा तो वही है नूरे जहां ॥ इसके मायने कहूं किस्से यह तो है राजे नेहां ॥ हुआ मुझे आराम उठाली सरपर जबसे कुल आफात॥ दीनसे जब मैं हुआ बेदीन बना फिर खुदाकी जात ॥ सरको अपने बेंचके उस आफते इश्कको मोल लिया॥ सोदाई मैं बना तो वो सौदा अनमोल लिया ॥ देवीसिंह कहे बनारसीने भेद इश्कका खोल लिया ॥ यक राईसे कोह दर कोहको बिल्कुल तोल लिया ॥ हुये जमानेसे जो जिन्न तोकी बाजी शतरंज की मात ॥ दीनसे जब मैं हुआ बेदीन बना फिर खुदाकी जात ॥

खुदाकी नजरमें सब कुछ है वो जो चाहे सोकरे-बहर लंगडी।

एकनजरमें शम्सहै उसके और कमर यक नजरमें है ॥ एकनजरमें है आतिश आबेतर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें अमृत उसके और जहर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें कहर और लहर वहर यकनजरमें है ॥ यकनजरमें सितम है उसके और मेहर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें है मोहनी और सेहर यक नजरमें है ॥ यकनजरमें पीरो पयम्बर जिनो बशर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें है आतिश आबेतर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें बेखतरी और खौफ खतर एकनजरमें है ॥ एकनजरमें नफाहै और जरर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें कावाहै और बुतोंका घर एकनजरमेंहै ॥ एकनजरमें इशारा तेगोतबर यकनजरमेंहै ॥ एकनजरमें खफगीभी है नेक नजर यकनजरमें है ॥ एकनजरमेंहै आतिश आबेतर यकनजरमेंहै ॥ एकनजरमें जेरहै उसके

ौर जबर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें नातवां जोरावर यकनजरमें
॥ एकनजरमें गफलत है वो और खबर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें
ुफलिसी जहां काजर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें जिंदगानीभी मौत
ाडर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें है आतिश आबेतर यकनजरमें
॥ एकनजरमें भुलादे वोःदिखलादे दर यकनजरमें है ॥ एकनज-
में जीस्त है और महेशर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें देवीसिंह
सका दफतर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें कुलजहां दिल दिल वर
कनजरमें है ॥ एकनजरमें बनारसीभी मिनो चेअर यकनजरमें है ॥
ुकनजरमें आतिश आबेतर एकनजरमें है ॥

इश्क जो है सो दुःखका घर है परन्तु इस दुःखमें सुख बडा है–बहर लंगडी।

इश्क है खानये रंज पर इस खानये रंज में राहत है ॥ लुत्फ उसीको
ो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है ॥ इश्कमें जी जाना मैंने समझा
यही जी जाना है ॥ जाना जानाके दरपर जान बेचकर जाना है ॥
ुल्फत में रुसवा होना बस यही आबरू पाना है ॥ नादांको दिल
दिया जिस जिसने वोः आशके दाना है ॥

शैर–फसे जो इश्कके फँदे में वो दुनियासे कुल छूटे ॥ मजे लूटे
उन्होंने जिनके सब घर दर गये लूटे ॥ हमें वो खार देते हैं जो
ुलशन में है गुलबूटे ॥ खटकते हैं मेरे दिलपर वो कांटे लगके जो
ूटे ॥ इश्कके बीमारोंकी रौशन आलम वीचशबाहत है ॥ लुत्फ
ुसीको हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है ॥ जिगर जलाना आश-
कके हकमें ये बडी तरावट है ॥ आतशे गमसे अब अपनी आठो
ाहर लगावट है ॥ तनकी उरियानीको हम समझे ये खूब सजावट
॥ इश्कमें बिगडे जो आशक उन्हीं की बनी बनावट है ॥

शैर–हुआ जो इश्कमें मुफलिस वही जर दार होता है ॥ कटाये सर जो उल्फत में वही सरदार होता है ॥ जो दिलको छीनले दिलबर वही दिलदार होता है ॥ और आंखें बंदकर देखे उसे दीदार होताहै ॥ जोरावर है वही इश्कमें जो के हुआ नकाहत है ॥ लुत्फ उसीको हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है ॥ कैद जहांसे छूटे वही जो दामे मुहब्बतमें फस जाय ॥ निकले दोजखसे वोःजो इश्ककी आतिशमें धस जाय ॥ किसीके बशमें कभी नहो गर वो दिलबर दिलमें सब जाय ॥ करे उसी से रसाई कभी न जिस गुलका रस जाय ॥

शैर–मुहब्बत में जो दिल दागे वही बेदाग होता है ॥ नफा होता है उसको जोके जर उल्फत में खोता है ॥ वो हँसता है सदा जो उस सनम के गम्मे रोता है ॥ मिलाये तनको मट्टीमें वो अपने मनको धोता है ॥

मजा इश्कका यही कभी राहत है कभी कराहत है ॥ लुत्फ उसीको होहासिल जिसे इश्ककी चाहत है ॥ गम खाना आशकके हकमें ये न्यामतसे बेहतर है ॥ हर यक मकां हैं उसीके जिसका कहीं न घर दर है ॥ उसे खौफ नहीं किसीका है जिसको उस दिलबर का डर है ॥ अपने आपको जो पहेचाने वही अल्ला अकबर है ॥

शैर–पढेनहीं इल्मका दफतर अलिफ बेते न हम सीखे ॥ न तख्ति हाथसे पकडी नकुछ छूना कलम सीखे ॥ फकत इस इश्कके मकतबमें हम नामे सनम सीखे ॥ सिवा उल्फत के और हमें कुछ नहीं अपनी कसम सीखे ॥ देवीसिंह कहे बनारसी तेरी जबांमें बडी फसाहत है ॥ लुत्फ उसी को हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है ॥

इश्कमें रंज न हो तो कोई इसको नकरे—बहर लंगडी ।

गचें इश्क में रंज न होवे तौ कोई इसका नाम नले ॥ आशक वो
है रंजके सिवा कहीं आराम नले ॥ लाखो सदमें सहे जिगर पर
लबांसे निकले आह नहीं ॥ चाहनेवालेको रंजके सिवा किसीकी-
चाह नहीं ॥ गममें खुशी होवे सोई आशक किसीकि रक्खे ख्वाह
नहीं ॥ सिवाइश्कके दूसरी तरफको करे निगाह नहीं ॥ जो कि
लुत्फहे रंजमें ऐसा मजा कोई वल्लाह नहीं ॥ वोः क्या जाने जो
इसकी लज्जतसे आगाह नहीं ॥ जफाको समझे वफा अलमको छोड
और कोई काम नले ॥ आशक वोहै रंजके सिवा कहीं आराम नले ॥
जिसने इश्कको चाहा उसने गमखाना अखत्यार किया ॥ सिरपर
आरे चले तिसपरभी नहीं इन्कार किया ॥ आशक उसीको कहिये
जिसने दिलोजान निसार किया ॥ दागै इश्कसे जिगर सीना अपना
गुलजार किया ॥ दममें दमको दम करके अपने दमको दम दार
किया ॥ जिगर जलाया तो उस्से रौशन दिल दिलदार किया ॥
चाहे मरे चाहे जिये इश्कसे अलग कहीं विश्राम नले ॥ आशक
ओ है रंजके सिवा कहीं आराम नले ॥ दर्जा इश्कका हुआ रंजसे
गर इसमें कुछ रंज नहो ॥ फिर कोई इसको करे क्यों यह जवाब
तुम हमकोदो ॥ आशक था मनशूर दार पर चढा जान अपनी
दीखो ॥ लुत्फ उठाया इश्कका रंजको राहत समझा जो ॥ आह
इश्कने किये है क्या क्या सितम कहूं मैं क्या इसको ॥ गमके दरि-
यामें जिसने लाखो आशक दिये डुबो ॥ मुस्सेभी कहताहै यही तू
चैन सुबः और शामनले ॥ आशक वोहै रंजके सिवा कहीं आराम
नले ॥ मजा इश्कका रंजसे है गर इसमें रंज नहीं होता ॥ फिर कोइ
आशक अश्क अपनेसे मुंह क्यों कर धोता ॥ क्यों मरता शीरीपर
कोहकन और मजनूं क्यों कर रोता ॥ अपने सरको हाथसे वो सर

मदभी क्यों खोता ॥ बनारसी गर मजा न पाता तुख्म मोहब्बत क्यों बोता ॥ बहरे इश्कमें लहर देखी तो फिर मारा गोता ॥ मैं सलाम करताहूं रंजको चाहे वो मेरा सलाम नले ॥ आशक वो है रंजके सिवा कहीं आराम नले ॥

मैं ये कहता हूं कि तुम आपेको पहचानो तो तुम्हीं सब कुछ हो–बहर लंगडी ।

मैंने ये पूछाके बताओ मियांजी आप कहांके हो ॥ किस वस्तीके और किस गाँवके कौन मकांकेहो ॥ नाम आपका क्या है कौनसे दीन और किस ईमांकेहो ॥ जरा तो बोलो आप दीवानें किस दीवांकेहो ॥ हिन्दूहो या मुसल्मीन देहली या तुरकस्तांकेहो ॥ पण्डितहो या मोलवी या तुम हाफिज कुरांकेहो ॥ चीनकेहो या महाचीनके या ईरां तूरांकेहो ॥ किस बस्तीके और किस गाँवके कौन मकांकेहो ॥ इस दुनियामें आये कहांसे जमींके या आसमांके हो ॥ चश्मके घायल या मायल तुम जुलफे पेंचांकेहो ॥ किसपर दिल है फिदा तुम आशक हूरके या गिलमांकेहो ॥ सच्चतो कहदो के जख्मी तुम तीरे मिजगांकेहो ॥ आपने कुछ नहिं किया बयां तुम जुबांके याबे जुबांकेहो ॥ किस बस्तीके और किसगांवके कौन मकां केहो॥फिक्र आपको क्या है बयां कुछ करो या तुम बेबयांकेहो॥किस गुलशन के हो गुल या खार कोई वीरां केहो ॥ सरसे पैर तक देखा तो तुम अजब सरो सामांकेहो ॥ शुक्रभी आदम की हो फरजंद कोई इंसाँके हो ॥ ये मैं पूछता हूं तुम से कुछ वाकिफ राजे निहां केहो ॥ किस बस्ती के और किस गाँवके कौन मकां केहो ॥ खुदा है तुम में तिसपर भी तुम वाकिफ नहीं दो जहांकेहो ॥ मिलो जो उस्से तो फिर तुम मालिक कौनो मकांकेहो ॥ ऐसी करनी मत करना जो यहां केहो ना वहां केहो ॥ देवीसिंहका कहा मानों तो

नामो निशां केहो ॥जवाब इसका दो जो लडने वाले उस मैदाँकेहो ॥
किस बस्ती के और किसगाँवके कौन मकां केहो ॥

जिसके दिलपर हर वक्त खुदाकी याद रहती है उसका रास्ता दुनियासे है-बहर छोटी।

जिसके दिल पर दिलबरका नाम बस्ता है ॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ता है ॥ सर्दी में आशक पीते हैं सरदाई ॥ गर्मीमें शंखिया खाँय रहे गर्माई ॥ बारिश में सूखें धूप में हो हरियाई ॥ ऐसे मस्तोंसे सबी बात बनिआई ॥ वोदागको समझें दिलपर गुलदस्ता है ॥ उन मस्तोंका देखो उलटारस्ता है ॥ वो दिनको सोवें सारी रात भर जागें ॥ शूरोंसे लडें गिर्दीको देखकर भागें ॥ नहिं मिले तो मांगे भीख मिले तो त्यागें ॥ ऐसे शाहोंसे हरेक बादशाह मांगें ॥ ऐसे शाहोंसे हरेक बादशाह मांगें ॥ अनमोलहै सौदा वो भी उन्हें सस्ता है ॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ता है ॥ मंदिरको तोडकर मस्जिदको चुनवावें ॥ मस्जिद को तोडके मयखाना बनवावें ॥ खेतीको सुखा ऊपरमें अन्न उपजावें ॥ आशक सादिक जो चाहेकर दिखलावें ॥ ऐसे मस्तोंको कोई नहीं हँसता है ॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ता है ॥ जब पेट भरे तब खानेंको मंगवाते ॥ और भूख लगै तो कुछ भोजन नहिं खाते ॥ मूरखसे सीखें पण्डितको समझाते ॥ कहे बनारसी हम नई नईबातें गाते ॥ इस कदरसे जो कोई अपना दिल कस्ता है ॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ता है ॥

जो खुदाका आशक हो और उसपर खुदाभी आशक हो तो बंदाखुदा एक है-बहर छोटी ।

आशक पर आशक जब वो सनम होता है ॥ दोनोंका रुतबा एक रकम होता है ॥ वो नूर है तो आशक भी जलवेगर है॥ वो दीद

है तो दिल अपना उस्की नजर है ॥ लामकां हैं वोः तो मेरा कहीं नघर है ॥ वोः दिलहै तो ये दिल उसका दिलबर है ॥ जिस वक्त कयामतमें वोः वहम होता है ॥ दोनोंका रुतबा एकरकम होता है ॥ वोः गुलशन है तो आशक उसका गुल है ॥ वोःहर जा है तो आशकभी बिलकुल है ॥ वोः सुरूर तो आशक वहदतकी मुल है ॥ वोः धूम है तो आशक भी शोरो गुल है ॥ जिसवक्त यहदम उसका हम दम होता है ॥ दोनोंका रुतबा एक रकम होता है ॥ वोः जहां है तो आशक भी जहां तहां है ॥ वोः कलमा है तो आशकभी कुरआंहै ॥ जहां जिक्र है आशकका भी वहीं बयां है ॥ वोः नेहां हैं तो आशक हरजा पिनहां है ॥ आशकका दम जब उसमें दम होता है ॥ दोनों का रुतबा एक रकम होता है ॥ वोः बेख्वाहिश तो आशक बेपरवा है ॥ वोः मिला है तो कुछ आशक नहीं जुदा है ॥ वो दुई नहीं तो आशक भी यकता है ॥ ये देवीसिंहका सखुन बडा सच्चा है ॥ कहे बनारसी जब उसका करम होता है ॥ दोनोंका रुतबा एक रकम होता है ॥

कलियुगकी स्तुति जो जैसा करे वो वैसा पावे–बहर छोटी।

इस कलियुगमें कलदेगा कल पावेगा ॥ कल पावेगा वोः क्योंकर कल पावेगा ॥ नरदेही पाकर ध्यान सांई का धरना ॥ दो दिनका जीना देख अंत है मरना ॥ तज बुरे काम भवसागर पार उतरना ॥ दुःखदेगा तुझको भी होगा दुःख भरना ॥ नेकोंको मजा नेकीका नेकी करना ॥ मत करे बदीकी बात खुदीसे डरना ॥ करनीका फल संसार सकल पावेगा ॥ कलपावेगा वोः क्यों कर कल पावेगा ॥

जो कुवां किसीके खातर खोदे भाई ॥ हो उसके लिये तैय्यार फलकसे खाई ॥ गुल्ल नकर पराया चिराग अरे सौदाई ॥ रही उस-

की रोशनी जिसने उधर लौ लायी ॥ करसाधुसंतकी टहेल तो मिले भलाई ॥ की जिसने खिदमत उसने अजमतपाई ॥ जो सेवा करेगा सेवा तुकल पावेगा ॥ कल पावेगा वोः क्यों कर कल पावेगा ॥

क्यों गफलतमें रहे भूल उसे पहिचानों ॥ मत बुराकिसीका करना दिलमें ठानों ॥ मैं कहूं वात नसिहतकी भवें क्यों तानों ॥ अब करो भलाई आगे खाक मत छानों ॥ यह कलियुग नहीं इस्को करयुग कर जानों ॥ यहां मिले हाथका हाथ सत कर मानों ॥ जो आज करेगा सा कल पावेगा ॥ कल पावेगा वोः क्योंकर कल पावेगा ॥

जो करें किसीकी मुश्किलको आसान ॥ उनकी मुश्कील आसान करें भगवान॥नुकसान पराया करके करें गुमान ॥ उनका नहीं रहेता गमें नाम निशान ॥ जो मिला चाहो साहबसे छोड अभिमान ॥ पांचोइंद्री वश करके लगावो ध्यान ॥ उसमारगकी जब तू अटकल पावेगा ॥ कल पावेगा वोः क्यों कर कल पावेगा ॥

तप कलियुगका है बडा यह राज कमाया ॥ क्रिया ऐसा अदल जुलमी नहीं रहिने पाया ॥ वोः तुर्त मिटा है जिसने जिसे सताया ॥ नशा फलती है जबसे कलियुग आया ॥ है श्रीकृष्ण की देवीसिं-पर साया ॥ यह कलयुग नहीं करजुगका ख्याल है गाया ॥ इन् नुक सोंकों क्या बे अक्कल पावेगा॥ कलपावेगावोः क्यों कर कल पावेगा ॥

हर घडी परमेश्वरको भजना इसीमें भला है–बहर छोटी ।

दम पर दम हर भज नहीं भरोसा दमका ॥ एक दममें निकल जायेगा दम आदमका ॥ है जब तकसे दममें दम भज हर हर तू ॥ दम आवेना इस्की आस मत करतू ॥ एक नाम प्रभूका जप हिरदेमें धर तू ॥ नर इसी नामसे तरजा भवसागर तू ॥ बलकरता थोडे जीनेके खातर तू ॥ वोः है साहब जल्लाल जरा तो डर तू ॥ वहां अदल बडा है हिसाब हो दम दमका ॥ एक दममें निकल जायगा दम

आदमका ॥ जीनेका फल यह राम नाम जपना है ॥ जब घेरे काल तो कहां जाय छिपना है ॥ इस नरको एक दिन आतिशमें तपना है ॥ दम जाय निकल तन मट्टीमें खपना है ॥ एक दमका बसेरा दुनिया रैन सपना है ॥ टुकदेखो आंखें खोल कौनअपना है ॥ सब झूठा माया मोह कुटुंब हम दमका ॥ एकदममें निकल जायेगा दम आदमका ॥ जो आया जगमें अमर नहीं रहनेका ॥ नरबदा घागरा अटक नहीं बहेनेका ॥ कर लाख जतन तू मायाके गहेनेका ॥ परमिले वही जो है तेरे लहेनेका ॥ हरभक्त कभी नहीं जमका दंड सहेनेका ॥ करनेकी कोई बुरा नहीं कहेनेका ॥ इस जगमें नाता हैगा बोलते दमका ॥ एकदममेंनिकल जायेगा दम आदमका ॥ एक दममें दम आदमका निकल जावेगा ॥ फिर पीछे हाथ मलमलके पछतावेगा ॥ जब श्रीकृष्णकी शरणागत आवेगा ॥ तो जीवन मुक्ती इस जगमें पावेगा ॥ कहे देवीसिंह जोहरके गुण गावेगा ॥ वोः प्राणी जगबंधनसे छूट जावेगा ॥ कुछ कयाम जगमें नहीं, सुनो इस दमका ॥ एक दममें निकल जावेगा दम आदमका ॥

इस जगत्‌में सबसे बुरा मांगना है समझके मागै तो भला-बहर छोटी ।

इस जगमें जब लग अपनी पार बसाये ॥ मत कोई किसीके द्वार मांगने जाये ॥ इस जगमें मांगना बडी पापकी पोटे ॥ मांगन-गये बलके द्वार राम भये छोटे ॥ सुंना और मांगना दुबले होगये मोटे ॥ मांगनकी बराबर और कर्म नहीं खोटे ॥ इसनरको मांगना जो चाहे कहलाये ॥ मत कोई किसीके द्वार मांगने जाये ॥ मरना बेहेतर यह बात भूल नहीं कीजे ॥ सबजाय बडप्पन बोझ वकर सुन लीजे ॥ जप जोग तपस्या पुन उस दम सब छीजे ॥ जब नरने मुखसे कहा हमें कुछ दीजे ॥ है पूरा मौतका वख्त आंखशरमाये॥

तकोई किसीके द्वार मांगने जाये ॥ जब गर्ज बंदने अपनी शर्म
माई ॥ काला मुँह करके गया मांगने भाई ॥ जो होते उसके उ-
ने राह बताई ॥ उसकी तो होती इस जगमें रुसवाई ॥ फिटमारा
के चला मनमें पचताये ॥ मत कोई किसीके द्वार मांगने जाये ॥
ब वक्त पडे तो जांय मांगने सूरे ॥ हो जांय निवाणें बडे दिलके
गरूरे ॥ जो हैंगे आशना धनी बातके पूरे ॥ अपने से जादा समझें
सकी जरूरे ॥ परस्वारथको कोई विरला शीश कटाये ॥ मत
ोयी किसी के द्वार मांगने जाये ॥ दुनियामें देना मर्दोंका साखा
॥ देकर प्राणीनें अंत प्रेम चाखा है ॥ है बुरा मांगना वेदोंने भाषा
॥ मैं मांगू हरसे मेरी यह अभिलाखा है ॥ तूं मांग देखपर बिना
ाग नहीं पाये ॥ मत कोई किसीके द्वार मांगनेजाये ॥ मेरी अर्ज
ुनों तुम श्रीकृष्ण सुभरास ॥ मत भेजो मांगने मुझेकिसीके पास ॥
पने घरसें मेरी पुरी कर देव आस ॥ यह कहे देवीसिंह मैं हूं तेरा
ास ॥ सालगकी मीठी बानी सभा मन भाये ॥ मत कोई किसीके
ार मांगने जाये ॥

ख्याल शुद्धवेदांत त्यागका त्याग देह अभिमान छोड-बहर खडी ।

देह भावगया छूट आत्मारामको जबसे पहिचाना ॥ निराकारमें
ाराकारहो मिले छुटा आना जाना ॥ अहंग आत्मा स्वरूप हैं कुछ
हीं देहसे काम मेरा ॥ शरीर तो है जड वस्तू चैतन्य आत्मा नाम
रा ॥ रवी शशी अग्नी आकाशसे है परे निरंतर धाम मेरा ॥ अनंत
व्ये अविनाशी अद्वैत रूप शिवराम मेरा ॥ काया कर्मको त्यागके
ने सत्य आत्माको माना ॥ निराकारमें निराकार हो मिले छुटा
ाना जाना ॥ जीव ब्रह्म एकी स्वरूप है परंतु है अज्ञानका भेद ॥
ज्ञानी तो जीव बने ओ ज्ञानीबनता ब्रह्म अभेद ॥ त्रैगुणसे जो

रहित हैं उनकी कौन विधि और कौन निशेद् ॥ जो जाहे सो करे वोः हैं वेदांतके कथिता ग्रथिता वेद ॥ चांहे वोः बोलें चाहे हँसे औ चाहे लगें गाने गाना ॥ निराकारमें निराकारहो मिले छुटा आना जाना ॥ सत् आत्मा शरीर मिथ्या इस विधिकर है जिसको ज्ञान ॥ वोः प्राणी है आपी ईश्वर ब्रह्ममें उसमें भेद न जान ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह अहंकार कपट तज मान गुमान ॥ मिले ब्रह्ममें ब्रह्मरूप होय करके सब छोडा अभिमान ॥ ज्यों पानीसे उठे बुल बुला फिर जलमाहीं समाना ॥ निराकारमें निराकार हो मिले छुटा आना जाना ॥ जल तरंगहै एक नाम हैं दो इनको एकै जानो ॥ इसीतरहसें अपनें जीवको पारब्रह्मकर पहिचानो ॥ जीव ब्रह्ममें भेद नहीं है वेद वाक सुनलेव कानो ॥ द्वैतभाव देव छोंड रहो अद्वैत कहा मेरा मानो ॥ काशीगिर ज्योतिः स्वरूपने तत्त्व ज्ञान यह बखाना ॥ निराकारमें निराकार हो मिले छुटा आना जाना ॥

प्राणायाम महायोगसिद्धांतदर्शन निराकारका-बहर खडी ।

योगी वही जो सकलमें बैठे देखे दसवें द्वारको वोः॥ कारज करे जगत्के सब और लखे अलख करतारको वोः ॥ नाचे गावे गाल बजावे ध्यान आत्मामें धरके ॥ सबमें रहे और सबसे न्यारा पूरण होय योग करके ॥ निर्भय होके विचरे निशि दिन कबहूं नहीं चले डरके ॥ अपने आपमें आपको देखे धन भाग हैं वानरके ॥ जबवह काया त्यागे तब फिर पहुंचे परले पारको वोः ॥ कारजकरे जगत्के सब और लखे अलख करतारको वोः ॥ प्रसन्न चित्त और बुद्धि नि-र्मल कर्म अकर्म न कुछ जाने ॥ द्वैत भावसे अलग रहे अद्वैत ज्ञान-को बखाने ॥ समदर्शी और शुद्ध समाधी अपने को आ पैमाने ॥ जीव ब्रह्ममें एक भावकर अपने मनमें पहिचाने ॥

भूमी भार उतारन कारन धरे आप अवतारको वोः ॥ कारज करे जगत्के सब और लखे अलख करतार को वोः ॥ त्रैगुण को जीते और चवथे पदपर अपनी करे मती ॥ संपूरण सृष्टीको भोग जो करे वही है बाल जती ॥ चरा अचरमें अपने आपको देखे उसकी होय गती ॥ आपी पिता और आपी पुत्र है आप स्त्री आपपती ॥ चाहे करे वोः प्रले और चाहे रचे सकल संसार को वोः ॥ कारज करे जगत्के सब और लखे अलख करतारको वोः ॥ पुण्यपापसे अलग रहे दुःख सुखका नहीं विचार करे ॥ ब्रह्मज्ञानकी चर्चा अपने मुखसे बारंबार करे ॥ आतम दर्शी होय तो अपने सब कुलका उद्धार करे ॥ देवीसिंह यह कहे वोः जो चाहे सो आप करतार करे ॥ चाहे करे वोः नर पैदा और चाहे बनाये नारको वोः ॥ कारज करे जगत् के सब और लखे अलख करतारको वोः ॥

ख्याल अमरनाथजीका–बहर लंगडी।

अमरनाथने अमर कथा जब कही सुने थी पार्वती ॥ उत्राखंडमें लगा आसन बैठे कैलासपती ॥ अविनाशी कैलासी काशी उत्राखंडमें बसाई ॥ बैठ गुफामें गवरको अमरकथा जब सुनाई ॥ अमृत बाणी सुनी उमाके नेत्रमें निद्रा भरआई ॥ वही कथा तब एक तोते के बच्चेने सुन पाई ॥ दिया हुँकारा शिवजीको शिव कहें अर्थ सब समझाई ॥ सुवा सुनेथा और औ सोतीथी गौरा माई ॥ पारब्रह्मका खेल उस घडी उस तोते की बढी रती ॥ उत्राखंडमें लगा आसन० ॥ हुई कथा संपूरण शिवने पार्वतीको बुलाया ॥ उठीं गौरजा कहा शिव मैंने कुछ नहीं सुन पाया ॥ फिर शिवजीने कहा हुंकारा मुझको किसने सुनाया ॥ और तीसरा यहां पर कौन विधी करके आया ॥ चढा क्रोध शिव शंकर को करसे त्रिशूलको उठाया॥

उसी घडी फिर वोः तोतेका बच्चा उडकर धाया ॥ दौडे शिव उस के पीछे वोः निकलगया कर सुमत मती ॥ उत्राखंडमें लगा आसन० ॥ तीनलोकमें उडवोः तोता कहीं मिला नहीं ठिकाना ॥ उडते उडते बहुतसा अपने मनमें घबराना ॥ पतिव्रताथी खडीकरे स्नान उसी को पहिचाना ॥ दौडके तोता जाय फिर उसके मुखमें समाना ॥ वहां किसीका जोर चले नहिं क्योंकर हो उसका पाना ॥ फिर शिवजीने दिया वरदान कहा येहै स्याना ॥ वही हुये शुकदेव व्यासके पुत्र बडेथे यती सती ॥ उत्राखंडमें लगा आसन० ॥ अमर कथा का बडा महातम है जो कोई सुनने जावे ॥ श्रवण कियेसे होय वोः अमर नहीं मरने पावे ॥ चार वेद षट् शास्त्र अठारह पुराण सब इस्में आवें ॥ अमर कथाको आप शुकदेव सदा मुखसे गावें ॥ वोः पण्डित हैं बडे कि जो कोइ अमर कथा को सुनावें ॥ एक एक अक्षर सदा उस कथाके मेरे मन भावें ॥ जिस दिन शिवने कही कथा या कौनबार तिथि कौन हती ॥ उत्राखंडमें लगा आसन० ॥ काश्मीर है स्वर्गपुरी काश्यपकी अव्वलहै काशी ॥ अमर द्वीपमें विराजें अमरनाथ शिव अविनाशी ॥ साल भरेमें लगता मेला श्रावण की पूरण माशी ॥ करते दर्शन ऋषी और मुनिसाधू और संन्यासी ॥ वही पुरुष जाने पाते हैं जिनकी करनी है खासी ॥ कहे देवीसिंह नहीं फिर वोः नर भुगतें चौरासी ॥ बनारसीने किये हैं दर्शन अब इस तनकी हुई गती ॥ उत्राखंड में लगा आसन बैठे कैलासपती ॥

शरीरमें काशी आदि लेके सब तीर्थ हैं–
बहर बराबरकी, राग सोरठा ।

ये कंचन काया काशी ॥ यामें बोलत शिव अविनाशी ॥ जहां ज्ञान गंगकी धारा ॥ जाको अंत न वारा पारा ॥ यामें गोविंद गुरू हमारा ॥ धर मनमें ध्यान विचारा ॥

तोडा–नाम नांव तैरें गंगामें केवट कृष्णमुरार ॥ दंडडांड खेवें ौकापर होजाय बेडा पार ॥ मन तो है सुन मरणकरनका मनमें करो विचार ॥ इस तनमें हैं ताडकेश्वर ताडो होय उद्धार ॥

दोहा–जस जल साईं घाटपर शिवका जगे मशान ॥ आनंदकी अग्नी बले है ज्योतिरूप भगवान ॥ सुनमंत्र मुक्त होय खासी ॥ यामें ोलत शिव अविनाशी ॥ हैपूजा प्रयाग अक्षय वट ॥ कर पुण्य पाप ावें कट ॥ तुसुमती संकटा को रट ॥ कटें जन्म मरण के संकट ॥

तोडा–इस तनमें है भाव सोई है भैरव का थाना ॥ दया सोई है ुर्गा मैंने मनमें पहिचाना ॥ अगम निगम है अन्नपूरणा सब जगने ााना ॥ धर्म सोई धर्मेश्वर उनका सदा भजन गाना ॥

दोहा–शील सोई है शीतल कर हित चितसे पूजा ॥ विश्वरूप हैं ेश्वेश्वर और कोइ नाहिं दूजा ॥ है कृपा सोइ कैलासी ॥ यामें बोलत शिव अविनाशी ॥ तुम बुद्धिविनायक जावो ॥ तन मनसे ध्यान ़गावो ॥ और सुमति सामग्री लावो ॥ चित चंदन चरच चढाओ ॥

तोडा–इस मुखमें है वेद सोई है ब्रह्माकी बानी ॥ पांच इन्द्री ांच कोशमें वसी अवादानी ॥ पच्चीसतत्त्वका पच कोशी में फिरते ारज्ञानी ॥ दशो द्वारकी सैर करें हैं पूरे सैलानी ॥

दोहा–हाथ पाँव त्रैकोन है त्रयगुण है त्रैशूल ॥ सुमरणकी शक्ती ़डी जिन रची सृष्टि मखमूल ॥ संतोष सोई संन्यासी ॥ यामें बोलत शिव अविनाशी ॥ इस तनमें बोधगया है ॥ कोइ ज्ञानी पुरुष गया है ॥ जिसे ब्रह्मका ज्ञान भया है ॥ वोः निशि दिन नित्य नया है ॥

तोडा–तेतिस कोटि देई देवते तनकाशीमें रहें ॥ संत बडे गुणवंत अंत जो मन काशीका लहें ॥ सुनो इधर धर ध्यान छंद ये देवीसिंहजी कहें ॥ राम नामका सुमरण करकर चरण प्रभुके गहें ॥

दोहा–कहां लौं मैं वर्णन करूं तनमें हैं त्रय लोक ॥ बनारसी बैठा इसमें पढे गीताके श्लोक ॥ लगी हरीके भजनकी गासी ॥ यामे बोलत शिव अविनाशी ॥

सखियां श्रीकृष्णसे अपनी मनकी कामना करती हैं–बहर छोटी ।

मन झोंके खा रहा झुमकोंकी झोंकोमें ॥ दिल बिधा कृष्ण तेरी बालीकी नोकोंमें ॥ तुम पारब्रह्म हो निराकार अविनाशी ॥ फिर देह धार क्यो हुये श्याम ब्रजवासी ॥ ओ प्रेम प्रीतकी डाल गले में फासी॥ सब मोहित कीं ब्रज वनिता करलई दासी ॥ तुमतो कहते हम बाल यती संन्यासी ॥ फिर हमरे संग क्यों बने हो भोग विलासी ॥ नहिं लगता मन गीताके श्लोकोंमें ॥ दिल बिधा कृष्ण तेरी बालीकी नोकोंमें ॥ तुम परमेश्वर हो हमसें भोग करोहो ॥ तुम कालके काल औ मृत्यु से नहीं डरो हो ॥ जिस वक्त वह मुर्ली अधरन बीच धरोहो ॥ सब ब्रज वनिता का पलमें प्राण हरोहो ॥ तुम प्रेम प्रीत रस रीतसे हमें बरोहो ॥ अपनी गौंको तुम हमरे पाँय परोहो ॥ हम तुम्हें छोड कर जाँय न परलोकों में ॥ दिल बिधा कृष्ण तेरी बाली की नोकोंमें ॥ वह विश्वकर्म्माने कंचन मंद्रबनाये ॥ तुम आप नचे औ हमको नाच नचाये ॥ शिव बनके गोपिका रहेस देखने आये ॥ तुमने उनको लिया चीन्ह तो बहुत लजाये ॥ तुम अंतर्य्यामी सब घट घटमें छाये ॥ तुमरी मायाका पार न कोई पाये ॥ तुमविन अपना मन पड़े बडे शोकोंमें ॥ दिल बिधा कृष्ण तेरी बालीकी नोकोंमें ॥ हम सब ब्रज बनिता गौलोक ते आई ॥ सब हैं वेदों की श्रुती वेदने गाई ॥ तुम आदि अंतसे कृष्ण हमारे साई ॥ है धन्य हमारे भाग्य जो कंठ लगाई ॥ कहे देवीसिंह और काशी गिरि गोसाई॥ हम बारबार श्री

कृष्ण तेरे बल जाई ॥ कोई ऐसा हुवा अवतार न त्रैलोकोंमें ॥ दिल-
बिधा कृष्ण तेरी बालीकी नोकोंमें ॥

ख्याल निर्गुण–बहर छोटी ।

जो धुनियां होय तो अपनी धुन तू धुनवे ॥ कोई लाख कहे मत
और किसीकी सुनवे ॥ मा कहेकि बेटा मैंने तुझको जाया ॥ तू कहु
उस्से मैं आपमें आप समाया॥और बाप कहे मैंने तुझको सिखलाय॥
दे जवाब यह सब जगत् है मेरा बनाया॥जो मैं कहता हूं इसी बातको
सुनवे ॥ कोई लाख कहे मत और किसीकी सुनवे ॥ गर बहिन कहेके
तूहै मेरा भाई ॥ दे जवाब तूहै कौन कहांसे आई ॥ सब झूठा कुटुंब
परिवार और लोग लुगाई॥कोई नहीं है अपना सब उसकी प्रभुताई॥
जो मेरा कहा तू मान तो हो निर्गुणवे ॥ कोई लाख कहे मत और
किसीकी सुनवे ॥ ले राम नाम की रुई उसे कर माफ ॥ भरतनमें
अपने यही है तेरा गिलाफ ॥ सीं तत्त्वके तागेसे मत समझ खिलाफ॥
फिर लाख गुनः तू करे सब होवें माफ ॥ तू बाद बिनौलेको इस दि-
लसे चुनवे ॥ कोई लाख कहे मत और किसीकी सुनवे ॥ धुनकी
धुनकी में तेजकी तांत चढाना ॥ धुन अपनी धुन हरवक्त कृष्ण
गुणगाना ॥ यह देवीसिंह और बनारसीका बाना ॥ जहाँ कलँगी
तुर्रेका नाहिं लगे ठिकाना ॥ वही वासुदेव वही निर्गुण वही सिरगु
नवे ॥ कोई लाख कहे मत और किसीकी सुनवे ॥

कुरानके जो मायने हैं वह खुदा जानता है या हम जा-
नते हैं–बहर छोटी, मायने बहुत मुश्किल ॥

पैदा ये जमाना किया तो कह दिया कुनवे॥गर फना करूं तो कह
दूंगा फेकुनवे॥मैं आप बना और आप बनाने वाला॥आपी हूं बंदा आ-
पी मैं हक्कताला॥है मेरे नूरसे शम्समें भी उजियाला॥और माहो सुन-

व्वरको रौशन करडाला॥मैं झूंठ नहीं कहता हूं इसे तू सुनवे ॥ गरफ-
ना करूं तो कहदूंगा फैकुनवे॥मेरी कुदरतसे जमीं आसमां रौशन॥
मेरी कुदरतसे मकां लामकां रौशन ॥ मेरी कुदरतसे गुलो गुलिस्तां
रौशन॥मेरी कुदरतसे जहां दो जहां रौशन॥जोमैं कहेताहूं समझ
येः मेरी धुनवे ॥ गर फना करूं तो कहदूंगा फैकुनवे ॥ मैं अपनी
इबादत आपकिया करताहूं ॥ ना पैदहूं मैं और कभी नहीं मरताहूं॥
वेगमहूं मैं और किसीसे नहीं डरताहूं ॥ मैं अपनाही दम आप
भरा करताहूं ॥ हैं सब गुण मुझमें महीं तो हूं निर्गुणवे ॥ गरफना
करूं तो कहदूंगा फैकुनवे ॥ हूं हमाँ वोस्त कुछ दुई न मेरे दिलमें॥
मैं पहाड में भी और हूं राई तिलमें ॥ मैंहीं आबो हवा आतिश औ
महीं हूं गिलमें ॥ येः देवीसिंह कहे बनारसी महफिलमें ॥ मेराही
बनाया कुरां वेदकीधुनवे ॥ गर फना करूं तो कहदूंगा फैकुनवे ॥

बहुत मुश्किल मायने शम्सतबरेज होता तो समझता—बहर लंगडी ।

कुनसे पैद किया और कुनहीं कहके फना करदूं तो क्या ॥ ना
पैद हूं मैं औ चाहे जहां मैं पैदा हूं तो क्या ॥ तुमतो कहते खुदा
नहीं पैदा होता ना पैद है वोः ॥ मुझको देखो तो मेरे बीचमेंतो
मुस्तैद है वोः॥चाहे पैदा हो या न होवे खुदानहीं कुछ कैदहै वोः ॥
अपने बंदे की तो पूरीकरता उम्मेद है वोः ॥

शेर—उसे अख्तियार है चाहे सुबह को शाम कर देवे ॥ वोः का-
फिरको मुसल्मां कुफ्रको इसलाम कर देवे ॥ किया कुनसे जहां पैदा
औ कुनहींसे फना करदे ॥ तुम्हारा क्या इजारा वोः जो चाहे काम
करदेवे ॥ तुमतो मायने और कहो मैं और मायने लिखूं तो क्या ॥

ा पैद हूं मैं औ चाहे ज़हां में पैदा हूं तोक्या ॥ जितनी किताबें
ुनियामें तौहीद वयां सब मेरा है ॥ मैं हूं लामकां अगर पूछो तो
कां सब मेरा है॥ नहीं मेरा कुछ नामो निशां और नामो निशां
ब मेरा है ॥ तुम नहीं वाकिफहुवे येः जहां दो जहां मेरा है ॥

शैर—जबांसे मैं कहूं तू बनतो वह दम में बिगड जाये ॥ अब इसके
ानये पूछूं तो मुझको कौन बतलाये ॥ कुरांके मग्जकी लज्जत तो
ारी इस जबांपरहै ॥ और हड्डी फेंक दीं मैंने उसे कुत्ता हो सो खाये ॥
ुमतो कुरांसे वाकिफ नहीं मैं तुमसे सुनूं ना सुनूं तो क्या ॥ ना पैद
ू मैं औ चाहे जहां मैं पैदा हूं तो क्या ॥ मुर्शदने जो बातबताई
ही पढूं और कुरां नहीं ॥ कुल कुरानके मायने इसीमें तो खुल जाँय
ही ॥ जितने मायने कुरानके मैं जानूं और कहीं सुने नहीं ॥
जिसको ख्वाहिश अगर कुछ हो तो फिर कहदूंमैं यहीं ॥

शैर—अगर मेरी खुशी हो तो मैं उसको साफ बतलाऊं ॥ जो
ंदा हो खुदाका तो खुदा मैं उसका कहलाऊं॥ नबंदे में खुदामें फर्क
मुस्से यः तुम सुनलो॥ शरयको फाडके फेंको तो फिर मैं तुमसे
मेल जाऊं ॥ कभी न खटके जिगर पै कांटा लाख दार पर चढूं
ो क्या ॥ ना पैद हूं मैं औ चाहे जहां में पैदा हूं तो क्या ॥ जैसे
ोस्तका खेत कि उसमें कहीं कोई गुल्लालय फाम ॥ इसी तरहसे
ादमी बहुत हैं पर कोई सरनाम ॥ कुरानको पढते हैं बहुत पर
ुदासे कुछ नाहिं रखते काम ॥ घरमें जोरू जो व्याह लाये औः
ुसीके बनें गुलाम ॥

शैर—सुबह होते ही उनको फिक्र रोजीका हुआ भारी॥ हुई जब
ाम तो समझे कि जोरू है मेरी प्यारी ॥ उसीके साथ सोये और
री उस्से बहुत यारी ॥ तो आखिरको कजानें एक दिनउनकी वोः

जां मारी ॥ बनारसी कहे उनसे काममें रक्खूंयाना रक्खूं तो क्या ॥ ना पैद हूं मैं० ॥

इश्क पाक बुतोंका मार्फत–बहर डेवढी ।

भेद कोई बुतों का क्या पावे ॥ पाक मुहब्बत करो तो जलवये खुदा नजर आवे ॥ अगर ये चाहे करें दिल संग ॥ तुकर दिलको मोम तो येः फिर होजांय तेरे संग ॥ ये लेके तेग करें चौरंग ॥ तुदे सरको झुका तो फिर देखे उल्फतका रंग ॥ ये गरहैं शमां तोतूहो पतंग ॥ लगादे लौमें लौ अपनी मतरख इस दिलको तंग ॥

दोहा–अव्वलतो येः जला जलाकर करें तुझे ताजीर॥फिर पीछे हो रोशन तेरा नाम बने अकसीर ॥ तुमत इस दिलमें घबरावे ॥ पाक मुहब्बत करो तो जलवे खुदा नजर आवे ॥

ये दिलबर हैं मेरे दिलके ॥ खुदामिला पीछे हमको पहिले इनसे मिलके ॥ हाल सुन इस दिल बिस्मिल के ॥ कत्ल हुये तौभी शिकवे नहीं किये उस कातिलके ॥ ये गुलहै अजब आबो गिलके ॥ अव्वल थे गुंचे गुंचे से गुल हुये खिल खिलके ॥

दोहा–बागे इश्क में ऐ दिले बुलबुल गुलोंकी देख बहार ॥ खार अगचें चुभे तो उन कांटों पर आसन मार ॥ वही फिर गुलशन हो-जावे ॥ पाक मुहब्बत करो तो जलवे खुदा नजर आवे ॥ वोः है जुल्फोंमें जहर इनके ॥ इसे जहर मत समझ यही है लहर बहर इनके ॥ लगे हैं वोः वोः इतर इनके ॥ हर यक तरावटसे बेहतर हैं गेसू तर इनके॥ पेंचमें पडे अगर इनके ॥ हरएक फंदसे वाकिफ होवे वही मगर इनके ॥

दोहा–जिसका दिला दिलदार की जुल्फों में बिखरे ॥ देखे निखरे बाल निरखके तो ये दिल निखरे ॥ वही उलझावे सुलझावे ॥

पाक मुहब्बत करो तो जलवे खुदा नजर आवे ॥ हैं इनके अजब कटीले नैन ॥ करें चोटपर चोट बने हैं गजब चोटीले नैन ॥ बुतों के छैल छबीले नैन ॥ काले गोरे लाल रंगमें रंगे रंगीले नैन ॥ बहुत रस भरे रसीले नैन ॥ सबके ऊपर उनकी नोक है वोः हैं नुकीले नैन ॥

दोहा—जो कोइ इनको पाक निगहसे देखे आशक आन ॥ उसे दिखाई इन्हीं बुतोंमें देवे उसकी शान ॥ रूप वो अपना दिखलावे ॥ पाक मुहब्बत करो तो जलवे खुदा नजर आवे ॥ जिसने इन बुतों को जाना है ॥ उसी को जाना मिला हुआ जिसका वहां जाना है ॥ इनका लामकां ठिकाना है वहांसे उतरा नूर वह इनके बीच समाना है ॥ सखुन मेरा आशकाना है ॥ जिसने सुना एत-काद से वोः आशक मस्ताना है ॥

दोहा—समझ आशकोंकी रम्जें और कर दिल को हुशियार॥ देवीसिंह येः कहे हुआ तौहीद छंद तय्यार ॥ मार्फत बनारसी गावे ॥ पाक मुहब्बत करे तो जलवे खुदा नजर आवे ॥

ख्याल जिस्मकी मस्जिदका मय तौहीद पीते हैं–बहर लंगडी ।

आज दुगाना पढूंगा मैं मस्जिदमें मस्तो चलो वहां ॥ शीशा सागर सुराही मीना और मय धरों वहां ॥ मयसे करके वजू मुसल्ले कोभी मयसे तर करदो ॥ खुदा है राजी दूर अब कुल दुनिया का डर करदो ॥ शेखो मुहतासिब मिलें वहां तो पकड उन्हें बाहर करदो ॥ छीनलो मस्जिद तुम उनसे अपना वहां पै घर करदो ॥

शेर—जो तुमसे बोलें वोःकुछ बात तो तुम उनसे कहो ॥ खुदा का घरहै यहां हम भी रहें तुमभी रहो ॥ मस्त हो करके फिरो छाड़दो इस दिल पै सहो ॥ पियो मय साथ हमारे नरंज जी पै सहो ॥ चलो

जरा मस्जिद के भीतर यही लिखा है पढ़ो वहां ॥ शीशा सागर सुराही मीना और मय धरो वहां ॥ करके शुक्र अलहम दुलिल्ला झुकाके सर और उठाके जाम ॥ लगालो मुँहसे खुदाकी वहां इबादत करो मुदाम ॥ लाइलाह इललिल्लाः अल्लाः हु अकबर का लेके नाम ॥ यही है कलमा कुरांमें लिखा खुदा का यही कलाम ॥

शेर–पढ़ो न इसके सिवा तुम करो न गुफ्ते शुनीद ॥ गलेसे उसको लगालो खुशीसे देखो ईद ॥ खुदाने तुमको येः मस्जिद जो दी है जिस्म वहीद ॥ इसीमें उस्से मिलो है इसीमें उसका दीद ॥ पहिले दिलको साफ करो फिर पीछे उस्से मिलो वहां ॥ शीशा सागर सुराही मीना और मय धरो वहां ॥ बडेबडे वलियोंने मय पीकर दिलको शेरी है करी ॥ अबकी दौर है हमारा और बारी मेरी है करी ॥ ऐदिल तुझसे कहूं तुपी झटपट अब क्यों देरी है करी ॥ खुदाने मस्जिद ये तनकी तौफा अब तेरी है करी ॥

शेर–बनाये उसके सिवा कौन यह मीनारोंको ॥ और बख्शे उसके सिवा कौन गुनःगारोंको ॥ बुरा कहते हैं जो ऐसे भला मय खारों को ॥ खुदा दोजखमें तो भेजे उन्हीं हजारोंको ॥ अय यमस्तो तुम डरो नहीं मस्जिदमें चलो मय पिबो वहां ॥ शीशा सागर सुराही मीना और मय धरो वहां ॥ हाथ उठाकर करो शुक्र जो तन मस्जिद में आये हो ॥ साथ में अपने नूर तुम हकतालाका लाये हो ॥ मय भी उसी की बनाई और तुम उसहीके तो बनाये हो ॥ पिवोना पिवो बुरा मत कहो जो भले बनाये हो ॥

शेर–बदीकरनाहीं बड़ा ऐब है इनसानोंको ॥ आदमी पीते हैं मिलती नहीं हैवानोंको ॥ बात यह मेरी सुनो खोलके जो कानोंको ॥ बुरा कहो न जुबांसे भला दिवानोंको ॥ बनारसी कहे खाली हाथ मतजा मस्जिदमें गिरो वहां ॥ शीशा सागर सुराही मीना और मय धरो वहां ॥

होलीमस्तीमें शराब अंतहूरा की शेखजी औ हम खेलैं तौहीद–बहर लंगडी ।

आज शेखजी खेलो होली मस्जिदमें लेचलो शराब ॥ जिगर को अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब॥ कोइ शीशमें सुर्ख गुलाबी किसीमें केसरका रंगहो ॥ खुशीसे खेलो तुम होली कभी न इस दिलसे तंग हो ॥ जो उस्की मस्तीमें खेले होली खुदा भी फिर उस्के संग हो ॥ ऐसा दंगा मचे मुहतसिबकी भी अक्क दंग हो ॥

शैर–लगादो आग जहांके सभी मय खाने में ॥ औ लावो भरके सुराही पिवो पैमानेमें ॥ तुम उस्की मस्तीमें खेलो हमारे संग होली ॥ धूम ऐसी मचे देखें सबी जमाने में ॥ कोई आपको देवे गालियां उसको भी मत कहो खराब॥ जिगर को अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब ॥ और शौक गाने को हो तुमको तो मैं ले आऊं बीनो रबाब॥ डफ ढोलक भि बजे और शराबमें हो मिला गुलाब॥ उसकी खुशबू दिमागमें पहुंचे तो वोः हो चश्मोंमें आब ॥ जिसकी लाली देखकर प्यालीसे शिरपडे शहाब ॥

शैर–ये रंग वोः है के चढ़जाय तो उतरे न जरा॥ ये यह प्याला वोः है कि खाली नहो कुदरतका भरा ॥ ये वोः मस्जिद है जिस्मकी के इसमें है वोः खुदा ॥ देखा जिस जिसने उसे इस्में वोः हरगिज न मरा ॥ इसीमें खेलो उस्से होली शेखजी मैं कहता हूं शिताब ॥ जिगरको अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब ॥ साकी तुमको भरके जामदे रंगो उसीसे अपना दिल ॥ वही खुदा है तुम उस्से लपट झपट खेलो हिलमिल॥ ऐसे प्याले पिओ कि जिस्से बेहोशी होजा कामिल॥ तो फिर मैं भी शेखजी आपके होजाऊं शामिल ॥

शैर–यह दुनिया कुछ नहीं झूंठा अजब तमाशा है॥ कोई रत्ती

कोई तोले औ कोई माशा है ॥ जिस तरह होलीमें उठते हैं यारो यह सवांग ॥ उसी तरहसे उठेगा ये सबका लाशा है ॥ जो कुछ खाना पीना हो सो खालो और लुटा दो सब अस्बाब ॥ जिगरको अपने जलाओ भूनके उसका करो कबाब॥ ऐसी होली किसीने खेली नहीं जो खेले हम औ तुम ॥ मय वहेदत के किसीको कहां मयस्सरहैं ये खुम ॥ उसकी खुमारी में किसीसे कुछ न कहो तुम हो जाव गुम ॥ अगर कहो तो फक्त इस जबांसे कहो अपनी कहदो कुम ॥

शेर—चले वोः गोरसे मुर्दे निकलके जो हैं मरे ॥ तो खेलें फिर से वोः होली रहें हरे वोः भरे ॥ सदा यह कुमकी है ऐसीके ऐसी और नहीं ॥ कि जिस्से मुर्दा भी जीता हैं फिर कभी न मरे ॥ देवीसिंह कहे बनारसी है शेख जीये दुनिया सब खाब ॥ जिगर को अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब ॥

इश्क जिस जिसने किया सबके नाम पाक मुहब्बत—बहर लंगडी ।

इश्क बहुत मुश्किल है तुम इसका करना मत समझो आसान ॥ पूंछो उस्सेकि जिसने खपाई है उलफत में जान ॥ अव्वल मजनूंसे पूंछे वो इश्कका क्या करता है बयान ॥ दोयम लैलासे पूंछो लगाके उसकी बात पे ध्यान ॥ सोयम सीरीसे पूंछो और सुनो तुम अपने खोलके कान ॥ और चहारुम कोहकनकी कहती है यही जबान ॥ जान गई तो बलासे पर दुनियामें बनारहा नामो निशान ॥ पूंछो उस्सेकि जिसने खपाई है उलफत में जान ॥ और पूंछो मंसूरसे जिसका दारके ऊपर बना विमान ॥ समंदका सर कटा देहलीमें लगा झूठा तूफान ॥ और शम्सतबरेज ने मुर्दा जिलाके डाली उसमें जान ॥ तिसपर अपनी उतारी खाल किया नहिं कुछ अरमान ॥

ाशक तोहै वही जान देके भी करे नाहिं मान गुमान ॥ पूछो उस्से
ि जिसने खपाई है उल्फत में जान ॥ रांझेने भी छोड सल्तनत
इश्कका ओ पकडा मैदान ॥ और हीरने इश्क रांझे में इश्कको
ाला छान ॥ हाफिज भीगर सुने कानसे दिवान हाफिजका वोः
ीवान ॥ तो सब भूलें उसीपर लायें वह अपनाईमान ॥ मैं तो यही
कहताहूं इश्क नाहिं जिसे वह है मिस्ले हैवान ॥ पूंछो उस्से कि जि-
ने खपाई है उल्फत में जान ॥ मैं भी एक आशक हूं इश्क में
ातो दिन रहता गलतान ॥ लाख इबादतसे बढकर एक इश्कको
ठया है मान ॥ देवीसिंह ये कहे इश्क तुम करो वोह है मौलाकी
ान ॥ जिसने इसको किया फिर मिला उसे वह हक्कसुभान ॥ ब-
ारसीका इश्क है कलमा पढे तो हो जावे मस्तान ॥ पूंछो उस्से
के जिसने खपाई है उल्फत में जान ॥

मसनवीदर सिफतकाशमीर जन्नतेबेनजीर।

रामें प्रथम शारदा जीका ध्यान। हुआ उस्से मनमें मेरे ब्रह्म ज्ञान ॥
पासिक हूं मैं तो सदा शक्तिका। मिला उस्से रुतवा मुझे भक्तिका॥
िना भक्तिके मुक्ति होती नहीं। सिवा ब्रह्मके और योती नहीं॥
िराकार मे देखो आकार है। चराचर उसीका यह बिस्तार है॥
नाये उसीने यह शम्शो कमर। जिधर देखा उस्को वह है जल्वेगर॥
ई चश्ममें जिसके रोशननिगाह। उसी कोमिले हैफिर उसघरकीराह॥
याअपनी जिसपर करे कृष्णराम। बसे उसकेदिलमें वही आठोजाम॥
हे उस्को दुनियानदींकी खबर। रहे नूरयह उसके पेशो नजर॥
माने के फिक्रोंसे बेफिक्र हो। जबांपर न उसके कोई जिक्र हो॥
जलसे सुना जोहै बन्दानमाज। अबदतक रहेगा वोही कारसाज॥
सीके करमसे हुआ मैं फकीर। गदाई में पहुंचे नमुझको अमीर॥
हैं लोगजरें में हूं आफताब। उसीने यहदी मुझको है आबोताब॥

केजल्वाहै फैला मेरा चारसू । जो बुलबुल हैं शैदा मेरे लालरू ॥
उसीने किया मुझको है बेनजीर । दिखाया है एक आनमें काशमीर ॥
नहीं मैंने देखी थी ऐसी जमीं । फलक चर्ख में देख नकाशो नगीं ॥
हैं जर्रे वहां के तोसबआफताब । चकोरों पे मायल सदा माहताब ॥
वहांजातेही दिल्को ताकत हुई । जो ताकत हुई तो इबादत हुई ॥
किया बैठकर खुदा वहांमैंने जाप । तो आपेमें देखावोःअपनाहीआप ॥
दुई दिल्की जाती रही एकवार । नजरमुझकोआयावहपरवरादिगार ॥
जिधरको नजर की उधर है खुदा । खुदातोनमुतलक है मुझसे जुदा ॥
वही रामहै और वोही है रहीम । वोही कृष्ण है और वोही है करीम ॥
वोही हम्में तुम्में है बैठा निहाँ । फलक पर वोही और वोही है यहां ॥
वोही अर्क गरदनसे हैगा करीब । वोही सबकाआशिकवोहीहैहबीब ॥
पर एक बातइस्मेंहैमुशकिलबडी । दुईकी है चादर नजरपर पडी ॥
हटे बिन न उसके कोई सूझता । न अपने पराये कोहै बूझता ॥
जो उस्को हटावे तो होवे फकीर । नहीं तो है दुनिया में जीना हकीर ॥
भलागर फकीरी नहो तो यह हो।किदिलसे करे उसकी कुछयादतो ॥
भलाहो इसीमें यहवह बातहै । नहो जिस्मे यह वह बद औकातहै ॥
फकीरी काहै दूर हरचंद राज । नहीं कुछजोहो मेहरबाँवे नियाज ॥
फकीरी भी करना न आसान है । जो वह चाहे खालिककीबसशानहै ॥
यहां तक किया मैंने इसको तमाम । सुनो इसके आगे मेरा अबकलाम ॥

तारीफ काशमीरके आबो हवा की ।

पिला मुझको वहदतकी साकी शराब। कि जिस्से यह दिल हो मेरा आफ ताब॥ रहूं सुर्खरू सबके आगे मुदाम।लबालबतू भरदे मेरा आकेजाम॥
वह पीतेहीहो दिल्में जोशे जनूं । के आये नजर रंग बस गूं ना गूं ॥
गमे दीनो दुनिया फरामोश हो । जो देखे मुझे मस्त मदहोश हो ॥
हो जब फूलसे दिल मेरा लाला गूं।तो यह शेर अपना रकम मैं करूं॥

बनाया खुदाने अजब काशमीर । बहिश्ते बरीं है नजिसका नजीर ॥
नदेखा सुना और नहोगा कहीं । कहीं मुल्क ऐसा नहीं है नहीं ॥
जहां सर्द है गरमिये आफताब । खिजल माहरूयों से है माहताब ॥
हसीनों की हर सिम्त जलवे गरी । हरएक जर्रे जूं जोहरे मुशतरी ॥
इबादत की जाहै फकीरीका घर । गरीबोंका दाता तवंगरका सर ॥
लडकपनमें कुछ रोग होता नहीं । जवानीमें भी सोग होता नहीं ॥
बुढापे में भी कुछ नखौफो खतर । वह उत्तर कीधरती न मरनेका डर॥
हकीमों की हाजत किसीको कहां । मसीहा को पूंछे न कोई वहां ॥
वह मोतीसे पानीमें तासीरे शीर । उसी आबपर है बसा काशमीर ॥
है पानी वहांका वह आबेहयात । पिए नीमजां तो करे उठके बात ॥
वहां जाय कैसाही बीमार हो । वह पानी पिये दूर आजार हो ॥
जबां साफ होजाय गर हो जईफ । हो तैयार कैसाही गोहो नईफ ॥
करे खिज्रभी वांके सब्जी की सैर। नदिल माने हर रोज जाये बगैर ॥
गिजा वांजो खाये सो तहलीलहो । होताकत वह पैदाखिजलफीलहो ॥
फिर आजार उसके न नजदीकआय।पिये आबऔर वां के मेवे जोखाय॥
बदन आईना साभी चमके तमाम । करे गुस्ल हम्माम में जो मुदाम ॥
नहा धोके खाये जो जरदा पुलाव । कभी जिस्ममें उसके आये न ताव॥
किसीको जो उस्से वोः परहेज हो । तो मेवेमें खुशका वह आमेज हो॥
उसीको शबो रोज खाया करे । सदा बहेर तफरीह जाया करे ॥
हकीमों का कोई नवाँ यार है । कोई नाम कोभी न बीमार है ॥
न वैद्यों की गोलीकाकुछ काम है । सदावाँ मरीजो कों आराम है ॥
तपे दिकसे दिक कोई होता नहीं । कोई दर्द सरसे भी रोता नहीं ॥
नखाँसी नखुरी नसरसाम हो । जो बीमार जायेतो आराम हो ॥
जनफशे के गुल बर्ग गाओ जुबाँ । सदा गाएँ खायें में देखा वहां ॥
हर एक शख्स पीताहै उस शीरको । कहो किस्तरह कोई बीमार हो ॥

वहां वेदमुश्क इसकदर है लगा । मरीजों को वांकी हवा है दवा ॥
करें बुलबुले गुलपे वसचहचहे । कहीं कुमरियों के मचे कहकहे ॥
गमो रंजसे सर्व आजाद सब । जो देखातो मुर्गे चमन शाद सब ॥
खिजाँका किसी गुलको हरगिज न खार । रहे हर चमनमें हमेशा बहार॥
वहांका जोहै हाल जाहिर किया । यह किस्सा यहां मैंने आखिर किया ॥

दास्तानसिफतमें हुस्नकाशमीर की ।

पिला साकिना भरके वहजामेनूर । कुदरतका आये नजर बसजहूर ॥
अयाँ जलवा होहर तरफ नूरका । समाभूले मूसाभी बस तूरका ॥
गया जबसे मैं जानिवे काशमीर।लगा दिलपे मेरे एक उलफत काततीर।
जहांके नखूबाँमें ऐसी फवन । है जो माहरूयों के वाँका चलन ॥
वह मैलेसे कपडो में उजला सातन । गोया अब्रमें माइ चरखे कोहन॥
फटे पैरहन हैं मैं क्यादूं मिसाल । छुपा जिसतरहहोवे गुदडी ये लाल॥
नजेवर बदनमें न कपडे दुरुस्त । मगर हुश्न खूबीसे चालाँ को चुस्त॥
नचोटी नकंघी न मिस्सीनपान । बनावट नहींकुछमगअरालीशान ॥
वहां गर बनावटका होता चलन । तोफिरहुस्नअपनीदिखाताफवन ॥
बिगाडेसे भी कुछ बिगडता नहीं । बनावट वह रखते हैं वांमहजवीं ॥
नचादर दोपट्टे न महरमसे काम । फकत एक चोले में चोलातमाम ॥
वदन नाजनी उसपे कुरताहै एक । यह खूबीहै उन्मेंकेसबहैंवहनेक ॥
जोबैठे कोई तो बिठांये उसे । कभी आपसे ना उठायें उसे ॥
नफूलों के गहने नसरमें भी तेल । नपावोंमें मेंहदी न अतरो फुलेल॥
हैउसपर हरएक कीवहबांकीअदा । के उनकी अदापरअदा है अदा ॥
बुरासा लिवास और भलासावदन । भलोंको लगे सब भला पैरहन ॥
बिगडने में भी उनका दूनाबनाव । भली बात हरएक अच्छा सुभाव॥
बुरा कोई होवे भलोंके जो साथ । भले उम्रभर उस्का छोडें नहाथ॥

जिसे हुस्नकी कुछ परखहो अगर । वहकपडोंपैमुतलकनडालेनजर॥
हरएक पेरहनमें वोः रशके कमर । केजों अब्रमें माहहो जलवेगर ॥
नजेवर को देखो न पोशाकको । जोदेखे तो उससूरते पाकको ॥
के यूसुफ भी जिसका खरीदारहो । बस ज्यों हुस्नका गर्म बाजारहो॥
वहचहरेपे सुर्खी भी जो आफताब । वहयामेहरनिकलाउलटकर नकाब॥
अगर सरखुलारुखपेबिखरेंहैंबाल । तोहै काकुले हुस्न परसाफ बाल ॥
फसाया हैवां शोलये नूरको । रवा दाममें शमये तूरको ॥
जहांमें न ऐसा कोई है दयार । केहै हुस्नकी खुदबखुद वां बहार ॥
है चीने जवी मेहर कीया किरन । हुई दूनी कश्केकी उस्पर फवन ॥
जवीं माहे तावां तो कश्का है चांद।कियाहुस्नयूसुफकोभीजिसनेमाँद॥
जिसे देख बेताबपुरदर्द हो । सदा चश्म तररंगे रुखजर्दहो ॥
किसीका हैं माथा सफाई के साथ । महो मेहर देखेसे मलते हैं हाथ ॥
बरेहमन कोई और मुसलमांकोई । नमाजी कोई वृत का खांहा कोई॥
वोः चेहरे पे दोनों के हैं खूबियां । नुमाया अदाओंसे महबूबियां ॥
झुके हैं वो अबरू अजब आनसे । खिचे जैसे तेगे हों बस म्यानसे ॥
तअज्जुबहुआ जो किया मैंने दीद । मेहे चारदहपर केहै माहे ईद ॥
जबीं और अबरूसे खुश हो कमाल।के बाहम हुये हैंगे बदरोहिलाल॥
नई है ये निसबतनई मसनवी । बह समझे इसे जो हो शायरकवी॥
मिजे है नुकीलीवहनशतरसे तेज। वह आँखें कटीली हैं खंजरसे तेज॥
जोखूनी हैं आँखें मिजे तीर हैं । जो वह सूर हैंगी तो वह वीर है ॥
कनखियोंसे जिसको इशारा करें । सदा जीतेजी उसको मारा करें ॥
सिया पुतलियोंमें वह जादू भरा । नजीता बचे जिसकोदेखें जरा ॥
सफेदीमें डोरे गुलाबी अयां । कहें मस्त जिनकोशराबीअयां ॥
वह रुखसार देखे जो शम्सो कमर । तो हैरत जदा बस फिरे अर्शपर॥
वह बीनी के खुरवीं रहें ताकमें । और आजाय घबराके दमनाकमें ॥

दहन साफ गुंचे सेभी बसके तंग । वह लब जिस्सेलालेयमनभीहैदंग ॥
जबां बर्ग गुलसेभी है नर्म तर । वह दन्दां किबे आब जिस्सेगोहर॥
चमक उनसे इल्मासकीहै बनी । न क्यों हीर हीरे की खाये कनी ॥
वह बातें हैं उनकी के क्याबातहै । है येजाज याके करामात है ॥
सखुन उनका शीरीं जो शीरींसुने । सदा फीकी होके वह सरकोधुने ॥
कबी जकनसे जो चमक माह में । कुंयें झाँके यूसुफसदा चाह में ॥
वह मीनासी गरदनजोआये नजर । सुराही वोः मीना नहो जलवे गर॥
वह हैदस्तनाजुकसखावतकेसाथ । के हरगिजकिसीकेभीआयेनहाथ॥
किसीकी जो पहुँचीपे पहुंचीनजर । तो जूं माही तडपाकरे उम्र भर ॥
कलाई जो देखे कल आये नहीं । दिल उसका उनहाथोंसेजायेनहीं॥
हरएकशाखमरजाँसेअंगुश्तलाल । हैनाखूं भीसवरशकेवदरो हिलाल॥
शिकमनर्ममखमलसेभी वहसिवा । हैमाहताबभीजिसपेदिलसेशिदा ॥
कभी भूलके सीनये साफ को । जो आईना देखे तो हैरान हो ॥
चमकतीहै तारासीभी उसमेनाफ । वहवहरेनजाकतकागिरदाबसाफ ॥
कमरसेभी शरमाये चीता सदा । जबांसे सिफत भी नहोवे अदा ॥
वह रानेभी बिल्लोरकेहैं सितूं । जो देखे वह हैरान हो और जुनुं ॥
अगरमाहीकी शक्लमें पिंडलियां । वह याशमें फानूस मेंहैं अयां ॥
सिफतपायनाजुककीमैंक्याकरूं । झुका सर कलम हाथसे बस धरूं ॥
थी एडीमें सुर्खी अजब आनसे । किलाली हो कुरबान जी जान से ॥
सरापा है उनका अजब नूरका । कि कुरबान दिल जिसपे है हूरका॥
अब आगे जबां मेरी खामोशहै । बयांक्या करूं कुछ नहीं होश है ॥

दास्तान महाराजा रंजीतसिंह सच्चे बादशाहकी बहादुरीमें ।

पिलासाकिया बादये होशमन्द । कि बामे फलक पर मैं फेकूं कमंद॥

जराजल्दी भरके तू दे जामेवीर। फतह करले रंजीतसिंह काशमीर॥
तजलजुलहो रुस्तमदिलोंको यहां लिखूं कारनामा कुजा दास्तां॥
कि रंजीतसिंहाथा जो शाहे जहां जमाने में मशहूरथा बेगुमां॥
कोई उसके सानी न पैदा हुआ। जो पैदा हुआ उसका शैदा हुआ॥
हुआमाहको उसकेदरसेकमाल। सदा माहरूयांथीं जेरेंह मिसाल॥
फलकभी रहे सरपे साया किये। मलक चूमने पांव आयाकिये॥
कहूंक्यामैंअवउसकीजुरंतकाहाल। कियाउसनेरुस्तमकोभीपीरजाल॥
सखावत वह हातम सेभी कमनथा। गदाओं को बस शाहकरता सदा॥
नसमझाजरा वहकिसीवीर को। सुना लेलिया दम्में कशमीर को॥
बहादुर वह ऐसाही जुरंतकारंग। क जीता न उस्से कभी कोई जंग॥
वहपंजाबका शाह आलीजनाब। सुनो उसका था शाह वाला खिताब॥
सभी उसको कहतेथे सच्चाहै शाह। जहांपरवरिश शाह गेती पनाह॥
फकतअपनेदमसेकियाउसनेराज। बहुत शाह देतेथे उसको खिराज॥
किया फतह बस मुल्क लाहौरका। लिया छीन गढ उसने फुल्लौरका॥
मचीउस्सेसुल्तानमेंफिरवहजंग। हुई खाने जंगी पठानों के संग॥
हजारों को मारा भगाया उन्हें। हर एक मोरचे से हटाया उन्हें॥
कियाफतहफिरमुल्कसुल्तानका। लिया लूट गढ उस्ने सुल्तान का॥
लिया छीन इल्मासवह कोह नूर। के जिसका बडा हिन्दमेंहै जुहूर॥
हुआ जबके गालिब वह लाहौर पर। चढाई फिर उसने की पेशौर पर॥
लिये साथमें अपने पैदल सवार। वहहाथीके हलकेशुतरकीकतार॥
थे वह तोपखाने भी बस आलीशां। जिसे देख हैरतमें सारे पठां॥
वहकुछफौजपहुंचीअटकके जोपास। वहां उडगये सबके होशो हवास॥
वह दरिया कहर और पानीका शोर। बहे इसकदर वां चले कुछ नजोर॥
जो रंजीतसिंह उसके पहुंचा करीब। कहा दिलमें मेरा है मौला हबीब॥
किया याद हकको किनारे ठहर। दिया डालफिरउसमेंवससीमोजर॥

औरअपनाभीघोडादियाउस्मेंडाल । नुमायांकियाथाजीअपनाकमाल॥
वह दरिया जो बहताथा वस थम रहा । बडीदेरतकफिरनपानीबहा ॥
उतरने लगे फिर तो पैदल सवार । खुदाके करमसे हुये सब वह पार ॥
जो निकला वहरंजीतसिंहकातुरंग । तो दरियामें उडनेलगेसब सुरंग ॥
जो पीछेरहे वह वहे और मरे । बचे वह अटकसे जो पहुँचे परे ॥
जहां शाह काबुल कीथी धूम धाम । पडाथावहीउसकालशकरतमाम॥
इधरसे यह वाखरों फर अहलेशां । वहीं जाके पहुंचा जहांथे पठां ॥
सवारोंका पैदलका नाथा शुमार । बँधीथी कई कोस तक एक कतार॥
जमीं थी न खाली धरेजोके तिल । सवार और पियादे गये ऐसे मिल॥
हवाको न मिलतीथी जानेकी राह । हुआ गर्द उडनेसे गरदूं सियाह ॥
वह लशकर जो दोनों मुकाबिल हुए । सोमतलबदिलोंकेबसहासलहुये॥
मैं दोनोंके दलकाकरूं क्या बयां । इधर सिक्ख थे और उधर थे पठां ॥
उधर नो जवां तेज असवार थे । इधर सिक्ख घोडोंपे तैयार थे ॥
उधर तोपखानों केथे मोरचे । तो यह घुडचढी तोपें लैकर चढे ॥
थीं आगे जो तोपें तोपीछे सवार । थी फिर पैदलोंकी बँधी एक कतार॥
पठानों का था उसतरफ मोरचा । इधर लशकरे जंगी इसका खडा ॥
बिगुल जबहुआ दोनोंसूं जंगका । तोफिरजंगीबाजा भी बजनेलगा ॥
लगा मारने यह इधरसे गिराब । कहाफिरसवारोंसेपहुंचेशिताब ॥
कहा पैदलोंसेके आगे बढ़ो । किले पर तो पेशौरके जाचढो ॥
गिरे जबके गोलोंसे लाखों जवान । तोकरतेंगेंनंगीदियाफेकमियान ॥
हुई वाँ जदालो कतल इस कदर । कि लाशोंसे मैदाँ गया साफ भर॥
गिरे धडपे धड और सरपर भीसर । जमीं खूनसे होगई तरबतर ॥
सुनो खूनके ऐसेदरिया बहे । हवाब आसासर उसमें वहते रहे ॥
फिरआखिरकोरंजीतसिंहकेसवार । घुसे इस्तरह जैसे सावनमें तार ॥
लिया छीन दम्मे वह पेशौरको । दिखायाफिरउसनेतोइसतौरको ॥

केजिस्सेडरेसबमुगलऔरपठान। गये भाग काबुलको सारेजवान॥
बहुत शाह काबुलने तारीफ की। कहा सबसे रंजीतसिंहहै बली॥
न उस्से कभी कोई जीतेगा जंग। केपीरो पयम्बरहैं सबउसके संग॥
वह दुश्मन जो तारीफ करने लगा। तोरंजीतसिंहनेभी दिलमेंकहा॥
सखावतसे हैगा बहुत यह बईद। शुजाअतसेभीवातयहहैशदीद॥
केलेलूं तमामी मैं मुल्को जमीं। कहेंगे भलाक्यामुझेनुकते चीं॥
तसव्वर यही करके एक बारफिर। गयाथाजोवोःशाहफौजोंमेंघिर॥
दियाउसकोकाबुलवहखानेकोछोड। वहाँसेंदियाफौजकोअपनीमोड॥
वहाँ कुछ रिसालों को तानातकर। कियाखुशउन्हेंऔरदियामालोजर॥
रअय्यत फिर आरामसे सब बसी। कमरफिर वहरंजीतसिंहनेकसी॥
कहा फौजसे अब चलो काश्मीर। हुयेसबवहहाजिरजोथेखुर्दोपीर॥
लिया फौजने घेर सारा पहाड। दिये मोरचे उनके दम्में उखाड॥
तो रंजीतसिंहने सवारों के संग। वहकीहरतरफउनपहाडोंपेजंग॥
केहैरां हुये साकिने काश्मीर। परेशांथे दिलमें सगीरो कबीर॥
थेपंडितजोएकफिरवहआकरमिले। गुलस्तानरनमें अजबगुलखिले॥
बताया उन्होंने हरएकरास्ता। जोलश्करथाजंगीवह आरास्ता॥
पहाडों कीथीं घाटियाँजाबजा। दिखाईवहसिक्खोंकोसुबहोमसा॥
वहाँ दखलसिक्खोंनेजबकरलिया। तोपंडितकोवसमालऔरजरदिया॥
पहाडों को वां लोगकहते हैं पीर। उसीके है अंदर बसा काश्मीर॥
बहुत सख्त वांका जोथा रास्ता। वह उनपंडितोंनेदिया सब बता॥
तोरंजीतसिंह शाहआलीमुकाम। वह पहुंचावा इज्जतोएहतशाम॥
जो अफसर बडे एकथे कृपाराम। दियाहुक्मउनकोके यांबांधोलाम॥
कहा यहभी बा शोकतेइज्जोजाह। करो अपनी तैयारसारीसिपाह॥
जोसरदार हैं फौजके साथ लो। करो जल्दतुमफतहकशमीरको॥
तुमआओगेजबफत्तहकरकाश्मीर। तो जानूंगा तुमहो बडे शूरवीर॥

यह सुन बात वाँसेचलाकृपाराम । कियाझुकेरंजीतसिंहकोसलाम ॥
कहा फौजने जब वहम वाह गुरू । लगे करने आपसमेंयहगुफ्तगू ॥
जो पंडित हैंउनकोभीहमराहलो । पहाडों के ऊपरचढोऔर चलो ॥
पहाडों पे दुसमनकालसकरजोथा । वह उसरास्ते को चलेसबबचा ॥
चढे जब वह उस कोह पर फेरसे । बचे दुश्मनों के तो सब घेर से ॥
लियाउनकोसिक्खोंनेफिरदम्मेंघेर । भगायाउन्हेंऔरलगीकुछनदेर ॥
हर एक सिम्तहंगामये जंगथा । लहूंसे तोतर साफ हर संगथा ॥
चढे सिक्ख जब पीर पंजाल पर । वहाँ बर्फ सेथी जमीं तर बतर ॥
वह सरदीके जिस्से उठे नाकदम । हवावो चलै जिस्सेहो सर्द दम ॥
वहां से तो जोतों वह आगे चले । कदम उनके पडने लगेलटपटे ॥
थका इस कदर उनकासारावदन । गये अपनावसभूलचालोचलन ॥
तोइतने में आई नजर एकसराय । वहांपरमिलीउनकोरहनेकोजाय ॥
लगे सेकने हाथ और अपने पाँउ । बसे फौजसे दम्मेवांकितनेगाँउ ॥
किया वाँपे एक रात सबनेगुजर । फजर होतेही सबने बांधीकमर ॥
किसीजा उतरनाथा चढना कहीं । जो कुछआगेदेखाथादेखानहीं ॥
हुआसब पहाडों का तह रास्ता । तो मैदांमें लश्करवहजाकेपडा ॥
खबर इसकी सुनके वहाँका अमीर । यह बोलाबचे किसतरहकाशमीर ॥
दिया हुक्म लशकर को तैयार हो।कहा फौजसे सारी यह तुम सुनो ॥
अगर कोई भागेगा मैदानसे । तो मारूंगा उस्को मैंजी जानसे ॥
यह सुन फौज वाँसे जो आगे चली । कहा सबने अब जोकरे सोअली ॥
जो जीते तो दौलत लुटायेंगे हम । मरे गरतो जन्नत में जायेंगेहम ॥
गरजअपनेदिलमेंयहलीसबनेठान । केआखिरतोएकरोजजायेगीजान ॥
उधरफिरयहसिक्खोंनेदिलमेंकहा । गुरू जो करे सोकरे कोई क्या ॥
जो देखा तो आये नजर वहनिशान । के है उन्में जंगी सरासर जवान ॥
हैं घोडोंके ऊपर हजारों सवार । के टापोंसे जिनके है गरदोगुबार ॥

जमीं छयरही आठ हुआ आसमाँ। पहाडोंपे अंधेरथा एकअयाँ॥
खबरदी किसीने कृपाराम को। वह सुनतेही बोलाके आनेतोदो॥
करो अपनी तैयार तोपें शिताब। यहाँ पर जो आयें तो मारो गिराब॥
कहा पैदलोंसे परादो मिला। सवारों का आगे जोथा सिलसिला॥
हर एक तौरसे दुश्मनों को लोघेर। नहो फतह होने में जिनहार देर॥
फिरइतनेमेंतुरकोंकीभीआईफौज। औरअपनीभीसिक्खोंनेदिखलाइफौज
लगे मारू बाजे वह बजने वहाँ। हुआखूंनकारंग सब आसमाँ॥
हुआफिरदोतरफाजोगोलोंकाशोर। तोयों घोडे कूदें केजा नाचे मोर॥
यों हीं पहुंची नौबत जोतलवार पर। सबोंको रखा तेगकीधार पर॥
वह पैदलसे पैदल लडे इस कदर। सवारोंसे असवार दोदो पहर॥
लहूकासुनो बहर बहने लगा। हर एक अपना खूंपीके रहने लगा॥
फिर इतने मेंआयेवहांसिक्खऔर। पठानोंने दिलमें किया अपनेगौर॥
नजीतेंगे इनसे लडाईमें हम। लगे सबके पीछेको हटने कदम॥
लिया साफ मैदान सिक्खोंनेजीत। मरेभी बहुत तिसपे गातेये गीत॥
कईदिनलडाई लडा वह अमीर। फिरआखिरकोकुलछुटगयाकाशमीर
गया फिरतो वाँसेवहकाबुलचला। इसीमें कुछ होताथा उसका भला॥
जोपंडितथे वाँके हुये सब मगन। वह पूरी हुई दिलमें जोथी लगन॥
सुनी जब यह रंजीतसिंहने खबर। लुटाया वह लाहौर में मालो जर॥
लगीफिरसलामीकीचलनेवहतोप। लगी पडने डंकेपे अशरतकीचोप॥
कहां तक कहूं उसकीखूबीकहला। वह रंजीतसिंहजोथासाहबकमाल॥
अदब उसका करतेथे अहले फरंग। मुकाबिलमें कोईनकरताथा जंग॥
हैअबतक उसीका जो टुकडाबचा। सुनो वह है रनवीर सिंहकोमिला
किसीकीनताकत जो लडके वहले। वहांके बहुत सख्तहैं रास्ते॥
जोदेखा सुना वह किया है बयां। सखावत का उसकी सुनो दास्तां॥
वह जैसा ही लडनेमेंथा शूरवीर। सखावत में वैसाही वहथा अमीर॥

सखावतमें हातमसे वह कम नथा। शुजाअतमेंरुसतमसेवहकमनथा ॥
किया उम्र भर कुछ न उसने गुरूर। अजबसाहबे अक्ल थाजी शहूर ॥
किसीनेजोउस्सेकियाकुछसवाल। दिया जरउसेऔरकियामालोमाल ॥
फकीरोंको देताथा लेता कदम। खुदाने बनाया अजब उसका दम ॥
किसीकेभी दिलको दुखाना नहीं। खुदाके सिवा कुछभी जाना नहीं ॥
खुदाके दिलानेसे देताथा वह। उसीका सदा नाम लेताथा वह ॥
हमेंशाथायहउसकेदिलमेंखयाल । मेरा कुछ नहीं यहउसीकाहै माल॥
वह हिन्दू मुसलमां को एकी नजर। हमेशा रहा देखता उम्र भर ॥
वह लाखोंकी कितनोंको जागीरदी।वहजम्बूकी भीऔरकशमीर की ॥
सिपाही को सरदार उसने किया। है पैदलको असवार उसने किया ॥
है नंगोंको उसने दुशाले दिये। गदाओंको मसाजिद सिवाले दिये ॥
हैं अमृतसर उसके गुरूका मकाँ। जो देखा तो जन्नतकाहै वह निशाँ ॥
लगाया जर उसमें हैं बस बेशुमार। बनाहै वह अवतकजवाहरानिगार ॥
तिलाका बना उसमें सब काम हैं। वह सातो विलायतमें सरनामहैं ॥
वह दरबार तालावमें है बना। अजब आबहै आबमें है बना ॥
जिया जबतलक तौकियाखूबनाम।जबआई अजल तो कहा रामराम॥
यहकहकरमराथाकेदशसालतक । नऔलादको मेरी कुछहोगी जक ॥
हुआउसकाकहनाजोवह कहगया । यहनामउसकादुनियामेंतौरहगया॥
किया दस वरस उसके बेटाने राज।हवा ऐसी आईके बिगडा समाज ॥
हुई इसकदर उसके घरमें वह फूट। लिया माल उसकाखजाने वहलूट॥
अबहै एक फरजन्द उसका दलीप।के जैसेहोस्वातीकीप्यासीवहसीप ॥
सोलंडनमें मल्काके वह पास है। भरी दिलमें उसके अभी आस है ॥
पिदरकी तरह वहभी है नेक नाम। गरीबोंका करताहै हरएक काम ॥
सखावतशुजाअत वहहै आज्ञाकार। पिदरकावहअपने है एकयादगार॥
है दरिया दिलीउसकेखासोंमेंआम। सखावतके दरिया बहाये तमाम ॥

सुना दादरस अदल गुस्तरहै वह। जमानेमें बस बन्दापरवर है वह ॥
हरएक शख्स काहै बडा कद्रदां। सखुन संजदानाऔआकिल अयां॥
खुदाई में जोहै बडा कारसाज। बनायाहै वह मेहर जर्रे नमाज॥
अब आगेमें उसका करूं क्या बयाँ। खुदाका न मालूम राजे निहां॥
करेगा वह क्या और करताहै क्या। उठायेगा क्या और धरता है क्या
खुदाकीहैं बातें खुदाईके साथ। वह हरगिज किसीकेनहींआयेंहाथ॥
गदा को वह दम में करे बादशाह। करे बादशाहको गदा दम्में आह॥
वह जर्रेको चाहे करे आफताब। करे मेहरको जर्रह बा आबो ताब॥
हमेशहसे उसकी यही राह है। बनाया जो एक मेहर एक माह है॥
हुई खत्म याँसे है सब दास्ताँ। शिगुफ्ताहै यहकाशीगिरकाबयाँ॥
मेरे दिलके अन्दर बसा काशमीर। वहाँहैं अमीरोंसे बेहतर फकीर॥
हुआ है यही अबतौ लेलौ नेहार। रखे उसको आबाद परवर दिगार॥
है यह मसनवी याँसे पूरी हुई। करो याद रबकी जो जाये दुई॥
सब अहबाब मेरे रहें शाद काम। मिले आरजूये दिली सुबहशाम॥
पढे जो इसे वह रहे बस निहाल। और हो खैरकेसाथउसकाअमाल॥

ख्याल सबसे अव्वल फारशीका जिस्में दीवान शम्स तबरेजमौलाने रूमने जो शराब पी है उस्काहाल लिखताहूं–बहर लंगडी।

मनमें नोशम आँमय वहेदत बिबीं साकिया शुबः हो शाम॥ कज नशये ओ नजरमें आयद नूरे खुदा मुदाम ॥ जिहे शराबे साफ के दर दिल खेश खुदारामें बीनम ॥बयकगरगिशे पयाला हरदो शारामें बीनम॥ जफजले कायम खुदा वह दाना फना वकारामें बीनम॥ दर मीनाये दिले खुद शम्स जुहारा में बीनम॥

शेर–चे जामें जम् बपेशे मनके मन आँ जाममें दारम॥ कजो यारे खुदा बूदम वोःबूदा सब खुदा यारम ॥ नमें दानम चिरोजे रोश न-

सतो चे शबे तारम ॥ कुनम बरबे नयाजे नाज वोरा दर दिलम आ-रम ॥ बराये ओः मय निहम वोःमीना सुराही ओ हम शीशो जाम ॥ कजनशये वो नजरमें आयद नूरे खुदा मुदाम ॥ हरसू जिनूरे बादे वहदत आफताब शुद जिलवा गर ॥ हर जर्रा शुद बसाने मुश्तरी जोहरा शम्शो कमर ॥ जिलवा नमूदा हरखुनी मोयम अजाँ रही के चूँ अख्तर ॥ खाने मन शुद कयामे जात पाक रब्बे अकबर ॥

शैर—पसन्दीदा चूं चश्में मन शुदा मल बूस उरयानी ॥ नमें दानम खुदारा बूदईं हम शाने रब्बानी ॥ जनूरे जिलवये रब्बुल उला शुद चश्म नूरानी ॥ जबां मन अज कुजा आरमुद्में साजम सना ख्वानी ॥ जबांने हक्क मन जबाने दारम नाम खुदा मन दारम नाम ॥ कज नशये ओ नजरमें आयद नूरे खुदा मुदाम ॥ हिंदू हस्तम ओ ना मुसल्मां यहूद तर्सानागबरम ॥ साकिर बरंब मन हस्तम गहे न चन्दाबे सबरम ॥ अयांरंग यकताई दारम् गूनागूं न मिस्ले अबरम ॥ राजे इलाहीरा दानम शुबह मिसा दारद खबरम ॥

शैर—शराबे शौकमें नोशम वो मुश्ताके खुदा हस्तम ॥ बकब्जा गंज वहदत दारमोना बातही दसतम ॥ जनशये बादे एकताई वो खालिक मन बसा मस्तम ॥ खुदा बूदः बमन शामिल यह मनबा हक्क पैवस्तम ॥ लुत्फे बादे वहदत दानद आंके शवद चूँ लाले फाम ॥ कजनशयेओ नजरमें आयद नूरे खुदा मुदाम ॥ दवाये दर्द मरीज शुदा अजरोजे अजल वादे वहदत ॥ हरके बिनोशद नजर वल्लाह चुना आयद कुदरत ॥ न जूल साजद साफ वसीना पाक अयां रब्बुल इज्जत ॥ दुयी नमानद जनूरे खुदा बसद शानो शौकत ॥

शैर—बशमये रोशने नूरे खुदा हस्तेम परवाना ॥ नाज नूरे

खुदामन दारमों वल्लाह नबेगाना ॥ शुदा रोशन बसमये बादये पुर-नुरका शाना ॥ खुमों मीना सुराही ओ सुबूओ जामों पैंमाना ॥ देवी सिंह में नोशद आँमै अजांमवत्तर शुदह मशाम ॥ कज नशये ओ नजरमें आयद नूरे खुदा मुदाम ॥

ख्याल श्री जगन्नाथ जी की स्तुति में जो पढेगा सो घर बैठे दर्शन पावेगा–बहर खडी।

महोदधी सागरके किनारे पुरी वेदोंने बखानी ॥ जगन्नाथ जग तारन कारण बोध रूप भये निर्बानी ॥ ओंकार और निरंकार वोही निर्भय और वोही निरंजन ॥ वोहिहैं अन्तरजामी वोहि हैं स्वामी वोही हैं दुखभंजन ॥ ब्रह्म वोही और ब्रह्मा वोही विष्णु वोही वोही भव मोचन ॥ वोही हैं अपरम्पार पार नाहिं पावें उनका त्रैलोचन ॥ और वोही हैं षट दर्शन ॥

तोडा–वोही शेष वोही शक्तीहै वोही कैलासी ॥ वोही इन्द्र है नारद मुनी वोही अविनाशी ॥ होरहे आय पुरुषोतम पुरीके बासी ॥ वो महिमा उनकी खासी मगन रहते हैं जहाँ सब प्राणी ॥ जगन्नाथ जगतारन कारण बोध रूपभये निर्वानी ॥ १ ॥ रत्न सिंहासनपर धर आसन विराजते दोनोंभाई ॥ जगन्नाथ बलभद्र बीचमें खडी सुभद्रा जगमाई ॥ शंख चक्र और गदा पद्मकी शोभा नाहिं बरणी जाई ॥ मस्तकपर झलकत हीरा सूरजसे जोति है सवाई ॥ है साँची जहाँ प्रभुताई ॥

तोडा–सिर मोरमुकुट औरगल फूलोंके हारे॥ केसर चन्दनका तिलक शीश पर धारे ॥ नाना प्रकारके होते हैं शृंगारे ॥ मैं कहाँ तलक कहुँ बिस्तारे शेष थक हारे गत नहीं जानी ॥ जगन्नाथ जग तारन कारण बोध रूपभये निर्वानी ॥ २ ॥ श्यामवर्ण है जगन्नाथकी

छवि सुन्दर लगती प्यारी ॥ श्वेत वर्ण बलभद्र सुभद्राके चरणोंकी बलिहारी ॥ बाहर है चन्दनका लकडा जहाँ खडे सब हितकारी ॥ हाथ जोड दंडवत् करे श्रीजगन्नाथको नर नारी ॥ सब खडे हैं वहाँ पुजारी ॥

तोडा—वो वक्त वक्त पर पूजा प्रभुकी करते ॥ कोई करवावे स्नान कोई जल भरते ॥ कोई चन्दन घिसके हार फूल लाधरते ॥ कोइ लेले अपने करते करते पूजा सब मन मानी ॥ जगन्नाथ जग तारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ ३ ॥ उस मंदिरके ऊपर बैठे जगन्नाथ और बलभद्दर ॥ बीच सुभद्रा आन बिराजीं दोनों भाई इधर उधर ॥ मुख दक्षिणकी और किये और पीठ किये बैठे उत्तर ॥ लंका मेंसे राज विभीषण रोज आरती लेताकर ॥ देंदरश उसे वाँ पर ॥

तोडा—है भक्तके बश भगवान वेद यों गावे ॥ लंकासे दरशन रोज बिभीषण पावे ॥ और उसको वहांसे नजर वोः मन्दिर आवे ॥ स्वामीसे ध्यान लगावे राजा लंकाका है ध्यानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ ४ ॥ महा प्रभूके बायें मदनमोहन घोडे पर असवारे ॥ मथुरा वृन्दावनको छोड पुरुषोत्तम पुरीको सिधारे ॥ ग्वालनका दधिखाया ग्वालन खडी हाथको पसारे॥तिरलोकीनाथ अंगूठी देते हाथसे उतारे ॥ सुन वहांका चमत्कारे ॥

तोडा—जहां अनेक ज्योढी अनेक हैंगे द्वारे ॥ हैं गरुड खंभपर गरुड रूपको धारे ॥ क्या कहूं मैं व्हाँके जैसे हैं बिस्तारे ॥ वोः हैं स्वामीके प्यारे उनकी महिमा मुश्किल पानी ॥ जगन्नाथ जग तारण कारण बोध रूपभये निर्वानी ॥ ५ ॥ महाप्रभूके दहिने अक्षैवट मारकण्डे औ बटेकृष्णा ॥ जिनके दर्शन करनेसे छुटजाय जन्म भरका पिसना ॥ और बना चन्दन घर वहां पर पंडोंको चन्दन घिसना॥बडे भाग्य हैं उनके जिनकी जीतेजी मिटगइ तृषना॥उनको व्यापे विषन॥

तोडा—एक और वोः मन्दिरमें है बिम्वला देवा ॥ जिनके दर्शन करनेसे पार हो खेवा ॥ चढें पान सुपारी हार फूल और मेवा ॥ तू करले उनकी सेवा वोही हैं कुब्जाजी महारानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ ६ ॥ महाप्रभूके पीछे है नरसिंह रूप विक्राल बडा ॥ अपने भक्तके कारण मारा हरणाकुश थादैत्य कडा ॥ निश्चय थी प्रहलाद भक्तको सेवामें वो रहा अडा ॥ सब संकट हरलिये प्रभूने जो था उसपे दुःख पडा ॥ रहे सदा सामने खडा ॥

तोडा—हर रोज वो दर्शन पाता स्वामी जीका ॥ उनके चरणों-की रजका देता टीका ॥ है मीठा रामका नाम और सब फीका ॥ सुन यही काम है नीका ॥ पिताकी आज्ञा कुछ नहीं मानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ ७ ॥ और सुनो बैयान अजब स्थान स्वर्ग से है आला ॥ चारो तरफ हैं सभी देवता ऐन बीच में शिवाला ॥ सबके ऊपर नीलचक्र है ध्वजा फडकती गुल्ला-ला ॥ और देवते देवल परहैं हर एक तरह के सब बाला ॥ वो पहिने गले में माला ॥

तोडा—श्री जगन्नाथ का जाप करें वो मनमें ॥ हरवक्त खडे रहैं स्वामी के सुमरण में ॥ दिन रात ध्यान रहैं प्रभू जी के चरणन में ॥ सब रहैं उनकी शरणन में ॥ वर्णन करते सुन्ते ज्ञानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ ८ ॥ और सुनो अहवा-ल वो मन्दिर कंचनका है रत्न जडे ॥ कलियुग में पत्थरका हमको तुमको सबको नजर पडे ॥ चारो तरफ देवल पर देवते हाथ उठाये रहैं खडे ॥ और राक्षस असुर वो मन्दिर पर शिर उनके कटे पडे ॥ हैं उनके भाग भी बडे ॥

शैर—जिन्हें स्वामी ने अपने हाथों संहारा ॥ और पकड पकड कर

गदा चक्रसे मारा ॥ उन्हें मारा नहीं करदिया उनका निस्तारा ॥ मिला उन्हें स्वर्ग का द्वारा ॥ होगये स्वामीके अगवानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये विर्वानी ॥ ९ ॥ और बना वैकुंठ जहां पर सभी यात्री आते हैं ॥ जो जिसकी है यथा शक्ति वो अटका वहाँ चढाते हैं ॥ चारवर्ण एकी में भोजन करें और नहीं घिनाते हैं ॥ महाप्रसाद श्री जगन्नाथ का पावें सब तर जाते हैं ॥ सब एकी में खाते हैं ॥

शेर—जहां ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र नहिं कोई ॥ और चार वर्ण की एक में होय रसोई ॥ वहां द्वैतभाव नहिं एक जात सब कोई ॥ और एकादशी है सोई अपने मनमें अति हर्षानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ १० ॥ चारों फाटक पर है चौकी चार वीरकी सुन भाई ॥ पूरब दरबाजेपर पतितपावनकी फिरती दुहाई ॥ बाहर दोनो सिंह गर्जते संतो पर रहैं साहाई ॥ अरुण खंभके दरशन करते जिनकी सुफल है कमाई ॥ तू पहुंच वहां पर जाई ॥

तोडा—हैं पश्चिम दरवाजे पर श्री हनुमाने॥बीरों में बीर हैं महाबीर बलवाने ॥ गये फाँद वो सागर एक छिन के दर्म्याने ॥ तिरलोकी उनको जानें अंजनीनन्दन है बलवानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोध रूप भये निर्वानी॥ ११॥ दक्षिण दरवाजे पर चौकी गणेशजी देते दाता ॥ जिनके दरशन करनेको सारा आलम् है गा जाता ॥ महादेवके पुत्र और श्रीगौराजी जिनकी माता ॥ चतुर्भुजी मूरत सुन्दर तनु दरश किये नर तर जाता ॥ वो परमधामको पाता ॥

तोडा—एक हाथमें डमरू एक हाथ त्रिशूल ॥ और एक हाथमें लिये कमलका फूल ॥ एक हाथमें लाडू लम्बी सूंडरही झूल ॥ वो जडें दुश्मनको हूल उत्तर फाटक पर उत्राणी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ १२ ॥ भोग शास्त्र की महिमा

उस मन्दिरके भीतर है सारी ॥ और कोककी लीला उसमें लिखी है सब न्यारी न्यारी ॥ कोई पुरुष हैं नगन और कोइ निर्लज्जित बैठी नारी ॥ महाकाममें आतुर ऐसी बहुत मूरतें हैं प्यारी ॥ हैं वोः तो सब ब्रह्मचारी ॥

तोडा–जो ब्रह्म विचारके भोग करे वोः जोगी ॥ उसको मत समझो भोग वो बडे वियोगी ॥ रहे सदा सर्वदा उनकी देह निरोगी ॥ मत उन्हें कहो संयोगी आत्मा जिसने है पहिचानी ॥ जगन्नाथ जग तारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ १३ ॥ सुबह शाम स्वामीके आगे आवें दासी निरतकरन॥ सुन्दर सुन्दर कहें विष्णु पद अच्छे २ गावें भजन ॥ बडे भाग्य हैं उनके जिनकी जगन्नाथसे लगी लगन ॥ अष्ट प्रहर हर वक्त हमेशां अपने मनमें रहें मगन ॥ और येही है उनका परन ॥

तोडा–हररोज आय स्वामीके आगे गाना ॥ अपने स्वामीको खूबी तरह रिझाना ॥ हँस २ के मुसक्याना और भाव बताना ॥ और सभी वो राग सुनाना श्रीपति सारंग और कल्यानी ॥ जगन्नाथ जग तारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ १४ ॥ पंचकोश में बना भैरवीचक्र वहांका सुनो मथन ॥ २ ॥ बडे २ जहां सिद्ध विराजे करें तपस्या रहें मगन ॥ नौदुर्गेकी पूजन करते दशो द्वारसे लगी लगन ॥ प्राणायाम करें वोः जोगी जोग जुगतहै बडी कठिन ॥ कोइ जाने विरला जन ॥

तोडा–आतम में परमातमके दरशन पावें॥जो जगन्नाथ से मनमें ध्यान लगावें ॥ वो आवागवनसे छूट ब्रह्म हो जावें ॥ और सगुणके गुण गावें निर्गुण होते हैं वो प्राणी ॥ जगन्नाथ जग तारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ १५ ॥ कर्माबाईकी खिचडी और दूध मलाईकी

पकवान ॥ भोग लगें नानाप्रकारके बडे बडे होते सामान ॥ खैर चूर के लाडू टुकडा मलूक का पावें भगवान ॥ उखडी मूरीका चरवन और कहां तलक मैं करूं बखान ॥ दिनरात उतरते घान ॥

तोडा–अटके पर अटका चढे पकावें पण्डे॥सबसे पहिले ऊपरके पकते हण्डे ॥ है महिमा जिनकी सात द्वीप नौ खण्डे ॥ सब उन्हीका है ब्रह्मण्डे अजको वेदोंकी धुन गानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोध रूपभये निर्वानी ॥१६॥ शुक्ल पक्ष तिथि दूज महीना आषाढका जब आता है ॥ रथ पर हों असवार प्रभू सुसराल जनकपुर जाता है ॥ लाखों आलम खींचे रथ नहिं चले वो जब अड जाता है॥तबतो पंडा हँस २ कर और गाली उन्हें सुनाताहै। और मनमें मुसुक्याताहै॥

तोडा–सब पंडे मिलके बात कहै ये प्रभु हो॥है नन्द और वसुदेवपिता तुम्हरेदो ॥ तुम अहीर के घर पले बात ये सुनलो ॥ येकर्म किये जो तुमने वेदके बाहर सो हम जानी ॥ जगन्नाथजग०॥ ११ ॥ ग्वालनके संग किया भोग और भिलनी की झूठन खाई॥मित्र तुम्हारे अति पुनीत रहे दास सदनसे कसाई ॥ धन्ना छीपी बडाभक्त और सैन भक्त तुम्हरा नाई ॥ घर घर चोरी करी प्रभूजी जरा शर्म तुम्हें नहिं आई ॥ अब रथकोदे ओ चलाई ॥

तोडा–सुसराल चलनमें काहे देर करो हो॥मालूम हुआ घरवाली सेभी डरो हो ॥ चाहे कोई जातहो सब को तुम्हीं बरोहो ॥ गोपियोंके चीर हरोहो ऐसी मन में तुम क्योंठानी ॥ जगन्नाथ जग० ॥ ७८ ॥ हुई यात्रापूरी फिर अपने पंडेसेलई सुफल ॥ चरण धोये आपुरी के बाहर लेके श्वेत गंगा काजल ॥ और स्वामी के दर्शन पाये हुआ मुक्ति होने का फल ॥ ध्यान धरा प्रभुजीका मन्में छिन्में कटीसारी कल मल ॥ हुई पहिली सुनो मंजिल ॥

तोडा–चलतेरसाखी गुपालपर आये ॥ साखी दी उनके चरणमें

शीश नवाये ॥ और घरमें आके ब्राह्मण खूब जिमाये मनमाँगे ॥ सो फल पाये छन्द कहे काशीगिर ब्रह्मज्ञानी॥जगन्नाथ जगतारण०॥१९॥

भजननिर्गुन वेदांत उपासना ।

तोहिको रटत रटत सब हारे ॥ शेष थके तेरो नाम अनंता कोटिन [illegible]ारे ॥ ब्रह्मावेद बनायके थाके विष्णु लीन औतारे॥ शिव [illegible]दिन तेरो ध्यान धरत हैं और है कौन विचारे ॥ तोहि को रटत रटत सब हारे ॥ ध्रुव प्रह्लाद व्यास नारदमुनि वाल्मीकितन धारे ॥ ज्ञान भयो ताहूपर देखो अलखे अलख पुकारे ॥ तोहिको रटत रटत०॥ योगी यती तपसी संन्यासी कोउ गोरे कोउ कारे ॥ या रसनासे जो कोइ सुमरे सो सबहीतेरे प्यारे ॥ तोहिको रटत रटत स० ॥ आपही को तू आप भजतहै आपइ आप विचारे ॥ काशीगिर तोहि सब कुछ दीखत अब घटभयो उजियारे॥ १ ॥ प्रभु तुमसबही पतित बनाये ॥ पुण्यको नाम लियो नहीं कबहूं पाप अधिक मन भाये ॥ प्रथम पतित तो काम बना वाद्वितिय क्रोध उपजाये ॥ त्रितिये लोभ और मोह चतुर्थं सो सब अंग समाये ॥ प्रभुतुम सब० ॥ सृष्टिके कारण किये चतुरानन सो पुत्री पर धाये ॥ विष्णुसे कहा पालना करिहो सो बलिको छलि आये ॥ प्रलय करनको कीन महेशा हाथ त्रिशूल धराये ॥ येतीनो गुण बने पातकी जक्तको कौन बचाये ॥ प्रभुतुम० ॥ तोहि में पुण्य पाप नहिं कोऊ धर्म अधर्म विलाये ॥ रज सत तामस पास न आवत आपमें आप समाये ॥ प्रभुतुम० ॥ जोजो पाप करे सो तर हीं पुण्य करे पछताये ॥ याको अर्थ काशीगिर जाने कोउके लगे न लगाये ॥

इति काशीगिरबनारसीकृतसंपूर्णख्याल लावनी ब्रह्मज्ञान समाप्त ॥

श्रीसच्चिदानन्दार्पणमस्तु ॥

विक्रयार्थ नूतन पुस्तकें ।

भूषण आदि संस्कृत टीकात्रयसमेत वाल्मीकीयरामायण.

महाशयो ! देखो इस अपूर्व भूषणटीकाकी पांडित्यशैली, सुगमता, विचार चातुर्य आदि सब अद्भुत गुण कैसे चमकते हैं. देखो 'भूषण' ... का कैसा अन्वर्थ रखा गया है जिसके श्रवणमात्रसेही कल्पना होती है। ... रूपी भगवान् रामचंद्रजीकी मूर्तिको टीकारूपी अलंकारोंसे अलंकृत किये और ऐसीही टीकाकारने कल्पना कर रचना की है. देखो—कि उक्त भगवान् बालकांडरूपी पादको टीकारूपी मणिमंजरि (पायजेब), अयोध्याकांडरू... जघनको पीतांबर, अरण्यकांडरूपी कटिको रत्नमेखला (कोंदनी), किष्किध... कांडरूपी हृदय और कंठको मुक्ताहार (मोतियोंका कंठा), सुंदरकांडरू... ललाटको शृंगारतिलक, युद्धकांडरूपी शिरको रत्नकिरीट और उत्तरकांडरू... ऊपरके भागको मणिमुकुट इस तरह ये गहने अर्पणकर रामायणरूपी भगवान... सजाया है. तो इस व्याख्यामें क्या कम है कुछ नहीं फिर लेनेमें क्या हरज ... झट लीजिये और उसका पाठ कर अपना जन्म कृतार्थ कीजिये. यह २... रुपये कीमतका पुस्तक लेनेवालोंको भगवद्गुणदर्पण भाष्य आदि व्याख्यात्र... समेत विष्णुसहस्रनाम (१२००० ग्रंथ) भेंट (किफायत) में मिल जाता है...

भगवद्गुणदर्पण भाष्य आदि संस्कृत टीकात्रयसमेत

श्रीविष्णुसहस्रनाम.

पाठको ! यह ग्रंथ कितना अमूल्य है कि जिसमें एक २ नामपर श्रुति, स्मृ... पुराण व्याकरण आदि प्रमाण वचनोंसे बढाकर दो दो सफेतक भगवानके गु... गाये हैं. ऐसे पुस्तकको विद्वान् न देखे तो अन्य कौन देख सक्ता है. यह ... बहुतही बडा होनेपरभी ५ रुपयेमें देता हूं लीजिये और सुप्रसन्न हूजिये

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना—गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना कल्याण—मुंब...